DAMAGE BOOK

UNIVERSAL LIBRARY

सिं घी जै न ग्र न्थ मा ला
॥ ग्रन्थांक १० ॥

जिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प



वि श्व भा र ती
सिंघी जैन ज्ञानपीठ
शान्तिनिकेतन

मूल्य, रु. ४-४-०]

[विक्रमाब्द १९९१

स्वर्गीय साधुचरित श्रीमान् डालचन्दजी सिंघी



जन्म
वि. सं. १९२१, मार्ग वदि ६

स्वर्गवास
वि. सं. १९८४, पोष सुदि ६

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

卐 ॥ ग्रन्थाङ्क १० ॥ 卐



श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, कथात्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
बहु उपयुक्त पुरातनवाङ्मय तथा नवीन संशोधनात्मक
साहित्यप्रकाशिनी जैन ग्रन्थावलि।

कलकत्तानिवासी स्वर्गीय **श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी** की पुण्यस्मृतिनिमित्त
तत्सुपुत्र **श्रीमान् बहादुरसिंहजी सिंघी** द्वारा संस्थापित

मुख्य सम्पादक

जिन विजय

अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ, शान्तिनिकेतन

सम्मान्य सभासद-भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर पूना, और गूजरात साहित्यसभा अहमदाबाद;
भूतपूर्वाचार्य-गूजरात पुरातत्त्वमन्दिर अहमदाबाद; तथा अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, पाली,
प्राचीनगूर्जर आदि ग्रंथ संशोधक और सम्पादक।

ग्रन्थांक १०

प्राप्तिस्थान

संचालक, सिंघी जैन ग्रन्थमाला.

शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

स्थापनाब्द] [वि० सं० १९८६

श्रीजिनप्रभसूरिविरचित

विविध तीर्थकल्प

भिन्न भिन्न पाठभेद और विशेषनामानुक्रम समन्वित मूल ग्रन्थ; सरल और सारगर्भित
हिन्दी भाषान्तर; ऐतिहासिक और भौगोलिक वस्तु विवेचक अनेकानेक
टिप्पनियों द्वारा सुविवेचित; तथा सुविस्तृत प्रस्तावना समलङ्कृत

सम्पादक

जिन विजय

जैन वाङ्मयाध्यापक, विश्वभारती.
शान्तिनिकेतन



प्रथम भाग

विविधपाठान्तर-विशेषनामानुक्रमादियुक्त मूलग्रन्थ

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन ज्ञानपीठ.

शान्तिनिकेतन. (बंगाल)

विक्रमाब्द १९९०] प्रथमावृत्ति, एक सहस्र प्रतिः [१९३४ क्रिस्ताब्द

SINGHI JAINA SERIES

A COLLECTION OF CRITICAL EDITIONS OF MOST IMPORTANT CANONICAL, PHILOSOPHICAL, HISTORICAL, LITERARY, NARRATIVE ETC WORKS OF JAINA LITERATURE IN PRĀKRIT, SANSKRIT, APABHRAṂŚA AND OLD VERNACULAR LANGUAGES, AND STUDIES BY COMPETENT RESEARCH SCHOLARS

FOUNDED

BY

ŚRĪMĀN BAHĀDUR SIṄGHJĪ SIṄGHĪ OF CALCUTTA

IN MEMORY OF HIS LATE FATHER

ŚRĪ DĀLCANDJĪ SIṄGHĪ.



GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA

ADHIṢṬHĀTĀ: SIṄGHĪ JAINA JÑĀNAPĪṬHA, ŚĀNTINIKETAN.

HONORARY MEMBER OF THE BHANDARKAR ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE OF POONA AND GUJRAT SAHITYA SABHA OF AHMEDABAD, FORMERLY PRINCIPAL OF GUJRAT PURATATTVAMANDIR OF AHMEDABAD, EDITOR OF MANY SANSKRIT, PRAKRIT, PALI, APABHRAMSHA, AND OLD GUJRATI WORKS.

NUMBER 10

TO BE HAD FROM

SAÑCĀLAKA, SIṄGHĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

Founded] [1931. A. D.

VIVIDHA TĪRTHA KALPA

OF

JINAPRABHA SŪRI

CRITICALLY EDITED IN THE ORIGINAL SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS, HINDI TRANSLATION, NOTES AND ELABORATE INTRODUCTION ETC.

BY

JINA VIJAYA

SIṄGHI PROFESSOR OF JAINA CULTURE AT VIŚVABHĀRATĪ

ŚĀNTINIKETAN.

PART I

TEXT IN SANSKRIT AND PRĀKRIT WITH VARIANTS, AND AN ALPHABETICAL INDEX OF ALL PROPER NAMES.

PUBLISHED BY

THE ADHISṬHĀTĀ, SIṄGHĪ JAINA JÑĀNAPĪṬHA

ŚĀNTINIKETAN. (BENGĀL)

V. E. 1990] *First edition, One Thousand Copies.* [1934 A. D.

॥ सिंघीजैनग्रन्थमालासंस्थापकप्रशस्तिः ॥

अस्ति बङ्गाभिधे देशे सुप्रसिद्धा मनोरमा । मुर्शिदाबाद इत्याख्या पुरी वैभवशालिनी ॥
निवसन्त्यनेके तत्र जैना ऊकेशवंशजाः । धनाढ्या नृपसदृशा धर्मकर्मपरायणाः ॥
श्रीडालचन्द इत्यासीत् तेष्वेको बहुभाग्यवान् । साधुवत् सच्चरित्रो यः सिंघीकुलप्रभाकरः ॥
बाल्य एवागतो यो हि कर्तुं व्यापारविस्तृतिम् । कलिकातामहापुर्यां धृतधर्मार्थनिश्चयः ॥
कुशाग्रया स्वबुद्ध्यैव सद्वृत्त्या च सुनिष्ठया । उपार्ज्य विपुलां लक्ष्मीं जातो कोट्यधिपो हि सः ॥
तस्य मन्नुकुमारीति सन्नारीकुलमण्डना । पतिव्रता प्रिया जाता शीलसौभाग्यभूषणा ॥
श्रीबहादुरसिंहाख्यः सद्गुणी सुपुत्रस्तयोः । अस्त्येष सुकृती दानी धर्मप्रियो धियांनिधिः ॥
प्राप्ता पुण्यवताऽनेन प्रिया तिलकसुन्दरी । यस्याः सौभाग्यदीपेन प्रदीप्तं यद्गृहाङ्गणम् ॥
श्रीमान् राजेन्द्रसिंहोऽस्ति ज्येष्ठपुत्रः सुशिक्षितः । यः सर्वकार्यदक्षत्वात् बाहुर्यस्य हि दक्षिणः ॥
नरेन्द्रसिंह इत्याख्यस्तेजस्वी मध्यमः सुतः । सूनुर्वीरेन्द्रसिंहश्च कनिष्ठः सौम्यदर्शनः ॥
सन्ति त्रयोऽपि सत्पुत्रा आप्तभक्तिपरायणाः । विनीताः सरला भव्याः पितुर्मार्गानुगामिनः ॥
अन्येऽपि बहवश्चास्य सन्ति स्वस्रादिबान्धवाः । धनैर्जनैः समृद्धोऽयं ततो राजेव राजते ॥

अन्यच्च–

सरस्वत्यां सदासक्तो भूत्वा लक्ष्मीप्रियोऽप्ययम् । तत्राप्येष सदाचारी तच्चित्रं विदुषां खलु ॥
न गर्वो नाप्यहंकारो न विलासो न दुष्कृतिः । दृश्यतेऽस्य गृहे क्वापि सतां तद् विस्मयास्पदम् ॥
भक्तो गुरुजनानां यो विनीतः सज्जनान् प्रति । बन्धुजनेऽनुरक्तोऽस्ति प्रीतः पोष्यगणेष्वपि ॥
देश-कालस्थितिज्ञोऽयं विद्या-विज्ञानपूजकः । इतिहासादिसाहित्य-संस्कृति-सत्कलाप्रियः ॥
समुन्नत्यै समाजस्य धर्मस्योत्कर्षहेतवे । प्रचारार्थं सुशिक्षाया व्ययत्येष धनं घनम् ॥
गत्वा सभा-समित्यादौ भूत्वाऽध्यक्षपदाङ्कितः । दत्त्वा दानं यथायोग्यं प्रोत्साहयति कर्मठान् ॥
एवं धनेन देहेन ज्ञानेन शुभनिष्ठया । करोत्ययं यथाशक्ति सत्कर्माणि सदाशयः ॥
अथान्यदा प्रसङ्गेन स्वपितुः स्मृतिहेतवे । कर्तुं किञ्चिद् विशिष्टं यः कार्यं मनस्यचिन्तयत् ॥
पूज्यः पिता सदैवासीत् सम्यग्-ज्ञानरुचिः परम् । तस्मात्तज्ज्ञानवृद्ध्यर्थं यतनीयं मया वरम् ॥
विचार्यैवं स्वयं चित्ते पुनः प्राप्य सुसम्मतिम् । श्रद्धास्पदस्वमित्राणां विदुषां चापि तादृशाम् ॥
जैनज्ञानप्रसारार्थं स्थाने शान्तिनिकेतने । सिंघीपदाङ्कितं जैनज्ञानपीठमतीष्ठिपत् ॥
श्रीजिनविजयो विज्ञो तस्याधिष्ठातृसत्पदम् । स्वीकर्तुं प्रार्थितोऽनेन शास्त्रोद्धाराभिलाषिणा ॥
अस्य सौजन्य-सौहार्द-स्थैर्यौदार्यादिसद्गुणैः । वशीभूयाति मुदा येन स्वीकृतं तत्पदं वरम् ॥
तस्यैव प्रेरणां प्राप्य श्रीसिंघीकुलकेतुना । स्वपितृश्रेयसे चैषा ग्रन्थमाला प्रकाश्यते ॥
विद्वज्जनकृताल्हादा सच्चिदानन्ददा सदा । चिरं नन्दत्वियं लोके जिनविजयभारती ॥

विविधतीर्थकल्पसूचिः—सङ्ग्रहानुक्रमेण ।

विविधतीर्थकल्पसूचिः—अकाराद्यनुक्रमेण ।

A प्रति के अंतिम २ पत्र

B प्रति अंतिम पत्र

C प्रतिअंतिमपत्र

—

D प्रतिअंतिमपत्र

—

E प्रतिअंतिमपत्र

Pa प्रति अंतिम पत्र

Pb प्रति अंतिम पत्र

P प्रति अंतिम पत्र

Pt प्रतिका ५१ वां और ५३ वां पत्र.

प्रास्ताविक निवेदन ।

§ १. विविध तीर्थकल्प

श्रीजिनप्रभसूरि रचित **कल्पप्रदीप**–अथवा विशेषतया प्रसिद्ध **विविध तीर्थकल्प**–नामका यह ग्रन्थ जैन साहित्यकी एक विशिष्ट वस्तु है। ऐतिहासिक और भौगोलिक दोनों प्रकारके विषयोंकी दृष्टिसे इस ग्रन्थका बहुत कुछ महत्त्व है। जैन साहित्य-ही-में नहीं, समग्र भारतीय साहित्यमें भी इस प्रकारका कोई दूसरा ग्रन्थ अभी तक ज्ञात नहीं हुआ। यह ग्रन्थ, विक्रमकी १४ वीं शताब्दीमें, जैन धर्मके जितने पुरातन और विद्यमान प्रसिद्ध प्रसिद्ध तीर्थस्थान थे उनके सम्बन्धकी प्रायः एक प्रकारकी 'गाईड-बुक' है। इसमें वर्णित उन उन तीर्थोंका संक्षिप्त रूपसे स्थानवर्णन भी है और यथाज्ञात इतिहास भी है।

§ २. ग्रन्थकार आचार्य

ग्रन्थकार अपने समयके एक बडे भारी विद्वान् और प्रभावशाली जैन आचार्य थे। जिस तरह, विक्रमकी १७ वीं शताब्दीमें, मुगल सम्राट् अकबर बादशाहके दरबारमें जैन जगद्गुरु हीरविजय सूरिने शाही सन्मान प्राप्त किया था, उसी तरह जिनप्रभ सूरिने भी, १४ वीं शताब्दीमें तुघलक सुलतान महम्मद शाहके दरबारमें बडा गौरव प्राप्त किया था। भारतके मुसलमान बादशाहोंके दरबारमें, जैन धर्मका महत्त्व बतलानेवाले और उसका गौरव बढानेवाले, शायद, सबसे पहले ये ही आचार्य हुए।

इनकी प्रस्तुत रचनाके अवलोकनसे ज्ञात होता है, कि इतिहास और स्थल-भ्रमणसे इनको बडा प्रेम था। इन्होंने अपने जीवनमें भारतके बहुतसे भागोंमें परिभ्रमण किया था। गूजरात, राजपूताना, मालवा, मध्यप्रदेश, बराड, दक्षिण, कर्णाटक, तेलंग, बिहार, कोशल, अवध, युक्तप्रांत और पंजाब आदिके कई पुरातन और प्रसिद्ध स्थानोंकी उन्होंने यात्रा की थी। इस यात्राके समय, उस उस स्थानके बारेमें, जो जो साहित्यगत और परंपराश्रुत बातें उन्हें ज्ञात हुई उनको उन्होंने संक्षेपमें लिपिबद्ध कर लिया और इस तरह उस स्थान या तीर्थका एक कल्प बना दिया। और साथ-ही-में, ग्रन्थकारको संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओंमें, गद्य और पद्य दोनों ही प्रकारसे, ग्रन्थरचना करनेका एकसा अभ्यास होनेके कारण, कभी कोई कल्प उन्होंने संस्कृत भाषामें लिख लिया तो कोई प्राकृतमें; और इसी तरह कभी किसी कल्पकी रचना गद्यमें कर ली तो किसीकी पद्यमें। किसी एक स्थानके बारेमें पहले एक छोटीसी रचना कर ली और फिर पीछेसे कुछ अधिक वृत्त ज्ञात हुआ, और वह लिपिबद्ध करने जैसा प्रतीत हुआ, तो उसके लिये परिशिष्टके तौर पर और एक कल्प या प्रकरण लिख लिया गया। इस प्रकार भिन्न भिन्न समयमें और भिन्न भिन्न स्थानोंमें, इन कल्पोंकी रचना होनेसे, इनमें किसी प्रकारका कोई क्रम नहीं रह सका।

§ ३. ग्रन्थरचनाकी कालावधि

ग्रन्थकी इस प्रकार खण्डशः रचना होते रहनेके कारण सारे ही संग्रहके संपूर्ण होनेमें बहुत दीर्घ समय व्यतीत हुआ माल्रुम देता है। कमसे कम ३० से अधिक वर्ष जितना काल लगा हुआ होगा। क्यों कि, जिन कल्पोंमें रचनाका समय-सूचन करनेवाला संवत् आदिका उल्लेख है, उनमें सबसे पुराना संवत् १३६४ मिलता है जो **वैभारगिरि**कल्प [क्र० ११, पृ० २३] के अन्तमें दिया हुआ है। ग्रन्थकारका किया हुआ ग्रन्थकी समाप्तिका सूचक जो अन्तिमोल्लेख है, उसमें संवत् १३८९ का निर्देश है। इससे २५ वर्षोंके जितने कालका सूचन तो, स्वयं ग्रन्थके इन दो उल्लेखोंसे ही ज्ञात हो जाता है; लेकिन वैभारगिरि कल्पके पहले भी कुछ कल्पोंकी रचना हो गई थी, और संवत् १३८९ के बाद भी कुछ और कल्प या कृति अवश्य बनी थी, जिसका कुछ स्पष्ट सूचन ग्रन्थगत अन्यान्य उल्लेखोंसे होता है। इसी कारणसे, ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक जो कथन है वह, किसी प्रतिमें तो कहीं मिलता है और किसीमें कहीं। और यही कारण, प्रतियोंमें कल्पोंकी संख्याका न्यूनाधिकत्व होनेमें भी है।

§ ४. ग्रन्थगत विषय-विभाग

इस ग्रन्थमें, भिन्न भिन्न विषय या स्थानोंके साथ सम्बन्ध रखनेवाले सब मिला कर ६०–६१ कल्प या प्रकरण हैं। इनमें से, कोई ११–१२ तो स्तुति-स्तवनके रूपमें हैं, ६–७ चरित्र या कथाके रूपमें हैं, और शेष ४०–४१, न्यूनाधिकतया, स्थानवर्णनात्मक हैं। पुनः, इन स्थानवर्णनात्मक कल्पोंमेंसे, **चतुरशीति महातीर्थनामसंग्रह** जो कल्प [क्रमांक ४५] है उसमें तो प्रायः सभी प्रसिद्ध और ज्ञात तीर्थस्थानोंका मात्र नाम-निर्देश किया गया है। **पार्श्वनाथ**कल्प [क्र० ६] में पार्श्वनाथके नामसे सम्बद्ध ऐसे कई स्थानोंका उल्लेख है। **उज्जयन्त** अर्थात् **रैवतगिरि**का वर्णन करने वाले भिन्न भिन्न ४ कल्प [क्र० २–३–४–५] हैं। **स्तंभनक तीर्थ** और **कन्यानयमहावीर तीर्थ**के सम्बन्धमें दो दो कल्प हैं। इस प्रकार, अन्य विषय वाले तथा पुनरावृत्ति वाले जितने कल्प हैं उनको छोड कर, केवल स्थानोंकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो, इस ग्रन्थमें कुल कोई ३७–३८ तीर्थ या तीर्थभूत स्थानोंका, कुछ इतिहास या स्थानपरिचय-गर्भित वर्णन दिया हुआ मिलता है।

§ ५. स्थानोंका प्रान्तीय विभाग

यदि इन सब स्थानोंको प्रान्त या प्रदेशकी दृष्टिसे विभक्त किये जायं तो इनका पृथक्करण कुछ इस प्रकार होगा–

गूजरात और काठियावाड

शत्रुंजयमहातीर्थ [क्र० १]
उज्जयन्त (रैवतगिरि) तीर्थ [क्र० २–३–४–५]
अश्वावबोधतीर्थ [क्र० १०]
स्तंभनकपुर [क्र० ६, ५९]
अणहिलपुरस्थित अरिष्टनेमि [क्र० २६]
,, कोकावसति [क्र० ४०]
शंखपुरतीर्थ [क्र० २७]
हरिकंखीनगर [क्र० २९]

युक्तप्रान्त और पंजाब

अहिच्छत्रपुर [क्र० ७]
हस्तिनापुर [क्र० १६, ५०]

राजपूताना और मालवा

अर्बुदाचलतीर्थ [क्र० ८]
सत्यपुरतीर्थ [क्र० १७]
शुद्धदन्तीनगरी [क्र० ३१]
फलवर्द्धितीर्थ [क्र० ६०]
ढींपुरीतीर्थ [क्र०४३–४४]
कुडुंगेश्वरतीर्थ [क्र० ४७]
अभिनंदनदेवतीर्थ [क्र० ३२]

अवध और बिहार

वैभारगिरि [क्र० ११]
पावा या अपापापुरी [क्र० २१, १४]
पाटलीपुत्र [क्र० ३६]

ढिल्ली या दिल्ली [क्र० ५१]
मथुरा [क्र० ९]
वाराणसी [क्र० ३८]
कौशांबी [क्र० १२]

चंपापुरी [क्र० ३५]
कोटिशिला [क्र० ४१]
कलिकुंडकुर्कुटेश्वर [क्र० १५]
मिथिला [क्र० १९]
रत्नपुर [क्र० २०]
कांपिल्यपुर [क्र० २५]
अयोध्यापुरी [क्र० १३]
श्रावस्तीनगरी [क्र० ३७]

दक्षिण और बराड

नासिक्यपुर [क्र० २८]
प्रतिष्ठानपत्तन [क्र० २३]
अन्तरिक्षपार्श्वतीर्थ [क्र० ५८]

कर्णाटक और तेलंगण

कुल्यपाक माणिक्यदेव [क्र० ५२, ५७]
आमरकुंड पद्मावती [क्र० ५३]
कन्यानयमहावीर [क्र० २२, ५१]

§६. विस्तृत विवेचन दूसरे भागमें

ग्रन्थगत इन सब स्थानोंका विस्तृत परिचय, इतिहास और हिंदी भाषान्तर आदि दूसरे भागमें देनेका हमारा संकल्प है। ग्रन्थकारका विशेष परिचय भी वहीं दिया जायगा। अतः यहां पर अधिक लिखना अनावश्यक होगा।

§७. प्रतियोंका परिचय

प्रस्तुत आवृत्तिके संशोधन और सम्पादन करनेमें हमने जिन पुरातन हस्तलिखित प्रतियोंका उपयोग किया है उनका परिचय इस प्रकार है–

A प्रति–अहमदाबादके डेलाके नामसे प्रसिद्ध जैन उपाश्रयमें संरक्षित ग्रन्थ भाण्डारकी प्रति । पत्र संख्या ५८ । इस प्रतिमें सब कल्पोंका पूरा संग्रह है । कलिकुंड-कुर्कुटेश्वर नामका कल्प–प्रस्तुत आवृत्तिका क्रमांक १५–दो दफह लिखा हुआ है । प्रतिकी लिखावट साधारण ढंगकी है और पाठ-शुद्धि भी प्रायः साधारण ही है । हमने जितनी प्रतियोंका संग्रह किया उनमें यह सबसे पुरानी है। विक्रम संवत् १४६६ में यह लिखी गई है। इसके अंतमें जो पुष्पिका लेख है वह पृष्ठ १३५ पर मुद्रित है । उससे ज्ञात होता है कि 'श्रीमालीवंशमें पैदा होनेवाले देवा व्यवहारी और उसकी पत्नी हासलदेवीके मांडण, पद्मसिंह और मालदेव नामके तीन पुत्रोंने अपने माता-पिताके श्रेयोऽर्थ इस ग्रंथकी यह प्रति लिखवाई ।' इस प्रतिके अंतिम पृष्ठ पर ग्रन्थगत सब कल्पोंकी सूचि भी लिखी हुई है जो अन्य किसी प्रतिमें उपलब्ध नहीं होती ।

B प्रति–उक्त भाण्डारकी दूसरी प्रति, जिसकी पत्र संख्या ३८ है । इस प्रतिमें कुल २९ कल्प लिखे हुए मिलते हैं। प्रस्तुत आवृत्तिके क्रमांक १४. १९. २३. २५. २९. ३१ से ३३, और ३५ से ५८ तकके कल्प इसमें अनुपलब्ध हैं। ग्रन्थकी समाप्तिका सूचक जो कथन है वह भी इसमें अनुल्लिखित है । प्रतिकी लिखावट सुंदर है और पाठ भी कुछ अधिक शुद्ध है । अंतमें लिखने-लिखाने वालेका कोई निर्देश नहीं है । 'शुभं भवतु श्रीश्रमण-संघस्य ॥ श्री॥' इतना ही उल्लेख किया हुआ है। इससे प्रतिके लिखे जानेके समयका कोई सूचन नहीं मिलता । पत्रोंकी स्थिति देखते हुए अनुमान किया जा सकता है कि प्रायः ४०० वर्ष जितनी पुरानी यह अवश्य होगी ।

C प्रति–इसी भाण्डागारमें की तीसरी प्रति । पत्र संख्या ४१ । इसमें कुल मिला कर ५२ कल्प लिखे हुए हैं। इसका प्रारंभ उज्जयंततीर्थकल्प–इस आवृत्तिके ४ थे कल्प–से होता है । पहले तीन कल्प इसमें बिल्कुल

ही नहीं हैं। बीचमें, **अपापाबृहत्कल्प,** जो इस ग्रंथमें सबसे वडा कल्प है, वह भी नहीं है। तदुपरांत, **चतुरशीति महातीर्थनामसंग्रहकल्प** (क्रमांक ४५) और **अष्टापदगिरिकल्प** (क्रमांक ४९) भी इसमें सम्मीलित नहीं है। ग्रंथकारका किया हुआ ग्रंथ समाप्ति-सूचक जो कथन है, वह इस प्रतिमें, **व्याघ्रीकल्प**-(क्रमांक ४८) के अन्तमें–प्रति पत्र ३६ की प्रथम पृष्टिपर–लिखा हुआ है। उसके बाद फिर **हस्तिनापुर स्तवन** आदि कल्प लिखे गये हैं (–द्रष्टव्य कोष्ठक)। इस प्रतिके कल्पक्रमसे, इस बातका कुछ आभास मिल सकता है कि यह ग्रंथ किस क्रमसे बना हुआ होगा। इसके अक्षर सुन्दर, और स्पष्ट है। पाठ भी बहुत कुछ शुद्ध है। अंतमें लिखने-लिखाने वालेका कोई निर्देश नहीं है। सम्भवतः यह भी चार सौ वर्ष जितनी पुरानी होगी।

D प्रति–उसी स्थानकी ४ थी प्रति। पत्र संख्या ४५। अक्षर अच्छे और सुवाच्य हैं परंतु पाठ साधारण है। इसमें कोई ३२ प्रकरण लिखे हुए हैं। इसका प्रारंभ **मथुराकल्प** (क्रमांक ९) से, और अंत **कोकावसतिपार्श्वनाथकल्प** (क्रमांक ४०) से होता है। इस प्रकार इसमें आदिके ८ और अंतके २१ कल्प या प्रकरण नहीं हैं, अतः यह एक प्रकारका अपूर्ण संग्रह है। इस प्रतिमें भी लिखने-लिखाने वालेका कोई पुष्पिका लेख नहीं है; इससे यह नहीं ज्ञात हो सकता कि यह प्रति कब लिखी गई है। परंतु, इसके अंतमें जो ५ पद्योंका एक छोटासा प्रशस्ति-लेख, जो कि पीछेसे लिखा गया मालूम देता है, उससे इतना ज्ञात हो सकता है कि विक्रम संवत्की १७ वीं शताब्दीके शेष चरणके पहले यह कभी लिखी गई होगी। इस प्रशस्ति-लेखसे विदित होता है कि–अकबर बादशाहने जिनको जगद्गुरुका पद प्रदान किया उन आचार्य हीरविजय सूरिके शिष्य आचार्य विजयसेनके पट्टधर आचार्य विजयतिलक सूरिके समयमें, विजयसेन सूरि-ही-के शिष्य रामविजय विबुधने, जो हैमव्याकरण, काव्यप्रकाश आदि शास्त्रोंके निष्णात पंडित थे, इस प्रतिको उस ज्ञानभंडारमें स्थापित की, जिसमें पंद्रह लाख पुस्तकें† संगृहीत की गई थीं।

Pa प्रति–पूनाके भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधन मन्दिरमें संरक्षित राजकीय-ग्रंथ-संग्रहकी ६२ पत्र वाली प्रति। यह प्रति संपूर्ण है और इसमें A प्रतिके समान ही सब कल्पोंका संग्रह है। सिर्फ **पंचकल्याणकस्तवन** (क्रमांक ५६) जो सोमसूरिकी कृति है, वह इसमें नहीं है। इस प्रकार इसमें कुल ५८ प्रकरण उपलब्ध हैं। **कलिकुंड-कुर्कुटेश्वर** नामका कल्प (क्रमांक १५) इसमें भी A प्रतिके समान दो दफह लिखा हुआ है। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक कथन इसमें **अष्टापदकल्प** (क्रमांक ४९) के अन्तमें–पृष्ठ ५३ की दूसरी पूंठी पर–लिखा हुआ है। इसके बाद फिर **हस्तिनापुरतीर्थस्तवन** आदि प्रकरण लिखे हुए हैं। अन्तमें फिर कोई दूसरा निर्देश नहीं है। लिपिकारने **"सं० १५२७ वर्षे आषाढ सुदि ७ गुरौ सर्वत्र संख्या अलावा ग्रंथाग्रं ३६०२५ संख्या ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥"** इस प्रकारका उल्लेख किया है जिससे यह प्रति कब लिखी गई इसका मात्र सूचन मिलता है। इसकी लिखावट अच्छी और स्पष्ट है। पाठ भी प्रायः बहुत कुछ शुद्ध मिलता है।

Pb प्रति–यह प्रति भी पूनाके उक्त संग्रहकी है। इसकी पत्र संख्या ८५ है। इसमें आदिसे लेकर ५५ वें क्रमांक तकके प्रकरणोंका संग्रह है, और इसी क्रममें है। अन्तके ५ कल्प इसमें नहीं हैं। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक जो कथन है वह इसमें दो जगह लिखा हुआ मिलता है। एक तो Pa प्रतिकी तरह **अष्टापदकल्प** (क्रमांक ४९) के अंतमें–पत्र ७८ की द्वितीय पूंठी पर–और दूसरा अन्तिम पत्र पर, जहां **कल्याणकस्तवन** समाप्त

† इन पंदरह लाख पुस्तकोंसे मतलब पंदरह लाख श्लोकका मालूम देता है; न कि पंदरह लाख प्रतियों या पोथियोंका। रामविजय विबुधने अपने परिश्रमसे एक ऐसा ज्ञानभंडार स्थापित किया था जिसमें जितने ग्रंथ या प्रतियां थीं उनकी सब श्लोक संख्या, गिनने पर पंदरह लाख जितनी होती थी। शायद यह भंडार पाटणमें था।

होता है। प्रति है तो पुरातन; लेकिन अन्तमें समय इत्यादिका सूचक कोई उल्लेख न होनेसे निश्चयात्मक कुछ नहीं कहा जा सकता। यह प्रति बिल्कुल बेपर्वाईसे लिखी गई प्रतीत होती है। लिपिकार कोई नया सिखाऊ और अपठित मालूम देता है। उसको पुरानी लिपिका बहुत कम परिचय है। संस्कृत-प्राकृत भाषाका उसको किञ्चित् भी ज्ञान नहीं है। भाषानभिज्ञताके कारण आकृतिसाम्यवाले अक्षरोंकी नकल करनेमें वह वारंवार गलती करता है और एक अक्षरकी जगह दूसरा अक्षर लिख डालता है। कहीं **तीर्थराज** के स्थान पर **नीर्घराज** लिख देता है तो कहीं **तत्र** की जगह **तव** या **नव** बना देता है। ५ वें प्रकरणका पहला पद **पच्छिमदिसाए** है जिसको उसने **एत्थिमहिसाण** लिखा है–**प** का **ए**, **च्छि** का **त्थि**, **दि** का **हि** और **ए** का **ण** में परिवर्तन कर ६ अक्षर वाले एक ही पदमें ४ अक्षर उसने बदल दिये हैं। कहीं **द्रष्टव्यं** की जगह **द्रव्यं** और **गंतव्यं** की जगह **गव्यं** लिख कर शब्दके बीचके अक्षर ही उडा देता है, तो कहीं अनुस्वारको आगे पीछे लिख कर **एतं रचयां°** का **एतरंचयां°** बना डालता है। किस अक्षरका कौन काना है और कौन मात्रा है इसका भी उसको ठीक ठीक खयाल नहीं रहता; इस लिये **अवरजे**की जगह **अवराज** कर देता है और **पात्र**के बदले **पत्रे** लिख लेता है। इस तरह लिपिकर्ताके अज्ञानके कारण इस प्रतिका पाठ बहुत जगह भ्रष्ट हो गया है। हमने इसका उपयोग प्रायः वहीं किया है जहां और और प्रतियोंमें खास सन्देह उत्पन्न हुआ है। पंचकल्याणक स्तवन, जो सोमसूरिकी कृति है, A प्रतिके सिवा इसी प्रतिमें उपलब्ध है। उसका पाठ निश्चित करनेमें इसीका सहारा मिला।

P प्रति–पूनावाले उसी संग्रहमेंकी एक तीसरी प्रति जिसकी पत्रसंख्या ३२ है। इस प्रतिमें कुल ४८ कल्प लिखे हुए हैं। इसमें **पंचपरमेष्ठिनमस्कार** नामका जो कल्प है वह ऊपरवाली और और प्रतियोंमें नहीं मिलता। यह कल्प इसमें **चतुरशीति तीर्थनामसंग्रहकल्प**के अन्तमें–पत्र २६ की पहली पूंठी पर–लिखा हुआ है। हमने इसको परिशिष्टके रूपमें सबके अन्तमें रखा है। इसके सिवा इस संग्रहका जो क्रम है वह सब प्रतियोंसे भिन्न है। कई कल्प, अन्यान्य प्रतियोंके हिसाबसे, आगे-पीछे लिखे हुए हैं। उदाहरणके लिये, अन्य सब प्रतियोंमें **उज्जयन्तस्तव**का क्रमांक ३ रा है, इसमें उसका ५ वां है। इसके बाद ही **अंबिकाकल्प** लिखा हुआ है जो A B और Pa प्रतिमें सबके अन्तमें दिया हुआ है। **अंबिकाकल्प**के बाद **कपर्दियक्षकल्प** लिखा गया है जिसका क्रमांक अन्यान्य प्रतियोंके मुताबिक ३० वां है। **अर्बुदकल्प** जिसका क्रमांक अन्य संग्रहानुसार ८ वां है उसका इसमें ३८ वां है। इस प्रकार प्रायः बहुतसे कल्प इसमें आगे-पीछे लिखे हुए हैं। संपूर्ण तालिका कोष्ठकमें दी गई है जिससे जिज्ञासु पाठक मिलान कर सकते हैं। **वस्तुपाल-तेजःपालमन्त्रिकल्प** (क्रमांक ४२) इसमें लिखा हुआ नहीं है लेकिन उसके स्थानपर, उस कल्पमें जो अन्तमें ३ श्लोक लिखे हुए हैं [देखो पृष्ठ० ८०, पंक्ति १८–२०] वे इसमें दिये हुए हैं। **अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प** अन्यान्य संग्रहोंमें प्राकृत भाषामें लिखा हुआ है, इसमें उसका संस्कृत रूपान्तर है। इसी तरह **हरीकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्प** (क्रमांक २९) का भी इसमें संस्कृत भाषान्तर दिया हुआ है। इस कल्पके अन्तमें लिखा है कि–

इति श्री [हरि] कंखीनगरमंडनश्रीपार्श्वनाथकल्पः प्रभुश्रीजिनप्रभसूरिभिः कृतयो (?) प्राकृते। न वा० गुणक [ल?] श श्रीराजगच्छीय संस्कृते मज्झधत्त (?)॥ (पत्र १३, पूंठी २, पंक्ति १९–२०)

इस अशुद्धिबहुल पंक्तिका तात्पर्यार्थ यह मालूम देता है, कि राजगच्छीय वा० (वाचक) गुणक [ल] श नामके किसी पंडितने, जिनप्रभसूरिकृत प्राकृत कल्पको संस्कृतमें बनाया। इससे प्रतीत होता है कि उक्त **अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्प**को भी उसीने संस्कृतमें रूपान्तरित किया होगा। क्यों कि ये दोनों कल्प इस प्रतिमें एक

साथ लिखे हुए हैं। इस संग्रहमें १५. १६. १८. ३३. ३४. ४२. ४६. ५१ से ५६ तक—इस प्रकार **१३** कल्प अनुपलब्ध हैं।

यद्यपि इस प्रतिमें कल्पोंका क्रम, अन्य सब प्रतियोंसे भिन्न प्रकारका है; तथापि वह कुछ अधिक संगत मालूम देता है। गिरनार अर्थात् उज्जयंत अथवा रैवतक पर्वतसे संबंध रखनेवाले जो ४ कल्प प्रस्तुत ग्रन्थमें हैं, वे जिस क्रमसे इस प्रतिमें लिखे गये हैं वह क्रम अधिक ठीक लगता है। उन्हींके बाद इसमें **अंबिकादेवी**-का कल्प है जिसका भी सम्बन्ध एक प्रकारसे रैवतक पर्वतके साथ होनेसे, उसका यह स्थान ठीक सम्बन्धयुक्त मालूम देता है। अम्बिकाकल्पके बाद ही जो **कपर्दियक्षकल्प** लिखा हुआ है वह भी उचित स्थानस्थित दिखाई दे रहा है। बल्कि इस कल्पके अन्तमें तो ग्रन्थकारका कथन भी इस बातको सूचित करता है कि उन्होंने **अम्बादेवी** और **कपर्दियक्ष,** इस **कल्पयुग**की (देखो पृष्ठ ५६ का अन्तिम उल्लेख) एक साथ रचना की। ऐसा उल्लेख होने पर भी ये दोनों कल्प, और सब प्रतियोंमें क्यों भिन्न-क्रममें लिखे गये मिलते हैं इसका कोई कारण समझमें नहीं आता। उसमें भी अम्बिकाकल्प तो बिल्कुल ग्रन्थके अन्तमें जा पडा है जिससे बहुतसी प्रतियोंमें तो वह अनुल्लिखित ही रह जाता है। इसी तरह क्रमांक २६ और ४० वाले कल्प इस प्रतिमें साथ साथ लिखे हुए मिलते हैं जो अधिक यथास्थित कहे जा सकते हैं। क्यों कि दोनोंका स्थान एक ही (पाटण) है। सबके अन्तमें **कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प** (क्रमांक २२) रखा है और उसके अंतमें ग्रन्थ-समाप्तिसूचक कथन दिया है—सो भी एक प्रकारसे सम्बन्धयुक्त दिखाई देता है।

इस प्रतिमें जिन कल्पोंका संग्रह है उनके अवलोकनसे मालूम देता है कि प्रायः मुख्य मुख्य कल्प इसमें सब आगये हैं। जो इसमें संगृहीत नहीं है उनमें **कलिकुंडकुर्कुटेश्वर** (१५), **हस्तिनापुर** (१६), **प्रतिष्ठानपुर** (३३), **सातवाहनचरित्र** (३४), **वस्तुपाल-तेजःपाल** (४२), **कन्यानयनीयपरिशेष** (५१) और **अमरकुंडपद्मावती** (५३) नामके कल्प कुछ महत्त्वके हैं। बाकीके कल्प तो नाम मात्रके कल्प हैं। वास्तवमें वे तो स्तुति-स्तोत्र हैं जिनका ग्रन्थगत उद्देश्यके साथ कोई खास सम्बन्ध नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि जिसने इस प्रतिको तैयार किया है उसने कुछ विचारपूर्वक प्रयत्न किया है। इस प्रयत्नका कर्ता कौन है उसका कोई निर्णायक उल्लेख नहीं प्राप्त होता। क्या जिस राजगच्छीय वाचक गुणकलश (?) ने उक्त दो कल्पोंका संस्कृत रूपांतर करनेका प्रयत्न किया है उसीने तो यह संग्रह इस क्रममें नहीं ग्रथित किया हो?।

इस प्रति के अक्षर यद्यपि स्पष्ट और सुवाच्य हैं तथापि पाठशुद्धि कोई विशेष उल्लेखयोग्य नहीं है। हां, कहीं कहीं इसका पाठ, अन्य प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक उपयुक्त मिल जाता है जो सन्दिग्ध स्थानमें ठीक मदद-गार हो जाता है।

प्रतिके अन्तमें जो पुष्पिकालेख है उससे विदित होता है कि—संवत् १५६९ के आषाढ महिनेमें—सुदि १ सोमवार और पुनर्वसुनक्षत्रवाले दिनको—वैरिसिंहपुरके रहनेवाले श्रीमाली ज्ञातिके बहकटा गोत्रीय महं० जिणदत्तके पुत्र, महं० भाजाके पुत्र, महं० रायमल नामक श्रावकने इस ग्रन्थको लिखवा कर, खरतर गच्छके आचार्य श्रीजिनभद्र सूरिके शिष्य आचार्य श्रीजिनचंद्र सूरिके शिष्य आचार्य श्रीजिनेश्वर सूरिके शिष्य वाचक साधुकीर्ति गणीको समर्पित किया। यह पुष्पिकालेख ग्रन्थान्तमें, पृष्ठ ११० पर, मुद्रित है।

Pc प्रति- उपर्युक्त स्थानमेंकी एक चौथी प्रति। इसकी **पत्र** संख्या २४ है। यह एक अपूर्ण संग्रह है। इसका प्रथम पत्र है उस पर ३० का क्रमांक लिखा हुआ है। ३० से लेकर ५३ तकके पत्रे इसमें उपलब्ध हैं। इसका प्रारंभ **चम्पापुरीकल्प** (क्रमांक ३५) से होता है, और समापन **कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्प** (क्र० २२) के साथ होता है। इसमें सब मिलाकर १६ कल्प लिखे हुए हैं और उनका क्रम इस प्रकार है—

१ चम्पापुरीकल्प	९ ढींपुरीस्तोत्र
२ पाटलीपुत्रपुरकल्प	१० नन्दीश्वरकल्प
३ वाणारसी नगरीकल्प	११ महावीरगणधरकल्प
४ मन्त्रिद्वयकल्प, (मात्र ३ श्लोक)	१२ चतुरशीति तीर्थनामसंग्रहकल्प
५ कुडुंगेश्वरनाभेयकल्प	१३ पंचपरमेष्ठिनमस्कारकल्प
६ अर्बुदकल्प	१४ रत्नवाहपुरकल्प
७ अभिनन्दनदेवकल्प	१५ पावापुरीकल्प (बृहत्)
८ प्रतिष्ठानपुरकल्प (स्तोत्र)	१६ कन्यानयनीयमहावीरकल्प

इस क्रमके देखनेसे ज्ञात होता है कि, सिर्फ पहले कल्पको छोड कर, बाकी के १५ ही कल्प, ठीक उसी क्रममें लिखे हुए हैं, जिस तरह उपर्युल्लिखित P प्रतिमें लिखे हुए हैं। १ से २८ तकके पत्र अनुपलब्ध होनेसे, इस संग्रहमें कुल कितने कल्प होंगे और वे सब किस क्रममें होंगे, उसका कुछ निर्णय नहीं किया जा सकता और निश्चयात्मक रूपसे यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह संग्रह ठीक P संग्रह-ही-का अनुसरण करनेवाला है। ग्रन्थ-समाप्ति-सूचक कथन इसमें अन्तिम कल्पके अन्तमें लिखा हुआ है। लेकिन लिखावट और अक्षरोंके देखनेसे माऌम पडता है कि यह कल्प–जो दो पन्नोंमें है–पीछेसे लिख कर इस प्रतिमें मिलाया गया है । क्यों कि असल लिपिकर्ताने अपनी यह प्रति ५१ वें पत्रमें समाप्त कर दी है और उसका सूचक पुष्पिकालेख भी अन्तमें इस तरह लिख दिया है–

॥ समाप्तः श्रीअपापाकल्पः। श्रीदीपोत्सवकल्पश्च ॥ संवत् १५०५ वर्षे फागुणवदि ११ गुरौ। धंधूकानगरस्थाने वा० धर्मसुंदर गणिना ल(लि)खितं ॥

इस प्रतिमें दो-तीन तरह की लिखावट दिखाई देती है; इससे माऌम होता है कि दो-तीन व्यक्तियोंने मिल कर इसे लिखा है। पाठशुद्धि साधारण है।

E प्रति–पूना ही के उक्त संग्रहमेंकी पांचवीं प्रति जिसमें केवल एक **अपापाबृहत्कल्प** (क्र० २०) लिखा हुआ है। प्रति पुरातन और अच्छी है। लिखे जानेके समयका कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन 'ऋषि भरमा–ऋषि मोकाके पढनेके लिये मुनि चांपाने पींडरवाडा ग्राममें इस प्रतिको लिखा' इतना पता अन्तिम पुष्पिका-लेखसे जरूर लगता है।

§८. पाठभेद-संग्रहकी पद्धति

पाठभेदोंके संग्रह करनेकी हमारी जो पद्धति है उसका परिचय हमने प्रबन्धचिन्तामणिके प्रथम भागकी प्रस्तावनामें कुछ दे दिया है। इस ग्रन्थमें भी हमने उसी पद्धतिका अनुसरण किया है । व्याकरण या शब्दके स्वरूपकी दृष्टिसे जो जो पाठ हमें शुद्ध माऌम देते हैं उन्हें हम पाठभेदके रूपमें संगृहीत कर लेते हैं । लिपि-कर्ताओंकी अज्ञानता अथवा अनवधानताके कारण जो अगणित शब्द-अशुद्धियां जहां तहां प्रतियोंमें दृष्टिगोचर होती रहतीं हैं उन सबका संचय कर, ग्रन्थकी केवल पाद-टिप्पनियोंका कलेवर बढाना हम निरर्थक समझते हैं।

§९. तीर्थकल्पकी प्रसिद्धि

स्वर्गीय प्रोफेसर पी. पीटर्सनने, बम्बई इलाखेमें संस्कृत ग्रन्थोंका अन्वेषण कर उस विषयकी जो ६ रीपोर्ट पुस्तकें लिखीं, उनमेंकी ४ थी रीपोर्टमें, जिनप्रभसूरि रचित इस तीर्थकल्पका उन्होंने कुछ परिचय दिया और

कल्पोंकी नामावली प्रकाशित की*; तबसे इतिहासान्वेषक विद्वानोंका लक्ष्य इस ग्रन्थकी ओर आकर्षित हुआ। स्वर्गवासी शंकर पाण्डुरंग पण्डित एम्. ए. ने स्वसम्पादित **गउडवहो** नामक प्राकृत काव्य-ग्रन्थकी प्रस्तावनामें, तीर्थकल्पगत मथुराकल्पमेंसे आमराज और बप्पभट्टी सूरिके सम्बन्धका एक उल्लेख उद्धृत किया†। तदनन्तर, प्रवर पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. जी. ब्युह्लरने, मथुराके जैन शिला-लेखोंका सम्पादन और विवेचन करते समय, इस ग्रन्थका साद्यन्त अवलोकन किया और उसीके सिलसिलेमें मथुराकल्पपर एक स्वतंत्र निबन्ध लिखकर, वह मूल कल्प, उसके अंग्रेजी भाषान्तरके साथ, विएना (आस्ट्रिया) से प्रकट होनेवाले प्राच्यविद्याविषयक राजकीय वृत्तपत्र (जर्नल) में प्रकाशित किया‡। बादमें और भी कई विद्वानोंने इस ग्रन्थके ऐतिहासिक अवतरणोंका जहां तहां उल्लेखादि करके इसकी उपयोगिता तर्फ तज्ज्ञोंके मनमें उत्सुकता उत्पन्न की।

§ १०. प्रस्तुत प्रकाशन

कोई २० वर्ष पहले, जब हमने बडौदामें पूज्यपाद प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजकी चरणसेवामें रहते हुए, विज्ञप्तित्रिवेणि आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंका संशोधन-संपादन-प्रकाशनादिका कार्य शुरू किया, तभी, इस ग्रन्थको भी प्रकाशमें लानेके लिये हमारा प्रयत्न शुरू हुआ था। प्रवर्तकजी महाराजके शिष्यप्रवर और ग्रन्थ-संशोधन-सम्पादनादिकार्यमें अविरत परिश्रम करनेवाले तथा पाटण आदिके ज्ञानभाण्डारोंकी सुव्यवस्था करनेमें अथक उद्यम करनेवाले, यथार्थ जिनप्रवचनोपासक, सुचतुर मुनिवर श्रीचतुरविजयजी महाराजके प्रयत्नसे, सुरतके श्रीमन्मुनिमोहनलालजी ज्ञानभंडारमेंसे इस ग्रन्थकी ताडपत्र पर लिखी हुई एक पुरातन प्रति, तथा बडौदा खंभायत आदिके भंडारोंमेंसे कुछ और प्रतियां भी प्राप्त की गईं। इस प्रकार प्रतियां इकट्ठी होने पर, प्रेसके लिये, उन परसे कॉपी तैयार करनेका हम उपक्रम करना ही चाहते थे कि, उसी बीचमें, पूनासे, प्रो० देवदत्त रामकृष्ण भाण्डारकर, जो उन दिनोंमें आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इन्डिया वेस्टर्न सर्कलके सुप्रीन्टेन्डेन्ट थे, प्रसंगवश बडौदामें आये और जैन उपाश्रयमें हम लोगोंसे मिले। बातचीतमें उन्होंने कहा कि हम और जयपुरवाले पण्डित केदारनाथजी मिलकर तीर्थकल्पका संपादन करना चाहते हैं और कलकत्ताकी एशियाटिक सोसायटी द्वारा उसे प्रकाशित कराना चाहते हैं। अध्यापक भाण्डारकर जैसे समर्थ विद्वानके हाथसे इस ग्रन्थका सम्पादन होना जान-सुन कर हमको बडा आनन्द हुआ और हमने अपना उक्त कार्य स्थगित कर दिया; इतना ही नहीं लेकिन, उनके अनुरोध करने पर, उनकी करवाई हुई जो प्रेसकॉपी थी उसे हमने और प्रवर्तकजी महाराजके विद्वान् प्रशिष्य पुण्यमूर्ति मुनिवर श्रीपुण्यविजयजीने मिलकर, उक्त ताडपत्रकी प्रतिके साथ मिलान कर तथा पाठा-न्तरादि दे कर शुद्ध भी कर दिया। इसके कुछ वर्ष बाद, उक्त सोसायटी द्वारा, इस ग्रन्थका ९६ पृष्ठ जितना एक हिस्सा प्रकाशित हुआ जिसमें प्रस्तुत आवृत्तिके पृष्ठ ३० जितना भाग मुद्रित हुआ है। तदनन्तर, आज कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये, लेकिन उसके आगेका कोई हिस्सा अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ; और न मालूम भविष्यमें कब होगा। भाण्डारकर महाशय सम्पादित आवृत्तिका इस प्रकार अनिश्चित भविष्य देख कर, हमने अपने ढंगसे, इस ग्रन्थको, उसी पुराने संकल्पके अनुसार, तैयार कर, सिंघी जैन ग्रन्थमालाके एक पुष्पके रूपमें, जिज्ञासु विद्वानोंके हाथमें समर्पित करना समुचित समझा है।

---

* द्रष्टव्य—P. Peterson. A fourth Report of operations in search of sanskrit Mss. in the Bombay Circle, 1886–92.

† देखो बॉम्बे संस्कृतसिरीझमें प्रकाशित गउडवहो. Introduction. P. Clii.

‡ G. BÜHLER. A Legend of the Jaina Stūpa at Mathura.—Sitzungsberichte der phil.-hist. Class der kais. Akademie der Wissenschaften Wien, 1897.

§ ११. तीर्थकल्पके समविषयक अन्य ग्रन्थ

विस्तृत जैन इतिहासकी रचनाके लिये, जिन ग्रन्थोंमेंसे, विशिष्ट सामग्री प्राप्त हो सकती है उनमें (१) **प्रभावकचरित्र,** (२) **प्रबन्धचिन्तामणि,** (३) **प्रबन्धकोष** और (४) **विविधतीर्थकल्प** ये ४ ग्रन्थ मुख्य हैं। ये चारों ग्रन्थ परस्पर बहुत कुछ समान विषयक हैं और एक दूसरेकी पूर्ति करने वाले हैं। जैन धर्मके ऐतिहासिक प्रभावको प्रकट करनेवाली, प्राचीनकालीन प्रायः सभी प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यक्तियोंका थोडा-बहुत परिचय इन ४ चारों ग्रन्थोंके संकलित अवलोकन और अनुसन्धान द्वारा हो सकता है। इस लिये हमने इन चारों ग्रन्थोंको एक साथ, एक ही रूपमें, एक ही आकारमें, और एक ही पद्धतिसे सम्पादित और विवेचित कर, इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित करनेका आयोजन किया है। इनमेंसे प्रबन्धचिन्तामणिका, मूल-ग्रन्थात्मक पहला भाग, गत वर्षमें प्रकट हो चुका है और उसका सम्पूरक **'पुरातनप्रबन्धसंग्रह'** नामका दूसरा भाग इस ग्रन्थके साथ ही प्रकट हो रहा है । **प्रबन्धकोष**का मूलग्रन्थात्मक पहला भाग भी इसका सहगामी है। **प्रभावकचरित्र** अभी प्रेसमें है सो भी थोडे ही समयमें, अपने इन समवयस्कोंके साथ, विद्वानोंके करकमलोंमें इतस्ततः सञ्चरमाण दिखाई देगा । इन चारों ग्रन्थोंका, इस प्रकार शुद्धिसंस्कारपूर्वक मूलस्वरूपका अवतार-कार्य पूरा होने पर, फिर इनका वर्तमान राष्ट्रभाषा (हिन्दी) में द्वितीय अवतार होगा, जो ऐतिहासिक अन्वेषणवाले विवेचनादिसे अलंकृत और स्थानविशेषोंके चित्रादिसे विभूषित होगा।

वैशाखी पूर्णिमाः संवत् १९९० ।
अनेकान्तविहार; भारतीनिवास ।
अहमदाबाद

जिन विजय

भिन्न भिन्न प्रतियोंमें प्राप्त कल्पोंका क्रमनिदर्शक तुलनात्मक कोष्ठक

क्रमांक	A प्रतिगत कल्पानुक्रम	Pa प्रति. कल्पानुक्रम	Pb प्रति. कल्पानुक्रम	B प्रति. कल्पानुक्रम	C प्रति.	D प्रति.		P प्रतिगतकल्पानुक्रम
१	शत्रुंजयतीर्थकल्प	,,	,,	,,	×	×	१	शत्रुंजयकल्प [१]
२	रैवतकगिरिकल्पसंक्षेप	,,	,,	,,	×	×	२	रैवतगिरिकल्पसंक्षेप [२]
३	उज्जयन्तस्तव	,,	,,	,,	×	×	३	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प [४]
४	उज्जयन्तमहातीर्थकल्प	,,	,,	,,	,,	×	४	रैवतगिरिकल्प [५]
५	रैवतकगिरिकल्प	,,	,,	,,	,,	×	५	उज्जयन्तस्तव [३]
६	पार्श्वनाथकल्प	,,	,,	,,	,,	×	६	अम्बिकादेवीकल्प [६१]
	स्तंभनककल्प	,,	,,	,,	,,	×	७	कपर्दियक्षकल्प [३०]
७	अहिच्छत्रानगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	×	८	पार्श्वनाथकल्प [६]
८	अर्बुदाद्रिकल्प	,,	,,	,,	,,	×		स्तंभनककल्प ,,
९	मथुरापुरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	९	अहिच्छत्राकल्प [७]
१०	अश्वावबोधकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१०	मथुराकल्प [९]
११	वैभारगिरिकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	११	अश्वावबोधकल्प [१०]
१२	कौशाम्बीनगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१२	वैभारगिरिकल्प [११]
१३	अयोध्यानगरीकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१३	सत्यपुरकल्प [१७]
१४	अपापापुरी [संक्षिप्त] कल्प	,,	,,	×	,,	,,	१४	कोल्लपाकमाणिक्यदेवकल्प [५७]
१५	कलिकुण्डकुर्कुटेश्वरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१५	अणहिलपुर अरिष्टनेमिकल्प [२६]
१६	हस्तिनापुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१६	कोकावसतिपार्श्वकल्प [४०]
१७	सत्यपुरतीर्थकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	१७	शुद्धदन्तीपार्श्वकल्प [३१]
१८	अष्टापदमहातीर्थकल्प (१)	,,	,,	,,	,,	,,	१८	शंखपुरपार्श्वकल्प [२७]
१९	मिथिलातीर्थकल्प	,,	,,	×	,,	,,	१९	श्रीपुरअन्तरिक्षपार्श्वकल्प [५८]
२०	रत्नवाहपुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२०	हरिकंखीनगरपार्श्वकल्प [२९]
२१	अपापाबृहत्कल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२१	कोटिशिलातीर्थकल्प [४१]
२२	कन्यानयनीयम० प्र० कल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२२	चंपापुरीकल्प [३५]
२३	प्रतिष्ठानपत्तनकल्प (स्तुति)	,,	,,	×	×	,,	२३	नासिक्यपुरीकल्प [२८]
२४	नन्दीश्वरद्वीपकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२४	फलवर्धिपार्श्वकल्प [६०]
२५	काम्पिल्यपुरतीर्थकल्प	,,	,,	×	,,	,,	२५	व्याघ्रीकल्प [४८]
२६	अणहिलपुर–अरिष्टनेमिकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२६	अष्टापदकल्प [४९]
२७	शंखपुरपार्श्वकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२७	हस्तिनापुरस्तवन [५०]
२८	नासिक्यपुरकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	२८	अयोध्यानगरीकल्प [१३]
२९	हरिकंखीनगर पार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	२९	अपापा [संक्षिप्त] कल्प [१४]
३०	कपर्दियक्षकल्प	,,	,,	,,	,,	,,	३०	कौशाम्बी नगरी कल्प [१२]
३१	शुद्धदन्ती पार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३१	श्रावस्तीनगरीकल्प [३७]
३२	अवन्तिदेशस्थ–अभिनन्दनकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३२	मिथिलापुरीकल्प [१९]
३३	प्रतिष्ठानपुरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३३	काम्पिल्यपुरकल्प [२५]
३४	प्र० सातवाहननृपचरित्र	,,	,,	,,	,,	,,	३४	पाटलीपुत्रकल्प [३६]
३५	चम्पापुरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३५	वाणारसीनगरीकल्प [३८]
३६	पाटलिपुत्रनगरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३६	कुडुंगेश्वरनाभेयकल्प [४७]
३७	श्रावस्तीनगरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३७	अर्बुदाद्रिकल्प [८]
३८	वाराणसीनगरीकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३८	अवन्तिदेशस्थ–अभिनंदनकल्प [३२]
३९	महावीरगणधरकल्प	,,	,,	×	,,	,,	३९	प्रतिष्ठानपत्तनकल्प (स्तवन) [२३]
४०	कोकावसतिपार्श्वकल्प	,,	,,	×	,,	,,	४०	नन्दीश्वरकल्प [२४]
४१	कोटिशिलातीर्थकल्प	,,	,,	×	,,		४१	वीरगणधरकल्प [३९]
४२	वस्तुपाल–तेजःपालमन्त्रिकल्प	,,	,,	×	,,		४२	चतुरशीतितीर्थनामसंग्रहकल्प [४५]
४३	ढिंपुरीतीर्थकल्प	,,	,,	×	,,		४३	पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्प †
४४	ढिंपुरीस्तव	,,	,,	×	,,		४४	रत्नवाहपुरकल्प [२०]
४५	चतुरशीतितीर्थनामसंग्रह	,,	,,	×	×		४५	पावापुरीबृहत्कल्प [२१]
४६	समवसरणरचनाकल्प	,,	,,	×	,,		४६	कन्यानयनीयम० प्र० कल्प [२२]
४७	कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्प	,,	,,	×	,,			ग्रन्थसमाप्तिसूचककथन
४८	व्याघ्रीकल्प	,,	,,	×	,,			
४९	अष्टापदगिरिकल्प (२)	,,†	,,†	×	×			
५०	हस्तिनापुरतीर्थस्तवन	,,	,,	×	,,			
५१	कन्यानयम० कल्पपरिशेष	,,	,,	×	,,			
५२	कुल्यपाकऋषभस्तुति	,,	,,	×	,,			
५३	आमरकुण्डपद्मावतीकल्प	,,	,,	×	,,			
५४	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक (१)	,,	,,	×	,,			
५५	तीर्थंकरअतिशयविचार	,,	,,	×	,,			
५६	पञ्चकल्याणकस्तवन (२)	×	,,	×	×			
५७	कोल्लपाकमाणिक्यदेवकल्प	,,	×	×	,,			
५८	श्रीपुर अन्तरिक्षपार्श्वकल्प	,,	×	×	×			
५९	स्तम्भनककल्पशिलोञ्छ	,,	×	,,	,,			
६०	फलवर्द्धिपार्श्वकल्प	,,	×	,,	,,			
६१	अम्बिकादेवीकल्प	,,	×	,,	×			
	ग्रन्थसमाप्तिसूचककथन	×	,,	×	×			

† (Pa) इस कल्पके अन्तमें ग्रन्थसमाप्तिसूचक कथन दिया हुआ है।

† (Pb) इस प्रतिमें यहां परभी ग्रन्थसमाप्ति कथन है और फिर अन्तमें भी है।

† (P) Pc प्रतिको छोड कर यह कल्प और किसी प्रतिमें उपलब्ध नहीं होता।

॥ सिंघीजैनग्रन्थमालासम्पादकप्रशस्तिः ॥

स्वस्ति श्रीमेदपाटाख्यो देशो भारतविश्रुतः । रूपाहेलीति सन्नाम्नी पुरिका तत्र सुस्थिता ॥
सदाचार-विचाराभ्यां प्राचीननृपतेः समः । श्रीमच्चतुरसिंहोऽत्र राठोडान्वयभूमिपः ॥
तत्र श्रीवृद्धिसिंहोऽभूत् राजपुत्रः प्रसिद्धिमान् । क्षात्रधर्मधनो यश्च परमारकुलाग्रणीः ॥
मुञ्ज-भोजमुखा भूपा जाता यस्मिन्महाकुले । किं वर्ण्यते कुलीनत्वं तत्कुलजातजन्मनः ॥
पत्नी राजकुमारीति तस्याभूद् गुणसंहिता । चातुर्य-रूप-लावण्य-सुवाक्सौजन्यभूषिता ॥
क्षत्रियाणीप्रभापूर्णां शौर्यदीप्तमुखाकृतिम् । यां दृष्ट्वैव जनो मेने राजन्यकुलजा त्वियम् ॥
सूनुः किसनसिंहाख्यो जातस्तयोरति प्रियः । रणमल्ल इति ह्यन्यद् यन्नाम जननीकृतम् ॥
श्रीदेवीहंसनामात्र राजपूज्यो यतीश्वरः । ज्योतिर्भैषज्यविद्यानां पारगामी जनप्रियः ॥
अष्टोत्तरशताब्दानामायुर्यस्य महामतेः । स चासीद् वृद्धिसिंहस्य प्रीति-श्रद्धास्पदं परम् ॥
तेनाथाप्रतिमप्रेम्णा स तत्सूनुः स्वसन्निधौ । रक्षितः, शिक्षितः सम्यक्, कृतो जैनमतानुगः ॥
दौर्भाग्यात्तच्छिशोर्बाल्ये गुरु-तातौ दिवंगतौ । विमूढेन ततस्तेन त्यक्तं सर्वं गृहादिकम् ॥

तथा च–

परिभ्रम्याथ देशेषु संसेव्य च बहून् नरान् । दीक्षितो मुण्डितो भूत्वा कृत्वाऽऽचारान् सुदुष्करान् ॥
ज्ञातान्यनेकशास्त्राणि नानाधर्ममतानि च । मध्यस्थवृत्तिना तेन तत्त्वातत्त्वगवेषिणा ॥
अधीता विविधा भाषा भारतीया युरोपजाः । अनेका लिपयोऽप्येवं प्रत्न-नूतनकालिकाः ॥
येन प्रकाशिता नैका ग्रन्था विद्वत्प्रशंसिताः । लिखिता बहवो लेखा ऐतिह्यतथ्यगुम्फिताः ॥
यो बहुभिः सुविद्वद्भिस्तन्मण्डलैश्च सत्कृतः । जातः स्वान्यसमाजेषु माननीयो मनीषिणाम् ॥
यस्य तां विश्रुतिं ज्ञात्वा श्रीमद्गान्धीमहात्मना । आहूतः सादरं पुण्यपत्तनात्स्वयमन्यदा ॥
पुरे चाहम्मदाबादे राष्ट्रीयशिक्षणालयः । विद्यापीठ इतिख्यातः प्रतिष्ठितो यदाऽभवत् ॥
आचार्यत्वेन तत्रोच्चैर्नियुक्तो यो महात्मना । विद्वज्जनकृतश्लाघे पुरातत्त्वाख्यमन्दिरे ॥
वर्षाणामष्टकं यावत् सम्भूष्य तत्पदं ततः । गत्वा जर्मनराष्ट्रे यस्तत्संस्कृतिमधीतवान् ॥
तत आगत्य सँल्लग्नो राष्ट्रकार्ये च सक्रियम् । कारावासोऽपि सम्प्राप्तः येन स्वराज्यपर्वणि ॥
क्रमात्तस्माद् विनिर्मुक्तः प्राप्तः शान्तिनिकेतने । विश्ववन्द्यकवीन्द्रश्रीरवीन्द्रनाथभूषिते ॥
सिंघीपदयुतं जैनज्ञानपीठं यदाश्रितम् । स्थापितं तत्र सिंघीश्रीडालचन्दस्य सूनुना ॥
श्रीबहादुरसिंहेन दानवीरेण धीमता । स्मृत्यर्थं निजतातस्य जैनज्ञानप्रसारकम् ॥
प्रतिष्ठितश्च यस्तस्य पदेऽधिष्ठातृसञ्ज्ञके । अध्यापयन् वरान् शिष्यान् शोधयन् जैनवाङ्मयम् ॥
तस्यैव प्रेरणां प्राप्य श्रीसिंघीकुलकेतुना । स्वपितृश्रेयसे चैषा ग्रन्थमाला प्रकाश्यते ॥
विद्वज्जनकृताह्लादा सच्चिदानन्ददा सदा । चिरं नन्दत्वियं लोके जिनविजयभारती ॥

यस्याः क्षेत्रं वनं वापी कूपस्सरित् सरोवरम् ।
ग्राम-नगर-गिर्यादि सर्वं तीर्थमयं स्थितम् ॥
मेवाडाख्या प्रसिद्धा या स्वर्गादपि गरीयसी ।
जन्मभूमिर्मदीया सा मातृतुल्या प्रियंकरा ॥
तस्याः पुण्यपवित्रायाः सत्कीर्तिमूर्तिमन्दिरे ।
करोम्यहं कृतेरस्याः सद्भक्त्या वै समर्पणम् ॥

श्रीजिनप्रभसूरिविरचितः

॥ विविधतीर्थकल्पः ॥

श्रीजिनप्रभसूरिविरचितः

क ल्प प्र दी पा प र ना मा

॥ विविधतीर्थकल्पः ॥

॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः ॥

१. शत्रुञ्जयतीर्थकल्पः ।

देवः[1] श्री**पुण्डरीका**ख्यभूभृच्छिखरशेखरम् । अलंकरिष्णुः प्रासादं श्री**नाभेयः** श्रियेऽस्तु वः ॥ १ ॥
श्री**शत्रुञ्जय**तीर्थस्य माहात्म्यम**तिमुक्तकः**[2] । केवली यदुवाच प्राक्(ग्) **नारद**स्य ऋषेः[3] पुरः ॥ २ ॥
तदहं लेशतो वक्ष्ये स्वपरस्मृतिहेतवे । श्रोतुमर्हन्ति भव्यास्तत् पापनाशनकाम्यया ॥ ३ ॥-युगलम् ।
शत्रुञ्जये पुण्डरीकस्तपोभृत् पञ्चकोटियुक् । चैत्र्यां सिद्धस्ततः सोऽपि **पुण्डरीक** इति स्मृतः ॥ ४ ॥
सिद्धिक्षेत्रं[4] **तीर्थराजो मरुदेवो भगीरथः । विमलाद्रिर्बाहुबली सहस्रकमल**स्तथा ॥ ५ ॥
तालध्वजः कदम्बश्च शतपत्रो नगाधिराट् । अष्टोत्तरशतकूटः सहस्रपत्र इत्यपि ॥ ६ ॥
ढङ्को लौहित्यः कपर्दिनिवासः सिद्धिशेखरः । शत्रुञ्जयस्तथा **मुक्तिनिलयः सिद्धिपर्वतः** ॥ ७ ॥
पुण्डरीकश्चेति नामधेयानामेकविंशतिः । गीयते तस्य तीर्थस्य कृता सुरनरर्षिभिः ॥ ८ ॥-कलापकम् ।
ढङ्कादयः पञ्च कूटास्तत्र सन्ति सदैवताः । रसकूपीरत्नखनिविवरौषधिराजिताः ॥ ९ ॥
ढङ्कः कदम्बो लौहित्यस्तालध्वज-कपर्दिनौ । पञ्चेति ते कालवशान्मिथ्यादृग्भिरुरीकृताः ॥ १० ॥
अशीतिं योजनान्याद्ये[5] द्वैतीयीके तु[6] सप्ततिम् । षष्टिं तृतीये तुर्ये चारके पञ्चाशतं तथा ॥ ११ ॥
पञ्चमे द्वादशैतानि सप्तरत्नी तथान्तिमे । इत्यासैरवसर्प्पिण्यां विस्तारस्तस्य कीर्तितः ॥ १२ ॥--युग्मम् ।
पञ्चाशतं योजनानि मूलेऽस्य दश चोपरि । विस्तार उच्छ्रयस्त्वष्टौ **युगादीशे** तपत्यभूत् ॥ १३ ॥
अस्मिन्नृ**षभसेना**द्या असंख्याः समवासरन् । तीर्थाधिराजाः सिद्धाश्चातीते काले महर्षयः ॥ १४ ॥
श्री**पद्मनाभ**प्रमुखा भाविनो जिननायकाः । अस्मिन् समवसर्त्तारः कीर्त्तिपावितविष्टपाः ॥ १५ ॥
श्री**नाभेयादि-वीरा**न्ताः श्री**नेमीश्वर**वर्ज्जिताः । त्रयोविंशतिरर्हन्तः समवासार्षुरत्र च ॥ १६ ॥
हेमरूप्यादिजद्वाविंशत्यर्हत्प्रतिमान्वितम् । अङ्करत्नज**नाभेय**प्रतिमालङ्कृतं महत् ॥ १७ ॥
द्वाविंशतिक्षुल्लदेवकुलिकायुक्तमुच्चकैः । योजनप्रमितं रत्नमयमुत्पन्नकेवले[7] ॥ १८ ॥
आदीश्वरे श्री**भरत**श्चक्री चैत्यमचीकरत् । एतस्यामवसर्प्पिण्यां पूर्वमत्र पवित्रधीः ॥ १९ ॥-त्रिभिर्विशेषकम् ।
द्वाविंशतेर्जिनेन्द्राणां यथास्वं पादुकायुता । भात्यत्रायतनश्रेणी लेप्यनिर्मितबिम्बयुक् ॥ २० ॥
अकारि चात्र समवसरणेन सहोच्चकैः । प्रासादो **मरुदेवा**याः श्री**बाहुबलि**भूभुजा ॥ २१ ॥

---

1 A देव° । 2 B सतिमुत्तिकः । 3 B ऋषे । 4 A सिद्ध° । 5 A B योजनानाद्ये । 6 A ते ।
7 B केवलो ।

प्रथमोऽत्रावसर्प्पिण्यां गणभृत् प्रथमार्हतः । प्रथमं प्रथमः सूनुः सिद्धः प्रथमचक्रिणः ॥ २२ ॥
अस्मिन् **नमि-विनम्या**ख्यौ खेचरेन्द्रमहाऋषी । कोटिद्वय्या महर्षीणां सहितौ सिद्धिमीयतुः ॥ २३ ॥
सम्प्रापुरत्र **द्रविड-वालिखिल्या**दयो नृपाः । कोटीभिर्दशभिर्युक्ताः साधूनां परमं पदम् ॥ २४ ॥
जयरामादिराजर्षिकोटित्रयमिहागमत् । **नारदा**दिमुनीनां च लक्षैकनवतिः शिवम् ॥ २५ ॥
प्रद्युम्न-शाम्बप्रमुखाः कुमाराश्चात्र निर्वृतिम्[1] । परासवन्तः[2] सार्द्धाष्टकोटिसाधुसमन्विताः ॥ २६ ॥
मनुप्रमितलक्षादिसंख्याभिः श्रेणिभिस्तथा । असंख्याताभिः सर्वार्थसिद्धान्तरितमासदन्[3] ॥ २७ ॥
पञ्चाशत्कोटिलक्षाब्धीन् याव**न्नाभेय**वंशजाः । अत्रा**दित्ययशो**मुख्याः **सगरा**न्ताः शिवं नृपाः ॥ २८ ॥–युग्मम् ।
भरतस्यापत्याः पुत्रश्री**शैलक-शुका**दयः । अत्र सिद्धा असंख्यातकोटाकोटिमिता यताः[4] ॥ २९ ॥
मुनीनां कोटिविंशत्या **कुन्त्या** च सह निर्वृताः । कृतार्हत्प्रतिमोद्धारा अत्र ते पञ्च **पाण्डवाः** ॥ ३० ॥
द्वितीयषोडशावत्रा**जित-शान्ती** जिनेश्वरौ । वर्षारात्रचतुर्मासीं तस्थतुः स्थितिदेशिनौ ॥ ३१ ॥
श्री**नेमि**वचनाद् यात्रागतः सर्वरुजापहम् । **नन्दिषेण**गणेशोऽत्रा**जितशान्ति**स्तवं व्यधात् ॥ ३२ ॥
पौंस्रा असंख्या उद्धारा असंख्याः प्रतिमास्तथा । असंख्यानि च चैत्यानि[5] महातीर्थेऽत्र जज्ञिरे ॥ ३३ ॥
अर्चाः क्षुल्लतडागस्थास्तथा [6]**भरत**कारिताः । गुहास्थाश्च नमन् भक्त्या स्यादत्रैकावतारभाक् ॥ ३४ ॥
संप्रतिर्विक्रमादित्यः सातवाहन-वाग्भटौ । पादलिप्ता-ऽऽम-दत्ताश्च तस्योद्धारकृतः स्मृताः ॥ ३५ ॥
विदेहेष्वपि वास्तव्याः सरन्त्येनं सुदृष्टयः । इति श्री**कालिका**चार्यपुरः **शक्रः** किलाब्रवीत् ॥ ३६ ॥
अत्र श्री**जावडे**र्बिम्बोद्धारे जाते क्रमेण वै । **अजिता**यतनस्थाने बभूवा**नुपमा**सरः ॥ ३७ ॥
अत्र श्री**मरुदेवा**याः श्री**शान्ते**श्चोद्धरिष्यति । **मेघघोष**नृपः[7] **कल्कि**प्रपौत्रो भवने सुधीः ॥ ३८ ॥
अस्यापश्चिममुद्धारं राजा **विमलवाहनः** । श्री**दुष्प्रसह**सूरीणामुपदेशाद्विधास्यति ॥ ३९ ॥
तीर्थोच्छेदेऽपि **ऋषभकूटा**ख्योऽयं सुरार्चितः । यावत् **पद्मनाभ**तीर्थं पूजायुक्तो भविष्यति ॥ ४० ॥
प्रायः पापपरित्यक्तास्तिर्यञ्चोऽप्यत्र वासिनः । प्रयान्ति सुगतिं तीर्थमाहात्म्याद् विशदाशयाः ॥ ४१ ॥
सिंहाग्निजलधिव्यालभूपालविषयुद्धजम् । चौरारिमारिजं चास्य स्मृतेर्नश्येद्भयं नृणाम् ॥ ४२ ॥
भरतेशकृतेर्लेप्यमयस्या**द्यजिनेशितुः** । ध्यायन्नुत्सङ्गशय्यास्थं स्वं सर्वभयजिद्भवेत् ॥ ४३ ॥
उग्रेण तपसा ब्रह्मचर्येण च यदाप्नुयात् । **शत्रुञ्जये** तन्निवसन् प्रयतः पुण्यमश्नुते ॥ ४४ ॥
प्रदद्यात् [8]कामिकाहारं तीर्थे कोटिव्ययेन यः । तत्पुण्यमेकोपवासेनाप्नोति **विमलाचले** ॥ ४५ ॥
भूर्भुवःस्वस्त्रये तीर्थं यत्किञ्चिन्नाम विद्यते । तत्सर्वमेव दृष्टं स्यात् **पुण्डरीके**ऽभिवन्दिते ॥ ४६ ॥
अत्राद्यापि विनारिष्टं सम्पातोऽरिष्टपक्षिणाम् । न जातु जायते सत्रागारभोज्येषु सत्स्वपि ॥ ४७ ॥
भोज्यदानेऽत्र यात्रायै याते कोटिगुणं शुभम् । कृतयात्राय वलते तत्रानन्तगुणं पुनः ॥ ४८ ॥
प्रतिलाभयतः सङ्घमदृष्टे **विमलाचले** । कोटीगुणं भवेत् पुण्यं दृष्टेऽनन्तगुणं पुनः ॥ ४९ ॥
केवलोत्पत्ति-निर्वाणे यत्राभूतां महात्मनाम् । तानि सर्वाणि तीर्थानि वन्दितानीह वन्दिते ॥ ५० ॥
जन्म-निष्क्रमण-ज्ञानोत्पत्ति-मुक्तिगमोत्सवाः । वैयस्त्यात् क्वापि सामस्त्याज्जिनानां यत्र जज्ञिरे ॥ ५१ ॥

अयोध्या-मिथिला-चम्पा-श्रावस्ती-हस्तिनापुरे ।
कौशाम्बी-काशि-काकन्दी-काम्पिल्ये भद्रिलाभिधे ॥ ५२ ॥

---

1 A निवृत्तिम् । 2 A परापूर्वतः । 3 B °सदत् । 4 A यतः । 5 B चैत्यादि । 6 B भारत° । 7 A नृपं । 8 A कासिका° ।

रत्नवाहे शौर्यपुरे कुण्डग्रामेऽप्यपापया ।
चन्द्रानना-सिंहपुरे तथा राजगृहे पुरे ॥ ५३ ॥
श्रीरैवतक-संमेत-वैभारा-ऽष्टापदादिषु ।
यात्रयासिंस्तेषु यात्राफलाच्छतगुणं फलम् ॥ ५४ ॥—चतुर्भिः कलापकम् ।

पूजापुण्याच्छतगुणं पुण्यं बिम्बविधापने । चैत्येऽत्र सहस्रगुणं पालनेऽनन्तसङ्गुणम् ॥ ५५ ॥
यः कारयेदस्य मौलौ प्रतिमां चैत्यवेश्म वा । भुक्त्वा भारतवर्षर्द्धीः स स्वर्गश्रियमश्नुते ॥ ५६ ॥
नमस्कारसहितादितपांसि विदधन्नरः । उत्तरोत्तरतपसां पुण्डरीकस्मृतेर्लभेत् ॥ ५७ ॥
तीर्थमेतत्स्मरन्मर्त्यः करणत्रयशुद्धिमान् । षष्ठादिमासिकान्तानां तपसां फलमाप्नुयात् ॥ ५८ ॥
अद्यापि पुण्डरीकाद्रौ कृत्वानशनमुत्तमम् । भूत्वा शीलविहीनोऽपि सुखेन स्वर्गमृच्छति ॥ ५९ ॥
छत्रचामरभृङ्गारध्वजस्थालप्रदानतः । विद्याधरो जायतेऽत्र चक्री स्याद्रथदानतः ॥ ६० ॥
दशात्र पुष्पदामानि ददानो भावशुद्धितः । भुञ्जानोऽपि लभेतैव चतुर्थतपसः फलम् ॥ ६१ ॥
द्विगुणानि तु षष्ठस्याष्टमस्य त्रिगुणानि तु । चतुर्गुणानि दशमस्येति तानि ददत् पुनः ॥ ६२ ॥
फलं भवेद्द्वादशस्य ददत् पञ्चगुणानि तु । तेषां यथोत्तरं वृद्ध्या फलवृद्धिरपि स्मृता ॥ ६३ ॥
पूजास्नपनमात्रेण यत् पुण्यं विमलाचले । नान्यतीर्थेषु तत् स्वर्णभूमिभूषणदानतः ॥ ६४ ॥
धूपोत्क्षेपणतः पक्षोपवासस्य लभेत् फलम् । कर्पूरपूजया चात्र मासक्षपणजं फलम् ॥ ६५ ॥
निर्दोषैरत्र भक्ताद्यैर्यः साधून् प्रतिलाभयेत् । फलेन कार्तिकमासक्षपणस्य स युज्यते ॥ ६६ ॥
त्रिसन्ध्यं मन्त्रवाःस्नातो[1] मासानाश्वान् मधूर्जयोः । नमोऽर्हद्भ्यःपदं ध्यायन्निहार्जेत् तीर्थकृत्पदम् ॥ ६७ ॥
पादलिप्तपुरे भातः प्रासादौ पार्श्व-वीरयोः । अधोभागे चास्य नेमिनाथस्यायतनं महत् ॥ ६८ ॥
तिस्रः कोटीस्त्रिलक्षोना व्ययित्वा वसु वाग्भटः । मन्त्रीश्वरो युगादीशप्रासादमुददीधरत् ॥ ६९ ॥
दृष्टैव तीर्थप्रथमप्रवेशेऽत्रादिमार्हतः । विशदा मूर्तिराधत्ते दृशोरमृतपारणम् ॥ ७० ॥
अष्टोत्तरे वर्षशतेऽतीते श्रीविक्रमादिह । बहुद्रव्यव्ययाद् बिम्बं जावडिः स न्यवीविशत् ॥ ७१ ॥
भास्वरद्युतिमम्माणमणिशैलतटोत्थितम् । ज्योतीरसाख्यं यद्रत्नं तत्तेन घटितं किल ॥ ७२ ॥
मधुमत्यां पुरि श्रेष्ठी वास्तव्यो जावडिः पुरा । श्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यं श्रीवैरस्वामितोऽशृणोत् ॥ ७३ ॥
गन्धोदकस्नात्ररुचिर्लेप्यबिम्बं शुशोच सः । स्मृत्वा चक्रेश्वरीं सैष मम्माणाद्रिखनीमगात् ॥ ७४ ॥
निर्माप्येहाश्मनीं मूर्तिं रथमारोप्य चाचलत् । विमलाद्रिं सभार्योऽसौ पद्यया हृद्यया दिने ॥ ७५ ॥
ययौ यावन्तमध्वानं दिवा [2]सप्रतिमो रथः । रात्रौ तावन्तमेवासौ पश्चाद् व्यावर्तताद्भुतम् ॥ ७६ ॥
खिन्नः कपर्दिनं स्मृत्वा दृष्ट्वा हेतुं च तद्विधौ । रथमार्गेऽपतत्तिर्यक् प्रयतः सह जायया ॥ ७७ ॥
तत्साहसप्रसन्नेन दैवतेनाधिरोपितः । रथः सबिम्बोऽद्रिशृङ्गे दुःसाधं सात्त्विकेषु किम् ॥ ७८ ॥
मूलनायकमुत्थाप्य न्यस्ते बिम्बे तदास्पदे । लेप्यबिम्बारटितेन पर्वतः खण्डशोऽदलत् ॥ ७९ ॥
तन्मुक्ताऽथ तडिच्छ्रेष्ठिबिम्बेन करमर्दिता । सोपानानि च्छिद्रयन्ती निर्ययौ शैलदेशभित् ॥ ८० ॥
आरुह्य चैत्यशिखरं सकलत्रः प्रमोदतः । जावडिर्नरिनर्त्ति स चञ्चद्रोमाञ्चकञ्चुकः ॥ ८१ ॥
अपतीर्थिकबोहित्थान्यब्देऽष्टादश आपतन् । तद्द्रव्यव्ययतः श्रेष्ठी तत्र चक्रे [3]प्रभावनाम् ॥ ८२ ॥
इत्थं जावडिराद्यार्हत्-पुण्डरीक-कपर्दिनाम् । मूर्तीर्निवेश्य सञ्जज्ञे स्वर्विमानातिथित्वभाक् ॥ ८३ ॥

---

1 B °वाःस्नातो । 2 A स प्रथमो; B दिवसे प्रथमे । 3 A स भावनां ।

दक्षिणाङ्गे भगवतः पुण्डरीक इहादिमः । वामाङ्गे दीप्यते तस्य जावडिस्थापितोऽपरः ॥ ८४ ॥
इक्ष्वाकु-वृष्णिवंश्यानामसंख्याः कोटिकोटयः । अत्र सिद्धाः कोटिकोटीतिलकं सूचयत्यदः ॥ ८५ ॥
पाण्डवाः पञ्च कुन्ती च तन्माता च[1] शिवं ययुः । इति शासति तीर्थेऽत्र षडेषां लेप्यमूर्तयः ॥ ८६ ॥
राजादनश्चैत्यशाखी श्रीसङ्घाद्भुतभाग्यतः । दुग्धं वर्षति पीयूषमिव चन्द्रकरोत्करः ॥ ८७ ॥
व्याघ्रीमयूरप्रमुखास्तिर्यञ्चो भक्तमुक्तितः । सुरलोकमिह प्राप्ताः प्रणतादीशपादुकाः ॥ ८८ ॥
वामे सत्यपुरस्यावतारो मूलजिनौकसः । दक्षिणे सकुनी-चैत्यपृष्ठे चाष्टापद[ः] स्थितः ॥ ८९ ॥
नन्दीश्वर-स्तम्भनकोज्जयन्तानामकृच्छ्रतः । भव्येषु पुण्यवृद्ध्यर्थमवतारा इहासते ॥ ९० ॥
आत्तासिना विनमिना नमिना च निषेवितः । स्वर्गारोहणचैत्ये च श्रीनाभेयः प्रभासते ॥ ९१ ॥
तुङ्गं शृङ्गं द्वितीयं च श्रेयांसः शान्ति-नेमिनौ । अन्येऽप्यृषभ-वीराद्या अस्यालङ्कुर्वते जिनाः ॥ ९२ ॥
मरुदेवां भगवतीं भवनेऽत्र भवच्छिदम् । नमस्कृत्य कृती स्वस्य मन्यते कृतकृत्यताम् ॥ ९३ ॥
यक्षराजः कपर्दीह कल्पवृक्षः प्रणेमुषाम् । चित्रान् यात्रिकसङ्घस्य विघ्नान् मर्द्दयति स्फुटम् ॥ ९४ ॥
श्रीनेम्यादेशतः कृष्णो दिनान्यष्टावुपोषितः । कपर्दियक्षमाराध्य पर्वतान्तर्गुहान्तरे ॥ ९५ ॥
अद्यापि पूज्यं शक्रेण बिम्बत्रयमगोपयत् । अद्यापि श्रूयते तत्र किल शक्रसमागमः ॥ ९६ ॥–युग्मम् ।
पाण्डवस्थापितश्रीमदृषभोत्तरदिग्गता । सा गुहा विद्यतेऽद्यापि यावत् क्षुल्लतडागिका ॥ ९७ ॥
यक्षस्यादेशतस्तत्र दृश्यन्ते प्रतिमाः किल । तत्रैवाजित-शान्तीशौ वर्षारात्रमवस्थितौ ॥ ९८ ॥
तयोश्चैत्यद्वयं पूर्वाभिमुखं तत्र चाभवत् । निकषाजितचैत्यं च बभूवानुपमासरः ॥ ९९ ॥
मरुदेव्यन्तिके शान्तेश्चैत्यं शैत्यकरं दृशाम् । भवति स्म भवभ्रान्तिभिदुरं भव्यदेहिनाम् ॥ १०० ॥
श्रीशान्तिचैत्यस्य पुरो हस्तानां त्रिंशता पुनः । पुरुषैः सप्तभिरदः खानी द्वे स्वर्णरूप्ययोः ॥ १०१ ॥
ततो हस्तशतं गत्वा पूर्वद्वाराऽस्ति कूपिका । अधस्तादष्टभिर्हस्तैः श्रीसिद्धरसपूरिता ॥ १०२ ॥
श्रीपादलिप्ताचार्येण तीर्थोद्धारकृते किल । अस्ति संस्थापितं रत्नसुवर्णं तत्समीपगम् ॥ १०३ ॥
पूर्वस्यां [2]वृषभबिम्बादधश्चर्षभकूटतः । धनूंषि त्रिंशतिं (तं ?) गत्वोपवासांस्त्रीन् समाचरेत् ॥ १०४ ॥
कृते बलिविधानादौ वैरोट्या स्वं प्रदर्शयेत् । तदाज्ञयोद्घाट्य शिलां रात्रौ मध्ये प्रविश्यते ॥ १०५ ॥
तत्रोपवासतः सर्वाः संपद्यन्ते च सिद्धयः । तत्रर्षभार्चानमनाद्भवेदेकावतारभाक् ॥ १०६ ॥
पुरो धनुष्पञ्चशत्या आस्ते पाषाणकुण्डिका । ततः सप्त क्रमान् गत्वा कुर्याद्बलिविधिं बुधः ॥ १०७ ॥
शिलोत्पाटनतस्तत्र कस्यचित् पुण्यशालिनः । उपवासद्वयेन स्यात् प्रत्यक्षा रसकूपिका ॥ १०८ ॥
कल्किपुत्रो धर्मदत्तो भावी स परमार्हतः । दिने दिने जिनबिम्बं प्रतिष्ठाप्य च भोक्ष्यते ॥ १०९ ॥
स श्रीशत्रुञ्जयोद्धारं कर्ताथ जितशत्रुराट् । द्वात्रिंशद्वर्षराज्यश्रीर्भविष्यति तदात्मजः ॥ ११० ॥
तत्सूनुर्मेघघोषाख्यः श्रीशान्ति-मरुदेवयोः । कपर्दियक्षस्यादेशाच्चैत्यमत्रोद्धरिष्यति ॥ १११ ॥
नन्दिः सूरिरथार्यश्च श्रीप्रभो माणिभद्रकः । यशोमित्रो धनमित्रस्तथा विकटधर्म्मकः ॥ ११२ ॥
सुमङ्गलः सूरसेन इत्यस्योद्धारकारकाः । अर्वाक्(ग् ?) दुष्प्रसहादन्ते भावी विमलवाहनः ॥ ११३ ॥
यात्रिकान् येऽस्य बाधन्ते द्रव्यं वापहरन्ति ये । पतन्ति नरके घोरे सान्वयास्तेंऽहसां[3] भरात् ॥ ११४ ॥
यात्रां पूजां द्रव्यरक्षां यात्रिकस्तोमसत्कृतिम् । कुर्वाणोऽत्र सगोत्रोऽपि स्वर्गलोके महीयते ॥ ११५ ॥
श्रीवस्तुपालोपज्ञानि [4]पीथडादिकृतानि च । वक्ता पारं न यात्यत्र धर्मस्थानानि कीर्त्तयन् ॥ ११६ ॥
दुःख(ष)मासचिवान् म्लेच्छाद्भङ्गं संभाव्य भाविनम् । मन्त्रीशः श्रीवस्तुपालस्तेजःपालाग्रजः सुधीः ॥ ११७ ॥

---

1 A ऽत्र । 2 B पूर्वस्यामृषभ° । 3 B °स्तेहसंभरात् । 4 B पेथडा° ।

मम्माणोपलरत्नेन निर्माप्यात्यन्तनिर्म्मले[1] । न्यधान्मूमिगृहे मूर्ती **आद्यार्हत्-पुण्डरीकयोः** ॥ ११८ ॥–युग्मम् । ही **ग्रहर्तुक्रियास्थान (१३६९)** संख्ये **विक्रमवत्सरे** । **जावडि**स्थापितं बिम्बं म्लेच्छैर्भग्नं कलेर्वशात् ११९. **वैक्रमे वत्सरे चन्द्रहयाग्नीन्दु (१३७१)** मिते सति । श्री**मूलनायको**द्धारं साधुः श्री**समरो** व्यधात् १२० तीर्थेऽत्र सङ्घपतयो ये बभूवुर्भवन्ति ये । ये भविष्यन्ति धन्यास्ते नन्द्यासुस्ते चिरं श्रिया ॥ १२१ ॥ **कल्पप्राभृत**तः पूर्वं कृतः श्री**भद्रबाहु**ना । श्री**वज्रेण** ततः **पादलिप्ता**चार्यैस्ततः परम् ॥ १२२ ॥ इतोऽप्युद्धृत्य संक्षेपात् प्रणीतः कामितप्रदः । श्री**शत्रुञ्जय**कल्पोऽयं श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ॥ १२३ ॥ कल्पेऽस्मिन् वाचिते ध्याते[2] व्याख्याते पठिते श्रुते । स्यात्तृतीयभवे सिद्धिर्भव्यानां भक्तिशालिनाम् ॥ १२४ ॥ श्री**शत्रुञ्जय**शैलेश! लेशतोऽपि गुणास्तव । कैर्व्यावर्णयितुं नाम पार्यन्ते विदुषै(०बुधैः)रपि ॥ १२५ ॥ भवद्यात्रोपनम्राणां नृणां तीर्थानुभावतः । प्रायो मनःपरीणामः शुभ एव प्रवर्द्धते ॥ १२६ ॥ त्वद्यात्राप्रचलत्सङ्घरथाश्वोष्ट्रनृपादजः । रेणुरङ्गे लगन् भव्यपुंसां पापं व्यपोहति ॥ १२७ ॥ यावान् कर्म्मक्षयोऽन्यत्र मासक्षपणतो भवेत् । नमस्कारसहितादेरपि तावान् कृतात्त्वयि ॥ १२८ ॥ श्री**नाभेय**कृतावास! **वासव**स्तुत्यवैभव! । मनसा वचसा तन्वा **सिद्धिक्षेत्र!** नमोऽस्तु ते ॥ १२९ ॥ त्वत्कल्पमेतं निर्माय निर्मायमनसा मया । यदार्जि पुण्यं तेनास्तु विश्वं वास्तवसौख्यवत् ॥ १३० ॥ पुस्तकन्यस्तमपि यः कल्पमेनं महिष्यति । न्यक्षेण काङ्क्षितास्तस्य सिद्धिमेष्यन्ति संपदः ॥ १३१ ॥ प्रारम्भेऽप्यस्य राजाधिराजः सङ्घे प्रसन्नवान् । अतो **राजप्रसादा**ख्यः कल्पोऽयं जयताच्चिरम् ॥ १३२ ॥ श्री**विक्रमाब्दे वाणाष्टविश्वेदेव (१३८५)** मिते शितौ । सप्तम्यां तपसः काव्यदिवसेऽयं समर्थितः ॥१३३॥

॥ इति श्री**जिनप्रभ**सूरिकृतः श्री**शत्रुञ्जय**कल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रन्थाग्रं० १३४, अक्षर १३ ॥

---

1 A निर्मलं । 2 A ध्याने ।

२. रैवतकगिरिकल्पसंक्षेपः ।

सिरि**नेमि**जिणं सिरसा नमिउं **रेवय**गिरीसकप्पंमि । सिरि**वइर**सीसभणिअं जहा य [1]**पालित्त**एणं च ॥ १ ॥

छत्तसिलाइ समीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो **नेमी** । **सहसंब**वणे केवलनाणं । **लक्खारामे** देसणा । **अवलोअणे**[2] उद्धसिहरे निव्वाणं । **रेवयमेहलाए कण्हो** तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसामिणो, **अंबा**देविं च कारेइ । **इंदो** वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणयं रुप्पमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया सिहरे **अंबा**रंगमंडवे [3]**अवलोणा**सिहरं(रे?) बलाणयमंडवे **संबो** एयाइं कारेइ । **सिद्धविणायगो** पडिहारो तप्पडिरूवं[4] श्री**नेमि**मुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं **कण्हेण** ठाविअं । तहा सत्त जायवा **दामोयरा**णुरूवा । **कालमेह** १ **मेहनाद** २ **गिरिविदारण** ३ **कपाट** ४ **सिंहनाद** ५ **खोडिक** ६ **रेवया** ७ तिव्वतवेणं कीडणेणं खित्तवाला उववन्ना । तत्थ य **मेहनादो** सम्मद्दिट्ठी **नेमि**पयभत्तिजुत्तो चिट्ठइ । **गिरिविदारणे**णं कंचणबलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ । तत्थेगं, **अंबा**पुरओ उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा; तत्थ य उववासतिगेणं बलिविहाणेणं सिलं उप्पाडिऊण मज्झे **गिरिविदारण**पडिमा । तत्थ य कमपण्णासं गए **बलदेवे**णं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण उत्तरदिसाए पण्णासकमं[5] वारीतिगं । पढमवारिआए[6] कमसयतिगं गंतूण गोदोहिआसणेणं पविसिऊण उपवासपंचगं भमररूवं दारुणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं कमसत्ताओं अहोमुहं पविसिऊण बलाणयमंडवे **इंदा**देसेण **धणय**जक्खकारिअं **अंबा**देविं पूइऊण सुवण्णजालीए ठायव्वं । तत्थ ठिएणं सिरिमूलनाहो **नेमि**जिणिंदो वंदिअव्वो । बीअवारीए एगं पायं पूइत्ता **सयंवर**वावीए अहो कमचालीसं गमित्ता तत्थ णं मज्झवारीए कमसत्तसएहिं कूवो । तत्थ वरहंसठिअत्तेण इहावि मूलनायगो वन्देअव्वो । तइअवारीए मूलदुवारपवेसो **अंबा**एसेण, न अन्नहा । एवं कंचणबलाणयमग्गो, तत्थ य **अंबा**पुरओं हत्थवीसाए विवरं । तत्थ य **अंबा**एसेणं उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गयपंचगं अहो रसकूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घडइ । तत्थ य उववासतिगं काऊण **अंबा**एसेण पूयणेण बलिविहाणेणं[7] गिण्हियव्वं । तहा य **जुण्णकूडे** उववासतिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं **सिद्धविणायगो** उवलब्भइ । तत्थ य चिंतिया सिद्धी । दिणमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पच्चक्खो हवइ । तहा **रायमई**गुहाए कमसएणं[8] गोदोहियाए रसकूविआ, कसिणचित्तयवल्ली, **राईमई**ए पडिमा रयणमया, **अंबा** य; रुप्पमयाओं अणेगओसहीओं चिट्ठन्ति । तह **छत्तसिला–घंटसिला–कोडिसिला** सिलातिगं पण्णत्तं । **छत्तसिलं** मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली । **सहस्संब**वणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं, **लक्खारामे** बावत्तरी चउवीसजिणाण[9] गुहा पण्णत्ता । **कालमेह**स्स पुरओ **सुवन्नवालुआ**ए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदिसाए[10] गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए न्हवणं काऊण ठिए उववासपओएहिं दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी संघहेउं **अंबा**ए विउव्विआ । तत्थ पण **कण्ह**भंडारा । अण्णो **दामोदर**समीवे । अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे[11] मंगलयदेवदाली य संतु रससिद्धी । सिरि**वइरो**वक्खायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥ १ ॥

सस्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिन्दुसंयोगे । **घंटसिला**चुण्णयजोअणाओं अंजणसिद्धी ॥ २ ॥

॥ **विज्जापाहुड**देसाओ **रेवय**कप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

॥ ग्रन्थाग्रं० ३८ ॥

---

1 A पालत्तएणं । 2 B अवलोयणं । 3 B °लोअण° । 4 B तप्पडिरूप° । 5 A °कंमं । 6 A °वरिआए । 7 B °विहारेणं । 8 A कंमसुएणं । 9 B 'जिणाण' नास्ति । 10 A °दिसीए । 11 B तस्सत्थमाणे° ।

३. श्रीउज्जयन्तस्तवः ।

नामभिः श्री**रैवतकोज्जयन्ता**द्यैः [1]प्रथामितम् । श्री**नेमि**पावितं स्तौमि **गिरिनारं**[2] गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देशः **सुराष्ट्रा**ख्यां बिभर्ति भुवनेष्वसौ[3] । यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति [4]**खंगारदुर्गं** श्री**ऋषभादयः** । श्री**पार्श्वस्तेजलपुरं** भूषितैतदुपत्यकम्[5] ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य[6] शृङ्गे जिनगृहावलिः । पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् । चारुचैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्री**नेमि**नः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्री**शिवासूनु**देवस्य पादुकात्र निरीक्षिता । स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः । बन्धून् विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् । जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच्च निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे । श्री**वस्तुपालो** मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत्[7] ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह । श्री**नेमे**र्मज्जनं कर्तु**मिन्द्रा** इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः । सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र **वस्तुपालेन** कारिते । **ऋषभः पुण्डरीको**ऽ**ष्टापदो नन्दीश्वर**स्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा **सिद्ध-बुद्ध**सुतान्विता । कम्राम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्रा**म्बा** सङ्घविघ्नहृत् ॥ १३ ॥
श्री**नेमि**पत्पद्मपूत**मवलोकन**नामकम् । विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य **कृष्णजः** । **प्रद्युम्न**श्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु । किं च **घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः** शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः । मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्पं न तत्फलम् । नेक्ष्यते[8]ऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिह्यविदो विदः ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते । **रथनेमि**र्ययोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः[9] ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै[10] । संपद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमादपि[11] योऽत्राद्रौ क्वाप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् । सोऽपि पश्यति चैत्यस्था [12]जिनार्चाः स्नापितार्चिताः ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन **कूष्माण्ड्या**देशतोऽत्र च । लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्री**नेमे**र्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि । विदांकरोत्वत्र संख्यां संख्यावानपि कः खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकरूपाय[13] महातीर्थाय तायिने । चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्री**रैवता**द्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णितावृ**जिनप्रभ** । **गिरिनार**स्तारहेमसिद्धि[14]भूमिर्मुदेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

॥ इति श्री**उज्जयन्त**स्तवः ॥

॥ ग्रन्थाग्रं २५ ॥

---

1 A प्रया° । 2 B °नार-। 3 B भुवनेऽप्यसौ । 4 A °स्तंषगार° । 5 A °पत्यकां । 6 A °तुङ्गस्य । B 7 °भव्यकृत् । 8 A नेक्षते । 9 A °तारिता । 10 A यैः । 11 A C °भूमावपि । 12 A जिनार्चास्तर्पिता° । 13 B आसवेनक° । 14 C सिद्ध° ।

४. उज्जयन्तमहातीर्थकल्पः ।

अत्थि **सुरट्ठा**विसए **उज्जिंतो** नाम पव्वओ रम्मो । तस्सिहरे[1] आरुहिउं भत्तीए नमह **नेमि**जिणं ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं न्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं । पूइअ कयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
गिरिसिहरकुहरकंदर[2]निज्झरणकवाडविअडकूवेहिं । जोएह **खत्तवायं** जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
कंदप्पदप्पकप्पण[3]कुगइविद्दवण**नेमिनाह**स्स । **निव्वाणसिला**नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं । दारंमि तस्स लिङ्गं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तस्स पसुमुत्तगंधो अत्थि रसो पलसएण सयतंबं । विंधेति कुणइ तारं ससिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जा गवई । पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो । विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
उज्जिंते अत्थि नई **विहला**नामेण पव्वई पडिमा । दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
सक्कावयार–उज्जिंतगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे । सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
पंचगव्वेण बद्धा पिंडी धमिआ[4] करेइ वरतारं । फेडइ दरिद्दवाहिं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे **विसालसिंगे** दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ । तस्सासन्ने सिहरे **कव्वडहड** पामहो तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतरेवयवणे तत्थ य **सुद्दार**वानरो अत्थि । सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
हत्थसएण पविट्ठो दिक्खइ सोवण्णवण्णिआ [5]रुक्खा । नीलरसेण सवंता[6] सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो **हणुवंतं** छिवइ वामपाएण । सो ढक्कइ वरदारं जेण न जाणइ जणो कोवि ॥ १५ ॥
उज्जिंतसिहरउवरि **कोहंडि**हरं खु नाम विक्खायं । अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ऊसंतु ॥ १६ ॥
तं अयसितिल्ल[7]मीसं थंभइ पडिवायवंगिअं वंगं । दोगच्चवाहिहरणं परितुट्ठा **अंबिआ** जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा । तो पिंडिधमिअसंते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥
उज्जिंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी । बोक्कडयमुत्त-पिंडी-खइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीबद्धा य पंचगव्वेण । हढपाए वसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरिवरमासन्नठिअं आणीअं **तिलविसारणं** नाम । सिलबद्धगाढपीडे वेलक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लड्डुअपहाणा । पडिवाएण य सुव्वं करंति[8] हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
बिल्लक्खवयंमि नयरे **मउहरं**[9] अत्थि सेलगं दिव्वं । तस्स य मज्झंमि ठिओ **गणवइरसकुंडओ** उवरिं ॥२३॥
उववासी कयपूओ **गणवइ**ओ चलिऊण पवररसो । पामापेवी(?) अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजरुक्खेण मणहरं सम्मं । तत्थ य तुरयायारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो मुत्तेण अंधमूसाए । धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिलाअवरेणं तत्थ वररसो सवइ । सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुव्वं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुन्नवयारे **अंबिअआसमपयं** च नामेण[10] । तत्थ वि पीआ पुहवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
नाणसिला उज्जिंते तस्स य मूलंमि मट्टिआ पीआ । साहामिअलेवेणं छायासुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जिंतपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेन अवयरिउं । तिण्णि धणूसयमित्ते **पूइकरं** जं बिलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं बिलं दिक्खिऊण निउणेन तत्थ गंतव्वं । दंडंतराणि बारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
जउघोलिअंमि भंडे सहस्सभाएण विंधए तारे । हेमं करइ अवस्सं हट्टंतं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥

---

1 B तस्सिहरि । 2 A °कुंडु° । 3 A C °कप्परण° । 4 C धम्मिआ । 5 C रेखा । 6 C वसंता । 7 C °तल्ल° । 8 B करिंति । 9 C °हरंमि । 10 C नामेणं ।

कोहंडिभवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी । दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया **वासुदेव**स्स ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु **पव्वई**पडिमा । अवराहमुहरअंगुट्ठिआइ[1] सा दावए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइं पविट्ठो दिक्खइ कूडाइं दाहिणुत्तरओ । हरिआललक्खवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिंते नाणसिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं[2] । ताणं उत्तरपासे दाहिणयअहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलयवण्णो । अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुव्वं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उसहरिसहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि । गयवरलिंडाकिण्णा[3] मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउईधणुहेहिं भूमिजलुअयरी । तिरिमणुअरत्त[4]विद्धा पडिवाए तंबए[5] हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा । सुव्वस्स[6] पंचवेहं सवंति धमिआ तयं[7] सिग्घं ॥ ४० ॥
इय **उज्जयन्त**कप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो । **कोहंडि**कयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

॥ †श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः समाप्तः ॥

---

५. रैवतकगिरिकल्पः ।

पच्छिमदिसाए **सुरट्ठा**विसए **रेवय**पव्वयरायसिहरे सिरि**नेमिनाह**स्स भवणं उत्तुङ्गसिहरं अच्छइ । तत्थ किर पुव्विं भयवओ **नेमिनाह**स्स लिप्पमई पडिमा आसि । अन्नया उत्तरदिसाविभूसण**कम्हीर**देसाओ **अजिय-रयण-**नामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण **गिरिनार**मागया । तेहिं रहसवसाओ घणघुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं । गलिआ लेवमई सिरि**नेमिनाह**पडिमा । तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ । इक्कवीसउववासाणंतरं सयमागया भगवई **अंबिआ** देवी । उट्ठाविओ संघाहिवई[8] । तेण य[9] देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ । तओ भणिअं देवीए–इमं बिंबं गिण्हसु परं पच्छा न पिच्छिअव्वं[10] । तओ **अजिअ**संघाहिवइणा[11] एगतंतुकड्ढियं रयणमयं सिरि**नेमि**बिंबं कंचणबलाणए नीअं । पढमभवणस्स देहलीए आरोवित्ता अइहरिसभरनिब्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो । ठिअं तत्थेव बिंबं निच्चलं । देवीए कुसुमवुट्ठी कया । जयजयसद्दो अ कओ । एयं च बिंबं वइसाहपुण्णिमाए अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहे ठविअं संघवइणा । ण्हवणाइमहूसवं काउं **अजिओ** सबंधवो निअदेसं पत्तो । कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणिऊण झलहलन्तमणिमयबिंबस्स कंती **अंबिआ**देवीए छाइआ ।

पुव्विं **गुज्जर**धराए **जयसिंह**देवेणं[12] **खंगाररायं** हणित्ता **सज्जणो** दंडाहिवो ठाविओ । तेण अ अहिणवं **नेमि**जिणिंदभवणं **एगारससयपंचासीए (११८५) विक्कमरायवच्छरे** काराविअं । **मालव**देसमुहमंडणेणं साहु**भावडेणं** सोवण्णं आमलसारं कारिअं । [13]**चालुक्क**चक्किसिरि**कुमारपाल**नरिंदसंठविअ**सोरट्ठ**दंडाहिवेण **सिरिसिरिमाल**कुलुब्भवेण[14] **बारससयवीसे (१२२०) विक्कमसंवच्छरे** पज्जा काराविआ । तब्भावणा **धवले**ण अंतराले पवा भराविआ । पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए **लक्खारामो** दीसइ ।

---

1 Pc °आइं । 2 Pa पाहाणा । 3 Pa °लिंडाणि किणा । 4 Pa °रित्त° । 5 Pa तद्दवइ । 6 C सव्वस्स । 7 AB तअं । † Pa 'इत्युज्जयन्तकल्पः ।' इत्येव । 8 B Pa-b संघवई । 9 Pa 'य' नास्ति; Pb न । 10 PaC परिच्छअव्वं । 11 Pa-b °संघवइणा । 12 Pb °देवेण । 13 B Pa चोलुक्क । 14 ACPb कुलब्भवेण ।

अणहिल्लवाडयपट्टणे य **पोरवाड**कुलमंडणा **आसराय-कुमरदेवि**तणया **गुज्जर**धराहिवइसिरि**वीरधवल**रज्जधुरंधरा **वत्थुपाल-तेजपाल**नामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ **तेजपाल**मंतिणा **गिरिनार**-तले निअनामंकिअं **तेजलपुरं** पवरगढमढपवामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं। तत्थ य जणयनामंकिअं **आसराय-विहारु** त्ति **पासनाह**भवणं काराविअं। जणणीनामेणं च **कुमरसरु** त्ति सरोवरं निम्माविअं। **तेजलपुरस्स** पुव्वदिसाए **उग्गसेणगढं** नाम दुग्गं **जुगाइनाह**प्पमुहजिणमंदिररेहिलं विज्जइ। तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं। तं जहा—**उग्गसेणगढं** ति वा, **खंगारगढं** ति वा, **जुण्णदुग्गं** ति वा। गढस्स बाहिं दाहिण-दिसाए **चउरिआ-वेई-लड्डुअओवरिआ-पसुवाडया**इं ठाणाइं चिट्ठंति। उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ **दसदसार**मंडवो गिरिदुवारे य पंचमो हरी **दामोअरो सुवण्णरेहा**नईपारे वट्टइ। **कालमेह**समीवे चिराणुवत्ता संघस्स बोलाविआ[1] †**तेजपाल**मंतिणा मिल्हाविआ कमेण **उज्जयंत**सेले। **वत्थुपाल**मंतिणा **सित्तुज्जा-वयार**भवणं **अट्ठावय-संमेअ**मंडवो **कवड्डिजक्ख-मरुदेवि**पासाया य काराविआ†। **तेजपाल**मंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं कारिअं। **इंदमंडवो** अ **देपाल**मंतिणा उद्धराविओ। **एरावण**-गयपय-मुद्दाअलंकिअं **गइंद-पयकुंडं** अच्छइ। तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्खाण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ। **छत्तसिला**कडणीए **सहस्संबवणारामो**। जत्थ भगवओ **जायव**कुलपईवस्स **सिवा-समुद्दविजय**नंदणस्स दिक्खा-नाण-निव्वाण-कल्लाणयाइं[2] संजायाइं। गिरिसिहरे चडित्ता **अंबिआ**देवीए भवणं दीसइ। तत्तो **अवलोअण**सिहरं। तत्थ ठिएहिं किर दसदिसाओ **नेमि**सामी अवलोइज्जइ त्ति[3]। तओ पढमसिहरे **संबकुमारो,** बीअसिहरे **पज्जुण्णो**। इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयण-सुवण्णमयजिणबिंबाइं निच्चण्हविअच्चिआइं दीसंति। सुवण्णमेयणी अ अणेग-धाउरसभेइणी दिप्पंती दीसइ। रत्तिं च दीवउ व्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति। नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति। अणवरयपझरंतनिज्झरणाणं खलहलारावयमत्तकोइल[4]भमरझंकारा य सुव्वंति त्ति।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो। **जिणप्पह**मुणिंदेहिं लिहिओ त्थ जहासुअं॥ १॥

॥ †श्रीरैवतककल्पः समाप्तः॥

॥ ग्रं० १६१, अक्षर २७॥

---

1 Pa वालाविया। † एतद्दण्डान्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे। 2 A कल्लाणजायाइं; Pa कल्लाणाइं जायाइं। 3 Pa °लोइज्जइ; Pb °लोइज्झति। 4 Pb °कोयल°। † Pa इति श्रीरैवतकल्पः।

६. श्रीपार्श्वनाथकल्पः ।

सुरअसुरखयरकिन्नरजोईसरविसरमहुअराकलिअं । तिहुअणकमलागेहं नमामि जिणचलणनीररुहं ॥ १ ॥
जं पुव्वमुणिगणेणं अविअप्पाणप्पकप्पमज्झंमि । सुरनरफणिपहुमहिअं कहिअं[1] सिरि**पास**जिणचरिअं ॥ २ ॥
[2]संकिण्णसत्थनिक्खित्तचित्तवित्तीण धम्मिअजणाण । तोसकए तं कप्पं भणामि **पास**स्स लेसेण ॥ ३ ॥
भवभमणभेयणत्थं भविआ भवदुक्खभारभरिअंगा । एयं समासओ पुण पभणिज्जंतं मए सुणह ॥ ४ ॥
विजया जया य कमठो पउमावइ-पासजक्ख-वइरुट्टा । धरणो विज्जादेवी सोलसऽहिट्ठायगा जस्स[3] ॥५
पडिमुप्पत्तिनियाणं कप्पे कलिअं पि नेह संकलिअं । एयस्स गोरवभया पढिहिइ न हु को इमं पच्छा ॥ ६ ॥
अह जलहिचुलुअमाणं करेइ तारयविमाणसंखं जो । **पास**जिणपडिममहिमं कहिउं न वि पारए सो वि ॥ ७ ॥
एसा पुराणपडिमा अणेगठाणेसु संठवेऊणं । खयरसुरनरवरेहिं महिआ उवसग्गसमणत्थं ॥ ८ ॥
तह वि हु जणमणनिच्चलभावकए **पाससामि**पडिमाए । **इंदा**ईकयमहिमं कित्तिअमेयाइं[4] ता वुच्छं ॥ ९ ॥
सुरअसुरवंदिअपए सिरि**मुणिसुव्वय**दिणेसरे इत्थ । [5]भारहसरंमि भविअणकमलाइं बोहयंतंमि ॥ १० ॥
चंपाइ पुरवरीए एसा सिरि**पाससामि**णो पडिमा । रयणायरोवकंठे जोईसरवन्निआ आसि ॥ ११ ॥
सक्कस्स **कत्तिअ**भवे सयसंखाभिग्गहा गया सिद्धिं । एआए झाणाओ वयगहणाणंतरं तइया ॥ १२ ॥
सोहम्मवासवो तं पडिमामाहप्पमोहिणा मुणिउं । अंचइ तत्थेव ठिअं महाविभूईइ दिव्वाए ॥ १३ ॥
एवं वच्चइ कालो [6]कयवयवासेहिं **राम**वणवासो । **राहव**पहावदंसणहेउं लोआण **हरि**वयणा ॥ १४ ॥
रयणजडियखयरसंजुअसुरजुअलेण[7] च **दंडगारण्णे** । सतुरयरहो अ पडिमा दिन्नेसा **रामभद्द**स्स ॥ १५ ॥
सगमासे नवदिअहे[8] **विदेहदुहिओ**वणीयकुसुमेहिं । भत्तिभरनिब्भरेणं महिआ **रहु**पुंगवेण तया[9] ॥ १६ ॥
रामस्स पबलकम्मयमलंघणिज्जं च वसणमोइण्णं । नाऊण सुरा भुज्जो[10] तं पडिमं निंति तं ठाणं ॥ १७ ॥
पूअइ पुणो वि **सक्को** [11]पगिट्ठभत्तीइ दिव्वभोएहिं । एवं जा संपुण्णा एगारसवासलक्खा य ॥ १८ ॥
तेणं कालेणं **जउ**वंसे **बलएव-कण्ह-जिणनाहा** । अवइन्ना संपत्ता जुव्वणमह **केसवो** रज्जं ॥ १९ ॥
कण्हेण जरासंधस्स विग्गहे निअदलोवसग्गेसु । पुट्टो **नेमी** भयवं पच्चूहविणासणोवायं ॥ २० ॥
तत्तो आइसइ पहू-पुरिसत्तम ! मज्झ सिद्धिगमणाओ । सगसयपण्णासाहिअतेसीसहस्सेहिं वरिसाणं ॥ २१ ॥
होही **पासो** अरिहा विविहाहिट्ठायगेहिं नयचलणो । जस्सच्चाण्हवणजलासित्ते लोए समइ असिवं ॥ २२ ॥
सामी ! संपइ कत्थवि तस्स जिणिंदस्स चिट्ठए पडिमा ? । इअ चक्कधरेणुत्ते तमिंदमहिअं कहइ नाहो ॥ २३ ॥
इअ जिण-जणद्दणाणं अह सो मुणिउं मणोगयं भावं । **मायलि**सारहिसहिअं रहमेयं पडिममप्पेइ ॥ २४ ॥
मुइओ मुररिउ[12] पडिमं ण्हवेइ[13] घणसारघणघणरसेहिं । पूइअ[14] परिमलबहलामलचंदणचारुकुसुमेहिं ॥ २५ ॥
पच्छागयगहदिन्नं सिन्नं सिंचेइ सामिसलिलेणं । जंतुवसग्गा विलयं विलयं जह जोगिचित्ताइं ॥ २६ ॥
बहुदुहवणं[15] निहणं पत्ते [16]पच्चद्धचक्कवट्टिंमि । जाओ जयजयरावो[17] **जायव**निवनिबिडभडसिन्ने ॥ २७ ॥
तत्थेव विजयठाणे निम्माविअमहिणवं जिणाएसा । **संखउर**नयरजुत्तं ठविऊणं **पास**पहुबिंबं ॥ २८ ॥
पडिममिमं संगिण्हिअ निअनयरमुवागयस्स **कण्ह**स्स । भूवेहिं **वासुदेव**त्तणाभिसेऊसवो विहिओ ॥ २९ ॥
कण्हनरिंदेण तओ मणिकंचणरयणरइअपासाए । सत्तयवाससआइं संठाविअ पूइआ पडिमा ॥ ३० ॥

---

1 Pb मईअं । 2 Pa-b संखित्त°; A C P संकित्त । 3 Pa यस्स । 4 Pa कित्तियमित्ताइं । 5 Pa भरह° । 6 Pa कयवइ° 7 Pa °खयरसंजुयलेण । 8 Pa °दिवसे । 9 Pa विना सर्वत्र 'तहा' । 10 Pa पुज्जो । 11 A B Pb पकिट्ठ° । 12 A Pa सुररिउ; C सिरिरिउ । 13 B Pb ण्हावइ । 14 Pa पूइइ; Pb पूईअ । 15 A वट्टणं । 16 Pb पच्चट्ठं° । 17 B C °राओ ।

जाए [1]**जायवजाई**पलए देवाउ **दारवइ**दाहे । सामिपहावा देवालयंमि न हु पावगो लग्गो ॥ ३१ ॥
सद्धिं [2]पुरीइ तइया जलनिहिणा रुद्दरमंदिरसमेओ । लोललहरीकरेहिं नाहो नीरन्तरे[3] नीओ ॥ ३२ ॥
तक्खयनागिंदेणं तइया रमणत्थमुरग[4]रमणीहिं । तत्थागएण दिट्ठा पहुपडिमा पावनिद्दलणी ॥ ३३ ॥
पमुइअमणेण तत्तो नायवहूविहिअनट्टकलहट्टं । महया महेण महिआ जावऽसिई[5]वाससहसाइं ॥ ३४ ॥
वरुणो वरहरिअवई तयवसरे सायरं पलोअंतो । **तक्खय**पूइज्जंतं पासइ तिहुअणपहुं **पासं** ॥ ३५ ॥
एसो सो गोसामी जो सुरनाहेण[6] पूइओ पुव्विं । इण्हिं मज्झवि जुज्जइ सहायणं सामिचलणाणं ॥ ३६ ॥
चिंतिअमत्थमहीणं पत्थिअ सेवइ जिणेसमणवरयं । जा चउवच्छरसहसा ठिआ य अह तेण समएणं ॥ ३७ ॥
सिरि**वद्धमाण**जलए तिलए लोअस्स **भरह** खित्तंमि । अविरलगोपूरेणं सिंचंते भव्वसस्साइं ॥ ३८ ॥
कंतिकलाकलुसीकयसुरपुरपउमाइ **कंति**नयरीए । वसइ सुहसत्थवाहो **धणेसरो** सत्थबाहु[7] त्ति ॥ ३९ ॥
सो अन्नया महिब्भो विणिग्गओ जाणवत्तजत्ताए । संजत्तिअवयजुत्तो **सिंहलदीवं**मि संपत्तो ॥ ४० ॥
तत्थ विढप्पिअ पणगणमागच्छंतस्स तस्स वेगेण । पवहणथंभो सहसा जाओ जलरासिमज्झंमि ॥ ४१ ॥
विमणमणो जा चिंतइ पयडीहोऊण सासणसुरी ता । **पउमावई** पयंपइ—मा बीहसु वच्छ ! सुण वयणं ॥ ४२ ॥
वरुणविणिम्मिअमहिमो महिमोहमरट्टमद्दणो भद्द ! । इह नीरतले चिट्ठइ **पास**जिणो नयसु सं ठाणं ॥ ४३ ॥
देवि ! कहं मह सत्ती जिणेसगहणे समुद्दजलमूला । एवं **धणेस**कहिए तो भासइ **सासणा**देवी ॥ ४४ ॥
पविस मह पुट्ठिलग्गो कड्ढसु पहुमामसुत्ततंतूहिं । आरोविअ पोअवरे सावय ! वय निअपुरिं सुत्थो ॥ ४५ ॥
काऊण सव्वमेयं लोगत्तयनायगं गहेऊण । संजायहरिसपगरिसपुलइअगत्तो महासत्तो ॥ ४६ ॥
खणमित्तेण सठाणं समागओ परिसरे पडकुडीओ । रइआविअ जाव ठिओ एइ जणो सम्मुहो ताव ॥ ४७ ॥
गंधव्वगीइवाइअरवेण [8]सूहवयनारिधवलेहिं । बहिरिअककुहो नाहं दाणं दिंतो पवेसेइ ॥ ४८ ॥
[9]रययामलसच्छायं पासायं कारिऊण **कंतीए** । विणिवेसिअ भुवणगुरुं निच्चं पूएइ भत्तीए ॥ ४९ ॥
कालंतरमावण्णे **धणेसरे** पउरनायरवरेहिं । वाससहस्से पहुणो पूइज्जंतस्स वक्कंते ॥ ५० ॥
देवाहिदेवमुत्तिं परिअररहिअं तया[10] य **कंतीए** । मेलिअ रसस्स थंभणनिमित्तमागासमग्गेण ॥ ५१ ॥
कलिअकलाकालत्तय**पालित्तय**गणहरोवएसाओ । **नागज्जुण**जोइंदो[11] आणेही अप्पणो ठाणे ॥ ५२ ॥
जोइणि गए कयत्थे नत्थं मुत्तूण नाहमडवीए । रसथंभाओ होही **थंभणयं** नाम तित्थं ति ॥ ५३ ॥
उब्भिन्नवंसयालंतरट्ठिओ सुरहिखीरण्हविअंगो । आकंठखिइनिमग्गो जणेण **जक्खु** त्ति कयनामो ॥ ५४ ॥
अच्चिस्सइ तयवत्थो जिणनाहो पणसयाइं वरिसाणं । तयणु **धरणिंद**निम्मिअसन्निज्झो विइअसुअसारो ॥ ५५ ॥
सिरि**अभयदेव**सूरी दूरीकयदुहिअरोगसंघाओ । पयडं तित्थं काही अहीणमाहप्पदिप्पंतं ॥ ५६ ॥
कंतीपुरीइ भयवं पुणो गमिस्सइ तओ अ जलहिंमि । बहुविहनयरेसु अ गड्डवगड्डुव[12] महिमाइ दिप्पंतो ॥ ५७ ॥
अह को तीआणागयपडिमाठाणाण साहणसमत्थो । जइवि हु सो सहसमुहो[13] हविज्ज रसणासयसहस्सो ॥ ५८ ॥
पावा-चंप-ऽट्ठावय-रेवय-संमेअ-विमलसेलेसु । **कासी-नासिग-मिहिला-रायगिहि**प्पमुहतित्थेसु ॥५९
जत्ताइ पूअणेणं दाणेणं[14] जं फलं हवइ जीवो । तं **पास**पडिमदंसणमित्तेणं पावए इत्थ ॥ ६० ॥
मासक्खमणस्स फलं वंदणबुद्धीइ **पास**सामिस्स । छम्मासिअस्स पावइ नयणपहगयाइ पडिमाए ॥ ६१ ॥
निरवच्चो बहुतणओ धणहीणो धणयसंनिहो होइ । दोहग्गोवि हु सुहओ पहुदिट्ठीए जणो[15] दिट्ठो ॥ ६२ ॥

---

1 Pb जावण° । 2 Pa सिद्धिपुरीओ । 3 ABPa नीरतरे । 4 P °मुरगय° । 5 A B Pa जावसिवाई° । 6 P सुरलोगाहिवेण । 7 P सत्थवाहोत्थि । 8 P सूहवइ° । 9 P रइयाय° । 10 Pa तयाइ । 11 P जोगिंदो । 12 Pa गरुयगरुय । 13 C सहमुहो । 14 'दाणेणं' नास्ति C । 15 P जणे जिट्ठो ।

मुक्खत्तं कुकलत्तं कुजाइजम्मो कुरूव-दीणत्तं । अन्नभवे पुरिसाणं न हुंति पहुपडिमपणयाणं ॥ ६३ ॥
अडसट्ठितित्थजत्ताकए भमइ कह वि मोहिओ लोओ । तेहिं तोऽणंतगुणं फलमप्पिते जिणे पासे ॥ ६४ ॥
एगेण वि कुसुमेणं जो पडिमं महइ तिव्वभावो सो । भूवालिमउलिमउलिअचरणो चक्काहिवो होइ* ॥ ६५ ॥
जे अट्ठविहं पूअं कुणंति पडिमाइ परमभत्तीए । तेसिं देविंदाईपयाइं[1] करपंकयत्थाइं* ॥ ६६ ॥
जो वरकिरीडकुंडलकेयूराईणि[2] कुणइ देवस्स । तिहुअणमउडो होऊण सो लहुं लहइ सिवमुक्खं* ॥ ६७ ॥
तिहुअणचूडारयणं जणनयणामयसलागिगा[3] एसा । जेहिं न दिट्ठा पडिमा निरत्थयं ताण मणुअत्तं* ॥ ६८ ॥
सिरिसंघदास[4]मुणिणा लहुकप्पो निम्मिओ अ पडिमाए । गुरुकप्पाओ अ मया संबंधलवेसमुद्धरिओ ॥ ६९ ॥
जो पढइ सुणइ चिंतइ एयं कप्पं स कप्पवासीसु । नाहो होऊण भवे सत्तमए पावए सिद्धिं ॥ ७० ॥
गिहचेइअंमि जो पुण पुत्थयलिहिअं पि कप्पमच्चेइ । सो नारयतिरिएसुं निअमा नो जाइ चिरबोही[5] ॥ ७१ ॥
हरिजलहिजलणगयगयचोरोरगगहनिवारियारिपेयाणं । वेयालसाइणीणं भयाइं नासंति दिणि[6] भणणे ॥ ७२ ॥
भवाण पुन्नसोहा पाणीआइन्नहिअयठाणं पि । कप्पो कप्पतरू इव विलसंतो वंछिअं देउ* ॥ ७३ ॥
जावय मेरुपईवो महिमल्लिओ समुद्दजलतिल्लो । उज्जोअंतो चिट्ठइ नरखित्तं ता जयउ[7] कप्पो ॥ ७४ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्य कल्पसंक्षेपः† ॥ ७ ॥

§दढवाहिविहुरिअंगा अणसणगहणत्थमाहविअसंघा । नवसुत्तकुक्कुडि[8]विमोहणाय भणिआ निसि सुरीए ॥ १ ॥
दीविअहत्थअसत्ती नवंगविवरणकहाचमुक्करिआ । **थंभणयपास**वंदणउवइट्ठारोग्गविहिणो अ ॥ २ ॥
संभाणयाउ चलिआ[9] **धवलक्क**पुरा परं[10] चरणचारी । **थंभणपुरं**मि पत्ता **सेढी**तडजरपलासवणे ॥ ३ ॥
गोपयझरणुवलक्खिअ भुवि **'जयतिहुअण'** थवद्धपच्चक्खे । **पासे** पूरिअथवणा गोविअसकलंतवित्तदुगा ॥ ४ ॥
संघकराविअभवणे गयरोगा ठविअ **पास**पहुपडिमा । सिरि**अभयदेव**सूरी विजयंतु नवंगवित्तिकरा ॥ ५ ॥

जन्माग्रेऽपि[11] चतुःसहस्रशरदो देवालये योऽर्चितः
स्वामी वासववासुदेववरुणैः स्वर्वाब्धिमध्ये ततः ।
कान्त्यामिभ्य**धनेश्वरे**ण महता **नागार्जुने**नाञ्चितः
पायात् **स्तम्भनके** पुरे स भवतः **श्रीपार्श्वनाथो** जिनः ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीस्तम्भनककल्पः ॥ ग्रं० १०० (प्रत्यन्तरे १११)

---

* एतत्तारकाङ्किता गाथाः P आदर्शे नोपलभ्यन्ते । 1 Pb °कयाइं । 2 C Pb केऊरा० । 3 Pb सिलागा । 4 Pb संघदाण° । 5 P थिरवेहो । 6 P दिण° । 7 Pb जयइ । † P इति श्रीपार्श्वकल्पः संक्षेपतः । § षट्पद्यात्मिका एषा स्तुतिर्नोपलभ्यते A आदर्शे । 8 Pa कुक्कडि° । 9 AP चलिआउ । 10 AP पुरं । 11 A B Pa-b यन्मार्गेऽपि ।

७. अहिच्छत्रानगरीकल्पः ।

तिहुअणभाणु त्ति जए पयडं नमिऊण **पासजिण**चंदं । **अहिछत्ताए** कप्पं जहासुअं किंपि जंपेमि ॥ १ ॥

इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे **भारहे** वासे मज्झिमखंडे **कुरुजंगल**जणवए **संखावई** नाम नयरी रिद्धिसमिद्धा हुत्था । तत्थ भयवं **पाससामी** छउमत्थविहारेणं विहरंतो काउस्सग्गे ठिओ । पुव्वनिबद्धवेरेण **कमठासुरेण** अविच्छिन्नधारापवाएहिं वरिसंतो अंबुहरो विउव्विओ । तेण सयले महिमंडले एगवण्णवीभूए आकंठमग्गंगं भगवंतं ओहिणा आभोएऊण पंचग्गिसाहणुज्जयकमढमुणिआणाविअकट्ठखोडीअंतरडज्झंतसप्पभवउवयारं सुमरंतेण धरणिंदेण नागराएण अग्गमहिसीहिं सह आंगतूण मणिरयणचिंचइअं सहस्ससंखफणामंडलछत्तं सामिणो उवरिं करेऊण[1] हिट्ठे कुंडलीकयभोगेण संगिण्हिअ सो उवसग्गो निवारिओ । तओ परं तीसे नयरीए **अहिच्छत्त** त्ति नामं संजायं । तत्थ पायारकारएहिं[2] जहा जहा पुरओ ठिओ उरगरूवी धरणिंदो कुडिलगईए सप्पइ तहा तहा इट्टनिवेसो कओ । अज्ज वि तहेव पायाररयणा दीसइ । सिरि**पास**सामिणो चेइअं संघेण कारिअं । चेइआओ पुव्वदिसि अइमहुरपसन्नोदगाणि कमढजलहरुज्झिअजलपुन्नाणि सत्त कुंडाणि चिट्ठंति । तज्जलेसु विहिअण्हाणाओ निंदूओ थिरवच्छाओ हवंति[3] । तेसिं कुंडाणं मट्टिआए धाउवाइआ[4] धाउसिद्धिं भणंति । पाहाणलट्ठिमुद्दिअमुहा सिद्धरसकूविआ य इत्थ दीसइ । तत्थ **मिच्छराय**स्स अणेगे अग्गिदाणाईउग्घाडणोवक्कमा निप्फलीहूआ । तीसे पुरीए अंतो बहिं च पत्तेयं कूवाणं दीहिआणं च सवायं लक्खं अच्छइ[5] । महुरोदगाणं जत्तागयजणाणं **पास**सामिचेइए ण्हवणं कुणंताणं अज्ज वि कमढो खरपवणदुद्दिणवुट्ठिगज्जिअविज्जुमाइ दरिसेइ । मूलचेइआओ नाइदूरे **सिद्धखित्तं**मि **पास**सामिणो **धरणिंद-पउमावई**सेविअस्स चेइअं । पायारसमीवे सिरि**नेमि**मुत्तिसहिआ **सिद्ध-बुद्ध**कलिआ अंबलुंबिहत्था सिंहवाहणा **अंबा**देवी चिट्ठइ । ससिकरनिम्मलसलिलपडिपुन्ना **उत्तरा**भिहाणा वावी । तत्थ मज्जणे कए तम्मट्टिआलेवे अ कुट्ठीणं कुट्ठरोगोवसमो हवइ । **धन्नंतरि**कूवस्स य पिंजरवण्णाए मट्टिआए गुरूवएसा कंचणं उप्पज्जइ । **बंभकुंड**तडपरूढाए मंडुक्कबंभीए दलचुण्णेण एगवण्णगोखीरेण समं पीएण पण्णामेहासंपण्णो नीरोगो किंनरसरो अ होइ । तत्थ य पाएणं उववणेसु सव्वमहीरुहाणं चंदया उवलब्भंति । ताणि ताणि अ कज्जाणि साहिंति[6] । तहा **जयंती-नागदमणी-सहदेवी-अपराजिआ-लक्खणा-तिवण्णी-नउली-सउली-सप्पक्खी[7]-सुवण्णसिला-मोहणी-सामली-रविभत्ता-निव्विसी-मोरसिहा-सल्ला-विसल्ला**पमिईओ महोसहीओ इत्थ वट्टंति । लोइआणि अ अणेगाणि **हरि-हर-हिरण्णगब्भ-चंडिआ**भवण-**बंभकुंडा**ईणि तित्थाणि । तहा एसा नयरी महातवस्सिस्स सुगिहीयनामधेअस्स **कण्हरिसिणो** जम्मभूमि त्ति । तप्पयपंकयपरागकणनिवाएण पवित्तीकया एयवत्थव्वस्स **पास**सामिस्स संभरणेणं आहि-वाहि-सप्प-विस-हरि-करि-रण-चोर-जल-जलण-राय-दुट्ठ-गह-मारि-भूअ-पेअ-साइणिपमुहखुद्दोवद्दवा न पहवंति, भविआणं ति । †विसेसओ[8] सयलातिसयनिहाणं एसा पुरी† ।

इअ एस **अहिच्छत्ता**कप्पो उववण्णिओ समासेणं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं **पउमावइ-धरण-कमढ**पिओ ॥ १ ॥

॥ **अहिच्छत्राकल्पः समाप्तः** ॥

॥ ग्रंथाग्रं० ३६ ॥

---

1 P धारेऊण । 2 P विना सर्वत्र 'पायारएहिं' । 3 C भवंति । 4 A धाउवाई । 5 Pa विवट्टइ । 6 Pa साहंति । 7 A C सप्परक्खी । 8 P विना नास्त्यन्यत्रेदं पदम् । † P आदर्शे एवेदं वाक्यं दृश्यते ।

८. अर्बुदाद्रिकल्पः ।

अर्हन्तौ प्रणिपत्याहं श्रीमन्नाभेय-नेमिनौ । महाद्रेरर्बुदाख्यस्य कल्पं जल्पामि लेशतः ॥ १ ॥
देव्याः श्रीमातुरुत्पत्तिमादौ वक्ष्ये यथाश्रुतम् । [1]तदधिष्ठानतो ह्येष प्रख्यातो भुवि पर्वतः ॥ २ ॥
श्रीरत्नमालनगरे राजाभूद् रत्नशेखरः । सोऽनपत्यतया दूनः प्रैषीच्छाकुनिकान् बहिः ॥ ३ ॥
शिर[ः]स्थां काष्ठभारिण्यास्ते दुर्गां दुर्गतस्त्रियाः । वीक्ष्य व्यजिज्ञपन् राज्ञे भाव्यस्यास्त्वत्पदे सुतः ॥ ४ ॥
राज्ञादिष्टा सगर्भैव सा हन्तुं तन्नरैर्निशि । गर्ते क्षिप्ता कायचिन्ताव्याजात्तस्माद्बहिर्निरैत् ॥ ५ ॥
साऽसूत सूनुं भयार्त्ता द्राक् च झाटान्तरेऽमुचत् । गर्त्ते[2] चानीय तद्वृत्तानभिज्ञैस्तैरघाति सा ॥ ६ ॥
पुण्येरिताभै स्तन्यं चापीपत्सन्ध्याद्वये मृगी । प्रवृद्धेऽस्मिंष्टङ्कशाला महालक्ष्म्याः पुरोऽन्यदा ॥ ७ ॥
मृग्याश्चतुर्णां पादानामधो नूतननाणकम् । जातं श्रुत्वा शिशुरूपं लोके वार्त्ता व्यजृम्भत[3] ॥ ८ ॥
नव्यो[4] नृपोऽभूत्कोऽपीति श्रुत्वा प्रैषीद् भटान्नृपः । तद्वधायाथ तं दृष्ट्वा सायं ते पुरगोपुरे ॥ ९ ॥
बालहत्याभियाऽमुञ्चन् गोयूथस्यायतः[5] पथि । तत्तथैव स्थितं भाग्यादेकस्तूक्षा पुरोऽभवत् ॥ १० ॥
तत्प्रेर्य स[6] चतुष्पादान्तराले तं शिशुं न्यधात् । तच्छ्रुत्वा मन्त्रिबोधात्तं राजाऽमंस्तौरसं मुदा ॥ ११ ॥
श्रीपुञ्जाख्यः क्रमात्सोऽभूद् भूपस्तस्याऽभवत् सुता । श्रीमाता रूपसंपन्ना केवलं प्लवगानना ॥ १२ ॥
तद्वैराग्यान्निर्विषया जातु जातिस्मरा पितुः । न्यवेदयत् प्राग्भवं स्वं यदाऽऽसं वानरी पुरा ॥ १३ ॥
सञ्चरन्त्यर्बुदं शाखिशाखां तालुनि केनचित् । विद्धा मृप्यथ रुण्डं मे कुण्डेऽपतत्तरोरधः ॥ १४ ॥
तस्य कामिततीर्थस्य माहात्म्यान्नृतनुर्मम । मस्तकं तु तथैवास्तेऽद्याप्यतः कपिमुख्यहम् ॥ १५ ॥
श्रीपुञ्जो[7]ऽक्षेपयच्छीर्षं कुण्डे प्रेष्य निजान्नरान् । ततः सा नृमुखी जज्ञेऽतपस्यच्चार्बुदे गिरौ ॥ १६ ॥
व्योमगाम्यन्यदा योगी दृष्ट्वा तां रूपमोहितः । खादुत्तीर्यालपत् प्रेम्णा—मां कथं वृणुषे शुभे† ! ॥ १७ ॥
सोचेऽत्यगादाययामो रात्रेस्तावदतः परम् । ताम्रचूडरुतादर्वाक् कयाचिद्विद्यया यदि ॥ १८ ॥
शैलेऽत्र कुरुषे हृद्याः पद्या[8] द्वादश तर्हि मे । वरः स्या इति, चेटैः स्वैर्द्वियाम्याचीकरत्स ताः ॥ १९ ॥
स्वशक्त्या कुर्कुटरवे कृतके कारिते तया । निषिद्धोऽपि विवाहाय नास्थात्तत्कैतवं विदन् ॥ २० ॥
सरित्तीरेऽथ तं स्वस्रा क्लृप्तवीवाहसम्भृतिम्[9] । सोचे त्रिशूलमुत्सृज्य विवोढुं संनिधेहि मे ॥ २१ ॥
तथा कृत्वोपागतस्य पदयोर्विकृतान् शुनः । नियोज्य साऽस्य शूलेन हृद्यस्तेन[10] वधं व्यधात् ॥ २२ ॥
इत्याजन्माखण्डशीला जन्म नीत्वा स्वराप सा । श्रीपुञ्जोऽशिखरं[11] तत्र तत्प्रासादमचीकरत् ॥ २३ ॥
षण्मासान्तेऽर्बुदाख्योऽस्याधोभागेऽद्रेश्चलत्यहिः । ततोऽद्रिकम्पस्ततसर्वे[12] प्रासादाः शिखरं विना ॥ २४ ॥

लौकिकास्त्वाहुः—

'नन्दिवर्द्धन इत्यासीत् प्राक् शैलोऽयं हिमाद्रिजः । कालेनार्बुदनागाधिष्ठानात्त्वर्बुद इत्यभूत्' ॥ २५ ॥
वसन्ति द्वादश ग्रामा अस्योपरि [13]धनोद्धुराः । तपस्विनो गोग्गलिका राष्ट्रिकाश्च सहस्रशः ॥ २६ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत् पुष्पं न तत् फलम् । न स कन्दो न सा खानिर्या नैवात्र निरीक्ष्यते ॥ २७ ॥
प्रदीपवन्महौषध्यो जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु । सुरभीणि रसाढ्यानि वनानि[14] द्विविधान्यपि ॥ २८ ॥
स्वच्छन्दोच्छलदच्छोर्म्मिस्तीरद्रुकुसुमाञ्चिता । पिपासुक्लृप्तानन्दाऽत्र भाति मन्दाकिनी धुनी ॥ २९ ॥
चकासत्यस्य शिखराण्युत्तुङ्गानि सहस्रशः । परिस्खलन्ति सूर्यस्य येषु रथ्या अपि क्षणम् ॥ ३० ॥

---

1 P यदधि° । 2 Pa गर्भे । 3 C व्यजृम्भते । 4 Pa भव्यो । 5 A C गोयूथः । 6 A C तत्प्रेर्य च स । 7 P विना सर्वत्र 'श्रीपुञ्ज' । † P मां वृणीषे कथं शुभे । 8 'पद्या' पतितः Pa । 9 Pb संभृतिम् । 10 P सा स्वशूलेनाहत्य स्वैव वधं । 11 P श्रीपुञ्जः शिखरे । 12 A B Pb °सर्वे° । 13 'धनो' पतितः C आदर्शे । 14 'वनानि' पतितः P ।

चण्डाली-वज्रतैलेभकन्दाद्याः कन्दजातयः । दृश्यन्तेऽत्र प्रतिपदं तत्तत्कार्यप्रसाधिकाः ॥ ३१ ॥
प्रदेशाः पेशलाः कुण्डैस्तत्तदाश्चर्यकारिभिः । अस्य धातुखनीभिश्च निर्झरैश्चामृतोदकैः ॥ ३२ ॥
कोकूयिते कृतेऽत्रोच्चैर्द्राक् **कोकूयित**कुण्डतः । प्रादुर्भवति वाःपूरः कुर्वन् खलहलारवम् ॥ ३३ ॥
श्रीमाता-ऽचलेश्वरश्च वशिष्ठाश्रम एव च । अत्रामी लौकिकास्तीर्था **मन्दाकिन्याद**योऽपि च ॥ ३४ ॥
महाद्रेरस्य नेतारः **परमार**नरेश्वराः । पुरी **चन्द्रावती** तेषां राजधानी निधिः श्रियाम् ॥ ३५ ॥
कलयन् विमलां बुद्धिं **विमलो** दण्डनायकः । चैत्यमत्र**र्षभ**स्याधात् पैत्तलप्रतिमान्वितम् ॥ ३६ ॥
आराध्या**म्बां** भगवतीं पुत्रसंपदपस्पृहः । तीर्थस्थापनमभ्यर्थ्य चम्पकद्रुमसंनिधौ ॥ ३७ ॥
पुष्पस्रग्दामरुचिरं दृष्ट्वा गोमयगोमुखम् । तत्राग्रहीद् भुवं दण्डेट् **श्रीमातु**र्भवनान्तिके ॥ ३८ ॥–युग्मम् ।
राजानकश्री**धान्धूके** क्रुद्धं श्री**गूर्जरेश्वरम्** । प्रसाद्य भक्त्या तं **चित्रकूटा**दानाय्य तद्गिरा ॥ ३९ ॥
वैक्रमे वसुवस्वाशा (१०८८) मितेऽब्दे भूरिरैव्ययात् । सत्प्रासादं[1] स **विमलवसत्याह्वं** व्यधापयत् ॥४०॥
यात्रोपनम्रसंघस्यानिघ्नविघ्नविघातनम् । कुरुतेऽत्रा**म्बिका** देवी पूजिता बहुभिर्विधैः ॥ ४१ ॥
युगादिदेवचैत्यस्य पुरस्तादत्र चाश्मनः । एकरात्रेण घटितः शिल्पिना तुरगोत्तमः ॥ ४२ ॥
वैक्रमे वसुवस्वर्क (१२८८) मितेऽब्दे **नेमि**मन्दिरम् । निर्ममे **लूणिगवसत्याह्व**यं सचिवेन्दुना ॥ ४३ ॥
कषोपलमयं बिम्बं श्री**तेजःपाल**मन्त्रिराट् । तत्र न्यास्थत् **स्तम्भतीर्थे** निष्पन्नं दृक्सुधाञ्जनम् ॥ ४४ ॥
मूर्त्तीः स्वपूर्ववंश्यानां हस्तिशालां च तत्र सः । न्यवीविशद्विशांपत्युः श्री**सोमस्य** निदेशतः ॥ ४५ ॥
अहो ! **शोभनदेव**स्य सूत्रधारशिरोमणेः । तच्चैत्यरचनाशिल्पान्नाम लेभे यथार्थताम् ॥ ४६ ॥
वज्रात्रातः समुद्रेण **मैनाको**ऽस्यानुजो गिरेः । समुद्रौ त्रातौ त्वनेन दण्डेन्मन्त्रीश्वरौ भवात् ॥ ४७ ॥
तीर्थद्वयेऽपि भग्नेऽस्मिन् दैवान्म्लेच्छैः प्रचक्रतुः । अस्योद्धारं द्वौ **शाकाब्दे वह्निवेदार्कसंमिते (१२४३)** ॥४८॥
तत्राद्यतीर्थस्योद्धर्त्ता **लल्लो महणसिंह**भूः । **पीथड**स्त्वितरस्याभूद्व्यवहृच्**चण्डसिंह**जः ॥ ४९ ॥
कुमारपालभूपालश्चौलुक्यकुलचन्द्रमाः । श्री**वीर**चैत्यमस्योच्चैः शिखरे निरमीमपत् ॥ ५० ॥
तत्तत्कौतूहलाकीर्णं तत्तदौषधिबन्धुरम् । धन्याः पश्यन्त्य**र्बुदाद्रिं** नैकतीर्थपवित्रितम् ॥ ५१ ॥
दृब्धः श्रोत्रसुधाकल्पः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः । श्रीमद**र्बुदकल्पो**ऽयं चतुरैः परिचीयताम् ॥ ५२ ॥

॥ **श्रीअर्बुदकल्पः समाप्तः**† ॥

॥ ग्रन्थाग्रं ५२ अक्षर १६ ॥

---

1 A C प्रासाद । † P श्रीअर्बुदाचलस्य कल्पः ।

९. मथुरापुरीकल्पः ।

सत्तम-तेवीसइमे नमिऊण जिणेसरे जयसरण्णे । भवियजणमंगलकरं **महुरा**कप्पं पवक्खामि ॥ १ ॥
तित्थे **सुपासनाहस्स** वट्टमाणंमि दुन्नि मुणिसीहा । [1]**धम्मरुइ-धम्मघोसा** नामेणं आसि निस्संगा[2] ॥ २ ॥

ते य छट्ठट्ठमदसमदुवालसमपक्खोववासमासिअदोमासिअतेमासिअचाउम्मासिअखमणाइं कुणिन्ता[3] भव्वे[4] पडिबोहिंता कयावि **महुरा**उरिं विहरिआ । तया य **महुरा** बारहजोअणाइं दीहा, नवजोअणाइं वित्थिण्णा, पासट्ठिअ**ज-उणा**जलपक्खालियवरप्पायारविभूसिआ धवलहरदेउलवाविकूवपुक्खरिणिजिणभवणहट्टोवसोहिआ, पढंतविविहचाउ-व्विज्जविप्पसत्था हुत्था । तत्थ ते मुणिवरा अणेगतरुकुसुमफललयाइण्णे **भूअरमणा**भिहाणे उववणे उग्गहं अणुण्ण-विअ ठिआ वासारत्तं चउमासं कओववासा । तेसिं सज्झायतवचरणपसमाइगुणेहिं आवज्जिया उववणसामिणी **कुबे-रदेवया** । तओ सा रत्तिं पयडीहोऊण भणइ–भयवं ! तुम्हे गुणेहिं अईवाहं हिट्ठा । ता किं पि वरं वरेह[5] । ते भणंति–अम्हे निस्संगा न किं पि मग्गेमो । तओ धम्मं सुणावित्ता अविरयसाविआ सा तेहिं कया । अन्नया कत्तिअ-धवलट्ठमिरयणीए सिज्जायरि त्ति आपुच्छिया **कुबेरा** मुणिवरेहिं । जहा–साविए ! दढसम्मत्ताए जिणवंदणपूअणोव-उत्ताए य होअव्वं । वट्टमाणजोगेण चउमासगं काउं अन्नगामे पारणत्थं विहरिस्सामो । तीए ससोगाए वुत्तं–भयवं ! इत्थेव उववणे कीस न सव्वकालं चिट्ठह । साहू भणंति–

समणाणं सउणाणं[6] भमरकुलाणं च गोउलाणं च । अणियाओ वसहीओ सारइयाणं च मेहाणं ॥ १ ॥ ति ।

तीए विण्णत्तं–जइ एवं ता साहेह धम्मकज्जं, जहाऽहं संपाडेमि । अमोहं देवदंसणं ति । साहूहिं वुत्तं–जइ ते अइनिब्बंधो ता संघसहिए अम्हे मेरुंमि नेऊण चेइयाइं वंदावेहि । तीए भणिअं–तुम्हे दो जणे अहं देवे तत्थ वंदावेमि । **महुरा**संघे चालिए[7] मिच्छद्दिट्ठी देवा[8] कयावि अंतराले विग्घं कुणंति । साहू भणंति–अम्हेहिं आगमब-लेणं चेव मेरू दिट्ठो[9] । जइ[10] संघं नेउं न तुह सत्ती ता अलाहि अम्हे दुण्हं तत्थ गमणेणं । तओ विलक्खीहूआए देवीए भणिअं–जइ एवं ता पडिमाहिं सोहिअं मेरुआगारं काउं दावेमि । तत्थ संघसहिआ तुम्हे देवे वंदह । †साहूहिं[11] पडिवन्नं । तओ[12] तीए[13] देवीए† कंचणघडिओ रयणचिंचईओ अणेगसुरपरिवरिओ तोरणझयमालालंकिओ सिहरोवरिछत्तत्तयसाली रत्तिं थूभो निम्माविओ मेहलातिगमंडिओ । इक्किक्काए मेहलाए चाउद्दिसं पंचवण्णरयणम-याइं बिंबाइं[14] । तत्थ मूलपडिमा सिरि**सुपास**सामिणो पइट्ठाविआ । पहाए लोआ विबुद्धा तं थूभं पिच्छंति परुप्परं कलहंति अ । केई भणंति–**वासुइ**लंछणो एस **सयंभू देवो** । अन्ने भणंति*–**सेस**सिज्जा[15]ठिओ **नारायणो** एस । एवं **बंभ-धरणिंद-सूर-चंदा**इसु विभासा । **बुद्धा** भणंति* न एस थूभो किंतु **बुद्धंडउ**[16] त्ति । तओ मज्झत्थपुरि-सेहिं भणिअं–मा कलहेह । एस ताव देवनिम्मिओ ता सो चेव संसयं भंजिस्सइ त्ति । अप्पप्पणो देवं पडेसु लिहित्ता निअगुट्ठीसमेआ अच्छह । जस्स देवो भविस्सइ तस्सेव इक्को पडो थक्किस्सइ । अन्नेसिं पडे देवो चेव नासेहिइ । संघे-णावि **सुपास**सामिपडो लिहिओ । तओ लेहिअनिअनिअदेवपडा सगुट्ठीआ पूअं काउं नवमीरत्तीए सव्वदरिसणिणो गायन्ता ठिआ । अद्धरत्ते उद्दंडपवणो तणसक्करपत्थरजुत्तो पसरिओ । तेण सव्वे वि पडा तोडित्ता नीया । पलयगज्जिर-वेण नट्ठा दिसोदिसिं जणा । इक्को चेव **सुपास**पडो ठिओ । विम्हिआ लोआ । एस **अरिहंतो** देवो त्ति । सो पडो सयलपुरे भामिओ । पडजत्ता पवत्तिआ । तओ न्हवणं पारद्धं । पढमन्हवणकए कलहंता सावया महल्लपुरिसेहिं

---

1 'धम्मरुइ' पतितः D आदर्शे । 2 C भिसंग्गा । 3 Pa कुणन्ता । 4 A भट्ठे । 5 एतद्वाक्यं पतितं C आदर्शे । 6 D नास्ति एष शब्दः । 7 Pa चलिए । 8 Pa सुरा । 9 A मेरुं जाणामो; C D Pc वन्दिज्जंते । 10 'जइ' नास्ति A आदर्शे । 11 C साहूणं । 12 'तओ' नास्ति C D । 13 C D रत्तीए । † एतत्पाठस्थाने Pa-b 'साहूहिं पडिवन्ने देवीए' एष पाठः । 14 Pa 'बिंबाइं' नास्ति । * तारकान्तर्गता पंक्तिः Pa आदर्शे न विद्यते । 15 A विज्जा । 16 C D बुद्धिंडउ ।

[0]'गोलएसु नामगब्भेसु जस्स नाम पढमं कुमारीहत्थे एइ सो दरिद्दो ईसरो वा पढमं न्हवणं करेउ'–एवं दसमरयणीए ववत्था कया। तओ एगारसीए दुद्ध-दहि-घय-कुंकुम-चंदणाईहिं कलससहस्सेहिं सड्ढा न्हाविंसु। पच्छन्नठिआ सुरा न्हाविंति। अज्जवि तहेव जत्ताए[0] आविंति। कमेण सव्वेहिं न्हवणे कए पुप्फ-धूव-वत्थ-महाधय-आहरणाइं आरोविंति। साहूणं वत्थ-घय-गुलाईणि दिंति। बारसिरत्तीए माला चडाविआ। एवं ते मुणिवरा देवे वंदिअ सयलसंघमाणंदिअ चउमासं काउं अन्नत्थपारणं काऊण तित्थं पयासिअ धुअकम्मा कमेण सिद्धिं पत्ता। तत्थ सिद्धखित्तं जायं। तओ मुणिविओयदुहिआ देवी निच्चं जिणच्चणरया अद्धपलिओवमं आउअं भुंजित्ता चविऊण माणुसत्तं पाविऊण उत्तमपयं पत्ता। तीए ठाणे जा जा उप्पज्जइ सा सा **कुबेर** त्ति भण्णइ। तीए परिरक्खिज्जंतो थूभो बहुं कालं[1] उग्घाडओ ठिओ[2] जाव **पास**सामी उप्पण्णो। इत्थंतरे **महुराए** रण्णा लोभपरव्वसेण जणो हक्कारिऊण भणिओ–एयं कणयमणिनिम्मिअं थूभं कड्ढिअ मह भंडारे खिवह। तओ सारघडिअकुहाडेहिं जाव लोओ कड्ढणत्थं घाए पदिण्णे ताव ते कुहाडा न लग्गंति। तेसिं चेव घायदायगाणं अंगेसु घाया लग्गंति। तओ राइणा अपत्तिअंतेण सयं चिअ घाओ दिण्णो। कुहाडेणं उच्छलिअ रण्णो सीसं छिन्नं। तओ देवयाए कुद्धाए पयडीहोऊण भणिआ जाणवया–रे पावा! किमेयमाढत्तं। जहा राया तहा तुम्हे वि मरिस्सह। तओ तेहिं भीएहिं धूवकडच्छुअहत्थेहिं देवया खामिआ। देवीए भणिअं–जइ जिणहरं अच्चेह ता उवसग्गाओ मुच्चेह[3]। जो जिणपडिमं सिद्धालयं वा पूइस्सइ तस्स घरं थिरं होही, अन्नहा पडिस्सइ। अओ चेव मंगलचेइअपरूवणाए **कप्पे** छेयग्गंथे **महुरा**भवणाइं निदंसणीकयाइं। पइवरिसं जिणपडो पुरे भामेयव्वो त्ति। कुहाडयछट्टी य[4] कायव्वा। जो इत्थ राया भवइ तेण जिणपडिमा पइट्ठाविअ जिमिअव्वं, अन्नहा न जीविहि त्ति। तं सव्वं देवयावयणं तहेव काउमाढत्तं लोएहिं। अन्नया **पास**सामी केवलिविहारेण विहरंतो **महुरं** पत्तो। समोसरणे धम्मं साहइ। दूसमाणुभावं च भाविणं पयासेइ। तओ भगवंते अन्नत्थ विहरिए संघं हक्कारिअ भणिअं **कुबेराए;** जहा–आसन्ना दूसमा परूविआ सामिणा। लोओ राया य लोभग्घत्था[5] होहिन्ति। अहं च पमत्ता न य चिराउसा। तओ उग्घाडयं एयं थूभं सव्वकालं न सक्किस्सामि रक्खिउं। तओ संघाएसेण इट्टाहिं ढक्केमि। तुम्हेहि वि बाहिरे **पास**सामी सेलमइओ पुज्जिअव्वो। †जा य अम्ह बइसणए† अन्नावि देवी होही सा अब्भिंतरे पूअं करिस्सइ। तओ बहुगुणं ति अणुमन्निअं[6] संघेण। देवीए तहेव कयं। तओ **वीर**नाहे सिद्धिं गए **साहिएहिं तेरससएहिं** वरिसाणं **बप्पहट्टि**सूरी उप्पण्णो। तेण वि एयं तित्थं उद्धरिअं। **पास**जिणो पूआविओ। सासयपूअकरणत्थं काणणकूवकोट्टा[7] कारविआ। **चउरासीइ** एणीओ दाविआओ। संघेण इट्टाओ खसंतीओ मुणित्ता पत्थरेहिं वेढाविओ उक्खिल्लाविउमाढत्तो थूभो। देवयाए सुमिणंतरे वारिओ। न उग्घाडेयव्वो एसु त्ति। तओ देवयावयणेणं न उग्घाडिओ, सुघडिअपत्थरेहिं परिवेढिओ अ। अज्जवि देवेहिं रक्खिज्जइ। बहुपडिमसहस्सेहिं देउलेहिं आवासणिआपएसेहिं मणोहराए गंधउडीए **चिल्लणिआ-अंबाई-अणेगखित्तपालाईहिं**[8] अ संजुत्तं एयं जिणभवणं विरायइत्ति।

इत्थ नयरीए **कण्ह**वासुदेवस्स भावितित्थंकरस्स जम्मो। **अज्जमंगू**आयरिअस्स जक्खभूअस्स **हुंडियज-क्खस्स** य चोरजीवस्स इत्थ देउलं चिट्ठइ।

इत्थ पंच थलाइं। तं जहा–**अक्कथलं वीरथलं पउमत्थलं कुसत्थलं महाथलं।** दुवालसवणाइं। तं जहा–**लोहजंघवणं महुवणं बिल्लवणं तालवणं कुमुअवणं विंदावणं भंडीरवणं [9]खइरवणं कामिअवणं कोलवणं बहुलावणं महावणं।**

---

0 एतच्चिह्नान्तर्गताः पङ्क्तयः पतिताः Pa आदर्शे। 1 B बहुकालं। 2 D नास्ति। 3 Pa विनाऽन्यत्र 'मुंचह'। 4 'य' नास्ति A। 5 Pa लोहग्गत्था। † एतदन्तर्गताः शब्दाः पतिताः D आदर्शे। 6 Pa अणुमन्निए। 7 A D ०कुट्टा; Pb·c ०कुट्टा। 8 A B अंबाइआखित्त०। 9 A खयर०।

इत्थ पंच लोइअतित्थाइं। तं जहा—**विस्संतिअ**तित्थं **असिकुंड**तित्थं **वेकुंत**तित्थं **कालिंजर**तित्थं **चक्क**तित्थं।

सित्तुंजे रिसहं, गिरिनारे नेमिं, भरुअच्छे मुणिसुव्वयं, मोढेरए वीरं, महुराए सुपास-पासे[1] घडिआदुगब्भंतरे नमित्ता **सोरट्ठे** ढुंढणं[2] विहरित्ता **गोवालगिरिं**मि जो भुंजेइ तेण **आमराय**सेविअकमकमलेण सिरि**बप्पहट्टि**सूरिणा **अट्ठसयछव्वीसे** (८२६) **विक्कमसंवच्छरे** सिरि**वीर**बिंबं **महुराए** ठाविअं।

इत्थ सिरि**वीरवद्धमाण**जीवेण **विस्सभूइ**णा अपरिमिअबलत्तणकए नियाणं कयं।

इत्थ जउणा **वंकजउण**राएण हयस्स **दंड**अणगारस्स केवले उप्पन्ने महिमत्थं इंदो आगओ।

इत्थ **जिअसत्तु**नरिंदपुत्तो **कालवेसिअ**मुणी अरिसरोगद्दिओ **मुग्गिलगिरिं**मि सदेहे वि निप्पिहो उवसग्गे अहिआसिंसु।

इत्थ **संखराय**रिसितवप्पहावं दट्ठुं **सोमदेव**दिओ **गयउरे** दिक्खं घेत्तूण सग्गं गंतूण **कासीए हरिएसबल**रिसी देवपुज्जो जाओ।

इत्थ उप्पण्णा रायकन्ना **निव्वुई** नाम राहावेहिणो **सुरिंददत्त**स्स सयंवरा जाया।

इत्थ **कुबेरदत्ताए कुबेरसेणा**जणणी **कुबेरदत्तो** अ भाया ओहिन्नाणेण नाउं अट्ठारसनत्तएहिं पडिबोहिया।

इत्थ **अज्जमंगू** सुअसागरपारगो इड्ढिरससायगारवेहिं जक्खत्तमुवागम्म जीहापसारणेण साहूणं अप्पमायकरणत्थं पडिबोहमकासी।

इत्थ **कंबल-संबल**नामाणो वसहपोआ **जिणदास**संसग्गीए पडिबुद्धा नागकुमारा होऊण **वीर**वरस्स भगवओ नावारूढस्स उवस्सग्गं निवारिंसु।

इत्थ **अन्निआपुत्तो पुप्फचूलं** पव्वाविअ संसारसायराओ उत्तारित्था।

इत्थ **इंददत्तो** पुरोहिओ गवक्खट्ठिओ मिच्छद्दिट्ठी अहोवच्चंतस्स साहुस्स मत्थयउवरिं पायं कुणंतो सड्ढेण गुरुभत्तीए पयहीणो कओ।

इत्थ भूअघरे ठिआ निगोअवत्तव्वयं नियाउपरिमाणं च पुच्छिअ तुट्ठचित्तेण **सक्केण अज्जरक्खिअ**सूरी वंदिआ। उवस्सयस्स अ अन्नओहुत्तं दारं कयं।

इत्थ **वत्थपूसमित्तो घयपूसमित्तो दुब्बलियापूसमित्तो** अ लद्धिसंपन्ना विहरिआ।

इत्थ दूसहदुब्भिक्खे दुवालसवारिसिए नियत्ते सयलसंघं मेलिअ आगमाणुओगो पवत्तिओ **खंदिलायरिएण**।

इत्थ देवनिम्मिअथूभे पक्खक्खमणेण देवयं आराहित्ता **जिणभद्द**खमासमणेहिं उद्देहिआभक्खियपुत्थयपत्तत्तणेण तुट्टं भग्गं **महानिसीहं** संधिअं।

इत्थ खवगस्स तवेणं तुट्ठा **सासणदेवया** तच्चणिअपरिग्गहिअं इमं तित्थं संघवयणाओ आरहंतयापत्तं अकासी। देवीए अइलोभपरवसं जणं नाउं सोवण्णिअं थूभं पच्छन्नं काउं इट्टमयं कयं। तओ **बप्पहट्टि**वयणाओ **आमराए**ण उवरि सिलाकलावचिअं कारिअं।

इत्थ **संखराओ कलावई** अ पंचमजम्मे **देवसीह-कणयसुंदरी**नामाणो समणोवासया रज्जसिरिं भुंजित्था।

एवंविहाणं अणेगेसिं संविहाणाणमेसा नयरी उप्पत्तिभूमी। इत्थ **कुबेरा** नरवाहणा **अंबिआ** य सीहवाहणा **खित्तवालो** अ सारमेअवाहणो तित्थस्स रक्खं कुणंति।

---

1 B सुपासो। 2 A ढुंठणं।

इय एस **महुरकप्पो जिणपह**सूरीहिं वण्णिओ किं पि । भविएहिं सइ पढिज्जउ इह परलोइअसुहत्थीहिं ॥ १ ॥
भविआण पुण्णरिद्धी जा जायइ **महुर**तित्थजत्ताए । अस्सिं कप्पे निसुए सा जायइ अवहिअमणाणं ॥ २ ॥

॥ **श्रीमथुराकल्पः समाप्तः** ॥

॥ ग्रं० ११३, अ० २९ ॥

---

१०. अश्वावबोधतीर्थकल्पः ।

नमिऊण **सुव्वय**जिणं परोवयारिक्करसिअमसिअरुइं । **अस्सावबोह**तित्थस्स कप्पमप्पं भणामि अहं ॥ १ ॥

सिरिमुणि**सुव्वय**सामी उप्पन्नकेवलो विहरंतो एगया **पइट्ठाण**पुराओ एगरयणीए सट्ठिजोअणाणि लंघिअ पारद्धअस्समेहजण्णेण **जिअसत्तु**राइणा निआसणतुरंगमं सव्वलक्खणसंपुन्नं होमिउमिच्छिओ । मा अट्टज्झाणाओ दुग्गइं जाहि त्ति पडिबोहेउं **लाड**देसमंडणे **नम्मया**नईअलंकिए **भरुअच्छ**नयरे **कोरिंट**वणं पत्तो । समवसरणे गया लोआ वंदिउं । राया वि गयारूढो आगम्म भगवंतं पणमिओ । इत्थंतरे सो हरी सिच्छाए विहरंतो निउत्तपुरिसेहिं समं तत्थागओ सामिणो रूवमप्पडिरूवं पासिंतो निच्चलो संजाओ । सुआ य धम्मदेसणा तेण । भणिओ अ से पुव्वभवो भगवया । जहा—पुव्वभवे इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे[1] अवर**विदेहे पुक्खलविजए चंपाए** नयरीए **सुरसिद्धो** नाम राया अहमासि । मज्झ परममित्तं तुमं **मइसारो** नाम मंती हुत्था । अहं **नंदण**गुरुपायमूले दिक्खं पडिवज्जिय पत्तो **पाणयकप्पे** । तत्थ वीसं सागरोवमाइं आउं परिवालित्ता तओ चुओऽहं तित्थयरो जाओ । तुमं च उवज्जिअनराऊ **भारहे** वासे **पउमिणिसंड**नयरे **सागरदत्तो** नाम सत्थवाहो अहेसि । मिच्छद्दिट्ठी विणीओ अ । अन्नया तुमए कारिअं सिवाययणं । तप्पूयणत्थं च आरामो रोविओ । तावसो अ एगो तस्स चिंताकरणे निउत्तो । गुरुआएसेणं सव्वओवि किरिआओ सच्चाविंतो तुमं कालं गमेसि । **जिणधम्म**नामएणं सावएणं तुज्झ जाया परमा मित्ती । तेण सद्धिं एगया गओ तुमं साहुसगासे । तेहिं देसणंतरे भणिअं—

जो कारवेइ पडिमं जिणाण अंगुट्ठपव्वमित्तं पि । तिरिनरयगइदुवारे नूणं तेणग्गला दिन्ना ॥ १ ॥

एवं सोऊण तुमे गिहमागंतूण कारिआ हेममई जिणिंदपडिमा । पइट्ठाविऊण तिसंझं पूएउमाढत्तो तं । अन्नदिअहे संपत्ते माहमासे लिंगपूरणपव्वं आराहेउं तुमं सिवाययणं पत्तो । तओ जडाधारीहिं चिरसंचिअं घयं कुंभीओ उद्धरिअं लिंगपूरणत्थं । तत्थ लग्गाओ घयपिप्पीलियाओ जडिएहिं निद्दयं पाएहिं मद्दिज्जमाणाओ दट्ठूणं सिरं धूणित्ता सोइउं लग्गो तुमं । अहो एएसिं दंसणीण वि निद्दयया । अम्हारिसा गिहिणो वराया कहं जीवदयं पालइस्संति । तओ निअचेलंचलेहिं ताओ पमज्जिउमारद्धो तुमं । तेहिं निब्भच्छिओ—रे धम्मसंकर ! कायर ! **अरहंत**पासंडीहिं तं विडंबिओ सि त्ति । तओ सो सव्वधम्मविमुहो जाओ । परमकिविणो धम्मरसिअं लोअं हसंतो मायारंभेहिं तिरिआउअं बंधित्ता भवं भमिऊण जाओ तुमं रायवाहणं तुरंगमो । तुज्झ चेव पडिबोहणत्थं अम्हाणमित्थागमणं ति सामिणो वयणं सुच्चा तस्स जायं जाईसरणं । गहिआ य सम्मत्तमूला देसविरई । पच्चक्खायं सच्चित्तं । फासुअं तणं नीरं च गिण्हइ । छम्मासे निव्वाहिअनियमो मरिऊण **सोहम्मे** [2]महड्ढिओ सुरो जाओ । सो ओहिणा मुणिअपुव्वभवो सामिसमोसरणट्ठाणे रयणमयं चेइअमकासी । तत्थ **सुव्वय**सामिणो पडिमं अप्पाणं च अस्सरूवं ठाविअ गओ सुरालयं । तओ **अस्सावबोह**तित्थं तं पसिद्धं । सो देवो जत्तिअसंघविग्घहरणेणं तित्थं पभाविंतो कालेण नरभवे सिज्झिहिइ ।

कालंतरेण **सउलिआविहारु** त्ति तं तित्थं पसिद्धं । कहं ?—इहेव **जंबुद्दीवे सिंहलदीवे रयणासय**देसे **सिरिपुर**नयरे **चंदगुत्तो** राया । तस्स **चंदलेहा** भारिआ । तीसे सत्तण्हं पुत्ताणं उवरि **नरदत्ता**-

---

1 A नास्ति । 2 A महि० ।

देवीआराहणेणं **सुदंसणा** नाम धूआ जाया । अहीअकलाविज्जा पत्ता जुव्वणं । अन्नया अत्थाणे पिउच्छंगगयाए तीसे **धणेसरो**[1] नाम नेगमो **भरुअच्छा**ओ आगओ । विज्जपासट्ठिअतिअड्डुअगंधे वाणिएण छीयंतेणं 'नमो अरहंताणं' ति पढिअं । सोउं मुच्छिआ सा । कुट्टिओ अ वाणियओ । पत्तचेयण्णा य जाईसरणमुवगया एसा । दट्ठूण धम्मबंधु त्ति मोइओ । रण्णा मुच्छाकारणं पुच्छिआए तीए भणिअं–जहाऽहं पुव्वभवे **भरुअच्छे नम्मया**तीरे **कोरिंट**[2]वणे वडपायवे सउलिया आसि । पाउसे अ सत्तरत्तं महावुट्ठी जाया । अट्ठमदिणे छुहाकिलंता पुरे भमंती अहं वाहस्स घरंगणाओ आमिसं घित्तुं उड्डीणा । वडसाहानिविट्ठा य अणुपयमागएण वाहेण सरेण विद्धा । मुहाओ पडिअं पलं सरं च गिण्हित्ता गओ सो सट्ठाणं । तत्थ करुणं रसंती उव्वत्तण-परिअत्तणपरा दिट्ठा एगेण सूरिणा । सित्ता य जलपत्तजलेणं । दिन्नो पंचनमुक्कारो । सद्दहिओ अ मए । मरिऊण अहं तुम्ह धूआ जाय त्ति । तओ सा विसयविरत्ता महानिबंधेण पिअरे आपुच्छिअ तेणेव संजत्तिएण सद्धिं पट्ठिआ वाहणाणं सत्तसएहिं **भरुअच्छे** । तत्थ पोअसयं[3] च वत्थाणं[3], पोअसयं दव्वनिचयाणं; एवं चंदणागुरुदारूणं, धन्नजलिंधणाणं, नाणाविहपक्कन्नफलाणं, पहरणाणं । एवं छसया पोआणं । पण्णासं सत्थधराणं; पण्णासं पाहुडाणं । एवं सत्तसयवाहणजुत्ता पत्ता समुद्दतीरं । तओ रण्णा तं वाहणवूहं[4] दट्ठुं **सिंहलेसर**अवक्खंदसंकिणा सज्जिआए सेणाए, पुरक्खोभनिवारणाय गंतुं पाहुडं च दाउं **सुदंसणा**आगमणेणं विन्नत्तो राया तेण संजत्तिएण । तओ सो पच्चोणीए निग्गओ । पाहुडं दाऊण पणमिओ कन्नाए । पवेसमहूसवो अ जाओ । दिट्ठं तं चेइअं । विहिणा वंदिअं पूइयं च । तित्थोववासो अ कओ । रण्णा दिण्णे पासाए ठिआ । रायणा य अट्ठ वेलाउलाइं अट्ठसया गामाणं, अट्ठसया वप्पाणं, अट्ठसया पुराणं दिण्णा । एगदिणे अ जित्तिअं भूमिं तुरंगमो संचरइ तित्तिआ पुव्वदिसाए, जित्तिअं च हत्थी जाइ तत्तिआ पच्छिमाए दिण्णा । उवरोहेण सव्वं पडिवन्नं । अन्नया तस्सेवायरिअस्स पासे निअपुव्वभवं पुच्छइ । जहा–भयवं ! केण कम्मुणा अहं सउलिआ जाया । कहं च तेण वाहेण अहं निहय त्ति ? । आयरिएहिं भणिअं–भद्दे ! **वेयड्ढ**पव्वए उत्तरसेढीए **सुरम्मा** नाम नयरी । तत्थ विज्जाहरिंदो **संखो** नाम राया । तस्स **विजया**भिहाणा तुमं धूआ आसि । अन्नया दाहिणसेढीए **महिस**गामे वच्चंतीए तुमए नईतडे **कुक्कुडसप्पो** दिट्ठो । सो य रोसवसेणं तए मारिओ । तत्थ नइए तीरे जिणाययणं दट्ठूण वंदिअं भयवओ बिंबं परम[5]भत्तिपरव्वसाए तुमए । जाओ परमाणंदो । तओ चेईयाओ बाहिं[6] निग्गच्छंतीए तुमए दिट्ठा एगा पहपरिस्समखिन्ना साहुणी । तीए पाए वंदित्ता धम्मवाहिआ अज्जाए तुमं । तुमए वि तीसे विस्सामणाईहिं सुस्सूसा कया । चिरं गिहमागया । कालेण कालधम्मं पव्वन्ना अट्टज्झाणपरा इह **कोरिंटय**वणे सउणी जाया तुमं । सो अ **कुक्कुडसप्पो** मरिऊण वाहो संजाओ । तेण पुव्ववेरेणं सउणीभवे तुमं बाणेणं पहया । पुव्वभवकयाए जिणभत्तीए गिलाणसुस्सूसाए अ अंते बोहिं पत्ता सि तुमं । संपयं पि कुणसु जिणप्पणीअं दाणाइधम्मं ति । एवं गुरूणं वयणं सुच्चा सव्वं तं दव्वं सत्तखित्तीए विवेइ । चेइयस्स उद्धारं कारेइ । चउवीसं च देवकुलियाओ पोसहसाला-दाणसाला-अज्झयणसालाओ कारेइ[7] । अओ तं तित्थं पुव्वभवनामेणं **सउलिआविहारु** त्ति भण्णइ । अंते य संलेहणं दव्व-भावभेयभिन्नं काउं कयाणसणा वइसाहसुद्धपंचमीए **ईसाणं** देवलोगं पत्ता । सिरि**सुव्वयसामि**सिद्धिगमणाणंतरं इक्कारसेहिं लक्खेहिं चुलसीइसहस्सेहिं चउसयसत्तरेहिं च वासाणं अईएहिं **विक्कमाइच्च**संवच्छरो पयट्टो । जीवंत**सुव्वयसामि**-अविक्खाए पुण एगारसलक्खेहिं अट्ठावीसूणपंचणवइसहस्सेहिं च वासाणं **विक्कमो** भावी । एसा **सउलिआविहारस्स** उप्पत्ती ।

लोइअतित्थाणि अणेगाणि **भरुअच्छे** वट्टंति । कमेण **उदयण**पुत्तेण **बाहडदेवेण सित्तुज्ज**पासायउद्धारे कारिए तदणुजेण **अंबडेण** पिउणो पुण्णत्थं **सउलिआविहारस्स** उद्धारो कारिओ । मिच्छद्दिट्ठीए **सिंधवा**देवीए

1 A धणंधरो । 2 A कोरंट० । 3 नास्ति D आदर्शे । 4 A ०हूहं । 5 'परम' नास्ति B । 6 नास्ति B । 7 A करेइ ।

अंडवस्स पासायसिहरे नचंतस्स उवसग्गो कओ । सो अ निवारिओ विज्जाबलेण सिरि**हेमचंद**सूरीहिं ।
अस्सावबोहतित्थस्स एस कप्पो समासओ रइओ । सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविएहिं पढिज्जउ तिकालं ॥ १ ॥

॥ अश्वावबोधतीर्थकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ८२, अ० २० ॥

---

११. वैभारगिरिकल्पः ।

अथ **वैभारकल्पो**ऽयं स्तवरूपेण तन्यते । संक्षिप्तरुचितोषाय श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ॥ १ ॥
बभार **वैभार**गिरेर्गुणप्राग्भारवर्णने । निर्भरं भारता[1] बुद्धिं भारती तत्र के वयम् ॥ २ ॥
तीर्थभक्त्या तरलितास्तथापि व्यापिभिर्गुणैः । राजन्तं तीर्थराजं तं स्तुमः किंचिज्जडा अपि ॥ ३ ॥
अत्र दारिद्र्यविद्राविरूपिका **रसकूपिका** । **तप्त-शीताम्बुकुण्डानि** कुर्युः कस्य न कौतुकम् ॥ ४ ॥
त्रिकूट-खण्डिकादीनि शृङ्गाण्यस्य चकासति । निःशेष**करण**ग्रामस्यावनानि वनानि च ॥ ५ ॥
ओषध्यो विविधव्याधिविध्वंसादिगुणोर्जिताः । नद्यो हृद्योदकाश्चात्र **सरस्वत्या**दयोऽनघाः ॥ ६ ॥
बहुधा लौकिकं तीर्थं **मगधा-लोचना**दिकम् । यत्र चैत्येषु बिम्बानि ध्वस्तडिम्बानि चार्हताम् ॥ ७ ॥
मेरूद्यानचतुष्कस्य पुष्पसंख्यां विदन्ति ये । अमुष्मिन् सर्वतीर्थानां विदांकुर्वन्तु ते मितम् ॥ ८ ॥
श्री**शालिभद्र-धन्य**र्षी इह तप्तशिलोपरि । दृष्टौ कृततनूत्सर्गौ पुंसां पापमपोहतः ॥ ९ ॥
श्वापदाः सिंह-शार्दूल-भाल्लूक-गवलादयः । न जातु तीर्थमाहात्म्यादिह कुर्वन्त्युपप्लवम् ॥ १० ॥
प्रतिदेशं विलोक्यन्ते विहाराश्चात्र सौगताः । आरुह्यैनं च निर्वाणं प्रापुस्ते ते महर्षयः ॥ ११ ॥
रौहिणेयादिवीराणां प्राग् निवासतया श्रुताः । निचाय्यन्ते तमस्काण्ड[2]दुर्विगाहा गुहा इह ॥ १२ ॥
उपत्यकायामस्याद्रेर्भाति **राजगृहं** पुरम् । **क्षितिप्रतिष्ठा**दिनामान्यन्वभूद्यत्तदा तदा ॥ १३ ॥
क्षितिप्रतिष्ठ-चणकपुर-र्षभपुराभिधम् । **कुशाग्रपुर**संज्ञं च क्रमाद्**राजगृहा**ह्वयम् ॥ १४ ॥
अत्र चासीद्**गुणसि(शि)लं** चैत्यं शैत्यकरं दृशाम् । श्री**वीरो** यत्र समवससार गणशः प्रभुः ॥ १५ ॥
प्राकारं यत्र **मेतार्यः** शातकौम्भमचीकरत् । सुरेण प्राच्यसुहृदा मणींश्चाजीहृदच्छगम् ॥ १६ ॥
शालिभद्रादयोऽनेके महेभ्या यत्र जज्ञिरे । जगच्चमत्कारकरी येषां श्रीर्भोगशालिनी ॥ १७ ॥
सहस्राः किल षड्त्रिंशद्यत्रासन् वणिजां गृहाः । तत्र चार्धाः सौगतानां मध्ये चार्हतसंज्ञिनाम् ॥ १८ ॥
यस्य प्रासादपङ्क्तीनां श्रियः प्रेक्ष्यातिशायिनीः । त्यक्तमाना विमानाख्यामापुर्मन्ये सुरालयाः ॥ १९ ॥
जगन्मित्रं यत्र मित्रः **सुमित्रा**न्वयपङ्कजे । **अश्वावबोध**निर्व्यूढव्रतोऽभूत् **सुव्रतो** जिनः ॥ २० ॥
यत्र श्रीमान् **जरासन्धः श्रेणिकः कूणिकोऽभयः । मेघ-हल्ल-विहल्लाः** श्री**नन्दिषेणो**ऽपि चाभवन् ॥ २१ ॥
जम्बूस्वामि-कृतपुण्य-शय्यंभवपुरस्सराः । जज्ञुर्यतीश्वरा यत्र **नन्दा**द्याश्च पतिव्रताः ॥ २२ ॥
यत्र श्रीमन्**महावीर**स्यैकादश गणाधिपाः । पादपोपगमान् मासं सिद्धावासं समासदन् ॥ २३ ॥
एकादशो गणधरः श्री**वीर**स्य गणेशितुः । **प्रभासो** नाम पावित्र्यं यस्य चक्रे स्वजन्मना ॥ २४ ॥
नालन्दालंकृते यत्र वर्षारात्रांश्चतुर्दश । अवतस्थे प्रभु**र्वीर**स्तत्कथं नास्तु पावनम् ॥ २५ ॥
यस्यां नैकानि तीर्थानि नालन्दा नायनश्रियाम् । भव्यानां जनितानन्दा **नालन्दा** नः पुनातु सा ॥ २६ ॥

---

1 B भरता; A भारती । 2 C A तमस्काण्ड० ।

मेघनादः स्फुरन्नादः शात्रवाणां रणाङ्गणे । क्षेत्रपालाग्रणीः कामान् कांस्कान् पुंसां पिपर्ति न ॥ २७ ॥
श्री**गौतम**स्यायतनं कल्याणस्तूपसंनिधौ । दृष्टमात्रमपि प्रीतिं पुष्णाति प्रणतात्मनाम् ॥ २९ ॥

वर्षे सिद्धा **सरस्वद्रसशिखिकुमिते (१३६४)** वैक्रमे तीर्थमौलेः
सेवाहेवाकिनां श्रीर्वितर सुरतरो ! देवतासेवितस्य ।
वैभारक्षोणिभर्तुर्गुणगणभणनव्यापृता भक्तियुक्तैः
सूक्ति**र्जैनप्रभी**यं मृदुविशदपदाऽधीयतां धीरधीभिः ॥ २७ ॥

॥ श्रीवैभारगिरिमहातीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३१, अ० २ ॥

१२. कोशाम्बीनगरीकल्पः ।

वच्छाजणवए **कोसंबी** नाम नयरी[1] । जत्थ चन्द-सूरा सविमाणा सिरि**वद्धमाणं** नमंसिउं समागया । तत्थ तदुज्जोएण वेलं अयाणंती[2] अज्जा **मिगावई** समोसरणे पच्छा ठिआ । चंदाइच्चेसु सट्ठाणं गएसु अज्ज**चंदणा**इसाहुणीसु कयावस्सयासु पडिस्सयं हव्वमागया । अज्ज**चंदणा**ए उवालद्धा निआवराहं खमिंती पायपडिया चेव केवलं संपत्ता ।

जत्थ य **उज्जेणी**ओ पुरिसपरंपराणीयइट्टयाहिं **पज्जोअ**रण्णा **मियावई**अज्झोववण्णेन दुग्गं कारिअं अज्ज वि चिट्ठइ ।

जत्थ य **मिगावई**कुक्खिसंभवो गंधव्ववेयनिउणो **सयाणीअ**पुत्तो **उदयणो वच्छा**हिवो अहेसि ।

जत्थ चेइएसुं पिक्खगजणनयणअमयंजणरूवाओ जिनपडिमाओ ।

जत्थ य **कालिंदी**जललहरिआलिंगिज्जमाणाणि वणाणि ।

जत्थ पोसबहुलपडिवयपडिवन्नाभिग्गहस्स सिरि**महावीर**स्स **चंदणबाला**ए पंचदिवसूणछम्मासेहिं सुप्पकोणट्ठिअकुमासेहिं पारणं कारियं । वसुहारा य अद्धतेरसकोडिपमाणा देवेहिं वुट्ठा । अओ चेव **वसुहार** त्ति गामो नयरीसंनिहिओ पसिद्धो वसइ । पंचदिव्वाणि अ पाउब्भूआणि । इत्तु च्चिअ तद्दिणाओ पहुडि जिट्ठसुद्धदसमीए सामिपारणदिणे तित्थन्हाणदाणाईआयारा तत्थ अज्ज वि लोए पयट्टंति ।

जत्थ य **पउमप्पह**सामिणो चवण-जम्मण-दिक्ख-नाणकल्लाणगाइं संवुत्ताइं ।

जत्थ य सिणिद्धच्छाया कोसंबतरुणो महापमाणा दीसंति ।

जत्थ य **पउमप्पह**चेइए पारणकारावणदसाभिसंधिघडिआ **चंदनबाला**मुत्ती दीसइ ।

जत्थ अज्ज वि तंमि चेव चेइए पइदिणं पसंतमुत्ती सीहो आगंतूण भगवओ भत्तिं करेइ ।

सा **कोसंबी**नयरी जिणजम्मपवित्तिआ महातित्थं । अम्हाणं देउ सिवं थुवंती **जिणप्पह**सूरीहिं ॥

॥ इति कोशाम्बीनगरीकल्पः ॥

॥ ग्रं० १८, अ० २१ ॥

1 B नगरी । 2 B अजाणंती ।

१३. अयोध्यानगरीकल्पः ।

अउज्झाए एगट्ठिआइं जहा–**अउज्झा अवज्झा कोसला विणीया साकेयं इक्खागुभूमी रामपुरी कोसल** त्ति । एसा सिरि**उसभ-अजिअ-अभिनंदण-सुमइ-अणंत**जिणाणं[1] तहा नवमस्स सिरि**वीर**गणहरस्स **अयलभाउ**णो जम्मभूमी । **रहुवंसु**ब्भवाणं **दसरह-राम-भरहा**ईणं च रज्जट्ठाणं । **विमल-वाहणा**इसत्तकुलगरा इत्थ उप्पन्ना ।

उसभसामिणो रज्जाभिसेए मिहुणगेहिं भिसिणीपत्तेहिं उदयं घित्तुं पाएसु छूढं। तओ साहुविणीया पुरिस त्ति भणिअं सक्केण । तओ **विणीय** त्ति सा नयरी रूढा ।

जत्थ य महासईए **सीयाए** अप्पाणं सोहंतीए निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ । सो अ जलपूरो नयरिं बोलिंतो निअमाहप्पेण तीए चेव रक्खिओ ।

जा य **अड्ढभरह**वसुहागोलस्स मज्झभूआ सया, नवजोअणवित्थिण्णा बारसजोअणदीहा य ।

जत्थ **चक्केसरी** रयणमयायणट्ठिअपडिमा संघविग्घं हरेइ, **गोमुहजक्खो** अ ।

जत्थ **घग्घर**दहो **सरऊ**नईए समं मिलित्ता **सग्गदुवारं** ति पसिद्धिमावन्नो ।

जीए उत्तरदिसाए बारसहिं जोअणेहिं **अट्ठावय**नगवरो जत्थ भगवं **आइगरो** सिद्धो । जत्थ य **भरहे-सरेण सीहनिसिज्झायय**णं तिकोसुच्चं कारिअं । निय-नियवण्णपमाणसंठाणजुत्ताणि अ चउवीसजिणाण बिंबाइं ठावियाइं । तत्थ पुव्वदारे **उसभ-अजिआणं**; दाहिणद्दारे **संभवाईणं** चउण्हं; पच्छिमदुवारे **सुपासाईणं** अट्ठण्हं; उत्तरदुवारे **धम्माईणं** दसण्हं; थूभसयं च भाउआणं तेणेव कारिअं ।

जीए नयरीए वत्थव्वा जणा **अट्ठावय**उवच्चयासु कीलिंसु ।

जओ अ **सेरीसय**पुरे नवंगवित्तिकारसाहासमुब्भवेहिं सिरि**देविंदसूरी**हिं चत्तारि महाबिंबाइं दिव्वसत्तीए गयणमग्गेण आणीआइं ।

जत्थ अज्ज वि **नाभिरायस्स** मंदिरं । जत्थ य **पासनाह**वाडिया **सीयाकुंडं सहस्सधारं** च । पायारट्ठिओ अ **मत्तगयंद**[2]जक्खो । अज्ज वि जस्स अग्गे करिणो न संचरंति, संचरंति वा ता मरंति ।

गोपयराईणि अ अणेगाणि य लोइअतित्थाणि वट्टंति ।

एसा पुरी **अउज्झा सरऊ**जलसिच्च[3]माणगढभित्ती । जिणसमयसत्ततित्थीजत्तपवित्तिअजणा जयइ ॥ १ ॥

कहं पुण **देविंदसूरी**हिं चत्तारि बिंबाणि **अउज्झा**पुराओ आणीयाणि त्ति भण्णइ–**सेरीसय**नयरे विह-रंता आराहिअ**पउमावइ-धरणिंदा छत्तावल्ली**यसिरि**देविंदसूरिणो** उक्कुरुडिअपाए[4] ठाणे काउस्सग्गं करिंसु । एवं बहुवारं करिंते ते दट्ठूण सावएहिं पुच्छिअं–भयवं ! को विसेसो इत्थ काउस्सग्गकरणे ?। सूरीहिं भणियं–इत्थ पहाणफलही चिट्ठइ, जीसे **पासनाह**पडिमा कीरइ; सा य सन्निहियपाडिहेरा हवइ । तओ सावयवयणेणं **पउमावई-**आराहणत्थं उववासतिगं कयं गुरुणा । आगया भगवई । तीए आइट्ठं । जहा–**सोपारए** अन्धो सुत्तहारो चिट्ठइ । सो जइ इत्थ आगच्छइ अट्ठमभत्तं च करेइ, सूरिए अत्थमिए फलहिअं घडेउमाढवइ, अणुदिए पडिपुण्णं संपाडेइ, तओ निप्पज्जइ । तओ सावएहिं तदाहवणत्थं **सोपारए** पुरिसा पट्ठविआ । सो आगओ । तहेव घडिउमाढत्ता । **धरिणिन्द**धारिआ निप्पन्ना पडिमा । घडिन्तस्स सुत्तहारस्स पडिमाए हिअए मसो पाउब्भूओ । तमुविक्खिऊण उत्तरकाओ घडिओ । पुणो समारिंतेण मसो दिट्ठो । टङ्किआ वाहिआ । रुहिरं निस्सरिउमारद्धं । तओ सूरिहिं भणिअं–किमेयं तुमए कयं ? । एयंमि मसे अच्छन्ते एसा पडिमा अईवअब्भुअहेऊ सप्पभावा हुन्ता । तओ अङ्गु-

---

1 'जिणाणं' नास्ति C । 2 C D मइंद० । 3 C D जलाभिसिच० । 4 C ०प्पए ।

ट्ठेणं चंपिउं थंभिअं रुहिरं । एवं तीसे पडिमाए निप्पन्नाए चउवीसं[1] अंन्ना'णि बिंबाणि खाणीहिंतो आणित्ता ठाविआणि । तओ दिव्वसत्तीए **अवज्झा**पुराओ तिन्नि महाबिंबाणि रत्तीए गयणमग्गेण आणीयाणि । चउत्थे वि आ'णिज्जमाणे विहाया रयणी । तओ **धारासेणय**[2]गामे खित्तमज्झे बिंबं ठिअं । रण्णा सिरि**कुमारपालेण चालुक्क**चक्कवट्टणा चउत्थं बिंबं कारित्ता ठविअं । एवं **सेरीसे** महप्पभावो **पासनाहो** अज्जवि संघेण पूइज्जइ । मिच्छा वि उवद्दवं काउं न पारेंति । ऊसुअघडिअत्तेण न तहा सलावण्णा अवयवा दीसंति । तम्मि अ गामे तं बिंबं अज्जवि चेईहरे पूइज्जइ त्ति ॥

॥ **श्री अयोध्यापुरीकल्पः समाप्तः** ॥

॥ ग्रं० ४४, अ० ९ ॥

---

१४. अपापापुरी[संक्षिप्त]कल्पः§ ।

सिद्धार्थोत्तया वनान्ते **ग्वरक**सुभिषजाभ्यञ्जनद्रोणिभाजः, शल्ये निष्कि(ष्कृ ?)ष्यमाणे श्रुतियुगविवरात्तीव्रपीडार्दितस्य ।
यस्या अभ्यर्णभागेऽन्तिमजिनमुकुटस्योद्यदाश्चर्यमुच्चै-श्चच्चीत्काररावस्फुटित'गिरिदरी दृश्यतेऽद्यापि पूरः ॥ १ ॥
चक्रे तीर्थप्रवृत्तिं चरमजिनपतिर्यत्र वैशाखशुक्ले-कादश्यामेत्य रात्रौ वनमनु **महसेना**ह्वयं **जृम्भिका**तः ।
सच्छात्रास्तत्र चैकादशगणपतयो दीक्षिता **गौतमा**द्या, जग्रन्थुर्द्वा**दशाङ्गीं** भवजलधितरीं ते निषद्यात्रयेण ॥ २ ॥
यस्यां श्री**वर्धमानो** व्यहमनशनकृद्देशनावृष्टिमन्त्यां, कृत्वा श्री**हस्तिपाला**भिधधरणिभुजोऽधिष्ठितः शुल्कशालाम् ।
स्वातावूर्जस्य दर्शे शिवमसमसुखश्रीनिशान्तं निशान्ते, प्रापत्**पापा**स्तपापान् विरचयतु जनान् सा पुरीणां धुरीणा ॥ ३ ॥
नागा अद्यापि यस्यां प्रतिकृतिनिलया दर्शयन्ति प्रभावं, निस्तैले नीरपूर्णे ज्वलति गृहमणिः कौशिके यन्निशासु ।
भूयिष्ठाश्चर्यभूमिश्चरमजिनवरस्तूपरम्यस्वरूपा, साऽ**पापा** मध्यमादिर्भवतु वरपुरी भूतये यात्रिकेभ्यः ॥ ४ ॥

॥ **इति श्रीअपापाकल्पः** ॥

॥ ग्रं० १०, अ० २१ ॥

---

1 C चउद्दिसं । १-१ एतदङ्कान्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे । 2 A °सेणेय° । § A आदर्शे नोपलभ्यते एष कल्पः ।

१५. कलिकुण्ड-कुर्कुटेश्वरकल्पः।

ॐ†**अंग**जणवए **करकंडु**निवपालिज्जमाणाए **चंपा**नयरीए नाइदूरे **कायंबरी** नाम अडवी हुत्था। तत्थ† **कली** नाम पव्वओ। तस्स अहोभूमीए **कुंडं** नाम सरवरं। तत्थ जूहाहिवई **महिहरो** नाम हत्थी हुत्था। अन्नया छउमत्थविहारेणं विहरंतो **पास**सामी **कलिकुंड**समीवदेसे काउसग्गेण ठिओ। सो य जूहनाहो पहुं पिक्खंतो जाइ-सरो जाओ चिंतेइ अ–जहाहं **विदेहेसु हेमंधरो** नाम वामणो अहेसि। जुवाणा विडा य मं उवहसंति। तओ वेरग्गेण नमिरसाहस्स साहिणो साहाए उब्बंधिउं मरिउकामो अहं दिट्ठो **सुप्पइट्ठ**सड्ढेण। पुट्ठो अ कारणं। मए जहट्ठिए वुत्ते तेणाहं सुगुरुपासे नीओ। गाहिओ सम्मत्तं। अंते कयाणसणेण नियाणं मए कयं। जहा, भवंतरे उच्चोहं हुज्ज त्ति। मरिऊण हत्थी जाओहं इह वणे। तओ इमं भगवंतं पज्जुवासामि त्ति चिंतिअ तत्तो चेव सरवराओ घित्तुं सरसकमले तेहिं जिणं पूएइ। परिवालिअपुव्वगहिअसम्मत्तो अणसणं काउं महिड्ढिओ वंतरो जाओ। एयमच्चब्भूअं चारेहिंतो सोच्चा **करकंडु**राया तत्थागओ। न दिट्ठो सामी। राया अईव अप्पाणं निंदेइ। धन्नो सो हत्थी जेण भयवं पूइओ। अहं तु अधन्नो त्ति। एवं सोअंतस्स तस्स पुरओ **धरणिंद**प्पभावेण नवहत्थपमाणा पडिमा पाउब्भूआ। तओ तुट्ठो राया 'जय जय' त्ति भणंतो पणमइ पूअइ अ। चेइअं च तत्थ कारेइ। तत्थ तिसंझं पुप्फामिसथुइपूअं पिक्खणयं च करिंतेण रन्ना **कलिकुंड**तित्थं पयासिअं। तत्थ सो हत्थिवंतरो सन्निज्झं करेइ, पच्चए य पूरेइ। नवजंतीपमुहजंताणि **कलिकुंड**मंते य छकम्मकरे पयासेइ। जहा गामवासी जणो गामु त्ति भण्णइ, तहा **कलिकुंड**निवासी जिणो वि **कलिकुंडो**। एसा **कलिकुंड**स्स उप्पत्तीॐ॥

पुव्विं **पास**सामी छउमत्थो **रायउरी**ए काउस्सग्गे ठिओ। तत्थ वाहकेलीए जंतस्स नन्नयरसामिणो **ईसर**-रण्णो **बाणज्जुण**नामो बंदी भयवंतं पिच्छिऊण गुणकित्तणं करेइ। एस देवो **आससेण**निवपुत्तो जिणु त्ति। तं सोउं राया गयाओ उत्तरित्ता पहुं पासंतो मुच्छिओ। पत्तचेयण्णो य पुट्ठो मंतिणा पुव्वभवे कहेइ। जहाहं **चारुदत्तो** होऊण पुव्वजम्मे **वसंतपुरे** पुरोहिअपुत्तो **दत्तो** आसि। कुट्ठाइरोगपीडिओ अ **गंगा**ए निवडंतो चारणरिसिणा बोहिओ अहिंसाई पंचवए पालेमि, इंदिए अ सोसेमि, कसाए य जिणेमि। अन्नया चेईहरमागओ जिणपडिमं पण-मंतो दिट्ठो **पुक्खलि**सावएणं। तेण पुट्ठो **गुणसागर**मुणी–भयवं! एयस्स चेइयागमणे दोसो न वा? मुणिणा भणिअं–दूरओ देवं पणमंतस्स को दोसो। अज्ज वि एसो कुक्कुडो भविस्सइ त्ति। तं सोऊण खेयं कुणंतो पुणरवि गुरुणा संबोहिओहं–तुमं जाईसरो अणसणेण मरिउं **रायउरीए ईसरो** नाम राया होहिसि त्ति। तओहं तुट्ठो तं सव्वं अणुभवित्ता कमेण राया जाओ। पहुं पिक्खिअ जायं मे जाइसरणं ति। एवं मंतिस्स कहित्ता भगवंतं पण-मिअ तत्थ संगीअं कारेइ। पहुम्मि अन्नत्थ विहरिए तत्थ रण्णा पासाओ कारिओ। बिंबं च पइट्ठाविअं। कुक्कुडवरेण **ईसर**रण्णा कारियं ति **कुक्कुडेसर** नाम तित्थं रूढं। सो य राया कमेण खीणकम्मो सिज्झिहि त्ति। एसा **कुक्कुडे-सर**स्स उप्पत्ती॥

कलिकुंड-कुक्कुडेसरतित्थदुगस्सेस वण्णिओ कप्पो। सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविआणं कुणउ कल्लाणं॥ १॥

॥ इति कलिकुंड-कुर्कुटेश्वरकल्पः॥

॥ ग्रं० ३५, अ० १॥

ॐ एतत्तारकचिह्नान्तर्गतं प्रकरणं A आदर्शे नोपलब्धम्। † एतच्चिह्नान्तर्गता पंक्तिः पतिता D आदर्शे।

१६. हस्तिनापुरकल्पः ।

सिरि**संति-कुंथु-अर-मल्लि**सामिणो **गयउर**ट्ठिए नमिउं । पभणामि **हत्थिणाउर**तित्थस्स समासओ कप्पं ॥१॥

सिरि**आइतित्थेसर**स्स दोण्णि पुत्ता **भरहेसर-बाहुबलि**नामाणो आसि । **भरह**स्स सहोयरा अट्ठाणउई कुमारा । तत्थ भयवया पव्वयंतेण **भरहो** निअपए अहिसित्तो । **बाहुबलिणो तक्खसिला** दिण्णा । एवं सेसाण वि तेसु तेसु देसेसुं रज्जाइं दिण्णाइं । **अंगकुमार**नामेणं **अंगदेसो** जाओ । **कुरु**नामेणं **कुरुखित्तं** पसिद्धं । एवं **वंग-कलिंग-सूरसेण-अवंति**माइसु विभासा । **कुरु**नरिंदस्स पुत्तो **हत्थी** नाम राया हुत्था । तेण **हत्थिणाउरं** निवेसिअं । तत्थ **भागीरही** महानई पवित्तवारिपूरा परिवहइ ।

तत्थ सिरि**संति-कुंथु-अर**नाहा जहासंखं सोलसम-सत्तरसम-ट्ठारसमा जिणिंदा जाया । पंचम-छट्ठ-सत्तमा य कमेण चक्कवट्टी होउं छखंड**भरहवास**रिद्धिं भुंजिंसु । दिक्खागहणं केवलनाणं च तेसिं तत्थेव संजायं ।

तत्थेव संवच्छरमणसिओ भयवं **उसभ**सामी **बाहुबलि**नत्तुअस्स **सिज्जंसकुमर**स्स तिहुअणगुरुदंसण-जायजाईसरणजाणिअदाणविहिणो गेहे अक्खयतइयादिणे इक्खुरसेणं पढमपारणयमकासी । तत्थ पंचदिव्वाइं पाउब्भूआइं ।

मल्लिसामि अ तत्थेव नयरे समोसढो ।

तत्थ **विण्हुकुमारो** महरिसी तवसत्तीए विउव्विअलक्खजोअणप्पमाणसरीरो तिहिं पएहिं अक्कंततेलुक्को **नमुइं** सासित्था ।

तत्थ पुरे **सणंकुमार-महापउम-सुभूम-परसुरामाइ**महापुरिसा उप्पण्णा ।

तत्थ पंच **पांडवा** उत्तमपुरिसा चरमसरीरा, **दुज्जोहण**पमुहा य महाबलनिवा अणेगे समुप्पण्णा ।

तत्थ सत्तकोडिसुवण्णाहिवई **गंगदत्त**सिट्ठी, तहा **सोहम्मिंद**स्स जीवो रायाभिओगेणं परिवायगस्स परिवेसणं काउं वेरग्गेण नेगमसहस्सपरिवुडो **कत्तिय**सेट्ठी सिरि**मुणिसुव्वय**सामिममीवे निक्खंतो ।

तत्थ महानयरे **संति-कुंथु-अर-मल्लि**जिणाणं चेइयाइं मणहराइं, **अंबादेवी**ए य देउलं आसि ।

एवमणेगअच्छरिअसहस्सनिहाणे तत्थ महातित्थे जे जिणसासणपभावणं कुणंति विहिपुव्वं जत्तामहूसवं निम्मवंति ते कइवयभवग्गहणेहिं धुअकम्मकिलेसा सिद्धिमुवगच्छंति त्ति ॥

श्री**गजाह्वय**तीर्थस्य कल्पः स्वल्पतरोऽप्ययम् । सतां सङ्कल्पसम्पूर्तौ धत्तां कल्पद्रुकल्पताम् ॥ २ ॥

॥ इति श्रीहस्तिनापुरतीर्थकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० २४, अ० ११ ॥

---

*

१७. सत्यपुरतीर्थकल्पः ।

पणमिय सिरि**वीर**जिणं देवं सिरि**बंभसंति**कयसेवं । **सच्चउर**तित्थकप्पं जहासुअं किं पि जंपेमि ॥ १ ॥

सिरि**कन्नउज्ज**नरवइकारिअजिणभवणि देवदारुमए । तेरसवच्छरसइए **वीर**जिणो जयउ **सच्चउरे** ॥ २ ॥

इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे **भारहे** वासे **मरुमंडले सच्चउरं** नाम नयरं । तत्थ **नाहडराय**कारिअं सिरि**जज्जिग**सूरिगणहरपइट्ठिअं पित्तलामयं सिरि**वीर**बिंबं चेईहरे अच्छइ । कहं **नाहडराए**ण तं कारिअं ति तस्स उप्पत्ति भण्णइ–पुव्विं **नड्डूल**मंडल[1]मंडण**मंडोवर**नयरस्स सामिं रायाणं बलवंतेहिं [2]**दाइए**हिं मारिऊण तं नयरं अहिट्ठिअं । तस्स रण्णो महादेवी आवन्नसत्ता पलाइत्ता **बंभाणपुरं** पत्ता । तत्थ य सयललक्खणसंपुन्नं दारयं पसूआ । तओ नयराओ बाहिं एगत्थ रुक्खे तं बालयं झोलिआगयं ठावित्ता सयं तप्पासदेसे ठिया किंचि कम्मं काउमाढत्ता । तत्थ य दिव्वजोगेण समागया सिरि**जज्जिग**सूरिणो । तरुच्छायं अपरावत्तमाणिं दट्ठूण 'एस पुण्णवंतो भावि' त्ति कलिऊण चिरं अवलोइंता अच्छिआ । तीए रायपत्तीए आगंतूण भणिआ सूरिणो–भयवं ! किं एस दारओ कुलक्खणो कुलक्खयकारो दीसइ ? । सूरीहिं वुत्तं–भद्दे ! एस महापुरिसो भविस्सइ । ता सव्वपयत्तेण पालणिज्जो । तओ सा अणुकंपाए चेईहरचिन्ताकरणे निउत्ता गुरूहिं । सो अ दारओ कय**नाहड**नामो गुरुमुहाओ पंचपरमिट्ठिनमुक्कारं सिक्खिओ । सो अ चवलत्तेण गहिअधणुसरो अक्खयपट्टयस्स उवरिं आगच्छंते मूसए अमूढलक्खो मारेइ । तओ सावएहिं चेईहराओ निक्कालिओ जणाणं गावीओ रक्खेइ । अन्नया केणावि जोगिणा पुरबाहिरे भमंतेण सो दिट्ठो । बत्तीसलक्खणधरो त्ति विन्नाओ[3] । तओ तेण सुवण्णपुरिससाहणत्थं तमणुगच्छंतेण तस्स मायरं अणुण्णविय तत्थेव ठिई कया । तओ अवसरे तेण जोगिणा भणिओ **नाहडो**–जत्थ गावीरक्खणाइं कुणंतो रत्तदुद्धं कुलिसतरुं पाससि तत्थ चिण्हं काऊण ममं कहिज्जासि । बालेण तह त्ति पडिवन्नं । अन्नया दिव्वजोएण तं दट्ठूण जाणाविअं जोगिणो । दोवि गया तत्थ । तओ जहुत्तविहाणेण अग्गिं पज्जालिऊण तं रत्तच्छीरं तत्थ पक्खिवित्ता जोगिंमि पयाहिणं दिंते **नाहडे**णावि पयक्खिणीकओ अग्गी । कहिंचि जोगिणो दुट्ठचित्तवित्तिं नाऊण रायपुत्तेण सुमरिओ पंचनमुक्कारो । तप्पभावेण जोगी अप्पहवंतो उक्खिविअ जलणे खित्तो **नाहडे**ण । जाओ सुवण्णपुरिसो । तओ चिंतिअं तेण–अहो मंतस्स माहप्पं । कहं तु तेसिं गुरूणं एयस्स दायगाणं पच्चुवयरिस्सामि त्ति–आगंतुं पणया गुरुणो । सव्वं च तं सरूवं विण्णत्तं, किच्चं च आइसह त्ति भणिए, गुरुवयणाओ उत्तुंगाइं चउवीसं चेईयाइं कारिआइं । कमेण पत्तो पउरं रज्जसिरिं । सेन्नसंभारेण गंतुं गहिअं पेइअं सट्ठाणं । अन्नया विन्नत्ता सिरि**जज्जिग**सूरिणो तेण, जहा–भगवं ! तं किंचि कज्जं आइसह, जेण तुम्हाणं मज्झ य कित्ती चिरकालं पसरइ त्ति । तओ गुरूहिं धेणू चउहिं थणेहिं जत्थ खीरं झरइ तं भूमिं अब्भुदयकरं नाऊण तं ठाणं दंसिअं रण्णो । तेणं गुरुआएसेणं **सच्चउरे वीर**मुक्खाओ छव्वाससएहिं महंतं कारिअं अब्भंलिहसिहरं चेइअं । तत्थ पइट्ठाविआ पित्तलमई सिरि**महावीर**पडिमा **जज्जिग**सूरीहिं । जया पइट्ठाकरणत्थं आयरिआ पट्ठिआ तया अंतराले एगम्मि उत्तमलग्गे वहमाणे **नाहड**[4]**राय**पुत्तपुरिसस्स **विंझराय**स्स आसारूढस्स सुत्तीए पइट्ठा कया । बीयम्मि लग्गे लग्गविसेसाओ मयणमइ व्व महीए जायाए **संख**नामचिल्लएण गुरुआएसाओ दंडघाएण कूवओ कओ । अज्ज वि **संखकूवओ** भण्णइ । सो अ अण्णया सुक्को वि वइसाहपुण्णिमाए पाणीएण भरिज्जइ । तईए लग्गे **वीरसामी** पइट्ठिओ । जम्मि अ लग्गे **वीर**स्स पइट्ठा कया तम्मि चेव लग्गे **दुग्गासूअ**गामे **वयणप**ग्गामे य दुण्णि **वीर**पडिमाओ साहु-सावयहत्थपेसिअवासेहिं पइट्ठिआओ । तं च **वीर**पडिमं निच्चमच्चेइ राया । एवं **नाहडराए**णं तं बिंबं कारिअं ।

---

1 'मंडल' नास्ति A आदर्शे । 2 B दाएहिं । 3 A विन्नासिओ; C विन्निसिओ; Pb विन्नसिओ । 4 ACP नायड° ।

तं च **बंभसंति**जक्खेण सन्निहिअपाडिहेरेण अहोनिसिं पज्जुवासिज्जइ । सो अ पुव्विं **धणदेव**सिट्ठिणो† वसहो आसि। तेण **वेगवई**ए नईए पंचसयसगडभरो कड्ढिओ। सो तुट्टो। तओ सिट्ठिणा† चारिजलाइहेउं वेयणं दाऊण **वद्धमाण**गामवासिलोयाणं समप्पिओ। ते य गामिल्लया गहियरित्था तस्स वसहस्स चिंतं पि न कुणंति। तओ सो अकामनिज्जराए मरिऊण वंतरेसु **सूलपाणी** नाम जक्खो जाओ। विभंगनाणं पउंजिअ विण्णायपुव्वजम्म-वइयरो तम्मि गामे बद्धमच्छरो मारिं विउव्वेइ । तओ अद्दण्णो गामो ण्हाउं कयबलिकम्मो धुअकडच्छुअहत्थो भणइ—जस्स देवस्स दाणवस्स वा अम्हेहिं किं पि अवरद्धं सो मरिसेउ त्ति । तओ तेण जक्खेण पुव्वभववसहस्स वुत्तंतो कहिओ। तस्सेव वसहस्स अट्ठिपुंजोवरिं देउलं लोएहिं कयं । तस्स पडिमा कारिआ । **इंद**सम्मो देवच्चओ ठविओ। तओ सो **वद्धमाण**गामो **अट्ठिअगामु** त्ति पसिद्धो। जायं सिवं। कमेणं **दूइज्जंतग**तावसासमाओ भयवं **वद्धमाण**सामी छउमत्थविहारेणं विहरंतो वासारत्ते तत्थ गामे पत्तो। गाममणुन्नविअ तत्थेव देवउले रयणीए काउ-स्सग्गे ठिओ। तेण मिच्छद्दिट्ठिणा सुरेण भीमट्टहास-हत्थि-पिसाय-नागरूवेहिं उवसग्गित्ता सिर-कन्न-नासा-दंत-नह-ऽच्छि-पिट्ठि-वियणाओ विउव्वियाओ[1]। सव्वत्थ भयवंतमक्खोभं नाऊण सो उवसंतो गीय-नट्ट-थुइमाईहिं पज्जुवासेइ। तप्पभिइ तस्स जक्खस्स **बंभसंति** त्ति नाम रूढं। सो य **सच्चउर-वीर**चेईए पइट्ठाविसेसेण निवसइ।

इओ अ **गुज्जर**धराए पच्छिमभागे **वलहि** त्ति नयरी रिद्धिसमिद्धा। तत्थ **सिलाइच्चो** नाम राया । तेण य रयणजडिअकंकसीलुद्धेण **रंकओ** नाम सिट्ठी पराभूओ। सो अ कुविओ तन्निग्गहणत्थं **गज्जण**वइ**हम्मीर**स्स पभूअं धणं दाऊण तस्स महंतं सेन्नं आणेइ । तम्मि अवसरे **वलही**ओ **चंदप्पह**सामिपडिमा **अंबा-खित्तवाल**जुत्ता अहिट्ठायगबलेण गयणपहेण **देवपट्टणं** गया। रहाहिरूढा य देवयाबलेण **वीर**नाहपडिमा अदिट्ठवत्तीए संचरंती आसो-यपुण्णिमाए **सिरिमालं** पुरमागया। अण्णे वि साइसया देवा जहोचियं ठाणं गया। पुरदेवयाए य सिरि**वद्धमाण**-सूरीणं उप्पाओ जाणाविओ—जत्थ भिक्खालद्धं खीरं रुहिरं होऊण पुणो खीरं होहिइ तत्थ साहूहिं ठायव्वं ति। तेण य सिन्नेण **विक्कमाओ अट्ठहिं सएहिं पणयालेहिं** (८४५) वरिसाणं गएहिं **वलहिं** भंजिऊण सो राया मारिओ। गओ सठाणं **हम्मीरो**।

तओ अन्नया, अन्नो **गज्जण**वई **गुज्जरं** भंजित्ता तओ वलंतो पत्तो **सच्चउरे दससयइक्कासीए** (१०८१) **विक्कमवरिसे** मिच्छराओ। दिट्ठं तत्थ मणोहरं **वीर**भवणं। पविट्ठा हण हण त्ति भणिरा मिलक्खुणो। तओ गयवरे जुत्तित्ता[2] **वीर**सामी ताणिओ। लेसमित्तं पि न चलिओ सट्ठाणाओ। तओ बइल्लेसु जुत्तिएसु पुव्वभवरागेण **बंभसंति**णा अंगुलचउक्कं चालिओ। सयं हक्कंते वि **गज्जण**वइम्मि निच्चली[3] होउं ठिओ जगनाहो। जाओ विलक्खो मिलक्खुनाहो। तओ घणघाएहिं ताडिओ सामी। लग्गंति घाया ओरोहसुंदरीणं[4]। तओ खग्गपहारेसु विहलीभूएसु मच्छरेणं तुरुक्केहिं **वीर**स्स अंगुली कट्टिआ। तं गहिऊण य ते पट्ठिआ। तओ लग्गा[5] पज्जलिउं तुरयाणं पुच्छा । लग्गा य वलिउं[6] मिच्छाणं मुच्छा। तओ तुरए छड्डित्ता[7] पायचारिणो चेव पयट्टा, धस त्ति धरणीए पडिआ। **रहमाणं** सुमरंता विल-वंता दीणा खीणसव्वबला नहंगणे अदिट्ठवाणीए भणिआ एवं—**वीर**स्स अंगुलिं आणित्ता तुम्हे जीवसंसए पडिआ। तओ **गज्जणाहिवई** विम्हिअमणो सीसं धुणंतो सिलारे आइसइ। जहा—एयमंगुलिं वलिऊण तत्थेव ठावेह। तओ भीएहिं तेहिं पच्चाणीया। सा लग्गा य[8] झड त्ति सामिणो करे। तमच्छेरं पिच्छिअ पुणो वि **सच्चउरं** पइ सउणं पि न मग्गंति तुरुक्का। तुट्ठो चउव्विहो वि समणसंघो। **वीर**भवणे पूआ-महिमा-गीय-नट्ट-वाइत्त-दविणदाणेहिं पभावणं करेइ।

अन्नया बहुम्मि काले वोलीणे **मालवि**[9]च्चयनरिंदो **गुज्जर**धरं भंजिऊण **सच्चउर**सीमाए पहुत्तो । तओ

---

†-† एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे। 1 ABP वियव्वि°। 2 P जोत्तित्ता। 3 P निच्चलो। 4 ओरोहतुरु-क्कतरुणीणं। 5 लग्गए। 6 C चलिउं। 7 A छंडित्ता। 8 'य' नास्ति P। 9 P °च्चिय°।

बंभसंतिणा पउरं सिन्नं विउव्विऊण भंजिओ तस्स बलं । तस्स ल्हासआवासेसु उट्ठिओ वज्जग्गी । **मालवाहिवई** कोसकुट्ठागाराइं [1]छड्डिअ पणट्ठो कागणासं ।

अह अन्नया **तेरहसय-अडयाले** (१३४८) **विक्कम**संवच्छरे पबलेणं **कप्फर**[2]दलेणं देसम्मि भज्जंते, नयरगामेसु पलाणेसु, जिणभवणदुवारेसु ढक्किएसु, जोअणचउक्कमज्झे **बंभसंति**माहप्पेणं अणाहयगहिरसरतंबक्कचक्कं वज्जंतं सोऊण सिरि**सारंगदेव**महारायसेणाआगमणं संकिऊण भग्गं मुग्गलबलं । **सच्चउर**सीमा वि न चंपिआ ।

अह **तेरसय-छप्पन्ने विक्कम**वरिसे (१३५६) **अल्लावदीण**सुरताणस्स कणिट्ठो भाया [3]**उलूखान**-नामधिज्जो[4] **ढिल्ली**पुराओ मंति**माहव**पेरिओ **गुज्जर**धरं पट्ठिओ[5] । **चित्तकूडा**हिवइ **समरसीहे**णं दंडं दाउं **मेवाड**देसो तया[6] रक्खिओ । तओ **हम्मीर**जुवराओ **वग्गड**देसं **मुहडासया**इं नयराणि य भंजिअ **आसावल्ली**ए पत्तो । **कण्णदेव**राया[7] अ नट्ठो । **सोमनाहं** च घणघाएण भंजित्ता गड्डुए रोविऊण **ढिल्ली**ए पेसेइ । पुणो **वामणथली**ए गंतुं **मंडलिक्कराण**यं दंडित्ता **सोरट्ठे** निअआणं पयट्टावित्ता **आसावल्ली**ए आवासिओ । मढमंदिरदेउलाईणि पज्जालेइ । कमेण **सत्तसय**देसे संपत्तो । तओ **सच्चउरे** तहेव अणाहयतंबक्केसु वज्जंतेसु मिच्छदलं पलाणं । एवं अणेगाणि अवदाणाणि पुहवीमंडले **सच्चउरवीर**नाहस्स पायडाणि सुव्वंति ।

अह अलंघणिज्जा भविअव्वय त्ति दूसमकालविलसिएण केलिप्पिया वंतरा हवंति । गोमंस-रुहिरछंटिए अ भवणे दूरीहवंति देवयाओ त्ति । असन्निहिए पमत्ते अहिट्ठायगे **बंभसंति**जक्खम्मि **अल्लावदीण**राएण सो चेव अणप्प-†माहप्पो भयवं **वीर**सामी **तेरसय-सत्तसट्ठे** (१३६७) **विक्कमाइच्च**वच्छरे **ढिल्लि**ए आणित्ता आसायणाभायणं कओ । कालंतरेण पुणरवि पडिमंतरे पायडपभावो पूआरिहो† भविस्सइ ॥

सच्चउरकप्पमेयं निच्चं वायंतु महिमअपमेयं । वंछिअफलसिद्धिकए सिरि**जिणपहसूरि**णो भव्वा ! ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीसत्यपुरकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० १६१, अ० ३ ॥

---

1 P छड्डिऊण । 2 A षप्फर°; C कप्फर° । 3 C उल्लूखान° । 4 P °खानाभिहाणो । 5 C D पइट्ठिओ । 6 'तया' नास्ति P । 7 A B C °राओ । †-† एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे ।

१८. अष्टापदमहातीर्थकल्पः।

[श्रीधर्मघोषसूरिकृतः।]

वरधर्मकीर्तिऋषभो[1] विद्यानन्दाश्रितः पवित्रितवान्।
देवेन्द्रवन्दितो यः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १ ॥

यस्मिन्नष्टापदभूदष्टापदमुख्यदोषलक्षहरः। अष्टापदाभ [2]ऋषभः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २ ॥
ऋषभसुता नवनवतिर्बाहुबलिप्रभृतयः प्रवरयतयः। यस्मिन्नभजन्नमृतं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ३ ॥
अयुजन्निर्वृतियोगं[3] वियोगभीरव इव प्रभोः समकम्। यत्रर्षिदशसहस्राः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ४ ॥
यत्राष्टपुत्रपुत्रा युगपद्वृषभेण[4] नवनवतिपुत्राः। समयैकेन शिवमगुः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ५ ॥
रत्नत्रयमिव मूर्तं स्तूपत्रितयं चितित्रयस्थाने। यत्रास्थापयदिन्द्रः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ६ ॥
सिद्धायतनप्रतिमं सिंहनिषद्येति यत्र सुचतुर्द्वा। भरतोऽरचयच्चैत्यं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ७ ॥
यत्र विराजति चैत्यं योजनदीर्घं तदर्धपृथुमानम्। क्रोशत्रयोच्चमुच्चैः[5] स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ८ ॥
यत्र भ्रातृप्रतिमा [6]व्यधाच्चतुर्विंशति[7]जिनप्रतिमाः। भरतः सात्मप्रतिमाः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ९ ॥
[8]स्वस्वाकृतिमितिवर्णाङ्कवर्णितान् वर्तमानजिनबिम्बान्। भरतो वर्णितवानिह स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १० ॥
सप्रतिमान्नवनवतिं बन्धुस्तूपांस्तथार्हतस्तूपम्। यत्रारचयच्चक्री स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ ११ ॥
भरतेन मोहसिंहं हन्तुमिवाष्टापदः कृताष्टपदः। शुशुभेऽष्टयोजनो यः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १२ ॥
यस्मिन्ननेककोट्यो महर्षयो भरतचक्रवर्त्याद्याः। सिद्धिं साधितवन्तः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १३ ॥
सगरसुताग्रे सर्वार्थ-शिवगतीन् भरतराजवंशर्षीन्। यत्र सुबुद्धिरकथयत्स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १४ ॥
परिखासागरमकरन्त सागराः सागराशया यत्र। परितो रक्षति कृतये स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १५ ॥
क्षालयितुमिव स्वैनो जैनो[9] यो गंगयाश्रितः परितः। सन्ततमुल्लोलकरैः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १६ ॥
यत्र जिनतिलकदानाद् दयमन्त्यपि [10]कृतानुरूपफलम्। भालस्वभावतिलकं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १७ ॥
यमकूपारे कोपात् क्षिपन्नलं बालिनांह्रिणाऽऽक्रम्य। आरावि रावणोऽरं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १८ ॥
भुजतन्त्र्या जिनमहकृल्लङ्केन्द्रोऽवाप यत्र धरणेन्द्रात्। विजयामोघां शक्तिं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ १९ ॥
[11]चतुरश्चतुरोऽष्टदश द्वौ चापाच्यादिदिक्षु जिनबिम्बान्। यत्रावन्दत [12]गणभृत् स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २० ॥
अचलेऽत्रोदयमचलं स्वशक्तिवन्दितजिनो जनो[13] लभते। वीरोऽवर्णयदिति यं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २१ ॥
प्रभुभणितपुण्डरीकाध्ययनाध्ययनात् सुरोऽत्र दशमोऽभूत्। दशपूर्विपुण्डरीकः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २२ ॥
यत्र [14]स्तुतजिननाथोऽदीक्षित तापसशतानि पञ्चदश। श्रीगौतमगणनाथः स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २३ ॥
इत्यष्टापदपर्वत इव योऽष्टापदमयश्चिरस्थायी। व्यावर्णि महातीर्थं स जयत्यष्टापदगिरीशः ॥ २४ ॥

॥ इति श्रीअष्टापदमहातीर्थकल्पः समाप्तः। कृतिरियं श्रीधर्मघोषसूरीणाम् ॥

॥ ग्रं० ३०, अ० २२ ॥

---

1 C Pb °कीर्तिर्ऋषभो। 2 C Pa °पदा ऋषभः। 3 Pb योग्यं। 4 Pb °पदृषभेण। 5 Pa °त्रयोर्द्धमुच्चैः। 6 B न्यधाच्च°। 7 B C Pa चतुर्विंशतिं। 8 C स्वस्वा°। 9 Pa जैनं। 10 A B क्षतानु°। 11 C चतुश्चतुरो°। 12 B गुणभृत्। 13 B Pb जिनो। 14 C स्तुजिन°।

२१. अपापाबृहत्कल्पः ।

पणमिअ **वीरं** वुच्छं[1] तस्सेव य सिद्धिगमपवित्ताए । **पावापुरीइ** कप्पं दीवमहुप्पत्ति पडिबद्धं ॥ १ ॥
गउडेसु पाडलिपुरे संपइराया तिखंडभरहवई । **अज्जसुहत्थि**गणहरं पुच्छइ पणओ परमसड्ढो[2] ॥ २ ॥
दीवालिअपव्वमिणं लोए लोउत्तरे अ गउरविअं । भयवं ! कह संभूअं ?. अह भणइ गुरू–निव ! सुणसु[3] ॥ ३ ॥

§१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणो[4] भगवं **महावीरो** पाणयकप्पट्ठिए पुप्फुत्तरविमाणे वीससागरोवमाइं आउं परिवालित्ता, तओ चुओ समाणो तिण्णाणोवगओ इमीसे ओसप्पिणीए तिसु[5] अरएसु वइक्कंतेसु अद्धनवमासाहिअ-पंचहत्तरीवासावसेसे चउत्थे अरए आसाढसुद्धच्छट्ठीए उत्तरफग्गुणीरिक्खे **माहणकुंड**ग्गामे नयरे **उसभदत्त**-माहणभारिआए **देवाणंदाए** कुच्छिंसि सीह-गय-वसहाइचउद्दसमहासुमिणसंसूइओ अवइन्नो । तत्थ बासीइदिणा-णंतरं **सक्का**इट्ठेण **हरिणेगमेसि**णा आसोअबहुलतेरसीए तम्मि चेव रिक्खे **खत्तियकुंड**ग्गामे नयरे **सिद्धत्थ**-रण्णो देवीए **तिसलाए** गब्भविणिमयं काउं गब्भम्मि साहरिओ । माऊए[6] सिणेहं नाउं सत्तममासे 'अम्मापिअरेहिं जीवंतेहिं नाहं समणो होहं' ति गहिआभिग्गहो, नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं अंते चित्त-सिअतेरसीअद्धरत्ते तम्मि चेव रिक्खे जाओ । अम्मापिऊहिं कय**वद्धमाण**नामो मेरुकंप-सुरखव्वण-**इंदवायरण**प-णयणपयडअवदाणो भुत्तभोगो, अम्मापिऊहिं देवत्तगएहिं तीसं वासाइं अगारवासे वसित्ता, संवच्छरिअं दाणं दाउं, **चंदप्पहाए** सिबियाए एगागी एगदेवदूसेण मग्गसिरकसिणदसमीए तम्मि चेव रिक्खे छट्ठेणं, अवरण्हे **णायसंड**वणे निक्खंतो । बीयदिणे **बहुल**विप्पेणं पायसेण पाराविओ । पंचदिव्वाइं पाउब्भूआइं । तत्तो बारसवासाइं तेरसपक्खे अ नर-सुर-तिरियकओवसग्गे सहित्ता, उग्गं च तवं चरित्ता **जंभियगामे उज्जुवालिआ**तीरे गोदोहिआसणेणं छट्ठभत्तेणं तम्मि चेव रिक्खे वइसाहसुद्धदसमीए पहरतिगे केवलनाणं पत्तो । इक्कारसीए अ **मज्झिमपावाए महसेण**वणे तित्थं पयट्टिअं । **इंदभूइ**प्पमुहा गणहरा दिक्खिआ सपरिवारा । वयदिणाओ अ भयवओ बायालीसं वासाचउम्मासीओ जायाओ । तं जहा–एगा **अट्ठिअ**गामे, तिण्णि **चंपा**[7]**पिट्ठीचंपासु,**[8] दुवालस **वेसाली-वाणिअ**ग्गामेसु, चउद्दस **नालंदा-रायगिहेसु,** छ **मिहिलाए,** दो **भद्दिआए,** एगा **आलभियाए,** एगा **पणिअभूमीए,** एगा **सावत्थीए** । चरिमा पुण **मज्झिमपावाए हत्थिसाल**रण्णो अभुज्जमाण[9]सुंकसालाए आसि । तत्थ आउसेसं जाणंतो सामी सोलसपहराइं देसणं करेइ ।

§२. तत्थ वंदिउमागओ **पुण्णपालो** राया अट्ठण्हं सदिट्ठाणं सुमिणाणं फलं पुच्छेइ । भयवं वागरेइ । ते अ इमे–पढमो ताव चलपासाएसु गया चिट्ठंति । तेसु पडंतेसु चेते न णिंति, के वि णिंता वि तहा निग्गच्छंति, जह[10] तप्पडणाओ विणस्संति । एयस्स सुमिणस्स फलं एवं–दूसमगिहवासा चलपासायत्थाणीआ । संपयाणं सिणेहाणं निवासाणं च अथिरत्ताओ । हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी इच्चाइवयणाओ गया धम्मत्थी सावया । इयरपरसमयगिह-त्थेहिंतो पाहाणत्तणेण ते अ गिहवासाए पडिहंति देसभंगाईहिं, तह वि निग्गंतुं न[11] इच्छिस्संति । वयगहणेणं जे वि णीहिंति ते वि अविहिनिग्गमणेणं । तओ ते विणिस्सिस्संति । गिहिसंकिलेसमज्झे आगया भग्गपरिणामा भविस्संति । विरला य सुसाहुणो होऊण आगमाणुसारेणं गिहिसंकिलेसाई मज्झे आगए वि अवगणिऊण कुलीणत्तणेण निव्व-हिस्संति त्ति पढम[12]सुविणत्थो ॥ १ ॥

बीओ पुण इमो–बहवो वानरा तेसिं मज्झे जूहाहिवइणो । ते अमिज्झेणं अप्पाणं विलिंपंति, अन्ने वि अ । तओ लोगो हसइ । ते भणंति–न एअमसुइं गोसीसचंदणं खु एयं । विरला पुण वानरा य न लिंपंति । ते अलित्तेहिं खिंसिज्जंति त्ति । एयस्स फलं पुण इमं–वानरत्थाणीआ गच्छिल्लगा । अप्पमत्तत्तेण चलपरिणामत्तेणं च । जूहाहिवई

---

1 P वोच्छं । 2 B °सड्ढो । 3 C सुणेसु । 4 B 'समणो' नास्ति । 5 A B तीएसु; D तिसुए । 6 A माऊण । 7 A चंपाए । 8 A B D चंपासुं । 9 C सुक° । 10 A B तह । 11 नास्ति 'न' । 12 A °सुमिण° ।

गच्छाहिवई आयरियाइणो । असुइविलेवणं तु तेसिं आहाकम्माइसावज्जसेवणं । अन्नविलिंपणं च[1] अन्नेसि वि । तक्कारणलोगहसणं च, तेसिं अणुचिअपवित्तीए य वयणहीला । ते भणिस्संति न एयं गरहियं, किं तु धम्मंगमेयं । विरला तदणुरोहेणावि न सावज्जे पयट्टिहिंति । ते य तेहिं खिंसिज्जिहिंति, जहा–एए अवगीया, अकिंचिकरा य त्ति बीइअसुविणत्थो ॥ २ ॥

तईओ पुण इमो–सच्छायखीरतरूणं हिट्ठे बहवे सीहपोअगा पसंतरूवा चिट्ठंति । ते य लोएहिं पसंसिज्जंति अहिगम्मंति अ बब्बूलाणं च हिट्ठे सुणग त्ति । फलं तु एयस्सेमं–खीरतरुत्थाणीयाणि साहूणं विहरणपाउग्गाणि खित्ताणि सावया वा साहूणं भत्तिबहुमाणवंता धम्मोवग्गहदाणपरा सुसाहुरक्खणपरा य । ते य रुंधिहिंति बहुगा सीहपोयगा नियया वासि[2]पासत्थोसन्नाई [3]संकिलिट्ठत्तणओ अन्नेसिं [4]गसणाओ अ । ते अप्पाणं जणरंजणत्थं पसंतं दरिसिहिंति । तहाविहकोउहल्लिअलोगेहिं पसंसिजिहिंति अहिगम्मिस्संति †अ तव्वयणकरणाओ । तत्थ य कयाइ केई धम्मसड्ढगा[5] वेहारुग[6]परिहारुगा[7] वा दूइज्जंति[8] । ते अ तेसिं तब्भावियाणं च सुणगाइइ पडिहासिस्संति । 0अभिक्खणं† सुद्धध-म्मकहणेणं भसंति त्ति । जेसु कुलेसु दूइज्जंति ते बब्बूलसमा[9] पडिहासिस्संति अवण्णाए । दूसमवसेण धम्मगच्छा सीह-पोअगा इव भविस्संति0 ॥ ३ ॥

चउत्थो पुण एवं–के वि कागा वावीए तडे [10]तिसाए अभिभूआ मायासरं दट्ठुं तत्थ गंतुं पयट्टा । केण वि निसिद्धा–न एयं जलं ति । ते असद्दहंता तत्थ गया विणट्ठा य त्ति । फलं तु इमं–वावीत्थाणीआ सुसाहुसंतई । अइगंभीरा सुभाविअत्था उस्सगाववायकुसला । अगहिलगहिलो राया इइ [11]नाएण कालोचिअधम्मनिरया अणिस्सिओ-वस्सिया । तत्थ कागसमा अइवंकजडा अणेगकलंकोवहया धम्मत्थी[12] । ते अज्जयधम्म[13]सद्धाए अभिभूआ । मायासर-प्पाया पुण पुव्वुत्तविवरीया धम्मचारिणो अईव कट्ठाणुट्ठाणनिरया वि अपरिणयत्ताओ अणुवायपयट्टत्ताओ अ कम्मबंध-हेउणो । ते दट्ठुं मूढधम्मिया तत्थ गच्छिहिंति त्ति केण वि गीयत्थेण ते भण्णिहिंति[14] जहा न एस धम्ममग्गो, किं तु तदाभासोयं । तहावि ते असद्दहंता केइ[15] जाहिंति विणिस्सिहिंति अ संसारे पडणेणं । जे पुण तेसिं वयणेणं वाहिंति ते अमूढधम्मसाहगा भविस्संति त्ति ॥ ४ ॥

पंचमो इमो–अणेगसावय[16]गणाउले विसमे वणमज्झे सीहो मओ चिट्ठइ । न य तं को वि सिगालाई विणा-सेइ । कालेणं तत्थ मयसीहकडेवरे[17] कीडगा उप्पण्णा । तेहिं तं भक्खिअं दट्ठुं ते सियालाई उवद्दवंति त्ति । फलं तु–सीहो पवयणं परवाइमयदुद्धरिसत्ताओ । वणं पविरलसुपरिक्खगधम्मिअजणं[18] **भारहवासं** । सावयगणा परतित्थिआई पवयण-पच्चणीआ । तेहि[19] एवं मन्नंति–एयं[20] पवयणमम्हाणं पूआसक्कारदाणाइ[21]उच्छेअगरं । तो जहातहा फिट्टउ त्ति । विसमं अमज्झत्थजणसंकुलं । तं च पवयणं मयं अइसयववगमेणं निप्पभावं भविस्सइ । तहावि पच्चणीया भएण न तं उवद्दवि-हंति । किर इत्थ परुप्परं संगई अत्थि सुट्ठियत्तं च त्ति । कालदोसेणं तत्थ कीडगप्पाया पवयणनिद्धंधसमयंतरीयाई उप्पज्जिहिंति, ते य परुप्परं निंदणभंडणाईहिं सासणलाघवं जणिहिंति । तं दट्ठुं ते पच्चणीया वि एएसिं परुप्परं पि न मेलु त्ति धुवं निरइसेसमेयं पि त्ति निब्भयत्तेणं उवद्दविस्संति पवयणं ॥ ५ ॥

छट्ठो पुण इमो–पउमागरा सरोवरगाई[22] अपउमा गद्दभगजुआ वा । पउमा पुण उक्कुरुडियाए ते वि विरला न तहा रमणिज्ज त्ति[23] । फलं तु–पउमागरत्थाणीयाणि धम्मखित्ताइं सुकुलाइं वा । तेसु न पउमाइं धम्मपडिवत्तिरूवाई ।

---

1 A C नास्ति 'च' । 2 A B Pc नियावासि° । 3 B C P संकिट्ठत्तण° । 4 Pc गमणा° । 5 P °सड्ढगा; C सड्ढगा । 6 B Pa-c वेहारुगा । 7 P नास्ति 'परिहारुगा' । 8 P इज्जंति । † दण्डान्तर्गता पंक्तिः पतिता A प्रतौ । 9 A C नास्ति 'बब्बूलसमा'; Pa-c बब्बूल त्ति । 0एतदन्तर्गतः पाठः नास्ति Pa प्रतौ । 10 E तेसि । 11 A रायाइ नाएण; P °इय ना° । 12 C धम्मत्था । 13 A धम्मं° । 14 B भणिहिंति । 15 C केय । 16 A B P सावया° । 17 B कलेवरे । 18 A B D °जण° । 19 B एहि । 20 A B एवं । 21 C E वुच्छेय° । 22 Pc सरो-वरमाईओ । 23 P रमणिज्जं ।

२१. अपापाबृहत्कल्पः ।

पणमिअ **वीरं** वुच्छं[1] तस्सेव य सिद्धिगमपवित्ताए । **पावापुरीइ** कप्पं दीवमहुप्पत्ति पडिबद्धं ॥ १ ॥
गउडेसु पाडलिपुरे संपइराया तिखंडभरहवई । **अज्जसुहत्थि**गणहरं पुच्छइ पणओ परमसड्ढो[2] ॥ २ ॥
दीवालिअपव्वमिणं लोए लोउत्तरे अ गउरविअं । भयवं ! कह संभूअं ?. अह भणइ गुरू–निव ! सुणसु[3] ॥ ३ ॥

§**१.** तेणं कालेणं तेणं समएणं समणो[4] भगवं **महावीरो** पाणयकप्पट्ठिए पुप्फुत्तरविमाणे वीससागरोवमाइं आउं परिवालित्ता, तओ चुओ समाणो तिण्णाणोवगओ इमीसे ओसप्पिणीए तिसु[5] अरएसु वइक्कंतेसु अद्धनवमासाहिअ-पंचहत्तरीवासावसेसे चउत्थे अरए आसाढसुद्धच्छट्ठीए उत्तरफग्गुणीरिक्खे **माहणकुंड**ग्गामे नयरे **उसभदत्त**-माहणभारिआए **देवाणंदा**ए कुच्छिंसि सीह-गय-वसहाइचउद्दसमहासुमिणसंसूइओ अवइन्नो । तत्थ बासीइदिणा-णंतरं **सक्का**इट्ठेण **हरिणेगमेसि**णा आसोअबहुलतेरसीए तम्मि चेव रिक्खे **खत्तियकुंड**ग्गामे नयरे **सिद्धत्थ**-रण्णो देवीए **तिसला**ए गब्भविणिमयं काउं गब्भम्मि साहरिओ । माऊए[6] सिणेहं नाउं सत्तममासे 'अम्मापिअरेहिं जीवंतेहिं नाहं समणो होहं' ति गहिआभिग्गहो, नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं अंते चित्त-सिअतेरसीअद्धरत्ते तम्मि चेव रिक्खे जाओ । अम्मापिऊहिं कय**वद्धमाण**नामो मेरुकंप-सुरखव्वण-**इंदवायरण**प-णयणपयडअवदाणो भुत्तभोगो, अम्मापिऊहिं देवत्तगएहिं तीसं वासाइं अगारवासे वसित्ता, संवच्छरिअं दाणं दाउं, **चंदप्पहा**ए सिबियाए एगागी एगदेवदूसेण मग्गसिरकसिणदसमीए तम्मि चेव रिक्खे छट्ठेणं, अवरण्हे **णायसंड**वणे निक्खंतो । बीयदिणे **बहुल**विप्पेणं पायसेण पाराविओ । पंचदिव्वाइं पाउब्भूआइं । तत्तो बारसवासाइं तेरसपक्खे अ नर-सुर-तिरियकओवसग्गे सहित्ता, उग्गं च तवं चरित्ता **जंभियगामे उज्जुवालिआ**तीरे गोदोहिआसणेणं छट्ठभत्तेणं तम्मि चेव रिक्खे वइसाहसुद्धदसमीए पहरतिगे केवलनाणं पत्तो । इक्कारसीए अ **मज्झिमपावाए महसेण**वणे तित्थं पयट्टिअं । **इंदभूइ**प्पमुहा गणहरा दिक्खिआ सपरिवारा । वयदिणाओ अ भयवओ बायालीसं वासाचउम्मासीओ जायाओ । तं जहा–एगा **अट्ठिअ**गामे, तिण्णि **चंपा**[7]**पिट्ठीचंपासु,**[8] दुवालस **वेसाली-वाणिअ**ग्गामेसु, चउद्दस **नालंदा-रायगिहेसु,** छ **मिहिला**ए, दो **भद्दिआ**ए, एगा **आलभिया**ए, एगा **पणिअभूमीए**, एगा **सावत्थी**ए । चरिमा पुण **मज्झिमपावाए हत्थिसाल**रण्णो अभुज्जमाण[9]सुंकसालाए आसि । तत्थ आउसेसं जाणंतो सामी सोलसपहराइं देसणं करेइ ।

§**२.** तत्थ वंदिउमागओ **पुण्णपालो** राया अट्ठण्हं सदिट्ठाणं सुमिणाणं फलं पुच्छेइ । भयवं वागरेइ । ते अ इमे–पढमो ताव चलपासाएसु गया चिट्ठंति । तेसु पडंतेसु चेते न णिंति, के वि णिंता वि तहा निग्गच्छंति, जह[10] तप्पडणाओ विणस्संति । एयस्स सुमिणस्स फलं एवं–दूसमगिहवासा चलपासायत्थाणीआ । संपयाणं सिणेहाणं निवासाणं च अथिरत्तओ । हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी इच्चाइवयणाओ गया धम्मत्थी सावया । इयरपरसमयगिह-त्थेहिंतो पाहाणत्तणेण ते अ गिहवासाए पडिहंति देसभंगाईहिं, तह वि निग्गंतु न[11] इच्छिस्संति । वयगहणेणं जे वि णीहिंति ते वि अविहिनिग्गमणेणं । तओ ते विणिस्सिस्संति । गिहिसंकिलेसमज्झे आगया भग्गपरिणामा भविस्संति । विरला य सुसाहुणो होऊण आगमाणुसारेणं गिहिसंकिलेसाई मज्झे आगए वि अवगणिऊण कुलीणत्तणेण निव्व-हिस्संति त्ति पढम[12]सुविणत्थो ॥ १ ॥

बीओ पुण इमो–बहवो वानरा तेसिं मज्झे जूहाहिवइणो । ते अमिज्झेणं अप्पाणं विलिंपंति, अन्ने वि अ । तओ लोगो हसइ । ते भणंति–न एअमसुइं गोसीसचंदणं खु एयं । विरला पुण वानरा य न लिंपंति । ते अलित्तेहिं खिंसिज्जंति त्ति । एयस्स फलं पुण इमं–वानरत्थाणीआ गच्छिल्लगा । अप्पमत्तत्तेण चलपरिणामत्तेणं च । जूहाहिवई

---

1 P वोच्छं । 2 B °सड्ढो । 3 C सुणेसु । 4 B 'समणो' नास्ति । 5 A B तीएसु; D तिसुए । 6 A माऊण । 7 A चंपाए । 8 A B D चंपासुं । 9 C सुक° । 10 A B तह । 11 नास्ति 'न' । 12 A °सुमिण° ।

गच्छाहिवई आयरियाइणो । असुइविलेवणं तु तेसिं आहाकम्माइसावज्जसेवणं । अन्नविलिंपणं च[1] अन्नेसि वि । तक्कारणलोगहसणं च, तेसिं अणुचिअपवित्तीए य वयणहीला । ते भणिस्संति न एयं गरहियं, किं तु धम्मंगमेयं । विरला तदणुरोहेणावि न सावज्जे पयट्टिहिंति । ते य तेहिं खिंसिज्जिहिंति, जहा–एए अवगीया, अकिंचिकरा य त्ति बीइअसुविणत्थो ॥ २ ॥

तईओ पुण इमो–सच्छायखीरतरूणं हिट्ठे बहवे सीहपोअगा पसंतरूवा चिट्ठंति । ते य लोएहिं पसंसिज्जंति अहिगम्मंति अ बब्बूलाणं च हिट्ठे सुणग त्ति । फलं तु एयस्सेमं–खीरतरुत्थाणीयाणि साहूणं विहरणपाउग्गाणि खित्ताणि सावया वा साहूणं भत्तिबहुमाणवंता धम्मोवग्गहदाणपरा सुसाहुरक्खणपरा य । ते य रुंधिहिंति बहुगा सीहपोयगा निययावासि[2]पासत्थोसन्नाई [3]संकिलिट्ठत्तणओ अन्नेसिं [4]गसणाओ अ । ते अप्पाणं जणरंजणत्थं पसंतं दरिसिहिंति । तहाविहकोउहल्लिअलोगेहिं पसंसिज्जिहिंति अहिगम्मिस्संति †अ तव्वयणकरणाओ । तत्थ य कयाइ केई धम्मसड्ढगा[5] वेहारुग[6]परिहारुगा[7] वा दूइज्जंति[8] । ते अ तेसिं तब्भावियाणं च सुणगाइइ पडिहासिस्संति । 0अभिक्खणं† सुद्धध-म्मकहणेणं भसंति त्ति । जेसु कुलेसु दूइज्जंति ते बब्बूलसमा[9] पडिहासिस्संति अवण्णाए । दूसमवसेण धम्मगच्छा सीह-पोअगा इव भविस्संति0 ॥ ३ ॥

चउत्थो पुण एवं–के वि कागा वावीए तडे [10]तिसाए अभिभूआ मायासरं दट्ठुं तत्थ गंतुं पयट्टा । केण वि निसिद्धा–न एयं जलं ति । ते असद्दहंता तत्थ गया विणट्ठा य त्ति । फलं तु इमं–वावीत्थाणीआ सुसाहुसंतई । अइगंभीरा सुभाविअत्था उस्सगाववायकुसला । अगहिलगहिलो राया इइ [11]नाएण कालोचिअधम्मनिरया अणिस्सिओ-वस्सिया । तत्थ कागसमा अइवंकजडा अणेगकलंकोवहया धम्मत्थी[12] । ते अज्जयधम्म[13]सड्ढाए अभिभूआ । मायासर-प्पाया पुण पुव्वुत्तविवरीया धम्मचारिणो अईव कट्ठाणुट्ठाणनिरया वि अपरिणयत्ताओ अणुवायपयट्टत्ताओ अ कम्मबंध-हेउणो । ते दट्ठुं मूढधम्मिया तत्थ गच्छिहिंति त्ति केण वि गीयत्थेण ते भणिहिंति[14] जहा न एस धम्ममग्गो, किं तु तदाभासोयं । तहावि ते असद्दहंता केइ[15] जाहिंति विणिस्सिहिंति अ संसारे पडणेणं । जे पुण तेसिं वयणेणं वाहिंति ते अमूढधम्मसाहगा भविस्संति त्ति ॥ ४ ॥

पंचमो इमो–अणेगसावय[16]गणाउले विसमे वणमज्झे सीहो मओ चिट्ठइ । न य तं को वि सिगालाई विणा-सेइ । कालेणं तत्थ मयसीहकडेवरे[17] कीडगा उप्पण्णा । तेहिं तं भक्खिअं दट्ठुं ते सियालाई उवद्दवंति त्ति । फलं तु–सीहो पवयणं परवाइमयदुद्धरिसत्ताओ । वणं पविरलसुपरिक्खगधम्मिअजणं[18] **भारहवासं** । सावयगणा परतित्थिआई पवयण-पच्चणीआ । तेहिं[19] एवं मन्नंति–एयं[20] पवयणमम्हाणं पूआसक्कारदाणाइ[21]उच्छेअगरं । तो जहातहा फिट्टउ त्ति । विसमं अमज्झत्थजणसंकुलं । तं च पवयणं मयं अइसयववगमेणं निप्पभावं भविस्सइ । तहावि पच्चणीया भएण न तं उवद्दवि-हंति । किर इत्थ परुप्परं संगई अत्थि सुट्टियत्तं च त्ति । कालदोसेणं तत्थ कीडगप्पाया पवयणनिद्धंधसमयंतरीयाई उप्पज्जिहिंति, ते य परुप्परं निंदणभंडणाईहिं सासणलाघवं जणिहिंति । तं दट्ठुं ते पच्चणीया वि एएसिं परुप्परं पि न मेलु त्ति धुवं निरइसेसमेयं पि त्ति निब्भयत्तेणं उवद्दविस्संति पवयणं ॥ ५ ॥

छट्ठो पुण इमो–पउमागरा सरोवरगाई[22] अपउमा गद्दभगजुआ वा । पउमा पुण उक्कुरुडियाए ते वि विरला न तहा रमणिज्ज त्ति[23] । फलं तु–पउमागरत्थाणीयाणि धम्मखित्ताइं सुकुलाइं वा । तेसु न पउमाइं धम्मपडिवत्तिरूवाइं ।

---

1 A C नास्ति 'च' । 2 A B Pc नियावासि° । 3 B C P संकिट्ठत्तण° । 4 Pc गमणा° । 5 P °सड्ढगा; C सड्ढुगा । 6 B Pa-c वेहारुगा । 7 P नास्ति 'परिहारुगा' । 8 P इज्जंति । † दण्डान्तर्गता पंक्तिः पतिता A प्रतौ । 9 A C नास्ति 'बब्बूलसमा'; Pa-c बब्बूल त्ति । 0एतदन्तर्गतः पाठः नास्ति Pa प्रतौ । 10 E तेसि । 11 A रायाइ नाएण; P °इय ना° । 12 C धम्मत्था । 13 A धम्मं° । 14 B भणिहिंति । 15 C केय । 16 A B P सावया° । 17 B कलेवरे । 18 A B D °जण° । 19 B एहि । 20 A B एवं । 21 C E वुच्छेय° । 22 Pc सरो-वरमाईओ । 23 P रमणिज्जं ।

साहु-सावयसंघा[1] वा । जे वि धम्मं पडिवज्जिहिंति ते वि कुसीलसंसग्गीए लुलिअ[2]परिणामा भविस्संति । [3]उक्कुरुडिया पच्चंतखित्ता नीयकुलाइं वा तेसिं धम्मो पयट्टिस्सइ । ते वि अट्ठाणुप्पत्तिदोसाओ लोएणं खिंसिज्जमाणा ईसाइदोस-दुट्ठत्तेण न[4] सकज्जं साहिस्संति त्ति ॥ ६ ॥

सत्तमो इमो—को वि करिसगो [0]दुव्वियड्ढो दड्ढघुणक्खयाइं पारोहअजुग्गाइं बीयाइं सम्मं बीआइं मन्नंतो किणित्ता य खित्तेसु ऊसराइसु पयरइ । तम्मज्झे[5] समागयं विरलं सुद्धबीयं अवणेइ सुखित्तं परिहरइ त्ति । एयस्स फलं इमं—करिसगत्थाणीया दाण-धम्मरुई । ते य[0] दुव्वियड्ढा जाणगं मन्ना अप्पाउग्गाणि वि संघभत्ताइदाणाणि पाउग्गाणि मन्नंता; ताणि वि अपत्तेसु दाहिंति । इत्थ चउभंगो । एगो सुद्धो अप्पाउग्गमज्झे किंचि सुद्धं देयं भवइ तं अवणेहिंति । सुपत्तं वा समागयं परिहरिस्संति । एरिसाणि दाणाणि; दायगा गाहगा य भविस्संति । अन्नहा वा वक्खाणं—अबीया असाहुणो ते वि साहुबुद्धीए दुव्वियड्ढा गिण्हिस्संति । अठाणेसु अविहीए अ ठाविस्संति । जहा दुव्वियड्ढो कोइ करिसओ अबीयाणि वि बीयाणि, बीयाणि वि अबीयाणि मन्नंतो तहा ठवेइ तत्थ वा ठवेइ, जहा जत्थ य [6]कीडगाइणा खज्जंति, [7]चोप्पडाइणा वा विणस्संति । अन्नहा वा परोहस्स अणलाणि भवंति । एवं अयाणगधम्मसड्ढिआ पत्ताणि वि अविहि-अबहुमाण-अभत्तिमाईहिं तहा करिस्संति जहा पुन्नपसवं[8] अक्खमाइं होहिंति ॥ ७ ॥

अट्ठमो अ एसो—पासायसिहरे खीरोदभरिआ सुत्ताइअलंकिय[9]गीवा कलसा चिट्ठंति । अन्ने य भूमीए बोडा उगालसयकलिआ । कालेण ते सुहकलसा नियठाणाओ चलिआ बोडयघडाणं उवरिं पडिया बे वि भग्ग त्ति । फलं तु—कलसत्थाणीया सुसाहुणो । पुव्वं उग्गविहारेण विहरंता पुज्जा होऊण कालाइदोसओ नियसंजमठाणाओ टलिया उसन्नीभूया सीयलविहारिणो पायं भविस्संति । इयरे पुण पासत्थाई भूमिट्ठिया[10] चेव[11] भूमिरयउगालप्पायअसंजमट्ठाण-सयकलिया बोडघडप्पाया निसन्नपरिणामा चेव होहिंति । ते य सुसाहुणो टलंता अन्नविहारखित्ताभावाओ[12] बोडघड[13]-कप्पाणं पासत्थाईणं उवरि पीडं करिस्संति । ते य सखित्तअक्कमणेणं पीडिया संता निद्धंधसत्तेण सुट्ठुयरं तेसिं संकिलेसा य होहिंति । तो परुप्परं विवायं कुणंता बेवि संजमाओ भंसिस्संति ।

इक्के तवगारविया अन्ने सिढिला सधम्मकिरियासु । मच्छरवसेण दुण्णि वि होहिंति अपुट्ठधम्माणो ॥ ४ ॥

केइ पुण अगहिलगहिलराय[14]अक्खाणगविहीए कालाइदोसे वि अप्पाणं निव्वाहइस्संति । तं च अक्खाणयमेवं पन्नवंति पुव्वायरिया—पुव्विं किर **पुहवी**पुरीए **पुण्णो** नाम राया । तस्स मंती **सुबुद्धी** नाम । अन्नया **लोगदेवो** नाम नेमित्तिओ आगओ । सो य **सुबुद्धि**मंतिणा आगमेसिकालं पुट्ठो । तेण भणिअं—मासाणंतरं इत्थ जलहरो वरिसिस्सइ । तस्स जलं जो पाहिइ, सो सव्वो वि गहग्घत्थो भविस्सइ । किचिए वि काले गए सुवुट्ठी भविस्सइ । तज्जलपाणेण पुणो जणा सुत्थी भविस्संति । तओ मंतिणा तं राइणो विन्नत्तं । रन्नावि पडहग्घोसणेण वारिसंगहत्थं जणो आइट्ठो । जणेणावि तस्संगहो कओ । मासेण वुट्ठो मेहो । तं च संगहिअं नीरं कालेण निट्ठविअं । लोएहिं नवोदगं चेव पाउमाढत्तं । तओ गहिलीभूआ सव्वे लोआ सामंताई अ गायंति नच्चंति सिच्छाए विचिट्ठंते[15] । केवलं राया अमच्चो अ संगहिअं जलं न निट्ठियं ति ते चेव सुत्था चिट्ठंति । तओ सामंताईहिं विसरिसचिट्ठे राय-अमच्चे निरिक्खिऊण परुप्परं मंतियं; जहा—गहिल्लो राया मंती य । एए अम्हाहिंतो विसरिसायारा; तओ एए अवसारिऊण अवरे [16]अप्पतु-ल्लायारे रायाणं मंतिणं च ठाविस्सामो । मंती उण तेसिं मंतं नाऊण राइणो विण्णवेइ । रण्णा वुत्तं—कहमेएहुंतो अप्पा रक्खिअव्वो ? । विंदं हिं नरिंदतुल्लं हवइ । मंतिणा भणिअं—महाराय ! अगहिलेहिं पि अम्हेहिं गहिलीहोऊण ठायव्वं, न अन्नहा मुक्खो । तओ कित्तिमगहिलीहोउं ते रायामच्चा तेसिं मज्झे नियसंपयं रक्खंता चिट्ठंति । तओ ते

1 E °संघो । 2 B लुभिअ° । 3 B E उक्करु° । 4 B नास्ति 'न' । 0एतदन्तर्गतः पाठः पतितः P प्रतौ । 5 Pc मज्झे । 6 Pc गीडगा° । 7 P चुप्पडा° । 8 P C पसव° । 9 B C अलंकियं । 10–11 C नास्त्येतच्छब्दद्वयम् । 12 P °भावओ । 13 E °घडे । 14 P C E अगहिलराय° । 15 P विचिट्ठंति । 16 C अप्पउला° ।

सामंताई तुट्ठा । अहो ! रायामच्चा वि अम्ह सरिसा संजाय त्ति उवाएण तेण तेहिं अप्पा रक्खिओ । तओ कालंतरेण सुहवुट्ठी जाया । नवोदगे पीए सव्वे लोगा पगइमावन्ना सुत्था संवुत्ता ।

एवं दूसमकाले गीयत्था कुलिंगीहिं सह सरिसीहोऊण वट्टंता अप्पणो समयं भाविणं पडिवालिंता अप्पाणं निव्वाहइस्संति । एवं भाविदूसमविलसिअसूयगाणं अट्ठण्हं सुमिणाणं फलं सामिमुहाओ सोऊण **पुण्णपालनरिंदो** पव्वइओ सिवं गओ ।

§३. एयं च दूसमासमयविलसिअं लोइआवि कलिकालववएसेणं पण्णविंति; जहा–पुव्विं किर दावरजुगउप्पन्नेणं रण्णा **जहुट्ठिलेणं** रायवाडिआगएणं कत्थ वि पएसे वच्छिआए हिट्ठे एगा गावी थणपाणं कुणंती दिट्ठा । तं च अच्छेरयं दट्ठूण राइणा दियवरा पुट्ठा–किमेयं ति ? । तेहि भणिअं–देव ! आगामिणो कलिजुगस्स सूयगमेयं । इमस्स अब्भुअस्स फलमिणं–कलिजुगे अम्मापिअरो कण्णयं कस्स वि रिद्धिसंपन्नस्स दाउं तं उवजीविस्संति, तत्तो दविणगहणाइणा । तओ अग्गओहुत्तं पत्थिएण पत्थिवेण सलिलवीसालियवालुयाए रज्जुओ वलंता के वि दिट्ठा । खणमित्तेण ताओ रज्जुओ वायायव[1]संजोएण मुसुमूरिआ । तओ महीवइणा पुच्छिएहिं भणिअं दिएहिं–महाराय ! एयस्स फलं, जं दविणं किच्छवित्तीए लोया विढस्संति, तं कलिजुगंमि चोरग्गिरायदंडदाइएहिं विणिस्सिहइ । पुणरवि अग्गओ चलिएणं **धम्मपुत्तेणं**[2] दिट्ठं आवाहाओ[3] पलुट्टियं जलं कूवे पडंतं । तत्थ वि वुत्तं माहणेहिं–देव ! जं दव्वं पयाओ असि-मसि-किसि-वाणिज्जाईहिं उवज्जिहिंति तं सव्वं रायउले गच्छिहिइ त्ति । अन्नजुगेसु किर रायाणो नियदव्वं दाऊणं लोयं सुट्ठिअं अकरिंसु । पुणो पुरओ वच्चंतेणं निवइणा रायचंपयतरू अ समीतरू[4] अ एगंमि पएसे दिट्ठा । तत्थ समीपायवस्स वेइआबंधमंडणगंधमल्लाइपूआ गीयनट्टमहिमा य जणेण कीरमाणी पलोइआ । इअरस्स तरुणो छत्तायारस्स वि महमहिअकुसुमसमिद्धस्स वि वत्तं पि को वि नवि पुच्छइ त्ति । तस्स फलं वक्खाणियं विप्पेहिं; जहा–गुणवंताणं महप्पाणं सज्जणाणं न पूआ भविस्सइ, न य रिद्धी । पाएणं निग्गुणट्ठाणं पावाणं खलाणं पूआ सक्कारो इड्ढी अ कलिजुगे भविस्सइ । भुज्जो[5] पुरो पट्ठिएणं राइणा दिट्ठा एगा सिला सुहुमच्छिद्दबद्धवालग्ग[6]आलंबणेणं अंतरिक्खट्ठिआ । तत्थ वि पुट्ठेहिं सिट्ठं सुत्तकंठेहिं; जहा–महाभाग ! कलिकाले सिलातुल्लं पावं विउलं भविस्सइ । वालग्गसरिसो धम्मो पयट्टिही । परं तित्तियस्स वि धम्मस्स माहप्पेणं कंचि कालं नित्थरिस्सइ लोओ । तम्मि वि तुट्टे सव्वं बुड्डिस्सइ ।

दूसमाए[7] पुव्वसूरिहिं पि लोइयाविक्खाए कलिजुगमाहप्पमित्थं साहियं–

'कूवा[8]वाहाजीवण-तरुफलवह-गाविवच्छधावणया । लोहविवज्ज(च्च)यकलिमल-सप्पगरुडपूअपूआ य ॥ १ ॥
हत्थंगुलिदुग[9]घट्टण-गय-गद्दभ-सगड-वालसिलधरणं । [10]एमाई आहरणा[11] लोयंमि वि कालदोसेणं ॥ २ ॥
जयघरकलहकुलेयरमेराअणुसुद्धधम्म[12]पुढविठिई । वालुगवक्कारंभो एमाई आइसद्देण ॥ ३ ॥
कलिअवयारे किल निज्जिएसु चउसुंपि पंडवेसु तहा । भाइवहाइकहाए जामिगजोगंमि कलिणाओ ॥ ४ ॥
तत्तो **जुहिट्ठिलेणं** जियंमि ठइयंमि दाइए तंमि । एमाई अट्ठुत्तरसएण सिट्ठा नियठिइ त्ति ॥ ५ ॥'

एयासिं गाहाणं अत्थो–कूवेण आवाहो उवजीविस्सइ । राया कूवत्थाणीओ, सव्वेसिं बंभ-खत्तिअ-वइस-सुद्दाणं भरणीयत्तणेण आवाहतुल्लाणं, कलिजुगदोसाओ अत्थग्गहणं करिस्सइ ॥ १ ॥

तहा तरूणं फलनिमित्तो वहो छेओ भविस्सइ । फलतुल्लो पुत्तो तरुतुल्लस्स पिउणो वहप्पायं उद्देगं धणपत्तलेहणाइणा उप्पाइस्सइ ॥ २ ॥

वच्छियातुल्लाए कण्णाए विक्कयाइणा गोतुल्ला जणणी धावणतुल्लं उवजीवणं करिस्सइ ॥ ३ ॥

---

1 B C वायाइव° । 2 B C धम्मपुत्तिणं । 3 B C P आहावाओ; E आहावायाओ । 4 पतितमेतत्पदं C आदर्शे । 5 C भुजो । 6 C °छिड्डवालग्ग° । 7 A C E दूसमसूसमाए; P D Pc दूसमदूसमाए । 8 C D P कूआ । 6 E °दूग° । 10 P इयमाई । 11 B C E आहारणा; D आहाराणा । 12 F °सुधम्म° ।

लोहमई कडाही तिस्सा विवत्थासो सुगंधितिलघयपागउचिआए कलिमलस्स पिसियाइणो पागो हविस्सइ। सजाइ-वग्गपरिहारेण अनालबद्धेसु परजणेसु अत्थदाणं भविस्सइ त्ति भावो ॥ ४ ॥

सप्पसरिसेसु निद्दएसु धम्मवज्झेसु दाणाइसक्कारो, गरुडप्पाएसु पुज्जेसु धम्मचारिसु अपूया य भविस्सइ ॥ ५ ॥

हत्थस्स अंगुलिदुगेण घट्टणं ठवणं भविस्सइ। हत्थ तुल्लस्स पिउणो अंगुलिदुगतुल्लेहिं बहुपुत्तेहिं[1] जयघर[2]करणाओ घट्टणं नाम लोओ भविस्सइ ॥ ६ ॥

गयवोढव्वं सगडं गद्दभवोढव्वं भविस्सइ। गयत्थाणीएसु उच्चाकुलेसु मज्जायसगडवाहणोचिएसु कलहो[3] नायलो वा भविस्सइ। इयरेसु नीयकुलेसु गद्दभत्थाणीएसु मेरा नीई भविस्सइ ॥ ७ ॥

वालबद्धा[4] सिला धरिस्सइ ठाइस्सइ, अणुंमि सुहुमयरे बालप्पाए सुद्धधम्मे सत्थाणुसारिणि[5], सिलातुल्लाए पुढवीए तन्नि[6]वासिलोअस्स ठिई निव्वहणं भविस्सइ ॥ ८ ॥

जहा वालुआए वक्को तया गहिउं न तीरइ, एवं आरंभाओ वि वाणिज्ज-किसि-सेवाईआओ विसिट्ठं पयासाणुरूवं फलं न पाविस्सइ ॥ ९ ॥

सेसगाहादुगत्थो कहाणय[7]गम्मो। तं चेमं–किल पंच पंडवा **दुज्जोहण-दूसासणाइ**भाउयसए[8] **कण्ण-गांगेय-दोणायरि**एसु अ संगामसीसे निहए, सुचिरं रज्जं परिवालिअ, कलिजुगपवेसकाले महापहं पट्ठिआ कत्थ वि वणुद्देसे पत्ता। तओ रत्तीए **जुहिट्ठिले**ण[9] **भीमा**इणो पइपहरं पाहरीअत्ते निरूविआ। तत्तो सुत्तेसु **धम्मपुत्ता**इसु पुरिसरूवं काउं कली **भीम**मुवट्ठिओ; अहिक्खित्तो य तेण **भीमो**–रे भाउअ-गुरु-पिआमहाइणो मारित्ता[10] संपइ धम्मत्थं पट्ठिओ तुमं, ता केरिसो तुह धम्मो ?। तओ **भीमो** कुद्धो तेण सह जुज्झिउमारद्धो। जहा जहा **भीमो** जुज्झइ तहा तहा कली वड्ढइ। तओ निज्जिओ कलिणा **भीमो**। एवं बीयजामे **अज्जुणो,** तइअ-चउत्थजामेसु **नकुल-सहदेवा** तेण अहिक्खित्ता, रुट्ठा निज्जिया य। तओ सावसेसाए निसाए उट्ठिए **जुहिट्ठिले** जुज्झिउं ढुक्को कली। तओ खंतीए चेव निज्जिओ कली रण्णा संकोअं[11] नेउं[12] सरावमज्झे ठविओ। पभाए य **भीमा**इणं दंसिओ–एस जो जेण तुम्हे निज्जिआ। एवमाईणं दिट्ठंताणं अट्ठुत्तरसएण **महाभारहे वासेसि**णा कलिट्ठिई दंसिय त्ति। अलं पसंगेण।

§४. तओ **गोअमसामी** जाणगपुच्छं पुच्छेइ–भयवं! तुम्ह निव्वाणाणंतरं किं किं भविस्सइ ?। पहुणा भणियं–गोयम[13]! मम मुक्खगयस्स तिहिं वासेहिं अद्धनवमेहिं अ मासेहिं पंचमअरओ दूसमा लग्गिस्सइ। मह मुक्खगमणाओ वासाणं चउसट्ठीए अपच्छिमकेवली **जंबूसामी** सिद्धिं गमिही। तेण समं मणपज्जवनाणं, परमोही, पुलायलद्धी, आहारगसरीरं, खवगसेढी, उवसामगसेढी, जिणकप्पो, परिहारविसुद्धि-सुहुमसंपराय-अहक्खायचारित्ताणि, केवलनाणं, सिद्धिगमणं च त्ति दुवालसठाणाइं **भारहे**वासे [14]वुच्छिज्जिहिंति।

अज्जसुहम्मप्पमुहा होहिंति जुगप्पहाण आयरिया। **दुप्पसहो** जा सूरी चउरहिआ[15] दोण्णि अ सहस्सा ॥ १ ॥

सत्तरिसमहिए वाससए गए **थूलभद्द**म्मि सग्गट्ठिए चरमाणि चत्तारि पुव्वाणि, समचउरंसं संठाणं, वज्जरिसहनारायं संघयणं, महापाणज्झाणं च [16]वुच्छिज्जिहिइ। वासपंचसएहिं **अज्जवयरे** दसमं पुव्वं, संघयणचउक्कं च अवगच्छिही।

महमुक्खगमणाओ **पालय-नंद-चंदगुत्ता**इराईसु वोलीणेसु चउसयसत्तरेहिं **विक्कमाइच्चो** राया होही। तत्थ सट्ठी वरिसाणं **पालगस्स** रज्जं; पणपण्णं सयं **नंदाणं**; अट्ठोत्तरं सयं **मोरियवंसाणं**; तीसं **पूसमित्त**स्स; सट्ठी

---

1 E नास्त्येतत्पदम्। 2 C जयगघर°। 3 P काहलो। 4 A B E °वुड्ढा। 5 C सारिण°। 6 P B D तिन्नि°। 7 B C D कहणाय°। 8 B °भावु°; C E °भाउ°। 9 B C E जुहिट्ठलेण। 10 B Pa नास्ति पदमिदम्; E हणिअ। 11 P संकोदअं। 12 Pa नेअं; P नास्ति। 13 B सो; P भो; Pa सोम। 14 B उच्छिज्जि°। 15 E चउरसहिआ। 16 B उच्छि°।

बलमित्त-भाणुमित्ताणं; चालीसं **नरवाहणस्स**; तेरस **गद्दभिल्लस्स**; [0]चत्तारि **सगस्स** । तओ **विक्कमाइच्चो** । सो साहिअसुवण्णपुरिसो पुहविं अरिणं काउं नियं संवच्छरं पवत्तेही ।

तह **गद्दभिल्ल**रज्जस्स[0] छेयगो **कालगायरिओ** होही । तेवण्णचउसएहिं गुणसयकलिओ सुअपउत्तो ॥ १ ॥

दूसमाए वट्टमाणीए नयराणि गामभूआणि होहिंति । मसाणरूवा गामा; जमदंडसमा रायाणो; दासप्पाया कुडुंबिणो;[1] लंचगहणपरा निओगिणो; सामिदोहिणो भिच्चा; कालरत्तितुल्लाओ सासूओ; सप्पिणितुल्लाओ वहूओ; निल्लज्जया-कडक्खपिक्खिआईहिं सिक्खिअवेसाचरियाओ कुलंगणाओ; सच्छंदचारिणो पुत्ता य सीसा य; अकालवासिणो कालअवासिणो[2] य मेहा; सुहिआ रिद्धिसम्माणभायणं च दुज्जणा; दुहिआ अवमाणपत्तं अप्पिड्ढिया य सज्जणा; परचक्कडमरदुब्भिक्खदुक्खिआ[3] देसा; खुद्द[4]सत्तबहुला मेइणी; असज्झायपरा अत्थलुद्धा य विप्पा; गुरुकुलवासच्चाइणो मंदधम्मा कसायकलुसिअमणा [5]समणा; अप्पबला सम्मद्दिट्ठिणो [6]सुनरा; ते चेव पउरबला मिच्छद्दिट्ठिणो होहिंति । देवा न दाहिंति दरिसणं । न तहा फुरंतपहावा विज्जामंता य[7] । ओसहीणं गोरस-कप्पूर-सक्कराइदव्वाणं च रस-वण्ण-गंधहाणी । नराणं बल-मेहा-आऊणि हाइस्संति । मासकप्पाइपाओग्गाणि खित्ताणि न भविस्संति । †पडिमारूवो सावयधम्मो वुच्छिज्जिहिइ† । आयरिया वि सीसाणं सम्मं सुअं न दाहिंति ।

कलहकरा डमरकरा असमाहिकरा अनिव्वुइकरा य । होहिंति इत्थ समणा दससु वि खित्तेसु सयराहं[8] ॥ १ ॥

ववहारमंततंताइएसु निच्चज्जयाण य मुणीणं । गलिहिंति आगमत्था अणत्थलुद्धाण तद्दियहं[9] ॥ २ ॥

उवगरणवत्थपत्ताइयाण वसहीण सड्ढयाणं च । जुज्झिस्संति कएणं जह नरवइणो कुडुंबीणं ॥ ३ ॥

किं बहुणा । बहवे मुंडा अप्पे समणा होहिंति । पुव्वायरियपरंपरागयं सामायारिमुत्तूण नियगमइविगप्पियं सामायारिं सम्मं चारित्तं ति क्खाविंता तहाविहं मुद्धजणं मोहंमि पाडिंता उस्सुत्तभासिणो अप्पथुई परनिंदापरायणा य केई होहिंति । बलवंता मिच्छनिवा अप्पबला हिंदुअनिवा भविस्संति ।

§ ५. जाव एगूणवीसाए सएसु चउद्दसाहिएसु वरिसेसु वइक्कंतेसु **चउदससयचोआले विक्कमवरिसे पाडलिपुत्ते** नयरे चित्तसुद्धट्ठमीए अद्धरत्ते विट्ठिकरणे मयरलग्गे वहमाणे जसस्स मयंतरे [10]**मगदण**भिधाणस्स गिहे **जसदेवी**ए उयरे चंडालकुले **कक्किरायस्स** जम्मो हविस्सइ । एगे एवमाहंसु–

वीराओ इगुणवीसं सएहिं वरिसाण अट्ठवीसाए । पंचमासेहिं* होही चंडालकुलंमि **कक्किनिवो** ॥

तस्स तिन्नि नामाणि भविस्संति । तं जहा–**रुद्दो, कक्की, चउम्मुहो** अ । तस्स जम्मे **महुराए राम-महुमहण**भवणं कत्थ वि गूढं चिट्ठमाणं तं पडिस्सइ । दुब्भिक्खडमररोगेहिं च जणो पीडिज्जिहिइ । अट्ठारसमे वरिसे कत्तिअसुक्कपक्खे **कक्कि**णो रज्जाभिसेओ भविस्सइ । जणमुहाओ नाउं **नंदरायस्स** सुवण्णं थूभपंचगाओ सो गिण्हिस्सइ । चम्मयनाणयं पवत्तिस्सइ । दुट्ठे पालिस्सइ, सिट्ठे य निग्गहिस्सइ । पुहविं साहित्ता छत्तीसइमे[11] वरिसे तिखं-

---

0एतदन्तर्गतः पाठः पतितः B आदर्शे । 1 P E कुटुंबिणो । 2 E विना नास्त्यन्यत्रैतत्पदम् । 3 P °दुहिआ । 4 P दुक्ख° । 5 पतितं E प्रतौ । 6 B C E सुरनरा । 7 'य' नास्ति A P C । † एतद्वाक्यं नास्ति E आदर्शे । 8 D सुराहं । 9 D तद्दियाहं । 10 P मगदरा; D मगदरारा; Pa मगद । 11 B बत्तीसइमे ।

* अत्रान्तरे E सञ्ज्ञके आदर्शे निम्नलिखिता गाथा अधिका लभ्यन्ते–

[पंच] य मासा पंच य वासा छच्चेव हुंति वाससया । परिनिव्वुअस्स अरहओ तो उप्पन्नो सगो राया ॥ १
पत्तो पंतकुलंमि य चित्ते सुदिट्ठमीइ दिवसंमि । रोहोवगए चंदे विट्ठीकरणे रविस्सुदए ॥ २
जम्मोवगए सूरे सणिच्छरे विण्हदेवयगए य । सुक्के भोमेण हए चंदेण हए सुरगुरुंमि ॥ ३
ससिसूरत्थमणंमि य समागमे ति(त ?)त्थ एगपक्खंमि । सत्तरिसयचक्कपमद्दए अ धूमधूमए अ केउंमि ॥ ४
तइआ पडणं भवणस्स जम्मनयराइं रामकण्हाणं । घोरं जणक्खयकरं पडिबोहदिणे य विणस्स ॥ ५

इति तित्थ (त्थो) ग्गालियसिद्धांते । अट्ठवीसाए मासेहिं होही चंडालकुलंमि कक्किनिवो ।

इभरहाहिवई भविस्सइ । सव्वओ खणित्ता खणित्ता निहाणाणि गिण्हिस्सइ । तस्स भंडारे नवनवइसुवण्णकोडिकोडीओ, चउद्दससहस्सा गयाणं, सत्तासीइ लक्खा आसाणं, पंचकोडीओ पाइक्काणं हिंदुअ[1]तुरुक्ककाफराणं । तस्सेव एगच्छत्तं रज्जं । दविणत्थं रायमग्गं खाणिंतस्स पाहाणमई लवणदेवी नाम गावी पयडीहोऊण गोयरचरियागए साहुणो सिंगेहिं घट्टिस्सइ । तेहिं **पाडिवयायरिय**स्स कहिए, इत्थ पुरे जलोवसग्गो [2]धणियं होहि त्ति तेहिं आइसिस्संति । तओ के वि साहुणो अन्नत्थ विहरिस्संति । के वि वसहीपडिबंधाइणा ठाहिंति तग्गहणत्थं । पयडीभविस्संति सत्तरसाहवुट्ठीए सव्वत्थ निहाणाणि । तओ **गंगा**ए पुरं समग्गं पि पलाविज्जिही[3] । राया संघो अ[4] उत्तरदिसिट्ठियं महल्लत्थलं आरुहिअ छुट्टिस्संति । राया तत्थेव नवं[5] नगरं निवेसिस्सइ । सव्वे वि पासंडा तेण दंडिज्जिहिंति । साहूणं सगासाओ भिक्खाछलंसं मग्गंतो काउस्सग्गाहूअसासणदेवयाए [6]निवारिज्जिही । पंचासं वरिसाइं सुभिक्खं । दम्मेण कणाणं दोणो लब्भिहिइ । एवं निक्कंटयं रज्जमुवभुंजित्ता छासीइमे वरिसे पुणो सव्वपासंडे दंडित्ता सव्वं लोअं निद्धणं काउं भिक्खाछट्ठंसं साहूहिंतो मग्गेहिइ । ते अ[7] अदिंते कारागारे खिविस्सइ । तओ पाडिवया[0]यरियपमुहो संघो सासणदेविं मणे काउं काउस्सग्गे ठाही । तीए वि[8] विबोहिओ जाव न पण्णप्पिहइ, तओ आसणकंपेण नाउं माहणरूवो सक्को आगमिस्सइ । जया तस्स वि वयणं न पडिवज्जिहिइ तया[0] सक्केण चवेडाए आहओ मरिउं नरए गमिस्सइ । तओ तस्स पुत्तं **धम्मदत्तं** नाम रज्जे ठविस्सइ । [9]संघस्स सुत्थयं[10] आइसिय सट्ठाणं सक्को गमिही । **दत्तो** य राया बावत्तरिवासाऊ पइदिणं जिणचेइयमंडियं महिं काही; लोगं च सुहिअं काहि त्ति । **दत्तस्स** पुत्तो **जियसत्तू** । तस्स वि[11]य **मेहघोसो** । **कक्कि**अणंतरं **महानिसीहं** न वट्टिस्सइ । दोवाससहस्सठिइणो[12] भासरासिग्गहस्स पीडाए नियत्ताए य देवावि दंसणं दाहिंति । विज्जा मंता य अप्पेण वि जावेण पहावं दंसिस्संति । ओहिन्नाण-जाइसरणाई भावा[13] य किंचि पयट्टिस्संति । तदणंतरं एगूणवीससहस्साइं जाव जिणधम्मो वट्टिस्सइ[14] । दूसमपज्जंते बारस[15]वारिसिओ पव्वइय-दुहत्थूसियतणू **दसवेयालिआ**गमधरो अद्धट्ठसिलोगप्पमाणगणहरमंतजावी छट्ठउक्किट्ठतवो **दुप्पसहो** नाम आयरिओ चरमजुगप्पहाणो अट्ठवासाइं सामण्णं पालित्ता वीसवरिसाऊ अट्ठमभत्तेणं कयाणसणो सोहम्मे कप्पे पलिओवमाऊ सुरो एगावयारो उप्पज्जिहिइ । **दुप्पसहो** सूरी, **फग्गुसिरी** अज्जा, **नाइलो** सावओ, **सच्चसिरी** साविया–एस अपच्छिमो संघो पुव्वण्हे भारहे वासे अत्थमेहिइ । मज्झण्हे **विमलवाहणो** राया, **सुमुहो** मंती । अवरण्हे अग्गी । एवं च धम्म-रायनीइ-पागाईणं[16] वुच्छेओ होहिइ[17] । एवं पंचमो अरओ दूसमा[18] सम्पुण्णा[19] ।

§ ६. तओ [20]दूसम-दूसमाए छट्ठे अरए पयट्टे [21]पलयवाया वाइस्संति । वरिसिस्संति विसजलहरा । तवस्सइ बारसाइच्चसमो सूरो । अइसीयं मुंचिस्सइ चंदो । †**गंगा-सिंधू**भयतडेसु **वेयड्ढ**मूले बाहत्तरीए बिलेसु छक्खंडभरहवासिणो नरतिरिआ वसिस्संति । **वेयड्ढ**आरओ पुव्वावरतडेसु **गंगा**ए नवनव बिलाइं । एवं **वेयड्ढ**परओ वि । एवं छत्तीसं† । एमेव [22]**सिंधू**ए वि छत्तीसं । एगत्ते बावत्तरिं बिलाइं । रहपहमित्त[23]पवाहाणं **गंगा-सिंधू**णं जले उप्पण्णे मच्छाई ते बिलवासिणो रत्तिं कड्ढिस्संति । दिवा तावभएण निग्गंतुमक्खमा । सूरकिरणपक्के ते रयणीए खाहिंति । ओसहि-रुक्ख-गाम-नगर-जलासय-पव्वयाईण वेयड्ढउसभकूडवज्जं[24] निवेसट्ठाणं पि न दीसिहिइ । छव्वासइत्थीओ गब्भं धारिस्संति । सोलसवासाओ नारीओ, वीसवासाओ नरा पुत्त-पपुत्ते दिच्छंति[25] । हत्थसमूसिआ काला कुरूवा उग्गकसाया नग्गा पायं[26] नरयगामी बिलवासिणो एगवीसं वरिससहस्साइं[27] भविस्संति । एवं छट्ठे अरए ओसप्पिणीए समत्ते, उस्सप्पिणीए

---

1 B D Pa हिंदुव° । 2 P E धारणियं; Pa ध...णियं । 3 P पलाविही । 4 नास्ति D । 5 Pa नव° । 6 B वारि° । 7 B P D नास्ति 'अ' । 0एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता P आदर्शे । 8 Pa नास्ति 'वि' । 9 Pa पीडाए संघस्स । 10 G Pa सुत्थणं । 11 Pa च्चिय; D च्चय । 12 B P Pa °ठिइणा । 13 Pa भावाई । 14 P वट्टिस्सए । 15 B वारसिओ । 16 D पागाणं । 17 P होहि त्ति । 18-19 एतत्पदद्वयं नास्ति P प्रतौ । 20 E नास्ति 'दूसम' । 21 B अरए य पायवावा । † एतदन्तर्गतं वर्णनं नास्ति P आदर्शे । 22 P गंगासिंधूए । 23 B रहमित्त; P रहपमित्त । 24 'वज्जं' नास्ति P । 25 B P दच्छंति । 26 B पाय; P पयं । 27 B D Pa एगवीससहस्साइं ।

वि[1] पढमे अरए एसा चेव वत्तव्वया । तंमि वोलीणे बीयारयपारंभे सत्ताहं सत्ताहं पंच मेहा भारहे वासे वासिस्संति कमेणं । तं जहा–पढमो पुक्खरावत्तो तावं निव्वावेहिइ[2] । बीओ खीरोदो धन्नकारी । तईओ [3]घओदओ नेहकारओ । चउत्थो अमओदओ ओसहीकरो । पंचमो रसोदओ भूमीए रससंजणणो । ते य बिलवासिणो पइसमयं वड्ढमाण-सरीराऊ पुढविं[4] सुहं दट्ठूण बिलेहिंतो निस्सरिस्संति । धन्नं फलाइं भुंजंता मंसाहारं निवारइस्संति* ।

तओ **मज्झदेसे** सत्त कुलगरा भविस्संति । तत्थ पढमो **विमलवाहणो** । बिईओ **सुदामो** । तईओ **संगओ** । चउत्थो **सुपासो** । पंचमो **दत्तो** । छट्ठो **सुमुहो** । सत्तमो **संमुची** । जाइसरणेणं विमलवाहणो नगराइनिवेसं काही । अग्गिमि उप्पन्ने अन्नपागं सिप्पाइं कलाओ लोगववहारं च सव्वं पवत्तेही । तओ इगुणनवइपक्खसमब्भहिए उस्सप्पिणीए अरयदुगे वइक्कंते **पुंडवद्धण**देसे **सयदारे** पुरे **संमुइ**नरवइणो **भद्दा**ए देवीए चउद्दसमहासुमिणसूइओ **सेणिय**रायजीवो रयणप्पभाए लोलुबुद्धयपत्थडाओ चुलसीइं वाससहस्साइं आउं पालित्ता उव्वट्टो समाणो कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववज्जिहिइ[5] । वण्ण-प्पमाण-लंछण-आऊणि गब्भावहारवज्जं पंचकल्लाणयाणं मास-तिहि-नक्खत्ताईणि[6] य जहा मम तहेव भविस्संति । नवरं नामेणं **पउमनाहो, देवसेणो, विमलवाहणो** अ । तओ बीयतित्थयरो[7] **सुपास**जीवो **सुरदेवो** । तईओ **उदाइ**जीवो **सुपासो** । चउत्थो **पोट्टिल**जीवो **सयंपभो** । पंचमो **दढाऊ**जीवो **सव्वाणुभूई** । छट्ठो **कत्तिअ**जीवो **देवस्सुओ** । सत्तमो **संख**जीवो **दओ** । अट्ठमो **आणंद**जीवो **पेढालो** । नवमो **सुनंद**जीवो **पोट्टिलो** । दसमो **सयग**जीवो **सयकित्ती** । एगारसमो **देवइ**जीवो **मुणिसुव्वओ** । बारसो **कण्ह**जीवो **अममो** । तेरसमो **सच्चइ**जीवो **निक्कसाओ** । चउद्दसो **बलदेव**जीवो **निप्पुलाओ** । पण्णरसो **सुलसा**जीवो **निम्ममो** । सोलसमो **रोहिणि**जीवो **चित्तगुत्तो** । केई पुण भणंति–**कक्कि**पुत्तो **दत्त**नामो, पण्णरस-तिउत्तरे विक्कमवरिसे, सेत्तुज्जे उद्धारं कारित्ता जिणभवणमंडिअं च वसुहं काउं अजिजयतित्थयरनामो सग्गं गंतुं **चित्तगुत्तो** नाम जिणवरो होहि त्ति । इत्थ य बहुसुअसंमयं पमाणं । सत्तरसो **रेवइ**जीवो **समाही** । अट्ठारसो **सयालि**[8]जीवो संवरो । एगूणवीसो[9] **दीवायण**जीवो **जसोहरो** । वीसइमो **कण्ण**जीवो **विजओ** । एगवीसो **नारय**जीवो **मल्लो** । बावीसइमो **अंबड**जीवो **देवो** । तेवीसइमो **अमर**जीवो **अणंतवीरिओ** । चउवीसइमो [10]**सायबुद्ध**जीवो[11] **भद्दकरो** । अंतरालाइं पच्छाणुपुव्वीए जहा वद्धमाणजिणाणं भाविचक्कवट्टिणो दुवालस होहिंति । तं जहा–**दीहदंतो, गूढदंतो, सुद्धदंतो, सिरिचंदो, सिरिभूई, सिरिसोमो, पउमो, नायगो, महापउमो, विमलो, अमलवाहणो, अरिट्ठो** अ । नव भाविवासुदेवा । तं जहा–**नंदी, नंदिमित्तो, सुंदरबाहू, महाबाहू, अइबलो, महाबलो, बलो, दुविट्ठू, तिविट्ठू** अ । नव भाविपडिवासुदेवा । जहा–**तिलओ, लोहजंघो, वज्जजंघो, केसरी, बली, पहराओ, अपराजिओ, [12]भीमो, सुग्गीओ** । नव भाविबलदेवा । जहा–**जयंतो, अजिओ, धम्मो, सुप्पभो, सुदंसणो, आणंदो, नंदणो, पउमो, संकरिसणो** य । इगसट्ठी सलागापुरिसा उस्सप्पिणीए तईए अरए भविस्संति । अपच्छिम-जिण-चक्कवट्टिणो दुण्णि चउत्थे अरए होहिंति । तओ दस मत्तंगाई कप्परुक्खा उप्पज्जिहिंति । अट्ठारसकोडाकोडीओ सागरोवमाणं निरन्तरं जुगलधम्मो भविस्सइ । उस्सप्पिणी-अवसप्पिणीकालचक्काणि अणंतसो तीअद्धाउ अणंतगुणाणि भारहे वासे होहिंति । एवमाइ अन्नं पि भविस्सकाले सरूवं वागरित्ता [13]कम्मि वि गामे **देवसम्म**विप्पस्स बोहणत्थं **गोअम**सामी पट्ठविओ भगवया,[14] जहा–एअस्स पेमबंधो झिज्जइ । तओ तीसं वासाइं अगारवासे वसित्ता, पव्वा-

1 B नास्ति 'वि' । 2 P निवावेइ । 3 B घओ । 4 P पुहविसुहं । *एतद्वाक्यं न विद्यते P Pa आदर्शे । 5 P उववण्णो । 6 B D Pa नक्खत्ताणि । 7 P तित्थंकरो । 8 P सयाल° । 9 D °वीसइमो । 10 P Pc साइ° । 11 P 'जीवो' नास्ति । 12 P सोमो । 13 D E कम्मवि । 14 P Pc आदर्शे एवेदं पदं प्राप्यते ।

हिअ सड्ढबारसवासे छउमत्थो, तीसं वासाइं तेरसपक्खोणाइं केवली विहरित्ता, *बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालित्ता* कत्तिअअमावसाए राईए चरमजामद्धे चंदे दुच्चे[1] संवच्छरे,[2] पीइवद्धणे मासे, नंदिवद्धणे पक्खे, देवाणंदाए रयणीए, उवसमे दिणे, नागे करणे, सव्वट्ठसिद्धे मुहुत्ते, साइनक्खत्ते, कयपज्जंकासणो सामी सक्केणं विन्नत्तो–भयवं ! दो वाससहस्सठिई भासरासी नाम तीसइमो गहो अइखुद्दप्पा तुम्ह जम्मनक्खत्तं संकंतो संपयं । ता मुहुत्तं पडिक्खह जहा तस्स मुहं वंचिअं भवइ । अन्नहा[3] तुम्ह च्चिअ तित्थस्स पीडा चिरं होहिं ति । भयवया भणिअं–भो देवराय ! अम्हे पुहविं छत्तं मेरुं च दंडं काउं एगहेलाए सयंभुरमणसमुद्दं च तरिउं, लोअं च अलोए खिविउं समत्था, न उण आउकम्मं वड्ढेउं वा ह्रासेउं वा समत्था । जओ[4] अवस्सं भाविभावाणं नत्थि वइक्कमो । तओ दोवाससहस्से जाव अवस्संभाविणी तित्थस्स पीड त्ति । सामी अ पंचावण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पंचावण्णं च पावफलविवागाइं विभावइत्ता; छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता, पहाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणो सेलेसीमुवगम्म कयजोगनिरोहो सिद्धाणंतपंचगो एगागी सिद्धिं संपत्तो । अणंतनाणं, अणंतदंसणं, अणंतं सम्मत्तं, अणंतो आणंदो अणंतं विरियं च त्ति पंचाणंतगं ।

तया य अणुद्धरीकुंथूणं उप्पत्तिं दट्ठुं, अज्जप्पभिइं संजमे दुराराहए भविस्सइ त्ति समणा समणीओ बहवे भत्तं पच्चक्खिंसु ।

अन्नं च **कासी-कोसलगा** नव **मल्लई** नव**लिच्छई** अट्ठारस [5]गणरायाणो अमावसाए पोसहोववासं पारित्ता गए भावुज्जोए दव्वुज्जोअं करिस्सामो त्ति परिभाविय रयणमयदीवेहिं उज्जोअमकासि । कालक्कमेण अग्गिदीवेहिं सो जाओ । एवं दीवालिआ जाया । देवेहिं देवीहिं य[6] आगच्छंत-गच्छंतेहिं सा रयणी उज्जोअमई कोलाहलसंकुला य जाया । भगवओ य सरीरं देवेहिं सक्कारियं[7] । भासरासिपीडापडिघायत्थं देव-माणुस-गवाईणं नीराजणा जणेहिं कया । तेण किर मेराइयाणं पवित्ती जाया । **गोअम**सामी पुण तं दिअं पडिबोहित्ता जाव भयवओ वंदणत्थं पच्चागच्छइ, ताव देवाणं संलावे सुणेइ, जहा-भयवं कालगओ त्ति । सुट्ठुअरं अधिइं पगओ । अहो मममि भत्ते वि सामिणो निन्नेहया, जमहं अंतसमए वि समीवे न ठाविओ । कहं वा वीअरागाणं सिणेहु त्ति **नायसुअं**मि वुच्छिन्नपेमबंधणो तक्खणं चेव केवली जाओ । सक्केणं कत्तिअसुद्धपाडिवयगोसग्गे केवलिमहिमा कया । भयवं सहस्सदलकणयपंकए निवेसिओ पुप्फपयरं काउं अट्ठमंगलाइं पुरओ आलिहियाइं । देसणा य सुआ । अओ चेव पाडिवए महूसवो अज्ज वि जयंमि पयत्तइ । सूरिमंतो अ गोअमसामिपणीओ, तओ तस्साराहगा गोअमकेवलुप्पत्तिदिवसु त्ति तंमि दिणे समवसरणे अक्खन्हवणाइपूअं सूरिणो करिंति । सावया य भयवंते अत्थमिए सुअनाणं चेव सव्वविहीसु पहाणं ति सुअनाणं पूअंति । **नंदिवद्धण**नरिंदो सामिणो जिट्ठभाया भयवंतं सिद्धिगयं सुच्चा अईव सोगं कुणंतो पाडिवए कओववासो कत्तिअसुद्धबीआए संबोहित्ता निअघरे आमंतित्ता **सुदंसणा**ए भगिणीए भोइओ । तंबोलवत्थाइ दिण्णं । तप्पिभिइं भाइबीयापव्वं रूढं । एवं दीवूसवट्ठिई संजाया ।

जे अ दीवमहे चउद्दसि-अमावसासुं कोडीसहिअमुववासं काउं अट्ठप्पयारपूआए सुअनाणं पूइत्ता, पंचाससहस्सपरिवारं सिरिगोअमसामिं सुवण्णकमले ठिअं झाइत्ता, पइजिणं पंचाससहस्साइं तंदुलाणं, एगत्ते बारसलक्खाइं चउवीसपट्टयपुरओ ढोइत्ता, तदुवरिं अखंडदीवयं बोहित्ता, गोअमं आराहिंति, ते परमपयसुहलच्छिं पावंति त्ति । दीवूसवअमावसाए नंदीसरतवं आढविज्जा । तंमि दिणे नंदीसरपडपूआपुव्वं उववासं काउं, वरिसं सत्तवरिसाणि वा जाव अमावसासु उववासो काउं, वीरकल्लाणयअमावसाए उज्जमणं कुज्जा । तत्थ नंदीसरबावणजिणालए सक्का न्हवणाइपूअं काऊण नंदीसरपडपुरओ वा दप्पणसंकंतजिणबिंबेसु न्हवणाइं काउं बावण्णवत्थूणि अ पक्कन्नभेया, नारंग-जंबीर-कयलीफलाईणि, नालिएराइं पूगाइं पत्ताणि, उच्छुलट्ठीओ, खज्जूरमुद्दियावरिसोलयउत्तत्तिआवायमाईणि खीरिमाइं थालाइं

*एतदङ्कितं वाक्यं P Pc आदर्शे एव लभ्यते । 1 P पुव्वे । 2 P संवत्सरे । 3 D नन्नहा । 4 B D Pa तओ । 5 P गणहार° । 6 B D नास्ति 'य' । 7 B D Pa सक्कारिअ ।

दीवया इच्चाइ । कंचुलियाओ बावण्णं तंबोलाइदाणपुव्वं सावियाणं दिज्जा । अण्णे य दीवूसवं विणावि अमावसाए नंदीसरतवं आढविंति त्ति ।

अह पुणरवि **अज्जसुहत्थीणं संपइ** महाराओ पुच्छिसु–भयवं ! इत्थ दीवालिआपव्वंमि विसेसओ घराण मंडणं अन्न-वत्थाईणं विसिट्ठाणं परिभोगो, अन्नोन्नजोहाराइकरणं, जणाणं केण कारणेण दीसइ ? । तत्थ इमं पच्चुत्तरं **अज्जसुहत्थि**सूरिणो पन्नविंसु । जहा–पुव्विं **उज्जेणी**ए पुरीए उज्जाणे सिरि**मुणिसुव्वय**सामिसीसो **सुव्वयायरिओ** समोसढो । तस्स वंदणत्थं गओ सिरि**धम्म**राया । **नमुचि**मंती वि तत्थ गओ । सूरीहिं समं विवायं कुणंतो खुल्लगेण पराजिओ । गओ रण्णा समं नियगेहं । निसाए मुणिणो हंतुं कड्ढिअखग्गो गओ उज्जाणं । देवयाए थंभिओ । गोसे विम्हिएण रण्णा खामित्ता मोइओ । लज्जिओ नट्ठो गओ **हत्थिणाउरे** । तत्थ **पउमुत्तरो** राया । **जाला** तस्स देवी । तीसे दो पुत्ता–**विण्हुकुमारो, महापउमो** । जिट्ठे अणिच्छंते **महापउम**स्स जुवरायपयं पिउणा दिन्नं । **नमुई** तस्स मंती जाओ । तेण **सीहरहो** रणे विजिओ† । **महापउमो** तुट्ठो । वरं पदिण्णे तेण नासीकओ वरो । एगया **जाला**देवीए अरहंतरहो कारिओ । तीसे सवत्तीए **लच्छी**ए मिच्छद्दिट्ठीए पुण बंभरहो । पढमं रहकड्ढणे दुण्ह वि देवीणं विवाए दोवि रहा रण्णा वारिया । माऊए अवमाणं दट्ठुं **महापउमो** देसंतरं गओ । कमेण **मयणावलिं** परिणित्ता साहियच्छक्खंड**भारहो गयउर**मागओ । पिउणा रज्जं दिण्णं । **विण्हुकुमारेण** समं **पउमुत्तरो सुव्वयायरिय**पायमूले दिक्खं गिण्हित्ता सिवं पत्तो । **विण्हुकुमार**स्स य सट्ठिं वाससयाइं तवं कुणंतस्स अणेगाओ लद्धीओ समुप्पण्णाओ । **महापउमो** चक्की जिणभवणमंडियं महिं काउं रहजत्ताओ कारित्ता पूएइ माऊए मणोरहे । **नमुचि**णा चक्कीनासीकयवरेण जण्णकरणत्थं रज्जं मग्गिओ । तेण सच्चसंधेण तस्स रज्जं दाउं ठियमंतेउरे । **सुव्वयायरिया** य विहरंता तया हत्थिणाउरे वासाचउमासयं ठिआ । आगया सव्वे पासंडिणो अहिणवनिवं दट्ठुं, न सुव्वयायरिया । तओ कुद्धो **नमुई** भणेइ–मम[1] भूमीए तुम्हेहिं सत्तदिणोवरि न ठायव्वं, अन्नहा मारेमि; जओ मं दट्ठुं तुम्हे नागया । तओ सूरीहिं संघं पुच्छित्ता एगो साहू गयणगामिविज्जाए संपन्नो आइट्ठो **मेरु**चूलिआठियस्स **विण्हुकुमार**स्स आणयणत्थं । तेण विन्नत्तं–भंते ! मम गंतुं सत्ति अत्थि, न उण आगंतुं । गुरुहिं वुत्तं–सो चेव तुमं [2]आणेहि त्ति । तओ सो पत्तो मेरुचूलं वंदिऊण विन्नत्तं सव्वं सरूवं महरिसिणो । तक्खणं चेव उप्पइओ सहागंतुयसाहुणा नहयलं । आगओ **गयउरं** राउलं च । **नमुइ**वज्जेहिं राईहिं सव्वेहिं वंदिओ । उवलक्खिओ अ नमुई । पन्नविओ वि जाहे ठाउं[3] न देइ साहूणं, ताहे **विण्हु**णा पयतिगपमाणा[4] भूमी मग्गिया । तेण दिण्णा, भणिअं च–जो बाहिं पयतिगाओ दिट्ठो तं मारेहामि । तो वेउव्वियलद्धीए लक्खजोअणपमाणदेहो जाओ **विण्हु**रिसी किरीड-कुंडल-गया-चक्क-धणूइं धारिंतो । तस्स पण्हीपहारेण कंपियं भूगोलं । खुहिआ सागरा । फुक्कारेहिं नट्ठा खेयरा । उप्पहेण पयट्टाओ नईओ । घुम्मिया उडुगणा । डुलिआ कुलगिरी । पुव्वावरसमुद्देसु दोपाए निसित्ता, तइअं कमं **नमुचि**णो मत्थए दाऊण ठिओ महप्पा । तओ इंदेण ओहिणा नाऊण पट्ठवियाओ सुरंगणाओ कण्णजावे ठाउं महुरसरेण खंतिउवएसगब्भगीयाणि गायंति । चक्कवट्टिपमुहा य विन्नायवइयरा पसायणत्थं पाए पमद्दिंति । तओ उवसंतो पगइमावण्णो महरिसी । खामिओ चक्कवट्टिणा संघेण य । **विण्हुकुमारा**ओ चक्किणा [5]पमोचाविओ किवाए **नमुई** । तया य वासाणं चउत्थमासस्स पक्खसंधिदिणं आसि । तंमि उप्पाए उवसंते लोएहिं पुणज्जायं व अप्पाणं मन्नमाणेहिं अन्नोन्नजोहारा कया । विसिट्ठयरमंडणभोअणच्छायणतंबोलाइपरिभोगा पवत्तिआ । तप्पभिई एयंमि दिवसे पइवरिसं[6] ते चेव ववहारा पयट्टिज्जिंति । **विण्हुकुमारो** अ कालेणं केवली होऊण सिद्धो, **महापउम**चक्कवट्टी य त्ति ।

दसपुव्विस्स मुहाओ एवं सोऊण **संपइ**नरिंदो । आसि जिणपूअरओ विसेसओ पव्वदियहेसु ॥ १ ॥

---

† एतद्वाक्यमनुपलभ्यं B आदर्शे । 1 D मन; P न म । 2 B P आणेह त्ति । 3 B ठाइं । 4 D पयसिग° । 5 B D Pa य मोआविओ । 6 B D Pa °वरिस्सं ।

मज्झिमपावाए पुव्विं **अपावापुरि** त्ति नामं आसि। सक्केणं **पावापुरि** त्ति नामं कयं। जेण इत्थ **महावीरसामी** कालगओ।

इत्थेव य पुरीए वइसाहसुद्धइक्कारसीदिवसे **जंभिअ**गामाओ रत्तिं बारसजोअणाणि आगंतूण पुव्वण्हदेसकाले **महासेण**वणे भगवया **गोअमाई** गणहरा खं(पं?)डिअगणपरिवुडा दिक्खिआ प्पमुइया। गणाणुन्नाया तेसिं दिण्णा। तेहिं च निसिज्जातिगेण उप्पाय-विगम-धुवयालक्खणं पयतिगं लद्धूण सामिसगासाओ तक्खणं दुवालसंगी विरइया।

इत्थेव य नयरीए भयवओ कण्णेहिंतो **सिद्धत्थ**वाणिअउवक्कमेण **खरय**विज्जेण[1] कडसलाया उद्धरिया। तदुद्धरणे य पवेयणावसेण भयवया चिक्काररवो मुक्को। तेण पच्चासण्णपव्वओ दुहा जाओ। अज्ज वि तत्थ[2] अंतरालसंधिमग्गो दीसइ।

तहा इत्थेव पुरीए कत्तियअमावसारयणीए भयवओ निव्वाणट्ठाणे मिच्छद्दिट्ठीहिं सिरि**वीरथूभ**ट्ठाणठाविअनागमंडवे अज्ज वि चाउवण्णियलोआ जत्तामहूसवं करिंति। तीए चेव एगरत्तीए देवयाणुभावेणं कूवायड्ढिअजलपुण्णमल्लियाए दीवो पज्जलइ[3] तिल्लं विणा।

पुव्वुत्ता य अत्था भयवया इत्थेव नयरे वक्खाणिया। इत्थेव य भगवं संपत्तो सिद्धिं। इच्चाइ अच्चब्भुअभूअसंविहाणठाणं **पावापुरी**महातित्थं।

इय **पावापुरी**कप्पो दीवमहुप्पत्तिभणणरमणिज्जो। **जिणपह**सूरीहिं कओ ठिएहिं सिरि**देवगिरि**नयरे॥ १॥
तेरहसत्तासीए विक्कमवरिसंमि भद्दवयबहुले। पूसक्कबारसीए समत्थिओ एस सत्थिकरो॥ २॥

॥ समाप्तोऽयं श्रीअपापाबृहत्कल्पो दीपोत्सवकल्पो वा ॥

॥ ग्रं० ४१६, अ० ७॥

---

1 B D Pa c विज्जेसु। 2 B D Pa तत्थ अंतरत्थ°। 3 B D Pa-b पज्जलति।

२२. कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्पः ।

पणमिय अमियगुणगणं[1] सुरगिरिधीरं जिणं **महावीरं** । **कण्णाणयपुर**ठिअतप्पडिमाकप्पं किमवि वुच्छं ॥ १ ॥

चोलदेसावयंसे **कण्णाणय**नयरे **विक्कमपुर**वत्थव्वपहु**जिणवइसूरि**चुल्लपिउसाहु**माणदेव**[2]काराविया[3] **बारहसयतित्तीसे विक्कमवरिसे** (१२३३) आसाढसुद्धदसमीगुरुदिवसे सिरि**जिणवइसूरी**हिं अम्हेच्चय पुव्वायरिएहिं पइट्ठिया मम्माणसेलसमुग्गयजोईसरो[4]वलघडिया तेवीसपव्वपरिमाणा नहसुत्तिलग्गणे वि घंट व्व सद्दं कुणंती सिरि**महावीर**पडिमा [5]सुमिणयाएसेण अनकवालाभिहाणपुढविधाउ[6]विसेससंफासेणं सन्निहियपाडिहेरा सावयसंघेण चिरं पूइया । जाव **बारहसयअडयाले** (१२४८) **विक्कमाइच्चसंवच्छरे चाहुयाण**कुलपईवे सिरि**पुहविराय**नरिंदे सुरत्ताण **साहवदीणे**ण निहणं नीए रज्जपहाणेण परमसावएण सिट्ठि**रामदेवे**ण सावयसंघस्स लेहो पेसिओ, जहा–**तुरुक्क**रज्जं संजायं । सिरि**महावीर**पडिमा पच्छन्नं[7] धारियव्वा[8] । तओ सावएहिं **दाहिम**[9]-कुलमंडण**कयंवास**मंडलियनामंकिए **कयंवासत्थले**[10] विउलवालुआपूरे ठाविया । [†ताव तत्थ ठिया] जाव **तेरहसयइक्कारसे** (१३११) **विक्कमवरिसे** संजाए अइदारुणे दुब्भिक्खे अणिव्वहंतो **जोजओ** नाम[11] सुत्तहारो जीवियानिमित्तं सुभिक्खदेसं पइ सकुडुंबो[12] चलिओ **कण्णाणया**ओ । पढमपयाणयं थोवं कायव्वं ति कलिऊण [13]**कयंवासत्थले** चेव तं रयणिं वुत्थो । अड्ढरत्ते देवयाए तस्स सुमिणं दिण्णं, जहा–इत्थ तुमं जत्थ सुत्तोसि तस्स हिट्ठे भगवओ **महावीर**स्स पडिमा एत्तिएसु हत्थेसु चिट्ठइ । तुमए वि देसंतरे न गंतव्वं । भविस्सइ इत्थेव ते निव्वाहु त्ति । तेण ससंभमं पडिबुद्धेण तं ठाणं पुत्ताईहिं खणाविअं । जाव दिट्ठा सा पडिमा । तओ हिट्ठ[14]तुट्ठेण नयरं गंतूण सावयसंघस्स निवेइयं । सावएहिं महूसवपुरस्सरं परमेसरो पवेसिऊण ठाविओ चेईहरे । पूइज्जए तिकालं । अणेगवारं तुरुक्कउवद्दवाओ मुक्को । तस्स य सुत्तहारस्स सावएहिं वित्तिनिव्वाहो कारिओ । पडिमाए परिगरो य गवेसिओ तेहिं न लद्धो । कत्थवि थलपरिसरे चिट्ठइ । तत्थ य पसत्थिसंवच्छराइ लिहिअं संभाविज्जइ । अन्नया [15]ण्हवणे संवुत्ते भयवओ सरीरे पसेओ पसरंतो दिट्ठो । लूहिज्जमाणो वि जाव न विरमइ ताव नायं सड्ढेहिं वियड्ढेहिं[16] जहा को वि उवद्दवो अवस्सं इत्थ होही । जाव पभाए **जद्दुअरायउत्ताणं** धाडी समागया । नयरं सव्वओ विद्धत्थं । एवं पायडपभावो सामी तावपूईओ जाव [0]**तेरहसयपंचासीओ** (१३८५) संवच्छरो । तम्मि वरिसे आगएणं **आसीनयर**सिकदारेणं[17] [18]**अल्लविअ**वंससं[0]जाएणं घोरपरिणामेणं सावया साहुणो अ बंदीए काउं विडंबिया । सिरि**पासनाह**बिंबं सेलमयं भग्गं । सा पुण सिरि**महावीर**पडिमा अखंडिआ चेव सगडमारोवित्ता **ढिल्लीपुर**माणेऊण [19]**तुगुलकाबाद**ट्ठिअसुरत्ताणभंडारे ठाविया । सिरिसुरत्ताणो किरि आगओ संतो जं आइसिहिइ तं करिस्सामु त्ति ठिया पन्नरसमासे तुरुक्कबंदीए । जाव समागओ कालक्कमेण **देवगिरि**नयराओ **जोगिणिपुरं** सिरि**महम्मद**सुरत्ताणो ।

अन्नया बहिया जणवयविहारं[20] विहरित्ता संपत्ता[21] **ढिल्ली**साहापुरे **खरयरगच्छा**लंकारसिरि**जिणसिंहसूरि**-पट्टपइट्ठिया सिरि**जिणप्पह**सूरिणो । कमेण महारासयभाए पंडिअगुट्ठीए पत्थुआए, को नाम विसिट्ठयरो पंडिओ त्ति रायराएण पुट्ठे[22] जोइसिअ**धाराधरे**ण तेसिं गुणत्थुई पारद्धा । तओ महाराएणं तं चेव पेसिअ सबहुमाणं आणाविआ पोससुद्धबीयाए संझाए सूरिणो[23] । भिट्टिओ तेहिं महारायाहिराओ । अच्चासन्ने उववेसिअ कुसलाइवत्तं पुच्छिअ आयण्णिओ अहिणवकव्वआसीवाओ । चिरं अद्धरत्तं जाव एगंते गुट्ठी कया । तत्थेव रत्तिं[24] च सावित्ता पभाए पुणो

1 D °मणं । 2 P साहुदेव । 3 B C Pa काराविय; D काराविअं । 4 A B जोईरसो° । 5 P सुमिणायासेण । 6 B °धातु° । 7 P पच्छन्ना । 8 P धारे° । 9 D दाडिम° । 10 B °वासत्थलिए । † P आदर्शे एवैतद्वाक्यं दृश्यते । 11 P विना नास्त्यन्यत्र । 12 P सकुडं° । 13 B D Pa कइंवास° । 14 P हट्ठ° । 15 P ण्हवणेण । 16 P विहायान्यत्र न दृश्यते इदं पदम् । 0-0 एतदन्तर्गतः पाठः पतितः D प्रतौ । 17 P एतत्पदं नास्ति । 18 P लूवि (दि ?) यवंसजाएणं । 19 B C D Pa तुगलाबाद° । 20 P जणवयं विहरित्ता । 21 P नास्ति । 22 P पुट्ठो । 23 P सूरिणा । 24 P रत्तिं वसित्ता ।

आहूया । संतुट्ठेणं महानरिंदेणं गोसहस्सं दविणजायं पहाणमुज्जाणं वत्थसयं कंबलसयं अगुरुचंदणकप्पूराइगंधदब्वाइं च दाउमाढत्ताणि । तओ गुरुहिं–साहूणं एयं न कप्पइ त्ति संबोहिऊण महारायं पडिसिद्धं सव्वं वत्थु । पुणो रायाहिरायस्स मा अप्पत्तिअं होहि त्ति किंचि कंबल-वत्थागरुमाइ अंगीकयं रायाभिओगेणं । तओ नाणादेसंतरागयपंडिएहिं सह वायगोट्ठिं कारवित्ता मयगलहत्थिजुअलं आणाविअं । एगम्मि गुरुणो अन्नम्मि य सिरि**जिणदेवायरिया** आरोवित्ता वज्जंतीसु अट्ठसु सुरत्ताणिअमयणभेरीसु, पूरिज्जमाणेसु जमलसंखेसु, घुम्मंतेसु मुअंगमद्दलकंसालढोल्लाइसद्देसु, पढंतेसु भट्ट-घट्टेसु चाउव्वण्णसमेया चउव्विहसंघसंजुत्ता य सूरिणो पोसहसालं पट्ठविया । सावएहिं पवेसमहूसवो विहिओ । दिण्णाइं महादाणाइं । पुणो पातसाहिणा समप्पिअं सयल**सेअंबरदंसण**उवद्दवरक्खणक्खमं फुरमाणं । पेसिआ चउद्दिसिं गुरूहिं तस्स पडिच्छंदया । जाया सासणुन्नई । अन्नया मग्गिअं सूरीहिं सिरि**सत्तुंजय-गिरिनार-फलवद्धी**पमुहतित्थाणं रक्खणत्थं फुरमाणं । दिन्नं तक्खणं चेव सव्वभोमेणं । पेसिअं तं तित्थेसु । मोइया गुरुवयणाणंतरमेव अणेगे बंदिणो रायाहिराएण । पुणरवि सोमवारदिवसे[1] गुरुणो पत्ता रायउलं वरिसंते जलहरे । भिट्टिओ सुरत्ताणो । कद्दमखरंटिअपाया गुरूणं लूहाविया महाराएण **मलिक्ककाफूर**[2]पासाओ पवरसिचयखंडेण । तओ आसीवाए दिण्णे वण्णणाकव्वे वक्खाणिए अईव चमक्करिअचित्तो जाओ महानरिंदो । अवसरं नाऊण मग्गिया सव्वसरूवकहणपुव्वं भगवओ **महावीर**स्स पडिमा । दिण्णा य ताओ ताओ सुकुमारगोट्टीओ काऊण एगच्छत्तवसुहाहिवइणा । आणाविया **तुगुलकाबाद**कोसाओ । तओ असूअगाणं मलिक्काणं खंधे दाऊण सयलसभासमक्खं अप्पणो अग्गे आणाविअ दट्ठूणं च समप्पिआ गुरूणं । तओ महूसवपभावणापुव्वं सुक्खासणट्ठिआ पवेसिआ सयलसंघेण **मलिकताजदीन**सराईए चेईए य ठाविआ । गुरूहिं वासक्खेवो कओ । पूइज्जइ महापूआहिं ।

तओ महारायस्स आएसेणं सिरि**जिणदेव**सूरिणो अप्पपनरसमे **ढिल्लीमंडले** ठावित्ता पट्ठिआ कमेण गुरुणो **मरहट्ठमंडले** । दिण्णा रायाहिराएण सावयसंघसहिआणं गुरूणं वसहकरहतुरयगुलइणी सुक्खासणाइसामग्गी । अंतरालनगरेसु पभावणं कुणंता पए पए संघेहिं सम्माणिज्जमाणा अपुव्वतित्थाइं नमंसंता सूरिणो कमेण पत्ता **देव-गिरिनगरं** । संघेण पवेसमहूसवो कओ, संघपूआ य जाया । **पइट्ठाण**पुरे य जीवंतसामि-**मुणिसुव्वय**पडिमा । संघवइ**जगसीह-साहण-मल्लदेव**प्पमुहसंघसहिएहिं जत्ता कया । पच्छा **ढिल्ली**ए विजयकडए **जिणदेव**सूरीहिं दिट्ठो महाराओ । दिण्णो बहुमाणो । एगा च सराई दिण्णा । **सुरत्ताणसराइ** त्ति तीसे नामं ठविअं । तत्थ चत्तारि सयाइं सावयकुलाणं निवासत्थं आइट्ठाणि । तत्थ काराविआ पोसहसाला कलिकालचक्कवट्टिणा चेईयं च । ठाविओ तत्थ सो चेव देवो सिरि**महावीरो** । पूअंति तिकालं महरिहपूआपयारेहिं भगवंतं परतित्थिया **सेयंबर**भत्ता **दियंबर**भत्ता य सावया ।

दट्ठूण सिरि**महम्मदसाहि**कयं सासणुन्नइं । एवं पंचमकालं पि चउत्थमेव कालं कलिंति जणा ॥ १ ॥
बिंबं पडिहयडिंबं **वीर**जिणेसस्स धुअकिलेसस्स । आचंदसूरिअमिणं मणनयणाणंदणं जयइ ॥ २ ॥
कण्णाणयपुरसंतिअदेव**महावीर**पडिमकप्पोयं । लिहिओ मुणीसरेणं **जिणसिंह**[3]मुणिंदसीसेणं ॥ ३ ॥

॥ इति कन्यानयनीयमहावीरप्रतिमाकल्पः ॥

॥ ग्रं० ७७, अ० १५ ॥

---

1 P °दिणे । 2 A B मलिक; P मलिककापूर; Pa मलिक्ककापूर । 3 B C Pa जिणसंघ° ।

२३. प्रतिष्ठानपत्तनकल्पः [१] ।

जीयाज्जैत्रं पत्तनं पूतमेतद्गोदावर्याः श्री**प्रतिष्ठान**सञ्ज्ञम् ।
रत्नापीडं श्री**महाराष्ट्र**लक्ष्म्या रम्यं हर्म्यैर्नेत्रशैत्यैश्च चैत्यैः ॥ १ ॥
अष्टाषष्टिर्लौकिका अत्र तीर्था द्वापञ्चाशज्जज्ञिरे चात्र वीराः ।
पृथ्वीशानां न प्रवेशोऽत्र वीरक्षेत्रत्वेन प्रौढतेजोरवीणाम् ॥ २ ॥
निश्यतीत्य[1] पुटभेदनतोऽस्मात् षष्टियोजनमितं[2] किल वर्त्म ।
बोधनाय **भृगुकच्छ**मगच्छद्वाजिनो जिनपतिः कमठाङ्कः ॥ ३ ॥
अन्वित**त्रिनवतेर्नवशत्या** अत्ययेऽत्र शरदां जिनमोक्षात् ।
कालको व्यधित वार्षिकमार्यैः पर्व भाद्रपदशुक्लचतुर्थ्याम् ॥ ४ ॥
तत्तदायतनपङ्क्तिवीक्षणादत्र मुञ्चति जनो विचक्षणः ।
तत्क्षणात्सुरविमानधोरणि श्रीविलोकविषयं कुतूहलम् ॥ ५ ॥
[3]**शातवाहन**पुरस्सरा नृपाश्चित्रकारिचरिता इहाभवन् ।
दैवतैर्बहुविधैरधिष्ठिते चात्र सत्रसदनान्यनेकशः ॥ ६ ॥
कपिला-त्रेय-बृहस्पति-पञ्चाला इह महीभृदुपरोधात् ।
न्यस्तस्वचतुर्लक्षग्रन्थार्थं श्लोकमेकमप्रथयन् ॥ ७ ॥

स चायं श्लोकः—

जीर्णे भोजन**मात्रेयः, कपिलः** प्राणिनां दया ।
बृहस्पतिरविश्वासः, **पञ्चालः** स्त्रीषु मार्दवम् ॥ ८ ॥
इह जयति दृशोरमृतच्छटा सुदृग्बर्हिणां पयोदघटा ।
जीवत्स्वामिप्रतिमा श्रीम**न्मुनिसुव्रत**स्य लेप्यमयी ॥ ९ ॥
वर्षाणामेकादशलक्षाण्यष्टायुतानि सार्धानि ।
अष्टौ शतानि षट्पञ्चाशानीत्यजनि कालोऽस्याः ॥ १० ॥
इह **सुव्रतजिन**चैत्ये यात्रामासूत्र्य विहितविविधमहाम् ।
भव्याश्चिन्वन्त्यैहिकपारत्रिकशर्मसम्पत्तीः ॥ ११ ॥
प्रासादेऽत्र श्रीजिनराजां चारु चकासति लेप्यमयानि ।
बिम्बान्यप्रतिबिम्बरुचीनि प्रीतिस्फीतिं वदति जनानाम् ॥ १२ ॥
अम्बादेवी क्षेत्राधिपतिर्यक्षाधिपतिश्चापि **कपर्दी** ।
एते चैत्यं समधिवसन्तः श्रीसङ्घस्य घ्नन्त्युपसर्गान् ॥ १३ ॥
अत्र चैत्यश्रियः शेखरं सुव्रतः प्राणिपूगोपकारैकबद्धव्रतः ।
वन्द्यमानक्रमः स्वर्गिवर्गैर्मुदा संपनीपद्यतां श्रेयसे वः सदा ॥ १४ ॥

श्री**प्रतिष्ठानतीर्थ**स्य श्री**जिनप्रभ**सूरयः । कल्पमेतं विरचयांबभूवुर्भूतये सताम् ॥ १४ ॥

॥ श्रीप्रतिष्ठानपत्तनकल्पः ॥

॥ ग्रं० १९, अ० १५ ॥

---

1 P विहायान्यत्र 'निश्यतीति'। 2 P विनाऽन्यत्र 'मितः'। 3 P सात°।

२४. नन्दीश्वरद्वीपकल्पः ।

आराध्य श्रीजिनाधीशान् सुराधीशार्चितक्रमान् । कल्पं **नन्दीश्वरद्वीप**स्याचक्षे विश्वपावनम् ॥ १ ॥
अस्ति नन्दीश्वरो नाम्नाऽष्टमो द्वीपो द्युसन्निभः । तत्परिक्षेपिणा नन्दीश्वरेणाम्भोधिना युतः ॥ २ ॥
एतद्वलयविष्कम्भे लक्षाशीतिश्चतुर्युता । योजनानां त्रिषष्टिश्च कोट्यः कोटिशतं तथा[1] ॥ ३ ॥
असौ [2]विविधविन्यासोद्यानवान् देवभोगभूः । जिनेन्द्रपूजासंसक्तसुरसम्पातसुन्दरः ॥ ४ ॥
अस्य मध्यप्रदेशे तु क्रमात्पूर्वादिदिक्षु च । अञ्जनवर्णाश्चत्वारस्तिष्ठन्त्यञ्जनपर्वताः ॥ ५ ॥
दशयोजनसहस्रातिरिक्तविस्तृतास्तले । सहस्रयोजनाश्चोर्ध्वं क्षुद्रमेरूच्छ्रयाश्च ते ॥ ६ ॥
तत्र [3]प्राग्देवरमणो नित्योद्योतश्च दक्षिणः । स्वयंप्रभः प्रतीच्यस्तु रमणीय उदक्स्थितः ॥ ७ ॥
शतयोजनायतानि[4] तदर्द्धं[5] विस्तृतानि च । द्विसप्ततियोजनोच्चान्यर्हच्चैत्यानि तेषु च ॥ ८ ॥
पृथग्द्वाराणि चत्वार्युच्चानि षोडशयोजनीम् । प्रवेशे योजनान्यष्ट विस्तारेऽप्यष्ट तेषु तु ॥ ९ ॥
तानि देवासुरनागसुपर्णानां दिवौकसाम् । समाश्रयास्तेषामेव नामभिर्विश्रुतानि च ॥ १० ॥
षोडशयोजनायामास्तावन्मात्राश्च विस्तृतौ । अष्टयोजनकोत्सेधास्तन्मध्ये मणिपीठिकाः ॥ ११ ॥
सर्वरत्नमया देवच्छन्दकाः पीठिकोपरि । पीठिकाभ्योऽधिका[6]यामोच्छ्रयभाजश्च तेषु तु ॥ १२ ॥
ऋषभा वर्धमाना च तथा **चन्द्रानना**पि च । **वारिषेणा** चेति नाम्ना पर्यङ्कासनसंस्थिताः ॥ १३ ॥
रत्नमय्यो युताः स्वस्वपरिवारेण हारिणा । शाश्वतार्हत्प्रतिमाः प्रत्येकमष्टोत्तरं शतम् ॥ १४ ॥
द्वे द्वे नागयक्षभूतकुण्डभृत्प्रतिमे पृथक् । प्रतिमानां पृष्ठतस्तु छत्रभृत्प्रतिमैकका[7] ॥ १५ ॥
तेषु धूपघटीदामघण्टाऽष्टमङ्गलध्वजाः । छत्रतोरणचङ्गेर्यः पटलान्यासनानि च ॥ १६ ॥
षोडशपूर्णकलशादीन्यलङ्करणानि च । सुवर्णरुचिररजोवालुकास्तत्र भूमयः ॥ १७ ॥
आयतनप्रमाणेन रुचिरा मुखमण्डपाः । प्रेक्षार्थमण्डपा अक्षवाटका[8] मणिपीठिकाः ॥ १८ ॥
रम्याश्च स्तूपप्रतिमाश्चैत्यवृक्षाश्च सुन्दराः । इन्द्रध्वजाः पुष्करिण्यो दिव्याः सन्ति यथाक्रमम् ॥ १९ ॥
प्रतिमाः षोडश चतुर्द्वारस्तूपेषु सर्वतः । शतं चतुर्विंशमेवं ताः साष्टशततद्युताः ॥ २० ॥
प्रत्येकमञ्जनाद्रीणां ककुप्सु चतसृष्वपि । गते लक्षे योजनानां निर्मत्स्यस्वच्छवारयः ॥ २१ ॥
सहस्रयोजनोत्सेधा विष्कंभे लक्षयोजनाः । पुष्करिण्यः सन्ति तासां [9]क्रमान्नामानि षोडश ॥ २२ ॥
नन्दिषेणा चामोघा च गोस्तूपाथ सुदर्शना । तथा नन्दोत्तरा नन्दा सुनन्दा नन्दिवर्द्धना ॥ २३ ॥
भद्रा विशाला कुमुदा पुण्डरीकिणिका तथा । विजया वैजयन्ती च जयन्ती चापराजिता ॥ २४ ॥
प्रत्येकमासां योजनं पञ्चशत्याः परत्र च । योजनानां पञ्चशतीं यावद्विस्तारभाञ्जि तु ॥ २५ ॥
लक्षयोजनदीर्घाणि महोद्यानानि तानि तु । अशोकसप्तच्छदकचम्पकचूतसञ्ज्ञया ॥ २६ ॥
मध्ये पुष्करिणीनां च स्फाटिकाः पल्यमूर्तयः । ललामवेद्युद्यानादिचिह्ना दधिमुखाद्रयः ॥ २७ ॥
चतुःषष्टिसहस्रोच्चाः सहस्रं चावगाहिनः । सहस्राणि दशाधस्तादुपरिष्टाच्च विस्तृताः ॥ २८ ॥
अन्तरे पुष्करिणीनां द्वौ द्वौ रतिकराचलौ । ततो भवन्ति द्वात्रिंशदेते रतिकराचलाः ॥ २९ ॥
शैलेषु दधिमुखेषु तथा रतिकराद्रिषु । शाश्वतान्यर्हच्चैत्यानि सन्त्यञ्जनगिरिष्विव ॥ ३० ॥
चत्वारो द्वीपविदिक्षु तथा रतिकराचलाः । दशयोजनसहस्रायामविष्कम्भशालिनः ॥ ३१ ॥
योजनानां सहस्रं तु यावदुच्छ्रयशोभिताः । सर्वरत्नमया दिव्या झल्लर्याकारधारिणः ॥ ३२ ॥

---

1 B तया । 2 P विचित्र° । 3 C प्राच्यो । 4 B °न्यायतनानि । 5 B तदर्द्धे । 6 B ऽभ्याधिका° । 7 A °मैकिका ।
8 B °वाटिका । 9 B क्रमानि ।

तत्र द्वयो रतिकराचलयोर्दक्षिणस्थयोः । शक्रस्येशानस्य पुनरुत्तरस्थितयोः पृथक् ॥ ३३ ॥
अष्टानां महादेवीनां राजधान्योऽष्टदिक्षु ताः । लक्षाबाधा लक्षमाना जिनायतनभूषिताः ॥ ३४ ॥
सुजाता सौमनसा चार्चिर्माली च प्रभाकरा । पद्मा शिवा शुच्यञ्जने चूता चूतावतंसिका ॥ ३५ ॥
गोस्तूपा-सुदर्शने अप्यमलाप्सरसौ तथा । रोहिणी नवमी चाथ रत्ना रत्नोच्चयापि च ॥ ३६ ॥
सर्वरत्नरत्नसञ्चया (?) वसुर्वसुमित्रिका । वसुभागापि च वसुन्धरा नन्दोत्तरे अपि ॥ ३७ ॥
नन्दोत्तरकुरुर्देवकुरुः कृष्णा ततोऽपि च । कृष्णराजी रामारामरक्षिताः प्राक्क्रमादमूः ॥ ३८ ॥
सर्वर्द्धयस्तासु देवाः कुर्वते सपरिच्छदाः । चैत्येष्वष्टाहिकाः[1] पुण्यतिथिषु[2] श्रीमदर्हताम् ॥ ३९ ॥
प्राच्येऽञ्जनगिरौ शक्रः कुरुतेऽष्टाहिकोत्सवम् । प्रतिमानां शाश्वतीनां चतुर्द्वारे जिनालये ॥ ४० ॥
तस्य चाद्रेश्चतुर्दिक्स्थमहावापीविवर्त्तिषु[3] । स्फाटिकेषु दधिमुखपर्वतेषु चतुर्ष्वपि ॥ ४१ ॥
चैत्येष्वर्हत्प्रतिमानां शाश्वतीनां यथाविधि । चत्वारः शक्रदिक्पालाः कुर्वतेऽष्टाहिकोत्सवम् ॥ ४२ ॥
ईशानेन्द्रस्त्वौत्तराहेऽञ्जनाद्रौ विदधाति तम् । तल्लोकपालास्तद्वापीदध्यास्याद्रिषु कुर्वते ॥ ४३ ॥
चमरेन्द्रो दाक्षिणात्येऽञ्जनाद्रावुत्सवं सृजेत् । तद्वाप्यन्तर्दधिमुखेष्वस्य दिक्पतयः पुनः ॥ ४४ ॥
पश्चिमेऽञ्जनशैले तु बलीन्द्रः कुरुते महम् । तद्दिक्पालास्तु तद्वाप्यन्तर्भाग्दधिमुखाद्रिषु ॥ ४५ ॥
वर्षं दीपदिनारब्धानुपवासान् कुहूतिथौ । कुर्वन्नन्दीश्वरोपास्त्यै श्रायसीं श्रियमार्जयेत् ॥ ४६ ॥
भक्त्या चैत्यानि वन्दारुस्तत्स्तोत्रस्तुतिपाठभाक्[4] । नन्दीश्वरमुपासीनोऽनुपर्वोंहस्तरेत्तराम् ॥ ४७ ॥
प्रायः पूर्वाचार्य[5]ग्रथितैरेवायमादितः श्लोकैः । श्रीनन्दीश्वरकल्पो लिखित इति श्री**जिनप्रभा**चार्यैः ॥ ४८ ॥

॥ इति श्रीनन्दीश्वरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४९, अ० १० ॥

---

1 B C °ष्टाह्निकाः । 2 B पुण्यनिधिषु । 3 B विवर्षिषु; C वचर्चिषु; Pa विचर्चिषु । 4 B पाठकान् । 5 B कथितै° ।

२५. काम्पिल्यपुरतीर्थकल्पः ।

गंगामूलट्ठिअसिरि**विमल**जिणाययणमणहरसिरिस्स । कित्तेमि समासेणं **कंपिल्लपुर**स्स कप्पमहं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे दक्खिण**भारह**खंडे पुवादिसाए **पंचाला** नाम जणवओ । तत्थ **गंगा**नाम-महानईतरंगभंगिपक्खालिज्जमाणपायारभित्तिअं **कंपिल्लपुरं** नाम नयरं । तत्थ तेरसमो तित्थयरो **विमल**नामा इक्खागुकुलपईव**कयवम्म**नरिंदनंदणो **सोमादेवी**कुच्छिसिप्पिमुत्ताहलोवमो वराहलंछणो जच्चकणयवण्णो उप्पण्णो । तत्थ तस्सेव भगवओ चवण-जम्मण-रज्जाभिसेअ-दिक्खा-केवलनाणलक्खणाइं पंचकल्लाणाइं जायाइं । इत्तुच्चिअ[1] तत्थ पएसे **पंचकल्लाणयं** नाम नयरं रूढं । जत्थ य[2] तस्सेव भगवओ सूअरलंछणत्तणं पडुच्च देवेहिं महिमा कया तत्थ य **सूअरक्खित्तं** पसिद्धिमुवगयं ।

तत्थेव नयरे दसमो चक्कवट्टी **हरिसेणो** नाम संजाओ । तहा दुवालसमो सवभोमो **बंभदत्त**नामा तत्थेव समुप्पण्णो ।

तहा **वीरजिण**निवाणाओ दोहिं सएहिं वीसाए समहिएहिं वरिसाणं **मिहिलाए** नयरीए लच्छीहरे चेईए **महागिरी**णं आयरियाणं **कोडिन्नो** नाम सीसो, तस्स[3] **आसमित्तो** नाम सीसो अणुप्पवायपुवे नेउणिय[4]-वत्थुम्मि छिन्नच्छेयणयवत्तवयाए आलावगं पढंतो विप्पडिवन्नो चतुत्थो निण्हवो जाओ । समुच्छेइयदिट्ठिं परूविन्तो एयं **कंपिल्लपुर**मागओ । तत्थ **खंडक्खा**[5] नाम समणोवासगा । ते अ सुंकपाला तेहिं भएण उववत्तीहिय पडिबोहिओ ।

इत्थ **संजयो**[6] नाम राया हुत्था । सो अ पारद्धीए गओ **केसरुज्जाणे** मिए हए[7] पासिंतो तत्थ **गद्दभालिं** अणगारं पासित्ता संविग्गो पवइत्ता सुगइं पत्तो ।

इत्थेव नयरे **गागली** कुमारो **पिट्ठीचंपा**हिव**साल-महासाला**णं भाइणिज्जो[8] **पिढर-जसवई**णं पुत्तो आसि । सो अ तेहिं माउलेहिं इतो नयराओ आहवित्ता **पिट्ठीचंपा**रज्जे अहिसित्तो । तेहिं च **गोअमसामि**पासे दिक्खा गहिआ । कालक्कमेणं **गागली**वि अम्मापिउसहिओ **गोअमसामि**पासे जिणदिक्खं पडिवन्नो, सिद्धो अ ।

इत्थेव नयरे दिवमउडरयणपडिबिंबिअमुहत्तणपसिद्धेण नामधिज्जेण **दुमुहो** नाम नरवई कोमुईमहूसवे इंदकेउं अलंकिअविभूसिअं महाजणजणियइड्ढिसक्कारं दट्ठुं, दिणंतरे तं चेव भूमीए पडिअं पाएहिं विलुप्पमाणं अणाढाइज्जमाणं[9] दट्ठूण इड्ढिं अणिड्ढिं समुपेहिऊण पत्तेयबुद्धो जाओ ।

इत्थेव पुरे **दोवई** महासई **दुवयनरिंद**धुआ पंचण्हं **पंडवाणं** सयंवरमकासी ।

इत्थेव पुरे **धम्मरुई** नरिंदो अंगुलिज्जगरयणुक्खेडिअजिणिंदबिंबनमंसणदोसुब्भावणेणं पिसुणेहिं कोविएण **कासीसरेण** विग्गहिओ वेसमणेण धम्मप्पभावेणं सबलवाहणं परचक्कं [10]गगणमग्गेणं **कासी**ए नेउं नित्थारिओ । तस्सेव सम्माणभायणं जाओ ।

इच्चाइअणेगसंविहाणगरयणनिहाणं एयं नयरं महातित्थं । इत्थ तित्थजत्ताकरणेणं भविअलोआ जिणसासणप्पभावणं कुणंता अज्जिंति [11]इहलोअपरलोइअसुहाइं, तित्थयरनामगुत्तं च ।

पिलिअ कुकम्मरिउणो **कंपिल्लपुर**स्स पवरतित्थस्स । कप्पं पढंतु असढा इय भणइ **जिणप्पहो** सूरी ॥ १ ॥

॥ श्रीकाम्पिल्यपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३३, अ० ७ ॥

---

1 Pa इत्थच्चिअ । 2 'य' नास्ति Pa C । 3 P तस्सीसो । 4 P नेउणिय°; C नेउलिय° । 5 P खंडरक्खा । 6 Pa संजमो । 7 Pa हओ । 8 B भाणिज्जो । 9 B नास्ति पदमेतत् । 10 A C गमण°; D गमगण° । 11 इहलोइअसुहाइयसुहाइ ।

२६. अणहिलपुरस्थितअरिष्टनेमिकल्पः ।

पणमिअ **अरिट्ठनेमिं अणहिल्लपुरपट्टणा**वयंसस्स । **बंभाणगच्छ**निस्सिअ**अरिट्ठनेमि**स्स कित्तिमो कप्पं ॥१॥

पुव्विं किर सिरि**कण्णउज्ज**नयरे **जक्खो** नाम महिड्डिसंपन्नो नेगमो हुत्था । सो अण्णया वणिज्जकज्जे महया बइल्लसत्थेणं कयाणगाणि गहिऊण **कण्णउज्ज**पडिबद्धं[1] कन्नवज्जा[2]हिवसुआए **महणिगाए**[3] कंचुलिआसंबंधे दिण्णं **गुज्जरदेसं**[4] पइ पट्ठिओ[5] आवासिओ अ कमेण **लक्खारामे सरस्सई**नईतडे । पुव्विं **अणहिल्लवाडय**पट्टणनिवेसट्ठाणं किर तं आसि । तत्थ सत्थं निवेसित्ता अच्छंतस्स तस्स नेगमस्स पत्तो वासारत्तो । वरिसिउं पवत्ता[6] जलहरा । अन्नया भद्दवयमासे सो बइल्लसत्थो[7] सव्वो वि कत्थ वि गओ । को वि न जाणइ । सव्वत्थ गवेसाविओ वि न लद्धो । तओ सव्वस्सनासे इव अच्चंतचिंताउरस्स तस्स रत्तीए आगया सुमिणम्मि भगवई **अंबादेवी** । भणिअं च तीए—वच्छ ! जग्गसि सुवसि वा ? । **जक्खेण**[8] वुत्तं—अम्मो ! कओ मे निद्दा । जस्स बइल्लसत्थो सव्वस्सभूओ विप्पणट्ठो । देवीए साहिअं—भद्द ! एयम्मि **लक्खारामे** अंबिलियाथुडस्स हिट्ठे पडिमातिगं चट्टइ । पुरिसतिगं खणाविता तं गहेयव्वं । एगा पडिमा सिरि**अरिट्ठनेमि**सामिणो, अवरा सिरि**पासनाहस्स,** अन्ना य **अंबियादेवीए** । **जक्खेण** वागरियं—[9]भयवइ ! अंबिलियाथुडाणं बाहुल्ले सो पएसो नाम कहं नायव्वो ? । देवीए जंपिअं[10]—धाउमयं मंडलं पुप्फपयरं च जत्थ पाससि तं चेव ठाणं पडिमातिगस्स जाणिज्जासि । तम्मि पडिमातिगे पयडीकए पूइज्जंते अ तुज्झ बइल्ला सयमेव आगच्छिहिंति । पहाए तेण उट्ठेऊण बलिविहाणपुव्वं तहा कए पयडीहूआओ तिण्णिवि पडिमाओ । पूइयाओ विहिपुव्वं । खणमित्तेण अतक्किअमेव आगया बइल्ला । संतुट्ठो नेगमो । कमेण कारिओ तत्थ पासाओ । ठावियाओ पडिमाओ ।

अन्नया अइच्छिए वासारत्ते **अग्गहार**गामाओ अट्ठारससयपट्टसालियघरअलंकियाओ **बंभाणगच्छ**मंडणा सिरि**जसोभद्दसूरिणो खंभाइत्त**नयरोवरि विहरंता तत्थ आगया । लोगेहिं विन्नविअं—भयवं ! तित्थं उल्लंघिउं गंतुं न कप्पइ पुरओ । तओ[11] तेहिं सूरीहिं तत्थ ताओ नमंसिआओ पडिमाओ । मग्गसिरपुण्णिमाए धयारोवो महूसवपुव्वं कओ । अज्ज वि पइवरिसं तम्मि चेव दिणे धयारोवो कीरइ । सो य धयारोवमहूसवो **विक्कमाइच्चाओ पंचसु सएसु दुत्तरेसु वरिसाणं** (५०२) अइक्कंतेसु संवुत्तो ।

तओ **अट्ठसएसु दुउत्तरेसु** (८०२) **विक्कमवासेसु अणहिल्लगोवाल**परिक्खिअपएसे लक्खारामट्ठाणे **पट्टणं चाउक्कड**[12]वंसमुत्ताहलेण **वणरायराइणा** निवेसिअं । तत्थ **वणराय-जोगराय-खेमराय-भूअड-वेयरसीह**[13]**-रयणाइच्च-सामंतसीह**नामाणो सत्त चाउक्कडवंसरायाणो जाया । तओ तत्थेव पुरे **चालुक्कवंसे मूलराय-चामुण्डराय-वल्लभराय-दुल्लहराय**[14]**-भीमदेव-कण्ण-जयसिंहदेव-कुमारपालदेव-अजयदेव-बालमूलराय-भीमदेवा**भिहाणा एगारस नरिंदा । तओ **वाघेला**अन्नए **लूणपसाय-वीरधवल-वीसलदेव-अज्जुणदेव-सारंगदेव-कण्णदेवा** नरिंदा संजाया । तत्तो[15] **अल्लावदीणा**इसुरत्ताणाणं **गुज्जरधरित्तीए** आणा पयट्टा । सो अ **अरिट्ठनेमि**सामी कोहंडीकयपाडिहेरो अज्ज वि तहेव पूइज्जइ त्ति ।

अरिष्टनेमिकल्पोऽयं लिखितः श्रेयसेऽस्तु वः । मुखात्पुराविदां श्रुत्वा श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ॥ १ ॥

॥ इति अरिष्टनेमिकल्पः ॥

॥ ग्रं० ३३ ॥

---

1 P पडिबुद्धं । 2 P कन्नउज्जा° । 3 P मयाणिगाए । 4 Pa °देसे । 5 Pa पइट्टिओ । 6 P पवित्तिया । 7 C Pa बयल्ल° । 8 P जक्खेणुत्तं । 9 B C Pa भयवं । 10 P जंपियं देवीए । 11 B नास्ति 'तओ' । 12 B चाउक्कडा° । 13 C वयरसी । 14 Pa नास्ति एतन्नाम । 15 P तओ ।

२७. शंखपुरपार्श्वकल्पः ।

पुव्विं किर नवमो पडिवासुदेवो **जरासंधो**[1] **रायगिहा**ओ नयराओ समग्गसिन्नसंभारेण नवमस्स वासुदेवस्स **कण्हस्स** विग्गहत्थं पच्छिमदिसं चलिओ । **कण्हो** वि समग्गसामग्गीए **बारवई**ओ निग्गंतूण सम्मुहं तस्सागओ विसयसीमाए । तत्थ भयवया**रिट्ठनेमि**णा पंचजण्णो संखो पूरिओ तत्थ **संखेसरं** नाम नयरं निविट्ठं । तओ संखस्स निनाएण खुभिएण **जरासंधे**ण जराभिहाणं कुलदेवयं आराहित्ता विउव्विया विण्हुणो बले जरा । तए खाससासरोगेहिं य पीडियं नियसिन्नं दट्ठुं[2] आउलीहूअचित्तेण **केसवेण** पुट्ठो भयवं **अरिट्ठनेमि**सामी–भयवं ! कहं मह सिन्नं निरुवद्दवं होही ?; कहं च मज्झ जयसिरी करयलट्ठिआ भविस्सइ ? । तओ भयवया ओहिनाणेणं आभोएऊण अइट्ठं, जहा–पायाले पन्नगेहिं पूज्जमाणा[3] भविस्ससस्सारिहओ **पासस्स** पडिमा चिट्ठइ । तं जइ[4] नियदेवयावसरे तुमं पूएसि तया ते निरुवद्दवं च जयसिरी य होहिंति । तं सोऊण विण्हुणा सत्तमासे तिन्नि दिवसे य, मयंतरे दिणतिगं चेव, आहाररहिएण विहिणा आराहिओ †पन्नगाहिराओ[5] । कमेण पच्चक्खीहूओ **वासुगी** नागराओ† । तओ हरिणा भत्तिबहुमाणपुव्वं मग्गिया सा पडिमा । अप्पिया य नागराएण । तओ महूसवपुव्वं ‡आणित्ता नियदेवयावसरे ठविआ । पूएउमाढत्तो तिकालं विहिणा‡ । तओ तीए ण्हवणोदगेणं अहिसित्ते सयलसिन्ने, नियत्तेसु जरारोगसोगाइविग्घेसु °समत्थीहूअं विण्हुणो[7] सिन्नं । कमेण पराजिओ **जरासिंधू** । **लोहासुर-गयासुर**[8]-**बाणासुराइणो** अ निज्जिआ । तप्पभिइं **धरणिंद-पउमावइ**सन्निज्झेणं सयलविग्घावहारिणी सयलऋद्धिजणणी य सा पडिमा संजाया । ठविआ तत्थेव **संखपुरे** । कालंतरेण पच्छन्नीहूआ । कमेण संखकूवंतरे पयडीहूआ । अज्ज जाव चेईहरे सयलसंघेण पूइज्जइ, पूरेइ य अणेगविहे पच्चए । **तुरुक्क**रायाणो वि तत्थ महिमं करिंति ।

संखपुर[9]ट्ठिअमुत्ती कामियतित्थं जिणेसरो **पासो** । तस्सेस मए कप्पो लिहिओ गीयाणुसारेण ॥ १ ॥

*संखेश्वराधीश्वरपार्श्वनाथः कल्याणकल्पद्रुम एष देवः ।
भव्यात्मनां सन्ततमेव लक्ष्मीं [देहेऽपि] गेहेऽपि च संविदध्यात् ॥ २ ॥

॥ श्रीशंखपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० २२, अ० २४ ॥

---

1 Pa C जरासिंधो । 2 B दिट्ठुं । 3 A B C पूइज्जमाणे । 4 'तं जइ' नास्ति C । † एतदन्तर्गतपाठस्थाने P प्रतौ 'कमेण पच्चक्खीहोऊण नागराएण भणियं–किं सुमरणकारणं ? ।' एतादृशः पाठः प्राप्यते । 5 B नास्ति पदमेतत् । ‡ एतदन्तर्गता पंक्तिर्नोपलभ्यते P प्रतौ । 6 P सावच्छि° । 7 P वासुदेवस्स । 8 Pa नास्ति 'गयासुर' । 9 B °पुरि° । * P प्रतावेवेदं पद्यं दृश्यते ।

२८. नासिक्यपुरकल्पः ।

चंदप्पहजिणचंदं वंदिअ दिअभवभयं भणिस्सामि । नासिअकलिमलनिवहं **नासिक्कपुर**स्स कप्पमहं ॥ १ ॥

नासिक्कपुरतित्थस्स उप्पत्तिं बंभणाई परतित्थिया एवं वण्णंति–पुव्विं किर[1] **नारयरिसि**णा एगया भयवं **कमलासणो** पुट्ठो–पुण्णभूमिट्ठाणं कत्थ त्ति ? । **कमलासणे**णं भणियं–जत्थेव इमं मज्झ पउमं पडिहिइ, तं चेव पवित्तं भूमिट्ठाणं ति । अन्नया **विरंचिणा** तं पउमं मुक्कं । पडिअं **मरहट्ट**जणवयभूमीए **अरुणा-वरुणा-गंगाहिं** महानईहिं भूसियाए नाणाविहवणस्सइमणहराए देवभूमिप्पायाए । तत्थ **पउमासणेण पउमपुरं** ति नगरं निवेसिअं । तत्थ कयजुगे जण्णो आढत्तो **पियामहे**णं । मिलिआ सुरा सव्वे । असुरा य हक्कारिज्जंता वि नागया सुरभएणं । ते भणंति–जइ भयवं **चंदप्पह**सामी अंतरे आगच्छइ, ता अम्हे वीसत्था आगच्छामो । तओ चमक्किअचित्तो **चउवयणो** जत्थ सामी विहरइ तत्थ गंतूण पणमिऊण य जोडिअकरसंपुडो विण्णवेइ–भयवं ! तत्थागच्छह, जहा मज्झ कज्जं सिज्झइ । सामिणा भणिअं–मह पडिरूवेणावि तं सिज्झिस्सइ । तओ **बंभाणे**णं चंदकंतमणिमयं बिंबं सोहम्मिंदाओ घित्तूण तत्थाणीयं । आगया दाणवा । पारद्धो जण्णमहो सिद्धो अ । तत्थ कारिओ **चंदप्पहविहारो** पयावइणा । [2]पुरदुवारे य **सिरिसुंदरो**[3] सुरो ठाविओ नयररक्खणभारे[4] । एवं ताव पढमजुगे **पउमपुरं** ति तित्थं पसिद्धं । तेयाजुगे य दासरही **रामो सीया-लक्खण**संजुओ पिउआणाए वणवासं गओ । **गोअमगंगातीरे पंचवडीआसमे** चिरं वणाहारेण ठिओ । इत्थंतरे **रावण**भइणी **सुप्पणहा** तत्थ पत्ता । **रामं** दट्ठूण अज्झोववण्णा पत्थिंती[5] **रामेण** पडिसिद्धा । **लक्खण**मुवट्ठिआ । तेण तीए नासिया छिण्णा । तत्थ **नासिक्कपुरं** जायं । कमेण **सीआ रावणेण** हरिया । **राहवेण** जुद्धे वावाइओ **रावणो** । **विभीसण**स्स दिण्णं **लंका**रज्जं । तओ नियनयरिं पइ वलंतेणं **रामेण चंदप्पह**सामिणो भवणं उद्धरिअं । एस रामुद्धारो । एवं **नासिक्कपुरे** संजाए; कालंतरे पुण्णभूमिं नाउं आगओ **मिहिला**हिंतो तत्थ **जणयराओ** । तेण य तत्थ दस जण्णा कारिया[6] । **जणयट्ठाणं** ति तं नयरं रूढं । अन्नया **देवजाणी** नाम **सुक्क**स्स महग्गहस्स धूआ **जणयट्ठाणपुरे** कीलंती **दंडयराए**णं दिट्ठा । रूववइ त्ति बलामोडीए भग्गं तीसे सीलव्वयं । तस्स सरूवं उवलब्भ **सुक्क**महग्गहेणं रोसवसेणं सावो दिण्णो । एयं नयरं **दंडयराय**सहिअं सत्तदिवसब्भंतरे छाररासी भविस्सइ त्ति । तं च **नारयरिसि**णा नायं, **दंडयराय**स्स कहिअं । तं च[7] सोऊण भीओ **दंडयराया** सयलं जणं सह आणेउं **चंदप्पह**सामिणं सरणं पवन्नो, छुट्टो अ । तप्पभिइं **जणथाणं**[8] ति तस्स नयरस्स पसिद्धं नामधिज्जं । एवं परतित्थिआवि जस्स तित्थस्स माहप्पं उववण्णिंति तस्स आरहंतलोआ कहं नोववण्णिहिंति ।

इत्थंतरे दावरजुगे **पंडुराय**पत्तीए **कुंती**देवीए पढमपुत्ते **जुहिट्ठिले** संजाए **चंदप्पह**सामिणो पासायं जिण्णं[9] दट्ठूण उद्धारो काराविओ; सहत्थेणं बिल्लरुक्खो अ तत्थ वाविओ । तत्थ **कुंतीविहारु**[10] त्ति नामं विक्खायं । इओ य **दीवायणरिसि**णा **बारवई**ए डज्झाए उवक्खीणप्पाए **जायव**वंसे **वज्जकुमारो** नाम जायवखत्तिओ आसि । तस्स गब्भवई भज्जा । सा **बारवई**ए डज्झमाणीए बहुभत्तिपुव्वं **दीवायणरिसिं** मुक्कलाविता **चंदप्पह**सामिणं चेव सरणमागया । पुण्णे समये पुण्णवंतं पुत्तं तत्थेव पसूआ । **दढप्पहारि** त्ति से नामं कयं । सो अ अइक्कंतबालभावो संपत्तजुव्वणो जाओ महारहो । इक्कंगेणावि सुहडलक्खेणं समं जुद्धं काउं समत्थो । अन्नया तत्थ चोरेहिं गावीओ हरिआओ । ताओ सव्वाओ वि इक्केण **दढप्पहारि**णा चोरे निज्जिणिऊण वालिआओ । तओ तं अइपयंडपरक्कमं पासिऊण बंभणाइनयरलोएण तस्स तलारपयं दिण्णं । निग्गहिआ तेण चोरचरडाइणो । जाओ सो कमेण महाराया

---

1 B किरि । 2 P विहायान्यत्र 'पुरदुवारे' । 3 B सुरसुंदरो । 4 P विहायान्यत्र 'पुरे' । 5 B पत्थिती; P पच्छिती । 6 P कराविया । 7 P नास्ति 'च' । 8 P जणट्ठाणं । 9 छिन्नं । 10 P C कुंता° ।

तत्थेव नयरे । **जायव**वंसस्स बीयं तत्थ [1]उद्धरियं ति सबहुमाणं **चंदप्पह**सामिणो तेण भवणमुद्धरियं । एवं तइअजुगे उद्धारो । एवं अणेगे उद्धारा जुगतिगे वि तस्स संजाया ।

संपयं कलिकाले सिरि**संतिसूरी**हिं उद्धारो काराविओ[2] । पुव्विं किर **कल्लाणकडए** नयरे **परमड्डी** नाम राया रज्जं करेइ । तेण जिणभत्तेण[3] तत्थ पासाए चंदकंतमणिबिंबं सोऊण चिंतिअं–अहमेयं बिंबं नियघरे आणिऊण देवयावसरे पूइस्सामि त्ति । तओ कहंचि तव्वइयरं नाउं **नासिक्क**नयरलोएण तंबमयसंपुडमज्झे तं बिंबं निक्खिविय तदुवरि लेवो दिन्नो । जाया लेवमई पडिमा । तओ राइणा[4] जिणमंदिरमागएण तं बिंबं न दिट्ठं । पुच्छिओ लोगो । तेण जहट्ठिए विन्नत्ते रण्णा चिंतियं–कहं एयं[5] लेवपडिमं भिंदित्ता मूलबिंबं कड्ढेमि त्ति । तओ नरिंदेण तस्स भवणस्स उद्धारं काउं चउवीसं गामा देवस्स[6] दिन्ना । जं तेसु दविणमुप्पज्जइ तेण देवाहिदेवो पुइज्जइ । तओ कित्तिए वि कालंतरगए आसन्नवत्ति**तंबय**देवाहिट्ठियमहादुग्ग**बंभगिरि**ठिओ **वाइओ**[7] नाम महल्लयखत्तियजाई चरडो आसि । तेण सो पासाओ पाडिओ । तं सोऊण **पल्लीवाल**वंसावयंससाहु**ईसर**पुत्त**माणिक्क**पुत्तेण **नाऊ**कुक्खिसरोवररायहंसेण साहु**कुमारसीहे**ण परमसावएण पासाओ पुण णवो कारिओ । सफलीकयं नायागयं नियवित्तं । उत्तारिओ अप्पा [8]भवसमुद्दाओ ।

एवमणेगउद्धारसारं **नासिक्क**महातित्थं अज्ज वि जत्तामहूसवकरणेण आराहिंति चाउद्दिसाओ आगंतूण संघा, पभाविंति कलिकालदप्पनिन्नासणं भयवओ सासणं ति ।

नासिक्कपुरस्स इमं कप्पं पोराणपरमतित्थस्स । वायंतपढंताणं संपज्जइ वंछिआ रिद्धी ॥ १ ॥
किंचि परसमइयमुहा ससमयपुराविउमुहाओ तह सोउं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं लिहिओ **नासिक्क**पुरकप्पो ॥ २ ॥

॥ इति श्रीनासिक्यपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५९, अ० २७ ॥

---

1 P उव्वरियं । 2 P कारिओ । 3 P जणपत्तेण । 4 P रण्णा । 5 B C एगं । 6 P नास्ति । 7 P पाइओ । 8 P 'भव' नास्ति ।

२९. हरिकंखीनगरस्थितपार्श्वनाथकल्पः ।

पणमिअ **पास**जिणेसं **हरिकंखी**नयरचेइयनिविट्ठं । तस्सेव कप्पमप्पं भणामि निद्दलिअकलिदप्पं ॥ १ ॥

गुज्जरधराए हरिकंखीनामो अभिरामो गामो अच्छइ । तत्थ जिणभवणे उत्तुंगसिहरे सन्निहिअपाडिहेरा सिरि**पासनाह**पडिमा विविहपूआहिं पूइज्जइ भविअजणेणं तिकालं । अन्नया **चालुक्क**वंसपईवसिरि**भीमदेवरज्जे तुरुक्कमंडला**ओ आगएण सबलवाहणेण **अतनुबुक्का**भिहाणेण[1] सल्लारेण **अणहिलवाड**यपट्टणगढं भंजित्ता वलंतेण दिट्ठं **हरिकंखी**गामे तं चेईयं । मज्झे पविसित्ता भग्गा **पासनाह**पडिमा । तओ गामं उवद्दवित्ता चलिओ सट्ठाणं पइ सल्लारो । पुणो वसिओ गामो । समागया गुट्ठिअसावया । भगवंतं भग्गंगं निरुवित्ता परुप्परं भणिउं पवत्ता– अहो ! भगवओ महामाहप्पस्सावि कहं नाम भंगो विहिओ चिलाएहिं । कत्थ पुण सा भगवओ तारिसी कला गय त्ति । तओ तेसिं पसुत्ताणं सुमिणे आइट्ठमहिट्ठायगसुरेहिं, जहा–एयाए पडिमाए खंडाणि सव्वाणि एगट्ठी काऊण गब्भहरे ठावित्ता, दुवारं कवाडरुद्धं काउं, तालयं दाऊण, छम्मासं जाव पडिवालेयव्वं । तओ परं दुवारमुग्घाडिय पडिमा निरिक्खियव्वा संपुण्णंगोवंगा । गोट्ठिएहिं भोगं काऊण तहेव कयं; जाव पंचमासा वोलीणा । छट्ठस्स पारंभे ऊसुगी होऊण गोट्ठिएहिं बारमुग्घाडियं । जाव दिट्ठा भगवओ सपुण्णंगुवंगकप्पा; केवलं ठाणे ठाणे मसनिवहपूरिआ । तओ तत्तमवियारित्ता तेहिं आहूओ सुत्तधारो । तेण टंकिआए मसा छिंदिउमारद्धा; जाव नीसरिअं मसेहिंतो रुहिरं । तओ भीया गुट्ठिआ । पूआभोगाइएहिं पसाएउमारद्धा । तओ रत्तीए सुमिणे आइट्ठमहिट्ठायगेहिं; जहा–न सोहणं कयं तुम्हेहिं । जओ अपुण्णाए वि छम्मासीए दुआरमुग्घाडियं । पुणो वि टंकिआ वाहाविआ । संपयं पि ढक्केह मह दुवारं; जाव चरमो मासो समप्पइ । तेहिं तहेव विहिए, छम्मासाणंतरं उग्घाडिअंमि दारे दिट्ठा **पास**सामिस्स पडिमा निरुवहयअखंडअंगुवंगा । केवलं नहसुत्तीसु अंगुट्ठे य मणागं तुच्छा । पहिट्ठा य गुट्ठिआ । पुव्वं व पूइउं पवत्ता । आगच्छंति चाउद्दिसाओ संघा । करिंति जत्तामहूसवं । एवं [2]चमुक्कारकारी माहप्पनिही सिरि**पासनाहो** ।

इय **हरिकंखी**नयरे परिट्ठिअस्सा**ससेण**तणयस्स । सिरि**जिणपह**सूरीहिं कप्पो विहिओ समासेणं ॥ १ ॥

॥ इति हरिकंखीनगरकृतवसतेः श्रीपार्श्वनाथस्य कल्पः ॥

॥ ग्रं० २५ ॥

---

1 B Pa °भिहाणसल्लारेण । 2 C नमुक्कार° ।

३०. कपर्दियक्षकल्पः ।

सिरि**सत्तुंजय**सिहरे परिट्ठिअं पणमिऊण **रिसह**जिणं । तस्सेवयस्स वुच्छं **कवड्डिजक्खस्स** कप्पमहं ॥ १ ॥

अत्थि **वालक्क**जणवए **पालित्ताण**यं नाम नयरं । तत्थ **कवड्डि**नामधिज्जो गाममहत्तरो । सो अ मज्जमंससमहुजीवघायअलिअवयणपरधणहरणपररमणीरमणाइपावट्ठाणपसत्तचित्तो [1]**अणही**नामियाए अणुरूवचिट्ठिआए भज्जाए सह विसए उवभुंजंतो गमेइ कालं । अन्नया तस्स मंचयट्ठियस्स साहुजुअलं[2] घरे पत्तं । तेणावि दिट्ठिपणामं काउं विन्नत्तं जोडियकरेणं–भयवं ! किमित्थागमणकारणं तुम्हाणं ? । अम्ह घरे दुद्ध-दहि-घय-तक्काइ य पउरमत्थि; जेण कज्जं तं आइसह । साहुहिं भणिअं–न अम्हे भिक्खट्ठमागया किंतु अम्ह गुरुणो सपरिवारा **सितुज्ज**जत्ताए आगया । संपयं पुण वासारत्तो पत्तो;[3] साहूणं विहरिउं न कप्पइ । अओ तुम्ह पासे उवस्सयं मग्गेउमागया, जत्थ[4] सूरिणो सपरिवारा चिट्ठंति । मयहरेण विन्नत्तं–दिण्णो मए उवस्सओ । आगच्छंतु सूरिणो, चिट्ठंतु अहासुहं । केवलं अम्हाणं पावनिरयाणं धम्मोवएसो न दायव्वो त्ति । साहूहिं भणिअं–एवं होउ त्ति । तओ आगया गुरुणो । ठिया वासाचउम्मासिं । कुणंति संतयं सज्झायं; सोसंति छट्ठट्ठमाईहिं नियतणुं । कमेण अइक्कंते वासारत्ते पारणए मुक्कलाविंति[5] मयहरं गुरुणो । सो तेसिं सव्वपइण्णत्तणओ परितुट्ठो नियनयरसीमसंधिं जाव वोलाविउं पट्ठिओ । पत्ताए सीमसंधीए सूरीहिं जंपिअं–भो मेहर ! तए अम्हाणं उवस्सयदाणाइणा बहुउवयारो कओ । अओ संपइ किंचि धम्मोवएसं देमो, तेण पच्चुवयारो कओ हवइ । मेहरेण भणियं–नियमो न ताव मह निव्वहइ; किंचि मंतक्खरं उवइसह । तओ सूरिहिं अणुकंपाए पंचपरमिट्ठिनवकारमहामंतो सिक्खाविओ जलजलणथंभणाइपभावो अ तस्स उववण्णिओ । पुणो गुरूहिं भणिअं–पइदिअहं **सित्तुज्ज**दिसाए होऊण तुमए पणामो कायव्वो । मेहरेण तह त्ति पडिवज्जिऊण गुरुणो पणमिऊण नियघरे आगयं । **सूरिणो** अन्नत्थ विहरिआ । कमेण तं पंचपरमिट्ठिमंतं जविंतो नियमं च निव्वाहिंतो कालं अइवाहेइ । अन्नया नियघरिणीए कलहं काऊण गेहाओ नीसारिओ । आरुहिउं लग्गो **सित्तुज्ज**गिरिसिहरं । जाव मज्जभरियं भायणं करे धरित्ता वडरुक्खच्छायाए मज्जपाणं करिउकामो उवविट्ठो, ताव गिज्झमुहकुहरट्ठियअहिगरलबिंदू मज्जभायणे[6] पडिओ दिट्ठो । तं दट्ठूण विरत्तमणो मज्जं निअमेइ । भवविरत्तो अ अणसणं काऊण तक्खणं **आइजिणिंद**चलणकमलं नवकारं च संभरंतो सुहज्झाणेण मरणं संपत्तो[7] । तित्थमाहप्पेणं नवक्कारप्पभावेणं च **कवड्डिजक्खो** उप्पन्नो[8] । ओहिनाणेण पुव्वभवं संभरिअ **आइजिणिंदं** अच्चेइ । सा य तस्स गेहिणी तव्वइयरं सुणित्ता[9] तत्थ आगंतूण अप्पाणं निंदंती अणसणं करित्ता जिणिंदं सुमरंती कालधम्ममुवगया । जाया तस्सेव करिवरत्तेण वाहणं । **कवड्डिजक्खस्स** चउसु भुअदंडेसु कमेण पासंकुस-दविणवासणिआ-बीयपूराइ चिट्ठंति । पुणो सो ओहिणा आभोएऊण पुव्वभवगुरूणं पायमूले पत्तो । वंदित्ता जोडिअकरयलो विन्नवेइ–भयवं ! तुम्ह पसाएण एरिसा मए रिद्धी लद्धा[10] । संपयं मह किंचि किच्चमाइसह । गुरुणा जंपियं–इत्थ तित्थे निच्चं तुमए ठाएयव्वं; तिकालं जुगाइनाहो अंचिअव्वो;[11] जत्तागयभविअजणाणं मणवंछिअफलं पूरेयव्वं; सयलसंघस्स विग्घा अवहरिअव्वा । तओ गुरूणं पाए वंदिअ तह त्ति पडिवज्जिअ गओ जक्खाहिवो **विमलगिरि**सिहरं । करेइ जहा गुरूवइट्ठं ।

इअ **अंबादेवीए कवड्डिजक्खस्स** जक्खरायस्स । लिहिअमिणं कप्पजुगं **जिणपह**सूरीहिं वुड्ढवयणाओ ॥ १ ॥

॥ इति कपर्दियक्षकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४२ ॥

---

1 P अणिही° । 2 P °जुगलं । 3 A 'पत्तो' नास्ति । 4 P तत्थ । 5 C मुक्कलयाविंति । 6 A B मज्जपाणे । 7 P पत्तो । 8 P समुप्पन्नो । 9 P मुणित्ता । 10 P रिद्धी मए पाविया । 11 P अच्चियव्वो ।

३१. शुद्धदन्तीस्थितपार्श्वनाथकल्पः।

पुव्विं किर **अवज्झाए** नयरीए **दसरह**नंदणो सिरि**पउमा**भिहाणो अट्ठमो बलदेवो परमसम्मद्दिट्ठी अणेगसो दिट्ठपच्चयं अणेगविग्घावहारिणिं अणागयजिणिंदस्स सिरि**पासनाह**स्स रयणमइं पडिमं नियदेवयावसरे चिरकालं पूइत्था। कालक्कमेण पुव्वदेसे 'पउमागरा अपउमा' इच्चाइ नाएण धम्मपविर्त्तिं दूसमसमए तुच्छयरिं भाविणं नाऊण अहिट्ठायगदेवयाहिं गयणमग्गेण **सत्तसयदेसे सुद्धदंतीनयरे** आणेऊणं भूमिहरए धारिया सा। कालविसमत्तं जाणित्ता रयणमयत्तमवणेऊण पाहाणमई य सा पडिमा विहिया। बहुतरकालाइक्कमे **सोधतिवाल**गच्छे **विमलसूरिणो** नाम आयरिया अहेसिं। तेसिं रत्तीए सुमिणे आएसो जाओ। जहा-इत्थ सिरि**पास**पडिमा अमुगपएसे भूमिहरट्ठिआ चिट्ठइ। तं कड्ढेऊण पूआवेहि त्ति। तओ तेहिं सावयसंघस्स आइट्ठं। तेण भूमिहराओ बाहिं नीणिया सा पडिमा। चेईहरं च कारिअं। ठविया तत्थ। पूइउमाढत्ता तिकालं। कालवसेण उव्वसीभूआए नयरीए एगया अहिट्ठायगाणं पमत्तत्तणेण तत्थ पसंगागय**तुरुक्के**हि भगवओ **पास**नाहस्स पडिमा दिट्ठा। अणज्जचरिएहिं मत्थयं उत्तारित्ता धरणीए पाडियं ते गया। तओ छालीए चारिंतेण तत्थागएण एगेण अयावालेणं तं देवस्स मत्थयं भूमीए पडिअं दट्ठुं, बहुं सोइत्ता, सामिसरीरस्स उवरिं चडावियं। लग्गं च सलसंधिरहियं। तं देवयाणुभावेण अज्ज वि तहेव चिट्ठइ पूआरूढं च।

इय **सुद्धदंतिनयर**ट्ठियस्स सिरि**पासनाह**देवस्स। सिरि**जिणपह**सूरीहिं जहासुअं वण्णिओ कप्पो॥ १॥

॥ इति दन्तिदन्तच्छेदशुद्धयशसः श्रीशुद्धदन्तीपार्श्वनाथ[स्य] कल्पः॥

॥ ग्रं०-१८॥

---

३२. अवन्तिदेशस्थ-अभिनन्दनदेवकल्पः।

अवन्तिषु प्रसिद्धस्य[1] सिद्धस्येद्धतरायतेः। **अभिनन्दन**देवस्य कल्पं जल्पामि लेशतः॥ १॥

इह किलेक्ष्**वाकु**वंशमुक्तामणेः श्री**संवरराज**सूनोः **सिद्धार्था**कुक्षिसरसीराजहंसस्य कपिलाञ्छनस्य चामीकररुचेः स्वजन्मपवित्रितश्री**कोसलापुर**स्य सार्द्धधनुःशतत्रितयोच्छ्रायकायस्य चतुर्थतीर्थेश्वरस्य श्रीम**दभिनन्दनदेव**स्य चैत्यं **मालवदेशा**न्तर्वर्ति**मंगलपुर**प्रत्यासन्नायां महाटवीगतायां [2]**मेदपल्ल्या**मासीत्। तस्यां च [3]विचित्रपापकर्मनिर्माणकर्मठतायामजातनिर्वेदा मेदाः प्रतिवसन्ति स्म। अन्यदा तुच्छम्लेच्छसैन्येन तत्रापत्य भग्नं तज्जिनायतनम्; नवखण्डीकृतं च प्रमद्वरतयाऽधिष्ठायकानां कलिकालदुर्ललितानामकलनीयतया च प्रतिहतप्रणतजनडिम्बमपि तच्चैत्यालङ्कारभूतं भगवतोऽ**भिनन्दनदेव**स्य बिम्बम्। केचित्सप्त खण्डानीत्याहुः। तानि च शकलानि सञ्जातमनःखेदैर्मेदैः सम्मील्य एकत्र प्रदेशे धारितानि। एवं वंहीयसि गतवत्यनेहसि हरहसितसित[4]गुणग्रामाभिरामो **धाराउग्रामा**दुपेत्य नित्यं वणिगेकः स्वकलाछेको **वइजा**भिख्यस्तत्र [5]क्रयाक्रयिकारूपां वणिज्यामकार्षीत्। स च परमार्हतस्ततः प्रत्यहं गृहमागत्य देवमपूपुजत्। स च्छकृतायां देवपूजायां न जातु बुभुजे। ततः पल्लीमुपेयिवानेकदाऽनेकदारुणकर्मभिस्तैरभिदधे स श्राद्धः-किमर्थमन्वहमेहिरेयाहिरां कुरुषे, अस्यामेव पल्ल्यां वणिगुचितभोज्यपूरणकल्पवल्ल्यां किं न भुंक्षे? । ततश्च भणितं वणिजा-भो राजन्याः! यावदहमर्हन्तं देवाधिदेवं त्रिभुवनकृतसेवं न पश्यामि न पूजयामि च तावन्न वल्भायां प्रगल्भे। किरातैर्जगदे-यद्येवं देवं प्रति तव निश्चयस्तदा तुभ्यं दर्शयामस्त्वदभिमतं दैवतम्। वणिजा प्रोचे-तथास्तु। ततस्तैस्तानि नवापि, सप्तापि वा, खण्डानि यथावयवन्यासं संयोज्य दर्शितं भगवतोऽ**भिनन्दन**स्य बिम्बम्। तच्च

---

1 C प्रसिद्ध°; नास्ति P। 2 C मेदपल्ल्यां। 3 B चित्र°। 4 B Pa नास्ति 'सित'। 5 P क्रयक्र°।

शुचितरमम्माणपाषाणघटितं विलोक्य प्रमुदितमुदितवासनातिशयेन तेन वणिग्वरेण ऋजुमनसा नमस्कृतस्तिरस्कृतदुरन्तदुरितो भगवान्, पूजितश्च पुष्पादिभिश्चैत्यवन्दना च विरचिता। ततः स तत्रैव भोजनमकुरुत गुरुतराभिग्रहः। इत्थंकारं प्रतिदिनं जिनपूजानिष्ठामनुतिष्ठति सति तस्मिन् वणिजि, अपरेद्युरुद्यदविवेकातिरेकबहुलैर्नाहलैस्तस्मात्किमपि द्रव्यं [1]धनायद्भिस्तद्बिम्बं शकलानि युतकीकृत्य क्वचिदपि संगोप्य धृतम्। यावत्पूजावसरे तां प्रतिमामनालोक्य नासौ बुभुजे। ततस्तेन विषण्णमनसा विहितमपानकमुपवासत्रयम्। अथ स मेदैरपृच्छि–किमर्थं नाश्नासि? । स यथातथमचकथत्। ततः किरातव्रातैरवादि–यदास्मभ्यं गुडं ददासि, तदा तुभ्यं दर्शयामस्तं देवम्। वणिजा बभणे–वितरिष्याम्यवश्यमिति। ततस्तैस्तत् सकलमपि शकलानां नवकं, सप्तकं वा, प्राग्वत् संयोज्य प्रकटीकृतम्, दृष्टं च तेन संयोज्यमानं तद्बिम्बम्। सुतरां विषादनिषादसंस्पर्शकलुषितहृदयः समजनि स श्राद्धधुरीणः। तदनु सात्त्विकतयाभिग्रहमग्रहीद्यावदिदं बिम्बमखण्डं न विलोकये तावन्नौदनमद्मीति। तस्येत्थमनुदिवसमुपवसतस्तद्बिम्बाधिष्ठायकैः स्वप्ने निजगदे–यदस्य बिम्बस्य नवखण्डसन्धयश्चन्दनलेपेन पूरणीयाः, तत इदमखण्डतामेष्यतीति। प्रबुद्धेन तेन प्रातर्जातप्रमोदेन तथैव चक्रे। समपादि भगवानखण्डवपुः। सन्धयश्च मिलिताश्चन्दनानुलेपमात्रेण। क्षणमात्रेण भगवन्तं विशुद्धश्रद्धया सम्पूज्य भुक्तवान् पण्याजीवः पीवरां मुदमुद्वहन्, ददौ च गुडादि मेदेभ्यः। तदन्तरं तेन वणिजा मणिजातमिव प्राप्य प्रहृष्टेन शून्यखेटके पिप्पलतरोस्तले[2] वेदिकाबन्धं विधाय[3] सा प्रतिमा मण्डिता। ततः प्रभृति श्रावकसङ्घाश्चातुर्वर्ण्यलोकाश्चतुर्दिगन्तादागत्य यात्रोत्सवं सूत्रयितुं प्रवृत्ताः। तत्र **अभयकीर्ति**-[4]**भानुकीर्ति-आंबा-राजकुला**स्तत्र मठपत्याचार्याश्चैत्यचिन्तां कुर्वते।

अथ **प्राग्वाट**वंशावतंसेन **थेहा**त्मजेन साधु**हालाके**न निरपत्येन पुत्रार्थिना विरचितमुपयाचितकम्–यदि मम सूनुर्जनिता तदात्र चैत्यं कारयिष्यामीति। क्रमेणाधिष्ठायकत्रिदशसान्निध्यतः पुत्रस्तस्योदपद्यत **कामदेवा**ख्यः। ततश्चैत्यमुच्चैस्तरशिखरमचीकरत्साधु**हालाकः**। क्रमात्साधु**भावड**स्य दुहितरं परिणायितः **कामदेवः**। पित्रापि **डाहा**ग्रामादाहूय **मलयसिंहा**दयो देवार्चकाः स्थापिताः। **महणिया**भिख्यो [5]मेदः स्वाङ्गुलीं भगवदुद्देशेन कृन्तवान्–किलाहमस्य भगवतोऽङ्गुलीवर्द्धितः सेवक इति। भगवद्विलेपनचन्दनलगनाच्च तस्याङ्गुलिः पुनर्नवीबभूव। तमतिशयमतिशायिनं निशम्य श्री**जयसिंहदेवो मालवेश्वरः** स्फुरद्भक्तिप्राग्भारभास्वरान्तःकरणः स्वामिनं स्वयमपूपुजत्। देवपूजार्थं च चतुर्विंशतिहलकृष्यां भूमिमदत्त मठपतिभ्यः। द्वादशहलवाह्यां चावनीं देवार्चकेभ्यः प्रददाव**वन्ति**पतिः। अद्यापि दिग्मण्डलव्यापिप्रभाववैभवो भगवान**भिनन्दनदेव**स्तत्र तथैव पूज्यमानोऽस्ति।

अभिनन्दनदेवस्य कल्प एष यथाश्रुतम्। अल्पीयान् रचयांचक्रे श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः॥ १॥

॥ इति सकलभूवलयनिवासिलोकाभिनन्दनस्य श्रीअभिनन्दनदेवस्य कल्पः[†] ॥

॥ ग्रं० ५३, अ० १८ ॥

---

1 C समानयद्भिः। 2 P °तरोर्मूले। 3 P निधाय। 4 P नास्त्येतन्नाम। 5 B C मेदुः। † P प्रतौ 'इति अभिनन्दनदेवकल्पः।' इत्येव संक्षिप्तोल्लेखः।

३३. प्रतिष्ठानपुरकल्पः ।

श्री**सुव्रतजिनं** नत्वा प्रतिष्ठां प्रापुषः[1] क्षितौ । **प्रतिष्ठानपुर**स्याभिदध्मः कल्पं यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

[0]इह **भारते** वर्षे दक्षिणखण्डे **महाराष्ट्र**देशावतंसं श्रीमत्**प्रतिष्ठानं** नाम पत्तनं विद्यते । तच्च निजभूत्याभिभूतपुरुहूत[2]पुरमपि[0] कालान्तरेण क्षुल्लकग्रामप्रायमजनिष्ट । तत्र चैकदा द्वौ वैदेशिकद्विजौ समागत्य[3] विधवया स्वस्रा साकं कस्यचित्कुम्भकारस्य शालायां तस्थिवांसौ । कणवृत्तिं विधाय कणान् स्वसुरुपनीय तत्कृताहारपाकेन समयां कुरुतः स्म । अन्येद्युः सा तयोर्विप्रयोः स्वसा जलाहरणाय **गोदावरीं** गता । तस्याश्च रूपमप्रतिरूपं निरूप्य स्मरपरवशोऽन्तर्ह्रदवासी **शेषो** नाम नागराजो ह्रदान्निर्गत्य विहितमनुष्यवपुस्तया सह बलादपि सम्भोगकेलिमकलयत् । भवितव्यताविलसितेन तस्याः सप्तधातुरहितस्यापि तस्य दिव्यशक्त्या शुक्रपुद्गलसञ्चाराद्गर्भाधानमभवत् । स्वनामधेयं प्रकाश्य, व्यसनसङ्कटे मां स्मरेत्यभिधाय च, नागराजः पाताललोकमगमत् । सा च स्वगृहं प्रत्यगच्छत् । व्रीडापीडितया तया[4] च स्वभ्रात्रे स्ववृत्तान्तं न खलु न्यवेदयत् । कालक्रमेण सौदर्याभ्यां गर्भलिङ्गानि वीक्ष्य सा जातगर्भेत्यलक्ष्यत[5] । ज्यायसस्तु मनसि शङ्का जाता, यदियं खलु कनीयसोपभुक्तेति । शङ्कनीयान्तराभावाद्यवीयसोऽपि चेतसि समजनि विकल्पो, नूनमेषा ज्यायसा सह विनष्टशीला–इत्येवं मिथः कलुषिताशयौ विहाय तामेकाकिनीं पृथक् पृथक् देशान्तरमयासिष्टाम् । सापि प्रवर्धमानगर्भा परमन्दिरेषु कर्माणि निर्मिमाणा प्राणवृत्तिमकरोत् । क्रमेण पूर्णेऽनेहसि सर्वलक्षणलक्षिताङ्गं प्रासूत सूनुम् । स च क्रमाद् वपुषा गुणैश्च वर्धमानः सवयोभिरमा रममाणो बालक्रीडया स्वयं भूपतीभूय तेभ्यो वाहनानि करितुरगरथादीनि कृत्रिमाणि दत्तवानिति । सनोतेर्दानार्थत्वात् । लोकैः **सातवाहन** इति व्यपदेशं लम्भितः । स्वजनन्या पाल्यमानः सुखमवास्थित ।

इतश्चोज्ज**यिन्यां** श्री**विक्रमादित्य**स्या**वन्ति**नरेशितुः सदसि कश्चिन्नैमित्तिकः **सातवाहनं प्रतिष्ठानपत्तने** भाविनं नरेन्द्रमादिक्षत् । अथैतस्यामेव पुर्यामेकः स्थविरविप्रः स्वायुरवसानमवसाय चतुरः स्वतनयानाहूय प्रोक्तवान् । यथा–वत्स ! मयि [6]परेयुषि मदीयशय्योच्छीर्षकदक्षिणपदादारभ्य चतुर्णामपि पादानामधो वर्तमानं निधिकलशचतुष्टयं युष्माभिर्यथाज्येष्ठं विभज्य ग्राह्यम्, येन भवतां निर्वाहः संपनीपद्यते । पुत्रैस्तु तथेत्यादेशः स्वीचक्रे पितुः । तस्मिन्नुपरते तस्यौर्ध्वदेहिकं कृत्वा त्रयोदशेऽहनि भुवं खात्वा यथायथं चतुरोऽपि निधिकलशांस्ते जगृहिरे । यावदुद्घाट्य निभालयन्ति तावत्प्रथमस्य कुम्भे कनकम्, द्वैतीयकस्य कृष्णमृत्स्ना, तृतीयस्य बुशम्, तुरीयस्य चास्थीनि दद्दशिरे । तदनु ज्यायसा साकं इतरे त्रयोऽपि विवदन्ते स्म–यदस्मभ्यमपि विभज्य कनकं वितरेति । तस्मिंश्चावितरति सति तेऽ**वन्तिपते**र्धर्माधिकरणमुपास्थिषत । तत्रापि न तेषां वादनिर्णयः समपादि । ततश्चत्वारोऽपि ते **महाराष्ट्र**जनपद[7]मुपानंसिषुः । **सातवाहन**कुमारस्तु कुलालमृदा हस्त्यश्वरथसुभटानन्वहं नवनवान् विदधानः कुलालशालायां बालक्रीडादुर्ललितः कलितस्थितिरनयत् समयम् । ते च द्विजतनुजाः प्रतिष्ठानपत्तनमुपेत्य परितस्तस्यामेव चक्रजीवनशालायां तस्थिवांसः । **सातवाहन**कुमारस्तु तानवेक्ष्येङ्गिताकारकुशलः प्रोवाच–भो विप्राः ! किं भवन्तो [8]वीक्षापन्ना इव वीक्ष्यन्ते । तैस्तु जगदे–जगदेकसुभग ! कथमिव वयं चिन्ताचान्तचेतसस्त्वयाऽज्ञासिष्महि । कुमारेण बभणे–इङ्गितैः किमिव नावगम्यते ! । तैरुक्तम्–युक्तमेतत्; परं भवतः पुरो निवेदितेन चिन्ताहेतुना [9]किं स्याद् ? । बालः खलु भवान् । बाल आलपद्–यदि परं जातु मत्तोऽपि साध्यं वः सिध्यति । तन्निवेद्यतां स चिन्ताहेतुः । ततस्ते तद्वचनवैचित्रीहृतहृदयाः सकलमपि स्वस्वरूपं निधिनिरयणादि **मालवे**शपरिषद्यपि विवादानिर्णयान्तं तस्मै निवेदितवन्तः । कुमारस्तु स्मितविच्छुरिताधरोऽवादीत्–भो विप्राः ! अहं यौष्माकं झगटकं निर्णयामि, श्रूयतामवहितैः । यस्य तावद्धप्त्रा कनककलशं प्रददे स तेनैव निर्वृतोऽस्तु । यस्य कलशे कृष्णमृत्स्ना निरगात्स क्षेत्रकेदारादीन् गृह्णातु । यस्य तु बुशं स

---

1 B प्रापुकः । 0 एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता C आदर्शे । 2 B नास्त्येतत्पदम् । 3 B समागम्य । 4 C पीडिततया । 5 B लक्ष्यते । 6 B Pa पुरेयुषि । 7 Pa °पदे । 8 B Pa वीक्ष्यापन्ना । 9 B विना हेतुना ।

कोष्ठागारगतधान्यानि सर्वाण्यपि स्वीकुरुताम्। यस्य चास्थीनि निरगुः सोऽश्वगोमहिषीवृषभदासीदासादिकमुपादत्तामिति युष्मज्जनकस्याशयः। इति क्षीरकण्ठोक्तं श्रुत्वा सूत्रकण्ठाश्छिन्नविवादास्तद्वचनं प्रतिश्रुत्य तमनुज्ञाप्य प्रत्याययुः स्वनगरीम्। प्रथिता सा तद्विवादनिर्णयकथा पुर्याम्। राज्ञाप्याकार्य पर्यनुयुक्ताः–किं नु भो! भवतां वादनिर्णयो जातः! । तैरुक्तम्– आम स्वामिन्! । केन निर्णीतः?–इति नृपेणोदिते **सातवाहन**स्वरूपं सर्वमवितथमचकथन्। तदाकर्ण्य, तस्य शिशोरपि बुद्धिवैभवं विभाव्य, प्रागुक्तं दैवज्ञेन तस्य **प्रतिष्ठाने** राज्यं भविष्यदनुस्मृत्य, तं स्वप्रतिपन्थिनमाकलय्य क्षुभितमनास्तन्मारणोपयिकमचिन्तयच्चिरं नरेश्वरः। अभिमरादिप्रयोगैर्मारिते चास्मिन्नयशः-क्षात्रवृत्तिक्षती भवेतामिति विचार्य सन्नद्धचतुरङ्गचमूसमूहोऽवन्तिपतिः प्रस्थाय **प्रतिष्ठानपत्तनं** यथेष्टमवेष्टयत्। तदवलोक्य ते ग्राम्यास्त्रस्ताश्चिन्तयन्ति स्म। कस्योपर्ययमेतावानाटोपः सकोपस्य **मालवेशस्य**?। न तावदत्र राजा राजन्यो वा वीरस्तादृग्दुर्गादि वेति चिन्तयत्सु तेषु **मालवेश**प्रहितो दूतः समेत्य **सातवाहन**मवोचत्–भो कुमारक! तुभ्यं नृपः क्रुद्धः प्रातस्त्वां मारयिष्यत्यतो युद्धाद्युपायचिन्तनावहितेन भवता भाव्यमिति। स च श्रुत्वापि दूतोक्तीर्निर्भयं निर्भरं[1] क्रीडन्नेवास्ते। अत्रान्तरे विदितपरमार्थौ तौ तन्मातुलावितरेतरं प्रति विगतदुर्विकल्पौ पुनः **प्रतिष्ठान**मागतौ परचक्रं दृष्ट्वा भगिनीं प्रोचतुः–हे स्वसर्येन दिवौकसा तवायं तनयो दत्तस्तमेव स्मर, यथा स एवास्य साहायकं विधत्ते। सापि तद्वचसा प्राचीनं नागपतेर्वचः स्मृत्वा शिरसि निवेशितघटा गोदावर्यां नागह्रदं गत्वा, स्नात्वा च, तमेव नागनायकमाराधयत्। तत्क्षणान्नागराजः प्रत्यक्षीभूय वाचमुवाच ब्राह्मणीं–को हेतुरहमनुस्मृतस्त्वया?। तया च प्रणम्य यथास्थितमभिहिते, बभाषे शेषराजः–मयि प्रतपति कस्तव तनयमभिभवितुं क्षमः? इत्युदीर्य तद् घटमादाय ह्रदान्तर्निमज्य पीयूषकुण्डात् सुधया घटं प्रपूर्यानीय च तस्यै दत्तवान्। गदितवांश्च–अनेनामृतेन **सातवाहन**कृतमृन्मयाश्वरथगजपदातिजातमभिषिञ्चेः, यथा तत्सजीवं भूत्वा परबलं भनक्ति। त्वत्पुत्रं च **प्रतिष्ठान**पत्तनराज्ये अयमेव पीयूषघटोऽभिषेक्ष्यति। प्रस्तावे पुनः स्मरणीयोऽहम्–इत्युक्त्वा स्वास्पदमगमद्भुजङ्गपुङ्गवः। सापि सुधाघटमादाय स्वसद्मोपेत्य, तेन तन्मृन्मयं[2] सैन्यमदैन्यमभ्युक्षामास। प्रातर्दिव्यानुभावतस्सचेतनीभूय तत्सैन्यं सम्मुखं गत्वा युयुधे परानीकिन्या सार्द्धम्। तया **सातवाहन**पृतनया भग्नमवन्तीशितुर्बलम्। **विक्रमनृपति**रपि पलाय्य ययाववन्तीम्। तदनु **सातवाहनो** राज्येऽभिषिक्तः। **प्रतिष्ठानं** च पुनर्निजविभूतिपरिभूतवस्वोकसाराभिमानं धवलगृहदेवगृहहट्टपंक्तिराजपथप्राकारपरिखादिभिः सुनिविष्टमजनिष्ट पत्तनम्। **सातवाहनो**ऽपि क्रमेण **दक्षिणापथ**मनृणं विधाय **तापी**तीरपर्यन्तं चो**त्तरापथं** साधयित्वा स्वकीयसंवत्सरं प्रावीवृतत्। जैनश्च समजनि। अचीकरच्च जनितजननयनशैत्यानि जिनचैत्यानि। पञ्चाशद्वीरा अपि प्रत्येकं स्वस्वनामाङ्कितान्यन्तर्नगरं कारयांबभूवुर्जिनभवनानि।

॥ इति प्रतिष्ठानपत्तनकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४७ ॥

---

1 B नास्ति पदमेतत्। 2 Pa मृन्मय°।

३४. प्रतिष्ठानपुराधिपतिसातवाहननृपचरित्रम् ।

अथ प्रसङ्गतः परसमयलोकप्रसिद्धं **सातवाहन**चरित्रशेषमपि किञ्चिदुच्यते—

श्रीसातवाहने क्षितिं रक्षति पञ्चाशद्वीराः **प्रतिष्ठान**नगरान्तस्तदा वसन्ति स्म । पञ्चाशच्च नगराद्बहिः । इतश्च तत्रैव पुरे एकस्य द्विजस्य सूनुर्दर्पोद्धुरः **शूद्रका**ख्यः समजनि । स च युद्धश्रमं दर्पात्कुर्वाणः पित्रा स्वकुलानुचितमिदमिति प्रतिषिद्धो नास्थात्[1] । अन्येद्युः **सातवाहन**नृपतिर्**वापला-खूंदला**दि-पुरान्तर्वर्ति-वीरपञ्चाशदन्वितो द्विपञ्चाशद्धस्तप्रमाणां शिलां श्रमार्थमुत्पाटयन् दृष्टः पित्रा समं गच्छता द्वादशाब्ददेशीयेन **शूद्रकेण** । केनापि वीरेणाङ्गुलचतुष्टयम्, केनचित्षडङ्गुलान्यष्टौ [वा] शिला भूमित उत्पाटिता । महीजानिना त्वाजानु नीता । इत्यवलोक्य **शूद्रकः** स्फूर्जद्गर्जितमवादीत्—भो भो ! भवत्सु मध्ये किं शिलामिमामा मस्तकं न कश्चिदुद्धर्तुमीष्टे ! । तेऽपि सेर्ष्यमवादिषुर्यथा—त्वमेवोत्पाटय, यदि समर्थंमन्योऽसि । शूद्रकस्तदाकर्ण्य तां शिलां वियति तथोच्छालयांचकार यथा सा दूरमूर्ध्वमगमत् । पुनरवादि शूद्रकेण—यो भवत्स्वलंभूष्णुः स खल्विमां निपतन्तीं स्तभ्नातु[2] । **सातवाहना**दिवीरैर्भयोद्भ्रान्तलोचनैरूचे स एव सानुनयम्, यथा—भो महाबल ! रक्ष रक्षास्माकीनान् प्राणानिति । स पुनस्तां पतयालुं तथा मुष्टिप्रहारेण प्रहतवान् यथा सा त्रिखण्डतामन्वभूत् । तत्रैकं शकलं योजनत्रयोपरि न्यपतत् । द्वैतीयीकं च खण्डं नागह्रदे[3] । तृतीयं तु प्रतोलीद्वारे चतुष्पथमध्ये निपतितमद्यापि तथैव वीक्ष्यमाणमास्ते जनैः । तद्बलविलसित[4]चमत्कृतचेताः क्षोणिनेता **शूद्रकं** सुतरां सत्कृत्य पुरारक्षकमकरोत् । शस्त्रान्तराणि प्रतिषिध्य [5]दण्डधारस्तस्य दण्डमेवायुधमन्वज्ञासीत् । [स] च **शूद्रको** बहिश्चरान् वीरान् पुरमध्ये प्रवेष्टुमपि न दत्तवान्, अनर्थनिवारणार्थम् । अन्यदा स्वसौधस्योपरितले शयानः **सातवाहनः** क्षितिपतिर्मध्यरात्रे शरीरचिन्तार्थमुत्थितः पुराद्बहिःपरिसरे करुणं रुदितमाकर्ण्य, तत्प्रवृत्तिमुपलब्धुं कृपाणपाणिः परदुःखदुःखितहृदयतया गृहान्निरगमत् । अन्तराले **शूद्रके**णावलोक्य सप्रश्रयं प्रणतः, पृष्टश्च महानिशायां निर्गमनकारणम् । धरणीपतिरवदद्—यदयं बहिः पुरः परिसरं करुणक्रन्दितध्वनिः श्रवणाध्वनि पथिकीभावमनुभवन्नस्ति, तत्कारणप्रवृत्तिं ज्ञातुं व्रजन्नस्मीति राज्ञोक्ते; **शूद्रको** व्यजिज्ञपत्—देव ! प्रतीक्षपादैः स्वसौधालङ्करणाय पादोऽवधार्यतामहमेव तत्प्रवृत्तिमानेष्यामीत्यभिधाय वसुधानायकं व्यावर्त्य स्वयं रुदितध्वन्यनुसारेण पुराद्बहिर्गन्तुं प्रवृत्तः । पुरस्ताद्व्रजन् दत्तकर्णो **गोदावर्याः** श्रोतसि कञ्चन रुदन्तमश्रौषीत् । ततः परिकरबन्धं विधाय **शूद्रकः** तीर्त्वा यावत्सरितो मध्यं प्रयाति तावत्पयःपूरप्लाव्यमानं नरमेकं रुदन्तं वीक्ष्य बभाषे—भोः ! कस्त्वं किमर्थं च रोदिषीत्यभिहितः स नितरामरुदत् । अतिनिर्बन्धेन पुनः पृष्टः स्पष्टमाचष्ट—भोः साहसिकशिरोमणे ! मामितो निष्काश्य भूपतेः समीपं प्रापय, येन तत्र स्ववृत्तमाचक्षे—इत्युक्तः **शूद्रक**स्तमुत्पाटयितुं यावदयतिष्ट, तावन्नोत्पटति स सः । ततोऽधस्तात् केनापि यादसा मा विधृतोऽयं भवेदित्याशङ्क्य, सद्यः कृपाणिकामधो वाहयामास **शूद्रकः** । तदनु शिरोमात्रमेव शूद्रकस्योद्धर्तुः करतलमारोहल्लघुतया तच्छिरः प्रक्षरद्रुधिरधारमवलोक्य **शूद्रको** विषादमापेदानश्चिन्तयति स्म—धिग् मामप्रहर्तरि प्रहर्तारम्, शरणागतघातुकं चेत्यात्मानं निन्दन् वज्राहत इव क्षणं[6] मूर्च्छितस्तस्थौ । तदनु समधिगतचैतन्यश्चिरमचिन्तयत्—कथमिवैतत् स्वदुश्चेष्टितमवनिपतये निवेदयिष्यामीति लज्जितमनास्तत्रैव काष्ठैश्चितां विरचय्य तत्र ज्वलनं प्रज्वाल्य तच्छिरः सह गृहीत्वा यावदुदर्चिषि प्रवेष्टुं प्रववृते, तावत्तेन मस्तकेन निजगदे—भो महापुरुष ! किमर्थमित्थं व्यवसीयते भवता ? । यावदहं शिरोमात्रमेवास्मि सैंहिकेयवत्सदा । तद्वृथा मा विषीद; प्रसीद मां राज्ञः समीपमुपनय इति तद्वचनं निशम्य चमत्कृतचित्तः, प्राणित्ययमिति प्रहृष्टः **शूद्रक**स्तच्छिरः पटांशुकवेष्टितं विधाय प्रातः **सातवाहन**मुपानमत् । अपृच्छदथ पृथिवीनाथः—**शूद्रक** ! किमिदम् ? । सोऽप्यवोचत्—देव ! सोऽयं यस्य क्रन्दितध्वनिर्देवेन रात्रौ शुश्रुवे । इत्युक्त्वा तस्य प्रागुक्तं वृत्तं सकलमावेदयत् । पुना राजा तमेव मस्तकमप्राक्षीद्—भोः !

1 Pa नास्थानात् । 2 B स्खलातु । 3 B °द्रहे । 4 C विलसितेन । 5 Pa नास्ति पदद्वयमेतत् । 6 B तत्क्षणं ।

कस्त्वं किमर्थं चात्र भवदागमनमिति ?। तेनाभिदधे—महाराज ! भवतः कीर्तिसुभाकर्णि समाकर्ण्य करुणरुदितव्याजेनात्मानं ज्ञापयित्वा त्वामहमुपागमम्, दृष्टश्च भवान्, कृतार्थे मेऽद्य चक्षुषी जाते इति । कां कलां सम्यगवगच्छसि ?—इति राज्ञा पृष्टे, तेनोक्तम्—देव ! गीतकलां वेद्मि । ततो राज्ञ आज्ञया निरवगीतं गीतं गातुं[1] प्रचक्रमे । क्रमेण तद्गानकलया मोहिता सकलापि नृपतिप्रमुखा परिषत् । स च **मायासुर**नामकोऽसुरस्तां मायां निर्माय महीपतेर्महिषीं महनीयरूपधेयामपजिहीर्षुरुपागतो बभूव । न च विदितचरमेतत्कस्यापि । लोकैस्तु शीर्षमात्रदर्शनात्तस्य प्राकृतभाषया **सीपुला** इति व्यपदेशः कृतः । तदनु प्रतिदिनं तस्मिन्नतितुंबरौ मधुरतरं गायति सति श्रुतं तत्स्वरूपं महादेव्या । दासीमुखेन भूपं विज्ञाप्य तच्छीर्षकं स्वान्तिकमानायितम् । प्रत्यहं तमजीगपत् राज्ञी । दिनान्तरे रात्रौ प्रस्तावमासाद्य सद्य एवापहरति स्म तां **मायासुरः** । आरोपयामास च घण्टाविलम्बिनामनि स्वविमाने । राज्ञी च करुणं क्रन्दितुमारेभे—हाऽहं केनाप्यपह्रिये ! । अस्ति कोऽपि वीरः [†]पृथिव्यां यो मां मोचयति । तच्च **खूंदला**भिख्येन वीरेण श्रुत्वा धावित्वा व्योमन्युत्पत्य च तद्विमानस्य घण्टा पाणिना गाढमधार्यत । ततस्तत्प्राणेनावष्टब्धं विमानं पुरस्तान्न प्राचालीत् । तदनु चिन्तितं **मायासुरेण**—किमर्थं विमानमेतन्न सर्पति ? । यावदद्राक्षीत्तं वीरं हस्तावलम्बितघण्टं ततः[†] खड्गेन तद्धस्तमच्छिदत् । पतितः पृथिव्यां वीरः । स चासुरः पुरः प्राचलत् । ततो विदितदेव्यपहारवृत्तान्तः क्षितिकान्तः पञ्चाशतमेकोनां वीरानादिक्षत्—यत्पट्टदेव्याः शुद्धिः क्रियताम्, केनेयमपहृतेति । प्रागपि **शूद्रकं** प्रत्यसूयापराः ते प्रोचुः—महाराज ! **शूद्रक** एव जानीते अनेनैव [2]तच्छीर्षकमानीतं तेनैव[2] च देवी जह्रे । ततो नृपतिस्तस्मै कुपितः शूलारोपणमाज्ञापयत् । तदनु देशरीतिवशात्तं रक्तचन्दनानुलिप्ताङ्गं शकटे शाययित्वा, तेन सह गाढं बध्वा, शूलायै यावद्राजपुरुषाश्चेलुस्तावत्पञ्चाशदपि वीरास्सम्भूय **शूद्रक**मवोचन्—भो महावीर ! किमर्थमेवं रण्डेव म्रियते भवान् ! । 'अशुभस्य कालहरण'मिति न्यायात् मार्गय नरेन्द्रात्कतिपयदिनावधिम्, शोधय सर्वत्र देव्यपहारिणम्[3], किमकाण्ड एव स्वकीयां वीरत्वकीर्तिमपनयसि । तेनोक्तम्—गम्यतां तर्हि उपराजम्, विज्ञाप्यतामेतमर्थं राजा । तैरपि तथाकृते प्रत्यानायितः **शूद्रकः** क्षितीन्द्रेण । तेनापि स्वमुखेन विज्ञप्तिः कृता—महाराज ! दीयतामवधिर्येन विचिनोमि प्रतिदिशं देवीं तदपहारिणं च[4] । राज्ञा दिनदशकमवधिर्दत्तः । **शूद्रक**गृहे च सारमेयद्वयमासीत्तत्सहचारि । नृपतिरवददेतद्भषणयुगलं प्रतिभूप्रायमस्मत्पार्श्वे मुञ्च, स्वयं पुनर्भवान् देव्युदन्तोपलब्धये हिण्डतां महीमण्डलम् । सोऽप्यादेशः प्रमाणमित्युदीर्यवीर्यवान् प्रतस्थे । भूचक्रशक्रस्तत्कौलेयकद्वन्द्वं शृङ्खलाबद्धं स्वशय्यापादयोरबध्नात् । **शूद्रकस्तु** परितः पर्यट्यमानोऽपि यावत्प्रस्तुतार्थस्य वार्तामात्रमपि क्वापि नोपलेभे, तावदचिन्तयद्—अहो ! ममेदमपयशः प्रादुरभूद्यदयं स्वामिद्रोही मध्ये भूत्वा देवीमुपाजीहरदिति । न च क्वापि शुद्धिर्लब्धा तस्यास्तस्मान्मरणमेव मम शरणमिति विमृश्य दारुभिश्चितामरचयत् । ज्वलनं चाज्वालयद्यावन्मध्ये प्राविशत्तावत्ताभ्यां शुनकाभ्यां देवताधिष्ठिताभ्यां ज्ञातं यदस्मदधिपतिर्निधनं धनायन्नस्तीति । ततो देवतशक्त्या शृङ्खलानि भंक्त्वा निर्विलम्बं गतौ तौ तत्र यत्रासीच्छूद्रकरचिता चिता । दशनैः केशानाकृष्य **शूद्रकं** बहिर्निष्कासयामासतुः । तेनाप्यकस्मात्तौ विलोक्य विस्मितमनसा निजगदे—रे पापीयांसौ ! किमेतत्कृतं भवद्भ्यामशुभवद्भ्याम् । राज्ञो मनसि विश्वासनिरासो भविष्यति, यत्प्रतिभुवावपि तेनात्मना सह नीताविति । भषणाभ्यां बभाषे—धीरो भव, अस्मद्दर्शितां दिशमनुसर, सरभसं का चिता तवेत्यभिधाय पुरोभूय प्रस्थितौ तेन सार्द्धम् । क्रमात्प्राप्तौ **कोल्लापुरम्** । तत्रस्थं **महालक्ष्मी**देव्या भवनं प्रविष्टौ । तत्र **शूद्रकस्तां** देवीमभ्यर्च्य कुशस्रस्तरासीनस्त्रिरात्रमुपावसत् । तदनु प्रत्यक्षीभूय भगवती **महालक्ष्मीस्त**मवोचत्—वत्स ! किं मृगयसे ? । **शूद्रकेणो**क्तम्—स्वामिनि ! **सातवाहन**महीपालमहिष्याः शुद्धिं वद; क्वास्ते, केनेयमपहृता ? । श्रीदेव्योदितम्—सर्वान् यक्षराक्षसभूतादिदेवगणान् सम्मील्य तत्प्रवृत्तिमहं निवेदयिष्यामि । परं तेषां कृते त्वया बल्युपहारादिप्रगुणीकृत्य धार्यम् । यावच्च ते कणेहत्य बल्याद्युपभुज्य प्रीता न भवेयुस्तावत्त्वया विघ्ना रक्षणीयाः । ततः **शूद्रकस्तेषां** देवतानां तर्पणार्थं कुण्डं विरचय्य होममारेभे । मिलिताः

---

1 B निरवगानगातुं । † एतदन्तर्गताः पंक्तयः पतिताः B आदर्शे । 2 एते शब्दा अनुपलभ्याः C प्रतौ । 3 Pa °परिहारेणं । 4 B °पहारिणीं वा ।

सकलदैवतगणाः, स्वां स्वां भुक्तिमभिमुखेन जगृहे । तावत्तद्धोमधूमः प्रसृमरः प्राप तत्स्थानं यत्र **मायासुरो**ऽभूत् । तेनापि परिज्ञाततल्लक्ष्म्यादिष्ट**शूद्रक**होमस्वरूपेण प्रेषितः स्वभ्राता **कोल्लासुर**नामा होमप्रत्यूहकरणाय । समागतश्च वियति **कोल्लासुरः** स्वसेनया समम् । दृष्टश्च दैवतगणैश्चकितं च तैः । ततो भषणौ दिव्यशक्त्या युयुधाते दैत्यैः सह । क्रमान्मारितौ च तौ दैत्यैः । तत **शूद्रकः** स्वयं योद्धुं प्रावृतत् । क्रमेण दण्डव्यतिरिक्तप्रहरणान्तराभावाद्दण्डेनैव बहून्निधनं नीतवानसुरान् । ततो दक्षिणबाहुं दैत्यास्तस्य[1] चिच्छिदुः । पुनर्वामदोष्णैव दण्डयुद्धमकरोत् । तस्मिन्नपि च्छिन्ने दक्षिणांघ्रिणोपात्तदण्डो योद्धुं लग्नः । तत्रापि दैत्यैर्लूने वामपदात्तयष्टिरयुध्यत तमपि क्रमादच्छिदन्नसुराः । ततो दन्तैर्दण्डमादाय युयुधे । ततस्तैर्मस्तकमच्छेदि । अथाकण्ठतृप्ता देवगणास्तं **शूद्रकं** भूमिपतितशिरस्कं दृष्ट्वा—अहो ! अस्मद्भक्तिदातुर्वराकस्यास्य किं जातमिति परितप्य योद्धुं प्रवृत्ताः **कोल्लासुर**ममारयन् । ततः **श्रीदेव्या** अमृतेनाभिषिच्य पुनरनुसंहिताङ्गश्चक्रे **शूद्रकः**, प्रत्युज्जीवितश्च । सारमेयावपि पुनर्जीवितौ । देवी च प्रसन्ना सती तस्मै खड्गरत्नं प्रददौ[2] । अनेन त्वमजय्यो भविष्यसीति च वरं व्यतरत् । ततो महालक्ष्म्यादिदैवतगणैः सह **सातवाहन**देव्याः शुद्ध्यर्थं समग्रमपि भुवनं परिभ्राम्य प्राप्तः **शूद्रको** महार्णवम् । तत्र चैकं वटतरुमुच्चैस्तरं निरीक्ष्य विश्रामार्थमारुरोह । यावत्पश्यति तच्छाखायां लम्बमानमधःशिरसं काष्ठकीलिकाप्रवेशितोर्ध्वपादं पुरुषमेकम् । स च प्रसारितजिह्वोऽन्तर्जलं विचरतो जलचरादीन् भक्षयन् वीक्षितस्तैः । पृष्टश्च **शूद्रकेण**—कस्त्वम् ?, किमर्थं चेत्थं लम्बितोऽसि ? । तेनोक्तम्—अहं **मायासुर**स्य कनिष्ठो भ्राता स च मदनोन्मदिष्णुर्मदग्रजः । **प्रतिष्ठाना**धिपतेः **सातवाहन**स्य महिषीं रिरंसुरपाहरत्**सीता**मिव **दशवदनः** । सा च पतिव्रता तन्नेच्छति । तदनु मया प्रोक्तोऽग्रजन्मा—न युज्यते परदाराप‍हरणं तव ।

विक्रमाक्रान्तविश्वोऽपि परस्त्रीषु रिरंसया । कृत्वा कुलक्षयं प्राप नरकं **दशकन्धरः** ॥ १ ॥

इत्यादि वाग्भिषिद्धः क्रुद्धो मह्यं **मायासुरो**ऽस्यां वटशाखायां टङ्कित्वा मामित्थं व्यडम्बयत् । अहं च प्रसारितरसनः समुद्रान्तः सञ्चरन्तो जलचरादीनभ्यवहरन् प्राणयात्रां करोमि । इति श्रुत्वा **शूद्रको**ऽप्यभाणीत्—अहं तस्यैव महीभृतो भृत्यः **शूद्रक**नामा । तामेव देवीमन्वेष्टुमागतोऽस्मि । तेनोक्तम्—एवं चेत्तर्हि मां मोचयत, यथाहं सह भूत्वा तं दर्शयामि, तां च देवीम् । तेन स्वस्थानं परितो जातुषं दुर्गं कारितमस्ति । तच्च निरन्तरं प्रज्वलदेवास्ति ततस्तदुल्लंघ्य, मध्ये प्रविश्य, तं निपात्य, देवी प्रत्याहर्तव्या—इत्याकर्ण्य **शूद्रक**स्तेन कृपाणेन तत्काष्ठबन्धनानि च्छित्वा तं पुरोधाय, दैवतगणपरिवृतः प्रस्थाय, प्राकारमुल्लंघ्य, तत्स्थानान्तः प्राविशत् । दैवतगणांश्चावलोक्य **मायासुरः** स्वसैन्यं युद्धाय प्रजिघाय । तस्मिन्पञ्चतामञ्चिते स्वयं योद्धुमुपतस्थे । ततः क्रमेण **शूद्रक**स्तेनासिना तमवधीत् । ततो घण्टावलम्बिविमानमारोप्य देवीं दैवतगणैः सत्रा प्रस्थितः **प्रतिष्ठानं** प्रति ।

इतश्च दशमं दिनमवधीकृतमागतमवगत्य जगत्यधिपतिर्ध्यातवान्—अहो ! न मम महादेवी, न च **शूद्रक**वीरो, नापि च तौ रसनालिहौ । सर्वं मयैव कुबुद्धिना विनाशितमिति शोचयन् सपरिच्छद एव प्राणत्यागं चिकीर्षुः पुराद्बहिश्चितामरचयच्चन्दनादिदारुभिः । यावत्क्षणादाशुशुक्षणिं क्षेप्स्यति परिजनश्चितौ तावद्वर्द्धापक एको देवगणमध्यात्समायासीद्व्यजिज्ञपच्च सप्रश्रयम्—देव ! दिष्ट्या वर्द्धसे महादेव्यागमनेन । तन्निशम्य श्रवणरम्यं नरेश्वरः स्फुरदानन्दकन्दलितहृदय ऊर्ध्वमवलोकयन्नालुलोके नभसि दैवतगणं **शूद्रकं** च । अयमपि विमानावदतीर्य राज्ञः पदोऽपतत्; महादेवी च । अभिननन्द सानन्दं मेदिनीन्द्रः **शूद्रकम्**, राज्यार्धं च तस्मै प्रादित । सोत्सवमन्तर्नगरं प्रविश्य श्रुत**शूद्रक**चारुचरितः समं महिष्या राज्यश्रियमुपबुभुजे महाभुजः ।

इत्थंकारं नानाविधानान्यवदानानि **हाल**क्षितिपालस्य, कियन्ति नाम व्यावर्णयितुं पार्यते । स्थापिता चानेन **गोदावरी**सरित्तीरे महालक्ष्मीः । प्रासादे अन्यान्यपि यथार्हं दैवतानि निवेशितानि तत्तत्स्थानेषु । राज्यं प्राज्यं चिरं

1 'तस्य' नास्ति Pa । 2 B ददौ ।

भुञ्जाने जगतीजानावन्यदा कश्चिद्दारुभारहारकः कस्यचिद्वणिजस्य वीथौ प्रत्यहं चारूणि दारूण्याहृत्य विक्रीणीते स्म । दिनान्तरे च तस्मिन्ननुपेयुषि वणिजा तद्भगिनी पृष्टा–किमर्थं भवद्भ्राताऽद्य नागतो मद्वीथ्याम् ? । तया बभाणे–श्रेष्ठिश्रेष्ठ ! मत्सौदर्यः स्वर्गिषु सम्प्रति प्रति[1]वसति । वणिगभाणत्कथमिव ? । साऽवदत्–कङ्कणबन्धादारभ्य विवाहप्रकरणे दिनचतुष्टयं नरः स्वर्गिष्विव वसन्तमात्मानं मन्यते । तत्तदुत्सवालोकनकुतूहलात् । तच्चाकर्ण्य राजाप्यचिन्तयत्–अहो ! अहं किं न स्वर्गिषु वसामि चतुर्षु दिनेष्वनवरतं विवाहोत्सवमय एव स्थास्यामीति विचार्य चातुर्वर्ण्ये यां यां कन्यां युवतिं वा रूपशालिनीं पश्यति शृणोति स्म वा, तां तां सोत्सवं पर्यणैषीत् । एवं च भूयस्यनेहसि गच्छति लोकैश्चिन्तितम्–अहो ! कथं भाव्यमनपत्यैरेव सर्ववर्णैः स्थेयम् । सर्वकन्यास्तावद्राजैव विवोढा । योषिदभावे च कुतः सन्ततिरिति । एवं विषण्णेषु लोकेषु **विवाहवाटिका**नामनि ग्रामे वास्तव्य एको द्विजः **पीठजादेवी**माराध्य व्यजिज्ञपद्–भगवति ! कथं विवाहकर्मास्मदपत्यानां भावीति ? । देव्योक्तम्–भो वाडव ! त्वद्भवनेऽहमात्मानं कन्यारूपं कृत्वावतरिष्यामि । यदा मां राजा प्रार्थयते तदाहं तस्मै देया; शेषमहं भलिष्ये । तथैव राजा तां रूपवतीं श्रुत्वा विप्रमयाचत । सोऽपि जगाद–दत्ता मया, परं महाराज ! तत्रागत्य मत्कन्योद्वोढव्या । प्रतिपन्नं राज्ञा । गणकदत्ते लग्ने क्रमाद्विवाहाय प्रचलितः । प्राप्तश्च तं ग्रामं श्वसुरकुलं च नृपतिः । देशाचारानुरोधाद्वधूवरयोरन्तराले जवनिका दत्ता । अञ्जलिर्युगन्धरीलाजैर्भृतो लग्नवेलायां तिरस्करिणीमपनीय यावदन्योऽन्यस्य शिरसि लाजान् विकिरीतुं प्रवृत्तौ । तदनु किल हस्तलेपो भविष्यतीति तावद्राजा तां रौद्ररूपां राक्षसीमिवैक्षिष्ट । ते च लाजाः कठिनपाषाणकर्कररूपा राज्ञः शिरसि लगितुं लग्नाः । क्षितिपतिरपि किमपि[2] वैकृतमिदमिति विभावयन् पलायितस्तावत्सा पृष्ठलग्नाऽश्मशकलानि वर्षन्ती प्राप्ता । ततो नरपतिर्नागह्रदं प्राविशन्निजजन्मभूमिम् । तत्रैव च निधनमानश इति । अद्यापि सा **पीठजादेवी** प्रतोल्या बहिरास्ते निजप्रासादस्था । **शूद्रको**ऽपि क्रमेण **कालिका**देव्याऽजारूपं विकृत्य वापीं प्रविष्टया करुणरसितेन विप्रलभ्य तन्निष्कासनार्थं प्रविशन् । पतितस्य तस्य कृपाणस्य कूपद्वारे तिर्यक्पतनाच्छिन्नाङ्गः पञ्चतामानञ्च । महालक्ष्म्या हि वरं वितरणावसरेऽस्मादेव कौक्षेयकात्तव दिष्टान्तावाप्तिर्भवित्रीत्यादिष्टमासीत् । ततः **शक्तिकुमारो** राज्येऽभिषिक्तः सातवाहनायनिः । तदनन्तरमद्यापि राजा न कश्चित्**प्रतिष्ठाने** प्रविशति वीरक्षेत्रे इति ।

अत्र च यदसम्भाव्यं क्वचिदूचे तत्र परसमय एव । मन्तव्यो हेतुर्यन्नासंगतवाग्जनो जैनः ॥

इति श्री**प्रतिष्ठान**कल्पः, प्रसङ्गतः **सातवाहन**चरित्रलेशश्च विरचितः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ।

चक्रे **प्रतिष्ठान**कल्पः श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः । **सातवाहन**भूपस्य कथालेशश्च प्रसङ्गतः ॥

॥ ग्रं० १६६, अ० ९ ॥

---

1 B 'प्रति' नास्ति । 2 B नास्ति 'किमपि' ।

३५. चम्पापुरीकल्पः ।

कृतदुर्नयभङ्गानाम**ङ्गानां**[1] जनपदस्य भूषायाः । **चम्पा**पुर्याः कल्पं जल्पामस्तीर्थधुर्यायाः[2] ॥ १ ॥

अस्यां द्वादशमजिनेन्द्रस्य [3]श्री**वासुपूज्यस्य** त्रिभुवनजनपूज्यानि गर्भावतार[4]-जन्म-प्रव्रज्या-केवलज्ञान-निर्वाणोपगमलक्षणानि पञ्चकल्याणकानि जज्ञिरे ॥ १ ॥

अस्यामेव श्री**वासुपूज्य**जिनेन्द्रपुत्र**मघव**नृपतिपुत्री**लक्ष्मी**कुक्षिजाता **रोहिणी** नाम कन्याऽष्टानां पुत्राणामुपरि जज्ञे । सा च स्वयंवरेऽ**शोक**राजन्यकण्ठे वरमालां निक्षिप्य तं परिणीय पट्टराज्ञी जाता । क्रमेणाष्टौ पुत्रांश्चतस्रश्च[5] पुत्रीरजीजनत् । अन्यदा श्री**वासुपूज्य**शिष्ययो **रूप्यकुम्भ-स्वर्णकुम्भ**योर्मुखाददृष्टदुःखत्वे हेतुं प्राग्जन्मचीर्णं रोहिणीतपः श्रुत्वा सोद्यापनविधिं[6] प्राचीकटन्[7] मुक्तिं च सपरिच्छदाऽगच्छत् ॥ २ ॥

अस्यां **करकण्डु**[8]नामधेयो भूमण्डलाखण्डलः पुरासीद्यः **कादम्बर्या**मटव्यां **कलिगिरे**रुपत्यकावर्तिनि कुण्डनाम्नि सरोवरे श्री**पार्श्वनाथं** छद्मस्थावस्थायां[9] विहरन्तं हस्तिव्यन्तरानुभावात्कलिकुण्डतीर्थतया प्रतिष्ठापितवान् ॥ ३ ॥

अस्यां पुनः[10] **सुभद्रा** महासती पाषाणमयविकटकपाटसम्पुटपिहितास्तिस्रः प्रतोलीः [11]शीलमाहात्म्यादामसूत्रतन्तुवेष्टितेन तितउना कूपाज्जलमाकृष्य तेनाभिषिच्य सप्रभावनमुद्घाटत् । एकां तु तुरीयां प्रतोलीमन्याऽपि या किल मत्सदृशा सुचरित्रा भवति तयेयमुद्घाटनीयेति भणित्वा राजादिजनसमक्षं तथैव पिहितामेवास्थापयत् । सा च तद्दिनादारभ्य चिरकालं तथैव दृष्टा जनतया । क्रमेण **विक्रमादित्यवर्षेषु षष्ट्यधिकत्रयोदशशतेष्वतिक्रान्तेषु लक्षणावती**हम्मीरश्रीसुरत्राण**समसदीनः** [12]**शङ्करपुर**दुर्गोपयोगिपाषाणग्रहणार्थं तां प्रतोलीं पातयित्वा कपाटसम्पुटमग्रहीत् ॥ ४ ॥

अस्यां **दधिवाहन**नृपतिर्महिष्या **पद्मावत्या** सह तद्दोहदपूरणार्थमनेकपारूढः सञ्चरन् स्मृतारण्यानीविहारेण करिणा तां प्रतिव्रजताऽपवाहितः स्वयं तरुशाखामालम्ब्य स्थितः । करिणि पुरः सञ्चरिते व्यावृत्त्येमामेव स्वपुरीमागमत् । देवी चासामर्थ्यात्तदारूढैवारण्यानीमगात् । तदवतीर्णा क्रमेण सूनुं सुषुवे । स च **करकण्डु**र्नाम क्षितिपतिरजनि । **कलिङ्गे**षु पित्रा सार्धं युध्यमानः प्रतिषिद्धः[13] स्वजनन्या [14]आर्यया । क्रमेण महावृषभस्य यौवन-वार्द्धकदशादर्शनाज्जातः प्रत्येकबुद्धः सिद्धिं चाससाद ॥ ५ ॥

अस्यां **चन्दनबाला दधिवाहन**नृपतिनन्दना जन्म[15] उपलेभे । या किल भगवतः श्री**महावीरस्य कौशाम्ब्यां** सूर्पकोणस्थकुलमाषैः पारणाकारणया पञ्चदिनोनषण्मासावसाने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावाऽभिग्रहानपूरयत् ॥६॥

अस्यां **पृष्ठचम्प**या सह श्री**वीर**स्त्रीणि वर्षारात्रसमवसरणानि चक्रे ॥ ७ ॥

अस्या एव परिसरे श्री**श्रेणिक**सूनुर**शोकचन्द्रो** [16]नरेन्द्रः **कूणिका**पराख्यः श्री**राजगृहं** जनकशोकाद्विहाय नवीनां **चम्पा**मचीकरच्चारुचम्पकरोचिष्णुं राजधानीम् ॥ ८ ॥

अस्यामेव **पाण्डु**कुलमण्डनो दानशौण्डेषु दृष्टान्तः श्री**कर्ण**नृपतिरशाद्राज्यश्रियम् । दृश्यन्ते चाद्यापि तानि तानि तदवदातस्थानानि शृङ्गारचतुरिका[17]दीनि पुर्यामस्याम् ॥ ९ ॥

अस्यां सम्यग्दृशां निदर्शनं **सुदर्शन**श्रेष्ठी **दधिवाहन**भूपस्य राज्ञ्याऽ**भया**ख्यया सम्भोगार्थमुपसर्ग्यमाणः

---

1 D °मङ्गाजन° । 2 P विहाय सर्वत्र 'तीर्थपुर्यायाः ।' 3 Pa श्रीमे(दे?)ववासु° । 4 B C गर्भावतर° । 5 D °चतस्रः । 6 C D °विधि । 7 B D P प्राचीकशन् । 8 P करकुण्ड° । 9 P छद्मस्थावस्थां समधिगत्य विहरन्तं । 10 P विना नास्त्यन्यत्र 'पुनः' । 11 P शीतलकरचन्द्रलीलशीलमाहा° । 12 B शङ्करदुर्गोप° । 13 B P D प्रतिषिध्य । 14 B C D आर्यया जनन्या । 15 C जन्म लेभे । 16 P श्रेणिकसूनुरशोकचन्द्रापरनामधेयः । 17 B चतुरगाका°; P D चतुरका° ।

क्षितिपतिवचसा वधार्थं नीतः स्वकीयनिष्कम्पशीलसम्पत्प्रभावाकृष्टशासनदेवतासान्निध्यात् [1]शूलीं [2]हैमसिंहासनतामनैषीत्; तरवारिं च निशितं सुरभिसुमनोदाम भूय मनोदामनयत् ॥ १० ॥

अस्यां च **कामदेवः** श्रेष्ठी श्री**वीर**स्योपासकाग्रणीरष्टादशकनककोटिस्वामी गोदशसहस्रयुतषड्गोकुलाधिपति[3]-**भद्रा**पतिरभवत् । यः पौषधागारस्थितो मिथ्यादृग्देवेन पिशाचगजभुजगरूपैरुपसर्गितोऽपि न क्षोभमभजत् । श्लाघितश्च भगवताऽन्तःसमवसरणम् ॥ ११ ॥

अस्यां विहरन् श्री**शय्यम्भव**सूरिश्चतुर्दशपूर्वधरः स्वतनयं **मनका**भिधानं **राजगृहा**दागतं प्रव्राज्य तस्यायुः षण्मासावशेषं श्रुतज्ञानोपयोगेनाकलय्य तदध्ययनार्थं **दशवैकालिकं** पूर्वगतान्निर्व्यूढवान् । [4]तत्रात्मप्रवादात् षड्जीवनिकां, कर्मप्रवादात् पिण्डैषणां, सत्यप्रवादाद्वाक्यशुद्धिं, अवशिष्टाध्ययनानि प्रत्याख्यानपूर्वतृतीयवस्तुत[5] इति ॥ १२ ॥

अस्यां वास्तव्यः **कुमारनन्दी** सुवर्णकारः स्वविभववैभवाभिभूतधनदमदो[6]ऽक्रूशकृशानुप्रवेशात्पञ्चशैलाधिपत्यमधिगत्य प्राग्भवसुहृदच्युतविबुधबोधितश्चारुगोशीर्षचन्दनमयीं जीवन्तस्वामिनीं सालङ्कारां देवाधिदेवश्री**महावीर**प्रतिमां निर्ममे ॥ १३ ॥

अस्यां **पूर्णभद्रे**[7] चैत्ये श्री**वीरो** व्याकरोद्-योऽ**ष्टापद**मारोहति स तद्भव एव सिध्यतीति ॥ १४ ॥

अस्यां **पालित**नामा श्री**वीरो**पासको वणिक् । तस्य पुत्रः समुद्रयात्रायां समुद्रे प्रसूत इति **समुद्रपालो** वध्यं नीयमानं वीक्ष्य प्रतिबुद्धः [8]सिद्धिं च प्रापत् ॥ १५ ॥

अस्यां **सुनन्दः** श्राद्धः[9] साधूनां मलदौर्गन्ध्यं[10] निन्दित्वा मृतः **कौशाम्ब्या**मिभ्यसुतोऽभूद्व्रतं चाग्रहीत् । उदीर्णदुर्गन्धः कायोत्सर्गेण देवतामाकृष्य स्वाङ्गे सौगन्ध्यमकार्षीत् ॥ १६ ॥

अस्यां **कौशिकार्य**शिष्याऽ**ङ्गर्षि-रुद्रका**[11]भ्याख्यानसंविधानकं सुजातप्रियंग्वादिसंविधानकानि च जज्ञिरे॥ १७॥

इत्यादि नानाविधसंविधानकरत्नप्रकटनाना[12]वृत्तनिधानमियं पुरी । अस्याश्च प्राकारभित्तिं प्रियसखीव प्रतिक्षणमालिङ्गति सर्वाङ्गं[13] पावनघनरसपूरितान्तरा सरिद्वरा प्रसृत्वरवीचिभुजाभिः ॥ १८ ॥

उत्तमतमनरनारीमुक्तामणिधोरणिप्रसवशुक्तिः । नगरी विविधाद्भुतवस्तुशालिनी मालिनी जयति ॥ १ ॥
जन्मभू**र्वासुपूज्य**स्य तद्भक्त्या स्तूयते बुधैः । **चम्पा**याः कल्पमित्याहुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः[14] ॥ २ ॥

॥ इति श्रीचम्पापुरीकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ४७ ॥

---

1 B Pa शूलं । 2 P हिरण्मय° । 3 C गोकुलपतिः । 4 B तत्त्वात्म° । 5 C D वस्तु इति । 6 B धनदमानो । 7 P पूर्णभद्रचैत्ये । 8 P सिद्धिं चाससाद हतविषादाम् । 9 P श्रावकः । 10 B C Pa मलदुर्गन्धं । 11 Pa °रुद्रकान्याख्यान°; C °रुद्रकाव्याख्यान° । 12 P °प्रकटमाना° । 13 P विहाय नास्ति 'सर्वाङ्गं' । 14 Pa सूरिभिः ।

३६. पाटलिपुत्रनगरकल्पः ।

आनम्य श्री**नेमि**नमनेकपुंरत्नजनिपवित्रस्य । श्री**पाटलिपुत्रा**ह्वयनगरस्य प्रस्तुमः कल्पम्* ॥ १ ॥

पूर्वं किल श्री**श्रेणिक**महाराजेऽस्तंगते तदात्मजः **कूणिकः** पितृशोका**च्चम्पा**पुरीं न्यवीविशत् । तस्मिंश्चालेख्यशेषतां प्रयाते तत्सूनुरु**दायि**नामधेयश्चम्पायां क्षोणिजानिरजनिष्ट । सोऽपि स्वपितुस्तानि तानि सभाक्रीडाशयनासनादिस्थानानि[1] पश्यन्नस्तोकं शोकमुदवहत् । ततोऽमात्यानुमत्या[2] नूतनं नगरं निवेशयितुं नैमित्तिकवरान् स्थानगवेषणायादिक्षत् । तेऽपि सर्वत्र तांस्तान् प्रदेशान् पश्यन्तो **गङ्गा**तटं ययुः । तत्र कुसुमपाटलं[3] पाटलितरुं प्रेक्ष्य तच्छोभाचमत्कृतास्तच्छाखायां निषण्णं चाषं व्यात्तवदनं स्वयं निपतत्कीटकपेटकमालोक्य चेतस्यचिन्तयन्–अहो ! यथाऽस्य चाषपक्षिणो मुखे स्वयमेत्य कीटाः पतन्तः सन्ति तथात्र स्थाने नगरे निवेशितेऽस्य राज्ञः स्वयं श्रियः समेष्यन्ति । तच्च ते राज्ञे व्यजिज्ञपन् । सोऽप्यतीव प्रमुदितः । तत्रैको जरन्नैमित्तिको व्याहरद्–देव ! पाटलातरुरयं न सामान्यः । पुरा हि ज्ञानिना कथितम्–

पाटलाद्रुः पवित्रोऽयं महामुनिकरोटिभूः । एकावतारोऽस्य मूलजीवश्चेति विशेषतः ॥ २ ॥

राज्ञोक्तम्–कतमः स महामुनिः ? । तदनु जगाद नैमित्तिकः–श्रूयतां देव ! । **उत्तरमथुरा**यां वास्तव्यो **देवदत्ता**ख्यो वणिक्पुत्रो दिग्यात्रार्थं **दक्षिणमथुरा**मगमत् । तत्र तस्य **जयसिंह**नाम्ना वणिक्पुत्रेण सह सौहृदमभवत् । अन्यदा तद्गृहे भुञ्जानोऽ**न्निका**नाम्नीं तज्जामिं स्थाले भोजनं[4] परिवेष्य वातव्यजनं कुर्वन्तीं रम्यरूपामालोक्य तस्यामनुरक्तो द्वितीयेऽह्नि [5]चरकान् प्रेष्य **जयसिंहं** तामयाचिष्ट । सोऽभ्यधाद्–अहं तस्मा एव ददे [6]स्वस्वसारं यो मद्गृहाद्दूरे न भवति । प्रत्यहं तां तं च यथा पश्यामि; यावदपत्यजन्म । तावद्यदि मद्गृहे स्थाता [7]तदा तस्य जामिं दास्यामीति । **देवदत्तो**ऽप्योमित्युक्त्वा शुभेऽह्नि तां पर्यणैषत् । तया सह भोगान् भुञ्जतस्तस्यान्यदा पितृभ्यां लेखः प्रैषि[8] । तं[9] वाचयतस्तस्य नेत्रे वर्षितुमश्रूणि[10] प्रवृत्ते । ततस्तया हेतुं पृष्टोऽपि यावन्नाब्रवीत् तावत्तयाऽऽदाय लेखः स्वयं वाचितः । तत्र चेदं [11]लिखितमासीद् गुरुभ्याम्–यद्वत्स ! आवां वृद्धौ निकटनिधनौ; यदि च नौ जीवन्तौ दिदृक्षसे तदा द्रागागन्तव्यमिति । तदनु सा पतिमाश्वास्य स्वभ्रातरं हठादप्यन्वजिज्ञपत् । भर्त्रा सह प्रतस्थे चोत्तरमथुरां प्रति सगर्भा । क्रमान्मार्गे [12]सा [13]सूनुमसूत । नामास्य पितरौ करिष्यत इति देवदत्तोक्ते परिजनस्तमर्भकम**न्निकापुत्र** इत्युल्लापितवान् । क्रमेण देवदत्तोऽपि स्वपुरीं प्राप[14] । पितरौ प्रणम्य च शिशुं तयोरार्पयत् । **सन्धीरणे**त्याख्यां तौ [15]नप्तुः पुनश्चक्राते, तथाप्यन्निकापुत्र इत्येव पप्रथेऽसौ । वर्द्धमानश्च प्राप्ततारुण्योऽपि भोगांस्तृणवद्विधूय **जयसिंहाचार्य**पार्श्वे दीक्षामग्रहीत्[16] । गीतार्थीभूतः प्रापदाचार्यकम् । अन्यदा विहरन् सगच्छो वार्द्धके **पुष्पभद्र**पुरं **गङ्गा**तटस्थं प्राप्तः । तत्र **पुष्पकेतु**र्नृपस्तद्देवी **पुष्पवती** तयोर्युग्मजौ **पुष्पचूलः पुष्पचूला** चेति पुत्रः पुत्री चाभूताम् । तौ च सह वर्द्धमानौ क्रीडन्तौ च परस्परं प्रीतिमन्तौ जातौ । राजा दध्यौ–यद्येतौ दारकौ वियुज्येते तदा नूनं न[17] जीवतः; अहमप्यनयोर्विरहं सोढुमनीशस्तस्मादनयोरेव विवाहं करोमीति ध्यात्वा मन्त्रिमित्र[18]पौरांश्छलेनापृच्छद्–भो ! यद्रत्नमन्तःपुरे उत्पद्यते तस्य कः प्रभुः ? । तैर्विज्ञप्तम्–देव ! अन्तःपुरोत्पन्नस्य किं वाच्यम्, यद्देशमध्ये[19]ऽप्युत्पद्यते रत्नं तद्राजा यथेच्छं विनियुङ्क्ते । कोऽत्र [20]बाधः ? । तच्छ्रुत्वा स्वाभिप्रायं निवेद्य देव्यां वारयन्त्यामपि तयोरेव सम्बन्धमघटयन्नृपः । द्वौ दम्पती भोगान् भुङ्क्तः स्म । राज्ञी तु पत्यपमाने[21] वैराग्याद्व्रतमादाय स्वर्गे देवोऽभूत् । अन्यदा पुष्पकेतौ कथाशेषे **पुष्पचूलो** राजाऽभूत्[22] । स च देवः प्रयुक्तावधिस्तयोरकृत्यं ज्ञात्वा स्वप्ने **पुष्पचूला**या नरकानदर्शयत्तद्दुःखानि च । सा च प्रबुद्धा भीता च पत्युः सर्वमावेदयत् । सोऽपि

* C आदर्शे इदं पद्यं नास्ति । 1 B °सनादीनि । 2 B P अमात्या । 3 P कुसुमपाटलिं । 4 P भोज्यं । 5 P D वरकान् । 6 A C 'स्व' नास्ति । 7 B D Pa 'तदा' नास्ति । 8 P प्रेषितः । 9 P 'तं' नास्ति । 10 B D °अश्रु । 11 P लेखित° । 12 B 'सा' नास्ति । 13 P सुत° । 14 B C प्राप्य । 15 B पुण° । 16 P कक्षीचक्रे । 17 B नास्ति 'न' । 18 B मन्त्रिमन्त्रि°; P मन्त्रिमन्त्र° । 19 Pab मध्येषु । 20 P बाध्यः । 21 B D °पमान° । 22 P जज्ञे ।

शान्तिकमचीकरत् । स च देवः प्रतिनिशं[1] नरकांस्तस्या अदर्शयत् । राजा तु सर्वांस्तीर्थिकानाहूय पप्रच्छ–कीदृशा नरकाः स्युरिति । कैश्चिद्गर्भवासः, कैश्चन गुप्तिवासः, कैरपि दारिद्र्यम्, अपरैः पारतन्त्र्यमिति तैर्नरका[2] आचचक्षिरे । राज्ञी तु[3] मुखं मोटयित्वा तान् विसंवादिवचसो व्यस्राक्षीत् । अथ नृपो**ऽन्निकापुत्राचार्य**माकार्य तदेवाप्राक्षीत् । तेन तु यादृशान् देव्यदर्शयत्तादृशा एवोक्ता नरकाः । राज्ञी प्रोचे–भगवन् ! भवद्भिरपि किं स्वप्नो दृष्टः ? । कथमन्यथेत्थं वित्थ ? । सूरिरवदद्–भद्रे ! जिनागमात्सर्वमवगम्यते । **पुष्पचूला**ऽवोचत्–भगवन् ! केन कर्मणा ते प्राप्यन्ते । गुरुरगृणाद्–भद्रे ! महारम्भपरिग्रहैर्गुरुप्रत्यनीकतया पञ्चेन्द्रियवधान्मांसाहाराच्च तेष्वङ्गिनः पतन्ति । क्रमेण स सुरस्तस्यै स्वर्गानदर्शयत् स्वप्ने । राज्ञा तथैव पाखण्डिनः पृष्टास्तानपि व्यभिचारिवाचो विसृज्य भूपस्तमेवाचार्यं स्वर्गस्वरूपमप्राक्षीत् । तेनापि यथावत्तत्रोदिते स्वर्गाप्तिकारणमपृच्छद्राज्ञी । ततः सम्यक्त्वमूलौ गृहि-यतिधर्मावादिशन्मुनीशः । प्रतिबुद्धा च सा लघुकर्मा । नृपमनुज्ञापयति स्म प्रव्रज्यायै । सोऽप्यूचे–यदि मद्गृह एव [4]भिक्षामादत्से तदा प्रव्रज । तयोरीकृते नृपवचसि, सा सोत्सवमभूत्तस्याचार्यस्य शिष्या गीतार्था च । अन्यदा भाविदुर्भिक्षं श्रुतोपयोगात् ज्ञात्वा सूरिर्गच्छं देशान्तरे प्रैषीत् । स्वयं तु परिक्षीणजङ्घाबलस्तत्रैवास्थात्; भक्तपानं च **पुष्पचूला**ऽन्तःपुरादानीय गुरवेऽदात् । क्रमाच्चस्या गुरुशुश्रूषाभावनाप्रकर्षात् क्षपकश्रेण्यारोहात्केवलज्ञानमुत्पेदे । तथापि गुरुवैयावृत्यान्न निवृत्ता । यावद्धि गुरुणा न ज्ञातं[5] यदयं केवलीति तावत् पूर्वप्रयुक्तं विनयं केवल्यपि नात्येति । सापि यद्यद्गुरोरुचितं रुचितं च तत्तदन्नादि सम्पादितवती । अन्यदा वर्षत्यब्दे सा पिण्डमाहरद् । गुरुभिरभिहितम्–वत्से ! श्रुतज्ञाऽसि, किमिति वृष्टौ त्वयाऽऽनीतः पिण्डः ? इति । साऽभाणीद्–भगवन् ! यत्राध्वनि अप्कायोऽचित्त एवासीत्तेनैवायासिषमहम्; कुतः प्रायश्चित्तापत्तिः ? । गुरुराह–छद्मस्थः कथमेतद्वेद ? । तयोचे केवलं ममास्ति । ततो मिथ्या मे दुष्कृतम्; केवल्याशातित इति ब्रुवन्नपृच्छत्तां गच्छाधिपः–किमहं सेत्स्यामि न वेति ? । केवल्यूचे मा कृद्ध्वमधृतिम्; गङ्गामुत्तरतां वो भविष्यति केवलम् । ततो गङ्गामुत्तरीतुं लोकैः सह नावमारोहत्सूरिः । यत्र यत्र स न्यषीदत्तत्र तत्र नौर्मंक्तुमारेभे । तदनु मध्यदेशासीने मुनीने सर्वापि नौर्मंक्तुं लग्ना । ततो लोकैः सूरिर्जले क्षिप्तः । दुर्भगीकरणविराद्धया प्राग्भवपत्न्या व्यन्तरीभूतयाऽन्तर्जलं शूले निहितः । शूलप्रोतोऽप्ययम[6]प्कायजीवविराधनामेवा[7]शोचयन्नाऽऽत्मपीडाम् । क्षपकश्रेण्यारूढोऽन्तकृत्केवलीभूय सिद्धः । आसन्नैः सुरैस्तस्य निर्वाणमहिमा चक्रे । अत एव तत्तीर्थं **प्रयाग** इति जगति पप्रथे । प्रकृष्टो यागः पूजा अत्रेति प्रयाग [8]इत्यन्वर्थः । शूलाप्रोतत्वगतानुगतिकतया चाद्यापि परसमयिनः क्रकचं स्वाङ्गे दापयन्ति तत्र । वटश्च तत्र गणशस्तुरुष्कैश्छिन्नोऽपि मुहुर्मुहुः प्ररोहति ।

सूरेः करोटिर्यादोभिस्त्रोट्यमानाऽपि जलोर्मिभिर्नदीतीरं नीता । इतस्ततो लुठन्ती च शुक्तिवन्नदीतटे क्वापि गुप्तविषमे प्रदेशे विलग्य तस्थौ । तस्य च करोटिकर्परस्यान्तः कदाचित्पाटलाबीजं न्यपतत् । क्रमात् करोटिकर्परं भित्त्वा दक्षिणहनोः पाटलातरुरुद्गतो विशालश्चायमजनि । तदत्र पाटलिद्रोः प्रभावाच्चाष[9]निमित्ताच्च नगरं निवेश्यताम्, आशिवाशब्दं च सूत्रं दीयताम् । ततो राज्ञाऽऽदिष्टा नैमित्तिकाः पाटलां पूर्वतः कृत्वा पश्चिमाम्, तत उत्तराम्, ततः पुनः पूर्वाम्, ततो दक्षिणां शिवाशब्दाऽवधि गत्वा [10]सूत्रमपातयन् । एवं चतुरस्रः पुरस्य सन्निवेशो बभूव । तत्राङ्किते प्रदेशे पुरमचीकरन्नृपः । तच्च पाटला[11]नाम्ना **पाटलिपुत्रं** पत्तनमासीत् । असमकुसुमबहुलतया च **कुसुमपुर**मित्यपि रूढम् । तन्मध्ये श्रीनेमिचैत्यं राज्ञाऽकारि । तत्र पुरे गजाश्वरथशालाप्रासादसौधप्राकारगोपुरपण्यशालासत्राकारपौषधागाररम्ये चिरं राज्यं जैनधर्मं चापालय**दुदायि**नरेन्द्रः ।

तस्मिन्नुपात्तपौषधेऽन्यदोदायिमारकेण स्वर्गातिथ्यं प्रापिते नापितगणिकासुतो **नन्दः** श्री**वीर**मोक्षात्षष्टिवत्सर्यामतीतायां क्षितिपतिरजनि । तदन्वये सप्त **नन्दा** नृपा जाताः । नवमनन्दे राजनि परमार्हत**कल्पका**न्वयी **शकटालो**

---

1 P प्रतिदिशं । 2 B नारकाः । 3 P नास्ति 'तु' । 4 B दिक्षा° । 5 P ज्ञानं । 6 B °ऽप्यप्काय° । 7 B °विराधनाशोच° । 8 'इत्यन्वर्थः' नास्ति A B D आदर्शे । 9 P चाप° । 10 A B C नास्ति 'सूत्र' । 11 A 'पाडली'; P 'पाटली' ।

मभ्यभूत् । तस्य पुत्रौ **स्थूलभद्र-श्रियकौ;** सप्त च पुत्र्यः–**यक्षा-यक्षदत्ता-भूता-भूतदत्ता-एणा-रेणा-वेणा**ख्याः क्रमादेकादिसप्तान्तवार[1]श्रुतपाठिन्योऽजनिषत ।

तत्रैव पुरे **कोशा** वेश्या, तज्जामिरु**पकोशा** चाभूताम् ।

तत्रैव च **चाणिक्यः**[2] सचिवो **नन्दं** समूलमुन्मूल्य **मौर्यवंश्यं** श्री**चन्द्रगुप्तं** न्यवीविशद्विशांपतित्वे । तद्वंशे तु **बिन्दुसारोऽशोकश्रीः कुणाल**[3]स्तत्सूनुस्त्रिखण्ड**भरता**धिपः परमार्हतोऽनार्यदेशेष्वपि प्रवर्तितश्रमण-विहारः **सम्प्रति**महाराजश्चाभवत् ।

मूलदेवः सकलकलाकलापज्ञः, **अचल**सार्थवाहो महाधनी, **देवदत्ता** च गाणिक्यमाणिक्यं तत्रैव प्रागवसन् ।

उमास्वातिवाचकश्च **कौभीषणि**गोत्रः **पञ्चशतसंस्कृतप्रकरण**प्रसिद्धस्तत्रैव **तत्त्वार्थाधिगमं** सभाष्यं व्यरचयत् । चतुरशीतिर्वादशालाश्च तत्रैव विदुषां परितोषाय पर्यणंसिषुः ।

तत्रैव चोत्तुङ्गतरङ्गोत्संगितगगनाङ्गणा परिवहति महानदी **गङ्गा** ।

तस्यैव चोत्तरा[4] दिशि विपुलं वालुकास्थलं नातिदूरे, यत्रारुह्य **कल्की प्रातिपदाचार्य**प्रमुखसंघश्च सलिलप्लवान्निस्तरीता ।

तत्रैव च भविष्यति **कल्कि**नृपति**र्धर्मदत्त-जितशत्रु-मेघघोषा**दयश्च तद्वंश्याः ।

तत्रैव च विद्यन्तेऽन्तर्निहित**नन्द**सत्कनवनवतिद्रव्यकोट्यः, पञ्च स्तूपाः, येषु धनधनायया श्री**लक्षणावती**सुरत्राणस्तांस्तानुपाक्रमतोपक्रमांस्ते च तत्सैन्योपप्लवायैवाकल्पन्त ।

तत्रैव विहृतवन्तः श्री**भद्रबाहु-महागिरि-सुहस्ति-वज्रस्वा**म्यादयो युगप्रवरागमाः । विहरिष्यन्ति च **प्रातिपदा**चार्यादयः ।

तत्रैव महाधन**धनश्रेष्ठि**नन्दना **रुक्मिणी** श्री**वज्रस्वामिनं** पतीयन्ती प्रतिबोध्य तेन भगवता निर्लोभचूडामणिना प्रव्राजिता ।

तत्रैव **सुदर्शन**श्रेष्ठिमहर्षि**रभया**राज्ञ्या व्यन्तरीभूतया भूयस्तरमुपसर्गितोऽपि न क्षोभमभजत् ।

तत्रैव **स्थूलभद्र**महामुनिः षड्रसाहारपरः **कोशा**याश्चित्रशालायामुत्सादितमदन[5]मदश्चकार वर्षारात्रचतुर्मासीम् । सिंहगुहावासिमुनिरपि तं स्पर्द्धिष्णुस्तत्रैव **कोशया** तदानीतरत्नकम्बलस्य चन्दनिकाप्रक्षेपेण प्रतिबोध्य पुनश्चारुतरां चरणश्रियमङ्गीकारितः ।

तत्रैव द्वादशाब्दे दुर्भिक्षे गच्छे देशान्तरं प्रतिप्रोषिते सति **सुस्थिताचार्य**शिष्यौ क्षुल्लकावदृशीकरणाञ्जनाक्तचक्षुषौ **चन्द्रगुप्त**नृपतिना सह बुभुजाते कियन्त्यपि दिनानि । तदनु गुरूपत्युपालम्भाद् **विष्णुगुप्त** एव तयोर्निर्वाहमकरोत् ।

तत्रैव च श्री**वज्रस्वामी** पौरस्त्रीजनमनःसंक्षोभरक्षणार्थं प्रथमदिने सामान्यमेव रूपं विकृत्य, द्वितीयेऽह्नि चाहो ! नास्य भगवतो गुणानुरूपं रूपमिति देशनारसहृतहृदयजनमुखात् सँल्लापान् श्रुत्वाऽनेकलब्धिमान् सहजमप्रतिरूपं रूपं विकुर्व्य सौवर्णे सहस्रपत्रे निषद्य देशनां विधाय राजादिजनताममोदयत् ।

तस्यैव पुरस्य मध्ये सप्रभावातिशया मातृदेवता आसंस्तदनुभावात्तत्पुरं परैराग्रहवद्भिरपि न खलु ग्रहीतुमशाकि । **चाणिक्य**वचसोत्पाटिते पुनर्जनैर्मातृमण्डले गृहीतवन्तौ **चन्द्रगुप्त-पर्वतकौ** । एवमाद्यनेकसंविधानकनिधाने तत्र नगरेऽष्टादशसु विद्यासु स्मृतिषु पुराणेषु च द्वासप्ततौ कलासु **भरत-वात्सायन-चाणाक्य**लक्षणे रत्नत्रये मन्त्र-यन्त्र-

---

1 B °श्रुति । 2 P C चाणक्यः । 3 B D Pa कुणालसूनु° । 4 P उत्तरदिशि । 5 'मदन' नास्ति B C ।

तन्त्रविद्यासु रसवाद-धातु-निधिवादाञ्जन-गुटिका-पादप्रलेप-रत्नपरीक्षा-वास्तुविद्या-पुं-स्त्री-गजाश्ववृषभादिलक्षणेन्द्रजालादिग्रन्थेषु काव्येषु च नैपुणचणास्ते ते पुरुषाः प्रत्यूषुः प्रत्यूषकीर्तनीयनामधेयाः[1]।

आर्यरक्षितोऽपि हि चतुर्दशविद्यास्थानानि तत्रैवाधीत्य **दशपुर**मागमत्। आढ्यास्तु तत्रैवंविधा वसन्ति स्म, ये योजनसहस्रगमने यानि गजपदानि भवेयुस्तानि प्रत्येकं स्वर्णसहस्रेण पूरयितुमीशते। अन्ये च तिलानामाढक उप्ते प्ररूढे सुफलिते यावन्तस्तिलाः स्युस्तावन्ति हेमसहस्राणि बिभ्रति गृहे। अपरे च घनागमप्रवहद्गिरिनदीवारिपूरस्यैकदिनोत्पन्नेन गवां नवनीतेन संवरं विरचय्य पयोरयं स्खलयितुमलम्। अन्यतमे चैकाहजातजात्यनवकिशोराणां संमुद्धृतैः स्कन्धकेशैः **पाटलिपुत्रं** समन्ताद्वेष्टयितुमचेष्टन्त। इतरे च शालिरत्नद्वयं वेश्मनि बिभरांबभूवुस्तत्रैकशालिर्भिन्नभिन्नशालिबीजप्रसूतिमान्, अन्यश्च गर्दभिकाशालिर्यो लूनलूनः पुनः पुनः फलति।

गौडदेशावतंसस्य श्री**जिनप्रभ**सूरयः। कल्पं **पाटलिपुत्रस्य** रचयां चक्रुरागमात्॥ १॥

॥ इति श्रीपाटलिपुत्रपुरकल्पः ॥

॥ ग्रं० १२५; अ० १९ ॥

---

३७. श्रावस्तीनगरीकल्पः।

दुहसरितारणवत्थी **सावत्थी** सयलसुक्खपसवत्थी। नमिऊण **संभवजिणं** तीसे कित्तेमि[2] कप्पलवं॥ १॥

अत्थि[3] इहेव दाहिणद्ध**भारहे वासे** अगणिज्जगुणगणविसए **कुणालाविसए सावत्थी** नाम नयरी संपइकाले **महेठि**[4]त्ति रूढा वट्टइ[5]। जत्थ अज्जवि घणगहणवणमज्झट्ठियं सिरि**संभवनाह**पडिमाविभूसियं गयणग्गलग्गसिहरं पासट्ठियजिणबिंबमंडियदेवउलियाअलंकरियं जिणभवणं चिट्ठइ पायारपरियरियं। तस्स चेइयस्स दुवारअदूर[6]सामंते विल्लिरउल्लसिर[7]अतुल्लपल्लवसिणिद्धच्छाओ महल्लसाहाभिरामो रत्तासोअपायवो दीसइ। तस्स य जिणभवणस्स पओलीए जे कवाडसंपुडा[8] आसि ते **माणिभद्द**जक्खाणुभावाओ सूरिए अत्थमुविंते सयमेव लग्गंति म्ह; उदिए य दिणयरे सयमेव उग्घडंति म्ह। अन्नया कलिकालदुल्ललिअवसेण **अल्लावदीण**सुरत्ताणस्स मलिक्केण **हब्बस**नामगेणं **वहडाइच्च**नगराओ आगंतूण पायारभित्ति-कवाडाइं कइवयबिंबाणि अ भग्गाणि। मंदप्पभावा हि भवंति दूसमाए अहिट्ठायगा। तहा तस्सेव चेइयस्स सिहरे जत्तागयसंघेणं कीरमाणे ह्वणाइमहूसवे आगंतूण एगो चित्तगो उवविसइ। न य कस्स वि भयं जणेइ। जाव मंगलपईवे कए सट्ठाणमुवगच्छइ त्ति।

इत्थेव नयरीए बुद्धाययणं चिट्ठइ जत्थ **समुद्दवंसीया करावल्ल**[9]नरिंदकुलसंभूया रायाणो **बुद्ध**भत्ता अज्ज वि नियदेवयस्स पुरओ महग्घमुल्लं पल्लाणियं अलंकियं विभूसिअं महातुरंगमं ढोअंति।

जंगुलीविज्जा य इत्थेव **बुद्धेण** ससंपदाया पयासिया महप्पभावा।

इत्थेव निप्पज्जंति नाणाविहा साली; जेसिं सव्वसालिजाइण इक्किक्के कणंमि निक्खिप्पमाणे[10] आसिहं भरिज्जइ महंतं खोरयं।

इत्थेव भयवं **संभव**सामी चवण-जम्मण-निक्खमण-केवलनाणुप्पत्तिकल्लाणगाइं ससुरासुर-नर-भवणमणरंजणाइं अकारि।

कोसंबीपुरीए उप्पण्णो **जियसत्तु**निवसचिव**कासव**पुत्तो **जक्खा**[11]कुक्खिसंभूओ **कविलो** महरिसी

---

1 P मानधियः। 2 B कप्पेमि। 3 P नास्ति 'अत्थि'। 4 B महिठि; D महठि। 5 P विहाय नास्त्यन्यत्र 'वट्टइ'। 6 P नास्ति 'अदूर'। 7 B D °उल्लसिरं। 8 C °संपुटा। 9 C करावल°; P करवेल्ल°। 10 P °माणा। 11 D P जसा°।

जणयंमि विवन्ने विज्जाअहिज्जणत्थं एयं नयरिं[1] समागओ पिउमित्त**इंददत्त**उवज्झायसयासे **सालिभद्द**इब्भदासचेडीवयणेणं दोमासयसुवण्णकए वच्चंतो कमेण सयंबुद्धो जाओ। पडिबोहिऊण पंचसयचोरे सिद्धो अ।

इत्थेव **तिंदुगुज्जाणे** पंचसयसमण-अज्जिआसहस्सपरिवुडो पढमनिन्हवो **जमाली** ठिओ। **ढंकेण** कुंभयारेण पढमं नियसालासंठिआ भगवओ धूआ **पिअदंसणा** अज्जा साडियाए[2] एगदेसे अंगारं छोढूण 'कयमाणे कडि'त्ति **वीर**वयणं पडिवज्जाविया। तीए य सेससाहुणी साहुणो पडिबोहिया सामिं चेव अल्लीणा। एगो चेव **जमाली** विपडिवन्नो ठिओ।

इत्थेव **तिंदुगुज्जाणे केसीकुमार**समणो गणहरो भयवया **गोअम**सामिणा **कुट्ठयउज्जाणा**ओ आगंतूण परुप्परं संवायं च काउं पंचजामं धम्ममंगीकारिओ।

इत्थेव एगं वासारत्तं समणो भयवं **महावीरो** ठिओ खंडपडिमाए; **सक्केण** य पूइओ चित्तं तवोकम्ममकासी।

इत्थेव **जियसत्तु-धारिणी**पुत्तो **खंदगा**यरिओ उप्पन्नो जो पंचसयसीससहिओ **पालगेणं कुंभयारकडनयरे** जंतेण पीलिओ।

इत्थेव [3]**जियसत्तु**रायपुत्तो **भद्दो** नाम पव्वइत्ता पडिमं पडिवन्नो विहरंतो वेरज्जे[4] संपत्तो चोरिउ त्ति काऊण गहिओ रायपुरिसेहिं तच्छियंगो खारं दाउं कक्खडदब्भेहिं वेढिओ मुक्को सिद्धो अ।

जहा **रायगिहा**इसु तहा इत्थवि नयरीए **बंभदत्त**स्स हिंडी जाया।

इत्थेव **खुड्डग**कुमारो **अजियसेणा**यरियसीसो जणणीमयहरिया-आयरिय-उज्झायनिमित्तं बारसबारसवरिसाणि दव्वओ सामण्णे ठिओ। नट्टविहीए 'सुट्ठु गाइयं सुट्ठु वाइय'मिच्चाइ गीइयं सोउं जुवराय-सत्थवाह-भज्जा-मच्चमिंठेहिं समं पडिबुद्धो।

एवमाईणं अणेगेसिं संविहाणगरयणाणं उप्पत्तीए एसा नयरी रोहणगिरिभूमि त्ति।

सावत्थिमहातित्थस्स कप्पमेयं पढंतु विउसवरा। जिणपवयणभत्तीए इय भणइ **जिणप्पहो** सूरी ॥ १ ॥

॥ इति श्रीश्रावस्तीनगरीकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ४२ ॥

---

1 P नयरं। 2 P साडियाएग°। 3 C जय°। 4 D वेरग्गे।

३८. वाराणसीनगरीकल्पः ।

नत्वा तत्त्वाख्यायिनं **श्रीसुपार्श्वं श्रीपार्श्वं** च न्यञ्चितानिम्नविघ्नम् ।
वाराणस्यास्तीर्थरत्नस्य कल्पं जल्पामः सत्कल्पनापोढकल्पम् ॥ १ ॥

अस्त्यत्रैव दक्षिणे **भारतार्धे** मध्यमखण्डे **काशि**जनपदालङ्कृतिरुत्तरवाहिन्या त्रिदशवाहिन्याऽलङ्कृतधनकनकरत्नसमृद्धा **वाराणसी** नाम नगरी गरीयसामद्भुतानां निधानम् । **वरणा**नाम्नी सरिदऽ**सि**नाम्नी च द्वे अपि सरितावस्यां **गङ्गा**मनुप्रविष्टे इति **वाराणसी**ति नैरुक्तं नामास्याः प्रसिद्धम् ।

अस्यां सप्तमो जिनसत्तमः श्रीमान् **सुपार्श्वः**[1] ऐक्ष्वाकुप्रतिष्ठ**महीपति**महिष्याः **पृथ्वी**देव्याः कुक्षाववतीर्य जन्ममुपादित । त्रिभुवनजनवादितयशःपटहः स्वस्तिकलाञ्छितद्विशतधनुरुच्छ्रायकाञ्चनच्छायकायः, क्रमेण प्राज्यराज्यश्रियमनुभूय भूयः सांवत्सरिकं दानं प्रदाय, सहस्राम्रवणे दीक्षां च कक्षीकृत्य, विहृत्य छद्मस्थावस्थया नवमासीं केवलममलमासाद्य **संमेतगिरि**मेत्य निर्वृतः ।

त्रयोविंशश्च जिनेशः श्री**पार्श्वनाथ** ऐक्ष्वाका**श्वसेन**[2]रसेनसूनु**र्वामा**कुक्षिसम्भवः पन्नगलक्ष्म्या नवकरोच्छ्रायनीलच्छविवपुरात्तजन्मा**श्रमपदो**द्याने कौमार एवोपात्तचारित्रभारः केवलमुत्पाद्य तस्मिन्नेव शैले शैलेसीमवाप्य सिद्धः । अस्यामेव कुमारकाले भगवानेष एव **मणिकर्णिकायां** पञ्चाग्नितपस्तप्यमानात्**कमठ**ऋषेरायतौ भाविनीं विपदमात्मनो विविदिवानप्यन्तर्दारुणज्वलनज्वालाभिरर्धदग्धं दन्दशूकं जनन्या जनानां च संदर्श्य कुपथमथनमकार्षीत् ।

अस्यां काश्यपगोत्रौ चतुर्वेदौ षट्कर्मकर्मठौ समृद्धौ यमलभ्रातरौ **जयघोष-विजयघोषा**भिधानौ द्विजवरावभूताम् । एकदा **जयघोषः** स्नातुं गङ्गामगात् । तत्र पृदाकुणा[3] ग्रस्यमानं भेकमेकमालोकयत् । सर्पं च कुललेनोत्क्षिप्य भूमौ पातितमद्राक्षीत् । सर्पमाक्रम्य स्थितं 'कुललम्[4] । तमेव चण्डग्रासैः[5] खादन्तं सर्पं च कुललवशगतमपि चीत्कुर्वाणमण्डूकभक्षिणं[6] वीक्ष्य प्रतिबुद्धः । प्रव्रज्य क्रमादेकरात्रिकीं प्रतिमां प्रपद्य विहरन् पुनरिमां नगरीमागात् । मासक्षपणपारणके यज्ञपाटकं[7] प्रविष्टः । तत्र विप्रैर्भैक्षमदित्सुभिः प्रतिषिद्धः । ततः श्रुताभिहितचर्यामुपदिश्य भ्रातरं विप्रांश्च प्रत्यबूबुधत् । विरक्तो **विजयघोषः** प्राव्राजीत् । द्वावपि मोक्षं प्रापतुः ।

अस्यां **नन्दा**भिधानो नाविकस्तरपण्यजिघृक्षया मुमुक्षं **धर्मरुचिं** विराध्य, तस्य हुंकारेण भस्मीभूय, गृहकोकिल-हंस-सिंहभवान् यथासङ्ख्यं सभा-मृतगङ्गातीराञ्जनागिरिष्ववाप्य, तस्यैवानगारस्य तेजोनिसर्गेण विपद्य चास्यामेव पुर्यां बटुर्भूत्वा, तथैव निधनमधिगत्यास्यामेव राजा समजनिष्ट । जातिस्मरः सार्धं श्लोकमकरोत् । अन्येद्युस्तत्रैवागतं तमनगारं समस्यापूरणाद्विज्ञायाभययाचनपुरस्सरमुपगत्य च क्षमयित्वा परमार्हतोऽभूत् । सिद्धश्च **धर्मरुचिः** क्रमात् । सा चेयं समस्या--

गंगाए नाविओ **नंदो** सभाए घरकोइलो । हंसो मयंगतीराए सीहो अंजणपव्वए ॥ १ ॥
वाराणसीए बडुओ राया तत्थेव आयओ[8] । एएसिं घायगो जो उ सो इत्थेव समागओ ॥ २ ॥ इति ।

अस्यां **संवाहन**स्य नरपतेः सातिरेके कन्यासहस्रे सत्यपि परनृपतिष्टतनावेष्टितायां पुरि राज्यलक्ष्मीं गर्भस्थोऽप्यङ्ग**वीर**स्त्रातवान् ।

अस्यां मातङ्गऋषि**र्बल**नामा **मृतगङ्गा**तीरे लब्धजन्मा **तिन्दुको**द्याने स्थितवान् । गण्डी[9] तिन्दुकं च यक्षं गुणगणैर्हृतहृदयमकार्षीत् । **कौशलिक**नृपदुहिता च **भद्रा** मलक्लिन्नाङ्गं तमृषिं विलोक्य निष्ठ्यूतवती । ततस्तेन यक्षेणाधिष्ठिताङ्गी तेनैव मुनेर्वपुषि सङ्क्रम्य परिणीता त्यक्ता च मुनिना । ततो **रुद्रदेवेन** यज्ञपत्नी कृता । मासक्ष-

---

1 B श्रीसुपार्श्व । 2 P °अश्वसेनसूनु° । 3 C पृदाकुदा । 4 B C कुलालं । 5 B °ग्रासैः खासैः । 6 P °भक्षणं । 7 P यज्ञपाटं । 8 Pa C जाओ । 9 P गंठी ।

पणपारणे च भिक्षार्थमुपागतो मातङ्गमुनिर्द्विजातिभिरुपहस्य कदर्थ्यमानं तं प्रेक्ष्य **भद्र**योपलक्ष्य बोधितास्तं क्षमयामासुर्ब्राह्मणाः । प्रत्यलाभयंश्च भक्ताद्यैर्विदधे विबुधैर्गन्धोदकवृष्टिः पुष्पवृष्टिर्दुन्दुभिवादनं वसुधारापातश्च ।

अस्यां–**वाणारसी**पकोट्ठए **पासे गोवालि भद्दसेणे** य । **णंदसिरी** पउमद्दह **रायगिहे सेणिए वीरे** ॥ १ ॥

वाणारसी य नयरी अणगार**धम्मघोस-धम्मजसे** । मासस्स य पारणए गोउल गंगा य अणुकंपा ॥२॥

एतदा**वश्यकनिर्युक्ति**स्थं संविधानकद्वयमजनि । तथा हि–

अत्रैव पुर्यां **भद्रसेनो** जीर्णश्रेष्ठी । तस्य भार्या **नन्दा** । तयोः पुत्री **नन्दश्री**र्वरकरहिता । अत्रैव **कोष्ठके** चैत्येऽन्यदा **पार्श्वस्वामी** समवासरत् । **नन्दश्रीः** प्राव्राजीद् । **गोपाल्या**र्यायाः शिष्यतयार्पिता । सा च पूर्वमुग्रं विहृत्य पश्चादवसन्नीभूता हस्तपादाद्यक्षालयत् । साध्वीभिर्वार्यमाणा तु[1] विभक्तायां वसतौ स्थिता । तदनालोच्य मृता **क्षुल्लहिमवति** पद्मद्रहे[2] **श्रीदेवी** जज्ञे देवगणिका । भगवतः श्री**वीर**स्य **राजगृहे** समवसृतस्याग्रे नाट्यविधिमुपदर्श्य गता । अन्ये त्वाहुः–करिणीरूपेण वातनिसर्गमकरोत् । **श्रेणिके**न तस्याः स्वरूपे पृष्टे भगवानाख्यत् तस्याः पूर्वभवावसन्नतावृत्तम् ।

अत्रैव पुर्यां **धर्मघोष-धर्मयश**सौ द्वावनगारौ वर्षारात्रमवस्थाताम् । तौ[3] मासं मासं क्षपणेनास्ताम् । अन्यदा चतुर्थपारणके तृतीयपौरुष्यां विहाराय प्रस्थितौ शारदातपेनार्तौ तृषितौ **गङ्गा**मुत्तरन्तौ मनसापि नाम्भ ऐच्छतामनेषणीयमिति । देवता तद्गुणावर्जिता गोकुलं[4] विकुर्व्य गङ्गोत्तीर्णौ तौ दध्यादिभिरुपन्यमन्त्रयत् । तौ दत्तोपयोगौ ज्ञातवन्तौ यथेयं मायेति प्रत्यषेधताम् । पुरःप्रस्थितयोस्तयोरनुकम्पया बार्द्दलं[5] व्यकार्षीद्देवता । तौ चार्द्रायां भूमौ शीतलवाताप्यायितौ ग्रामं प्राप्य शुद्धोञ्छमादिषातामिति ।

श्रीम**दयोध्याया**मिक्ष्वाकुवंश्यः श्री**हरिश्चन्द्रो** महानरेन्द्र**स्त्रिशङ्कु**पुत्र **उशीनर**नृपसुतया **सुतारा**देव्या **रोहिताश्वेन**[6] च पुत्रेण सहितः सुखमनुभवंश्चिरमसात्काश्यपीम् । एकदा सौधर्माधिपतिर्दिवि दिविजपरिषदि तस्य सत्त्ववर्णनामकरोत् । तदश्रद्दधानावुभौ गीर्वाणौ **चन्द्रचूड-मणिप्रभ**नामानौ वसुन्धरामवतीर्णौ । तयोरेको वनवराहरूपं विकृत्या**ऽयोध्या**परिसरस्थित**शक्रावतार**चैत्याश्रमं ससंरम्भं भङ्क्तुं प्रववृते । अन्येद्युः सदसि सिंहासनस्थितो **हरिश्चन्द्र**महीन्द्रस्तमाश्रमोपप्लवं शूकरोपज्ञं श्रुत्वा तत्र गत्वा बाणप्रहारेण तं वराहं प्रहतवान्[7] । तस्मिंश्च सशरेऽन्तर्हिते गर्हितेतरचरितः स यावत्तं [8]प्रदेशमविशत्तावत्तत्र हरिणीं स्वबाणप्रहतां, तस्याः स्फुरन्तं च गलितं गर्भं निभाल्य,[9] **कपिञ्जल-कुन्तल**मित्राभ्यां सह पर्यालोच्य, भ्रूणघ्नं स्वं शोचयन् प्रायश्चित्तग्रहणार्थं कुलपतिमुपसृत्य नमस्कृत्य गृहीत्वा चाशिषं यावदास्ते; तावद् **वञ्चना**नामकुलपतिकन्यका तुमुलमतुलमकार्षीत् । व्याहार्षीच्च–तात ! अनेन पापीयसा मन्मृगी हता; तन्मरणे च[10] मम [11]मन्मातुश्च मरणं भविष्यतीति निशम्य कुपितः कुलपतिर्नृपतये । ततस्तत्पदोर्निपत्य नरपतिरलपत्–प्रभो ! सकलामपि वसुधां प्रतिगृह्य मामेतस्मादेनसो मोचय; **वञ्चना**याश्च मरणनिवारणाय हेमलक्षं दास्यामीति । तेनाप्योमिति प्रतिपन्नवति **कौटल्य**मृषिं सह कृत्वा नृपः स्वपुरीमागात् । ततो **वसुभूते**र्मन्त्रिणः **कुन्तल**स्य च सुहृदस्तत्स्वरूपमावेद्य कोशान्निष्कलक्षमानाययत् । ततः स्मित्वा तापसः **सांगारको**[12] व्याकरोत्–असभ्यं जलधिमेखलामखिलामिलां त्वमदाः । [13]ततोऽस्मदीयमेव वस्त्वसभ्यमेवं दीयत[13] इति कोऽयं न्यायः । अथ **वसुभूतिः**[14] किमपि ब्रुवाणः कुलपतिना शापादकारि कीरः; **कुन्तल**स्तु[15] शृगालः । तौ च वनमध्येऽवसताम् । राजा च मासमवधिं मार्गयित्वा **रोहिताश्व**मङ्गुलौ लगयित्वा **सुतार**या सह **काशीं** प्रति प्राचलत् । क्रमादिमां पुरीं प्राप्य संस्थायां स्थितः । तत्र शिरसि तृणं दत्वा **वज्रहृदय**विप्रहस्ते देवीं कुमारं च हेमषट्सहस्र्या विविक्रिये[16] । सा तत्र खण्डनपेषणादि-

---

1 P पि । 2 P Pa पद्महदे । 3 P तौ द्वौ । 4 P गोकुलानि । 5 P वार्द्दलकं । 6 B रोहिताश्वेन । 7 B प्रहीतवान् । 8 B Pa प्रवेश° । 9 Pa निर्भाल्य । 10 B 'च' नास्ति । 11 P मम मातु° । 12 P सांगाको । 13 P ततोऽस्मदीयमेव चास्य दीयते; Pa ततोऽस्म दीयते । 14 C वसुभूतिं । 15 B कुन्तलस्य । 16 PPa विचिक्रिये ।

कर्माणि निर्ममे । दारकश्च समित्पत्रपुष्पफलाद्याजहार । राज्ञि चिन्ताचान्तचेतसि कुलपतिः कनकं मार्गयितुमगात् । दत्तं तस्मै राज्ञा काञ्चनसहस्रषट्कम् । कुलपतौ स्तोकमिति कुप्यत्यङ्गारकोऽवोचद्–भोः ! किमर्थं पत्नीमपत्यं च व्यक्रीणीथाः । अत्रत्यं **चन्द्रशेखरं** नरेश्वरं किं न याचसे वसुलक्षम् । राज्ञोक्तम्–असत्कुले नेदं सिध्यति । डोम्बस्यापि वेश्मनि कर्मकरत्वमुररीकृत्य दास्यामि तव काञ्चनलक्ष[1]मिति । ततः कर्म कर्तुं [2]प्रवृत्तश्चण्डालेन श्मशानरक्षणे नियुक्तः । ततः परं ताभ्याममराभ्यामकारि मारिः पुर्याम् । यथा भूपादेशानीतमान्त्रिकेण राक्षसीप्रवादमारोप्य **सुतारा** मण्डलमानीय रासभमारोपिता, यथा शुकः पावके दत्तझम्पोऽपि न दग्धः, यथा पितृवने वटोत्कलम्बितं नरं तटे च रुदन्तीं सुदतीं विलोक्य नराद्विद्याधरापहारवृत्तमाकर्ण्य तमुन्मोच्य तत्स्थाने **हरिश्चन्द्रः** स्वं नियुज्य होमकुण्डे[3] स्वमांसखण्डानि आर्पयत्, यथा [4]कुण्डमध्यान्मुखं निर्गतं शृगालश्चारटत्, तापसेन यथा व्रणरोहणमवनीपतेरकारि, यथा च पुष्पाणि गृह्णन् **रोहिताश्वो** निःशूकं[5] दन्दशूकेन दष्टः[6] संस्कारयितुमानीताच्च तस्मात्कण्टिकमयाचिष्ट नृपतिः, यथा[7] च सत्त्वपरीक्षानिर्वहणप्रमुदितप्रकटितनिजरूपत्रिदशकृतपुष्पवृष्टिजयजयध्वनिः सर्वजनैः प्रशंसितः सात्त्विकशिरोमणिरिति, यथा च **वह्निमुख**मुखाद्वराहादिपुष्पवृष्टिपर्यन्तं दिव्यमायाविलसितमवबुध्य यावच्चेतसि चमत्कृतस्तावत्स्वं स्वपुर्यां सदसि सिंहासनस्थं सपरिवारमपश्यत् । तदेतद्देवीकुमारविक्रयादि दिव्यपुष्पवर्षावसानं श्री**हरिश्चन्द्र**स्य चरित्रं सत्त्वपरीक्षानिकषोऽस्यामेव पुर्यामजनि जनजनितविस्मयम् ।

यच्च काशीमाहात्म्ये प्रथमगुणस्थानीयैरभिधीयते–यद्[8] वाराणस्यां कलियुगप्रवेशो नास्ति । तथाऽत्र प्राप्तनिधनाः कीटपतङ्गभ्रमरादयः कृतानेकचतुर्विधहत्यादिपाप्मानोऽपि मनुष्यादयो वा शिवसायुज्यमिति प्रतीत्यादियुक्तिरिक्तं तदस्माभिः श्रद्धातुमपि दुःशकं किं पुनः कल्पे जल्पितुमित्युपेक्षणीयमेवैतत् ।

धातुवाद-रसवाद-खन्यवाद-मन्त्रविद्याविदुराः शब्दानुशासन-तर्क-नाटका-ऽलङ्कार-ज्योतिष-चूडामणि-निमित्तशास्त्र-साहित्यादिविद्यानिपुणाश्च पुरुषा अस्यां परिव्राजकेषु जटाधरेषु योगिषु ब्राह्मणादिचातुर्वर्ण्ये च नैके रसिकमनांसि प्रीणयन्ति । चतुर्दिगन्तदेशान्तरवास्तव्याश्चास्यां जना दृश्यन्ते सकलकलापरिकलनकौतूहलिनः ।

वाराणसी चेयं सम्प्रति चतुर्धा विभक्ता दृश्यते । तद् यथा–**देववाराणसी,** यत्र **विश्वनाथप्रासादः** । तन्मध्ये चाश्मनं जैनचतुर्विंशतिपट्टं पूजारूढमद्यापि विद्यते । द्वितीया **राजधानी वाराणसी** यत्राद्यत्वे यवनाः । तृतीया **मदनवाराणसी;** चतुर्थी **विजयवाराणसी**ति । लौकिकानि च तीर्थानि अस्यां क इव[9] परिसंख्यातुमीश्वरः ।

अन्तर्वणं दन्तखातं[10] तडागं निकषा श्री**पार्श्वनाथ**स्य चैत्यमनेकप्रतिमाविभूषितमास्ते । अस्याममलपरिमलभराकृष्टभ्रमरकुलसङ्कुलानि सरसीषु नानाजातीयानि कमलानि ।

अस्यां च प्रतिपदमकुतोभयाः सञ्चरिष्णवो निचाय्यन्ते शाखामृगा मृगधूर्ताश्च ।

अस्याः क्रोशत्रितये **धर्मेक्षा**नामसंनिवेशो यत्र बोधिसत्त्वस्योच्चैस्तरशिखरचुम्बितगगनमायतनम् ।

अस्याश्च सार्धयोजनद्वयात्परत**श्चन्द्रावती** नाम नगरी, यस्यां श्री**चन्द्रप्रभो**गर्भावतारादिकल्याणिकचतुष्टयमखिलभुवनजनतुष्टिकरमजनिष्ट ।

गङ्गोदकेन च जिनद्वयजन्मना च प्राकाशि **काशिनगरी** न गरीयसी कैः ।
तस्या इति व्यधित कल्पमनल्पभूतेः श्रीमान् **जिनप्रभ** इति प्रथितो मुनीन्द्रः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीवाराणसीनगरीकल्पः ॥

॥ ग्रं० ११३, अ० २३ ॥

1 Pa 'लक्ष' नास्ति । 2 'प्रवृत्तः' नास्ति Pa । 3 B होमखण्डैः । 4 BD कुण्डमुखा° । 5 P निःशूक° । 6 BPa दष्टः । 7 P 'यथा' नास्ति । 8 B 'यद्' नास्ति । 9 B P इह । 10 P दण्डख्यातं ।

३९. श्रीमहावीरगणधरकल्पः ।

सिरिवीरस्स गणहरे इक्कारस जन्नमाहणे नमिउं । तेसिं चिअ कप्पलवं भणामि समयाणुसारेण ॥ १ ॥
नामं ठाणं जणया जणणीउ जम्मरिक्ख-गुत्ताइं । गिहिपरिआउ संसय-वयदिणं[1]-पुरं-देस-कालो य ॥ २ ॥
वयपरिवारो छउमत्थ-केवलित्तेसु वरिससंखा य । रूवं लद्धी[2] आउं सिवठाण तवु त्ति दाराइं ॥ ३ ॥

१. तत्थ गणहराण नामाइं–१ **इंदभूई**, २ **अग्गिभूई**, ३ **वाउभूई**, ४ **विउत्तो**, ५ **सुधम्मसामी**, ६ **मंडिओ**, ७ **मोरिअपुत्तो**, ८ **अकंपिओ**, ९ **अचलभाया**, १० **मेअज्जो**, ११ **पभासो** य ।

२. इंदभूइप्पमुहा तिन्नि सहोअरा **मगह**देसे **गोब्बर**गामे उप्पन्ना । विअत्तो सुहम्मो य दो वि **कोल्लाग**-संनिवेसे । मंडिओ मोरिअपुत्तो अ दो वि **मोरिअ**संनिवेसे । अकंपिओ **मिहिलाए** । अयलभाया **कोसलाए** । मेअज्जो **वच्छ**देसे **तुंगिअ**संनिवेसे । पभासो **रायगिहे** ।

३. जणओ तिण्हं सोअराणं **वसुभूई** । विअत्तस्स **धणमित्तो** । अज्जसुहम्मस्स **धम्मिलो** । मंडिअस्स **धणदेवो** । मोरिअपुत्तस्स **मोरिओ** । अकंपिअस्स **देवो** । अयलभाउणो **वसू**[3] । मेअज्जस **दत्तो** । पभासस्स **बलो**[4] ।

४. जणणी तिण्हं भाउआणं[5] **पुहवी** । विअत्तस्स **वीरुणी** । सुहम्मस्स **भद्दिला** । मंडिअस्स **विजयदेवा**[6] । मोरिअपुत्तस्स सा चेव । जओ **धणदेवे** परलोअं गए **मोरिएण** सा संगहिआ; अविरोहो अ तंमि देसे । अकंपिअस्स **जयंती** । अयलभाउणो **नंदा** । मेअज्जस्स **वरुणदेवा** । पभासस्स **अइभद्द**त्ति ।

५. नक्खत्तं–इंदभूइणो जिट्ठा, अग्गिभूइणो कित्तिआ, वाउभूइणो साई, विअत्तस्स सवणो, सुहम्मसामिणो उत्तरफग्गुणीओ, मंडिअस्स महाओ, मोरिअपुत्तस्स मिगसिरं, अकंपिअस्स उत्तरासाढा, अयलभाउणो मिगसिरं, मेअज्जस्स अस्सिणी, पभासस्स पूसु त्ति ।

६. तिण्णि भाउणो **गोअम**गुत्ता, विअत्तो **भारद्दाय**सगुत्तो, सुहम्मो **अग्गिवेसायण**सगुत्तो, मंडिओ **वासिट्ठ**सगुत्तो, मोरिअपुत्तो **कासव**गुत्तो, अकंपिओ **गोअम**सगुत्तो, अयलभाया **हारिअ**सगुत्तो, मेअज्जो पभासो अ **कोडिण्ण**सगुत्तु त्ति ।

७. गिहत्थपरिआओ–इंदभूइणो पंचासं वासाइं, अग्गिभूइस्स छायालीसं[7], वाउभूइस्स बायालीसं, वियत्तस्स पन्नासं, सुहम्मसामिस्स वि पन्नासं, मंडियस्स तेवण्णा, मोरियपुत्तस्स पणसट्ठी, अकंपियस्स अडयालीसं, अयलभाउणो छायालीसं, मेअज्जस्स छत्तीसं, पभासस्स सोलस त्ति ।

८. संसओ–इंदभूइस्स जीवे । भगवया महावीरेणं छिन्नो । अग्गिभूइणो कम्मे । वाउभूइणो तज्जीव-तस्सरीरे । विअत्तस्स पंचमहाभूएसु । सुहम्मसामिणो जो जारिसो इह भवे, परभवे वि सो तारिसो चेव त्ति । मंडिअस्स बंध-मुक्खेसु । मोरिअपुत्तस्स देवेसु । अकंपिअस्स नरएसु । अयलभाउणो पुन्न-पावेसु । मेअज्जस्स परलोए । पभासस्स निव्वाणे ति ।

९-१०-११-१२. दिक्खागहणमिक्कारसण्हं पि देवाणमागमणं दट्ठूण जण्णवाडयाओ उवट्ठियाणं वइसाहसुद्धइक्कारसीए, **मज्झिमपावाए** नयरीए, **महसेण**वणुज्जाणे, पुव्वण्हदेसकाले त्ति ।

१३. इंदभूइपमुहाणं पंचण्हं पंचसया खंडिआ सह निक्खंता । मंडिअ-मोरिअपुत्ताणं पत्तेअं सड्ढा तिन्निसया । अकंपिआईणं चउण्हं पत्तेअं तिन्निसय त्ति ।

---

1 P संसयदिक्खा° । 2 B C Pa रिद्धी । 3 P वसुदत्तो । 4 P बलिपिया । 5 P सोयराणं । 6 मंडियस्स मोरियपुत्तस्स विजयदेवा । 7 B C बायालीसं ।

१४. छउमत्थपरिआओ–इंदभूइस्स तीसं वासाइं, अग्गिभूइस्स दुवालस, वाउभूइस्स दस, विअत्तस्स दुवालस, सुहम्मस्स बायालीसं, मंडिअ-मोरिअपुत्ताणं पत्तेअं चउद्दस, अकंपिअस्स नव, अयलभाउणो दुवालस, मेअज्जस्स दस, पभासस्स अट्ठ त्ति ।

१५. केवलिविहारेणं–इंदभूई दुवालसवासाइं विहरिओ । अग्गिभूई सोलस, वाउभूई विअत्तो अ पत्तेयं अट्ठारस, अज्जसुहम्मस्स अट्ठ, मंडिअ-मोरिअपुत्ताणं पत्तेअं सोलस, अकंपिअस्स एगवीसं, अयलभाउणो चउद्दस, मेअज्जस्स पभासस्स य पत्तेयं सोलस त्ति ।

१७. इक्कारसण्ह वि वज्जरिसहनारायं संघयणं, समचउरंसं संठाणं, कणगप्पहो देहवण्णो । रूवसंपया पुण तेसिं एवं तित्थयराणं

'सबसुरा जइ रूवं अंगुट्ठपमाणयं विउबिज्जा । जिणपायंगुट्ठं पइ न सोहए तं जहिंगालो ॥'

त्ति वयणाओ अप्पडिरूवं रूवं[1] । तओ किंचूणं गणहराणं । तत्तो वि हीणं आहारगसरीरस्स । तत्तो वि अणुत्तरसुराणं । तत्तो जहक्कमं नवमगेविज्जगपज्जवसाणदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि कमेण अच्चुआइसोहम्मंतदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि भवणवईणं, तत्तो वि जोइसिआणं, तत्तो वि वंतरदेवाणं, तत्तो वि चक्कवट्टीणं हीणयरं । तत्तो वि अद्धचक्कवट्टीणं, तत्तो वि बलदेवाणं हीणयरं । तत्तो वि सेसजणाणं छट्ठाणवडिअं । एवं विसिट्ठं रूवं गणहराणं ।

सुअं पुण–अगारवासे चउद्दसविज्जाठाणाइं; सामण्णे पुण दुवालसंगं गणिपिडगं सबेसिं । जओ सबे वि दुवालसंगप्पणेआरो ।

१७. लद्धीओ पुण–सबेसिं गणहराणं सबाओ वि हवंति । तं जहा–बुद्धिलद्धी अट्ठारसविहा[2]–केवलनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, बीअबुद्धी, कुट्ठबुद्धी, पयाणुसारित्तं, संभिन्नसोइत्तं, दूरासायण[3]सामत्थं, दूरफरिसणसामत्थं, दूरदरिसणसामत्थं, दूरग्घाणसामत्थं, दूरसवणसामत्थं, दसपुवित्तं, चउदसपुवित्तं, अट्ठंगमहानिमित्तकोसल्लं, पण्णासवण्णत्तं, पत्तेअबुद्धत्तं, वाइत्तं च ।

किरियाविसया लद्धी दुविहा–चारणत्तं, आगासगामित्तं च ।

वेउविअलद्धी अणेगविहा–अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, पत्ती, पकामित्तं, ईसित्तं, वसित्तं, अप्पडिघाओ, अंतद्धाणं, कामरूवित्तमिच्चाइ ।

तवाइसयलद्धी सत्तविहा–उग्गतवत्तं, दित्ततवत्तं, महातवत्तं, घोरतवत्तं, घोरपरक्कमत्तं, घोरबंभयारित्तं, अघोरगुणबंभयारित्तं च ।

बललद्धी तिविहा–मणोबलित्तं, वयणबलित्तं, कायबलित्तं ।

ओसहिलद्धी अट्ठविहा–आमोसहिलद्धी, खेलोसहिलद्धी, जल्लोसहिलद्धी, मलोसहिलद्धी, विप्पोसहिलद्धी, सबोसहिलद्धी, आसगअविसत्तं, दिट्ठिअविसत्तं ।

रसलद्धी छबिहा–वयणविसत्तं, दिट्ठिविसत्तं, खीरासवित्तं, महुआसवित्तं, रुप्पिरासवित्तं, अमिआसवित्तं ।

खित्तलद्धी दुविहा पण्णत्ता–अक्खीणमहाणसत्तं, अक्खीणमहालयत्तं च ।

–एयाहिं लद्धीहिं संपन्ना सबे वि ।

१८. सबाउअं–इंदभूइस्स बाणउई संवच्छराइं । अग्गिभूइस्स चउहत्तरी, वाउभूइस्स सत्तरी, विअत्तस्स असीई, अज्जसुहम्मस्स सयं, मंडिअस्स तेआसीई, मोरिअपुत्तस्स पंचनउई, अकंपियस्स अट्ठहत्तरी, अयलभाउणो बाहत्तरी[4], मेअज्जस्स बासट्ठी, पहासस्स चालीसं ति ।

---

1 Pa °रूपं रूपं । 2 D °विज्जा । 3 Pa C °सामण° । 4 Pa बाहुत्तरी ।

१९-२०. निव्वाणं च सव्वेसिं पाओवगमणमासिअभत्तेण, **रायगिहे** नयरे, **वेभार**पव्वए संजायं । **पढम-पंचमवज्जा नवगणहरा जीवंते भयवंतम्मि वीरे मुक्खं पत्ता । इंदभूई** अज्जसुहम्मो अ तम्मि निव्वाणगए निव्वुअ त्ति ।

गोअमसामिप्पभिई[1] गणपहुणो [2]पवयणंबवणमहुणो । सुगहीअनामधेया महोदयं मज्झ उवणिंतु ॥ १ ॥

जो गणहरकप्पमिणं पइपच्चूसं पढे पसन्नमणो । करयलमहिवसइ सया कल्लाणपरंपरा तस्स ॥ २ ॥

जिणपहसूरिहि कओ **गंह-वसु-सिहि-कु-**मिअ**विक्कम**समासु ।

जिट्ठसिअपंचमिबुहे गणहरकप्पो चिरं जयइ ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमहावीरगणधरकल्पः ॥

॥ ग्रं० ६८ ॥

---

४०. कोकावसतिपार्श्वनाथकल्पः ।

नमिऊण **पास**नाहं **पउमावइ-नागराय**कयसेवं । **कोकावसहीपास**स्स किंपि वत्तव्वयं भणिमो ॥ १ ॥

सिरि**पण्हवाहण**कुलसंभूओ **हरिसउरीय**गच्छालंकारभूसिओ **अभयदेव**सूरी **हरिसउरा**ओ एगया गामाणुगामं विहरंतो सिरि**अणहिल्ल**वाडय[3]पट्टणमागओ । ठिओ बाहिपएसे सपरिवारो । अन्नया सिरि**जयसिंह**-देवनरिंदेण[4] गयखंधारूढेण रायवाडिआगएण दिट्ठो मलमलिणवत्थदेहो । राइणा गयखंधाओ उयरिऊण †वंदिऊण दुक्करकारओ त्ति दिन्नं **मलधारि** त्ति नामं । अब्भत्थिऊण† नयरमज्झे नीओ रण्णा । दिन्नो उवस्सओ **घयवसही**-समीवे । तत्थ ठिआ सूरिणो । तस्स पट्टे कालक्कमेणं [5]अणेगगंथनिम्माणविक्खायकित्ती सिरि**हेमचंद**सूरी संजाओ[6] । ते अ पइदिअहं वासारत्तचउम्मासीए **घयवसही**ए गंतूण वक्खाणं करिंति । अन्नया कस्सवि **घयवसही**[7]गुट्ठि-यस्स पिउकज्जे बलिवित्थाराइकरणं **घयवसही**चेइए आढत्तं । तओ वक्खाणकरणत्थमागया सिरि**हेमचंदसूरी** । पडिसिद्धा गुट्ठिएहिं जहा—अज्ज वक्खाणं इत्थ न कायव्वं । इत्थ बलिमंडणाइणा नत्थि ओगासो[8] । तओ सूरीहिं भणिअं—थोवमेव अज्ज वक्खाणिस्सामो; मा चउमासीवक्खाणविच्छेओ भविस्सइ त्ति । तं च न पडिवन्नं गुट्ठिएहिं । तओ अमरिसविलक्खमाणसा पडिआगया उवस्सयमायरिआ । तओ दूमिअचित्ते गुरुणो नाऊण सोवन्निअ**मोक्खदेव-नायग**-नामगेहिं सड्ढेहिं मा अन्नयावि परचेइए एवंविहो अवमाणो होउ त्ति **घयवसही**समीवे चेइयकारावणत्थं भूमी मग्गिआ, न य कत्थ वि लद्धा । तओ **कोकओ** नाम सिट्ठी भूमिं मग्गिओ । वारिओ अ सो **घयवसही**गुट्ठिएहिं तिउणदम्मदाणपइच्छणेण[9] । तओ ससंधा आगया सूरिणो **कोकय**स्स घरं । तेण वि पडिवत्तिं काऊण भणिअं—दिन्ना मए भूमी जहोचिअमुल्लेण, परं मज्झ नामेणं चेइयं कारेअव्वं । तओ सूरीहिं सावएहिं अ तह त्ति[10] पडिवन्नं । तत्थ य **घयवसही**आसन्नं कारिअं चेइयं[11] **कोकावसहि** त्ति । ठाविओ तत्थ सिरि**पास**नाहो । पूइज्जइ तिकालं ।

कालक्कमेण सिरि**भीमदेव**रज्जे पट्टणं भंजंतेण मालवरण्णा सा **पासनाह**पडिमा वि भग्गा । तओ सोवन्निअ-**नायग**संताणुप्पन्नेहिं **रामदेव-आसधर**[12]सिट्ठीहिं उद्धारो कारेउमाढत्तो । **आरासणा**उ फलहीतिगं आणीअं; न य तं निद्दोसं । तओ बिंबतिगे वि घडिए न परितोसो संजाओ गुरूणं सावयाणं च । तओ **रामदेवे**ण अभिग्गहो गहिओ, जहाहं अकाराविअ **पास**सामिबिंबं न भुंजामि त्ति । गुरुणो वि उववासे कुणंति म्ह । तओ अट्ठमोववासे

---

1 P °प्पमुहा । 2 D पवयणोववण°; P Pa पवयणं च वण° । 3 Pa °पाडय° । 4 P °देवेण । † एतन्दतर्गता पङ्क्तिः पतिता P आदर्शे । 5 P अणेय° । 6 B Pa C संजायो । 7 B Pa C °वसहीए । 8 P पएसो । 9 P C D °दाणइच्छणेण । 10 B तहित्ति । 11 Pa B C नास्ति 'चेइयं' । 12 B Pa आसाधर ।

रामदेवस्स देवादेसो जाओ । जहा–जत्थ गोहलिआ[1] सपुप्फक्खया दीसइ, तस्स हिट्ठा, इत्थेव चेइअपरिसरे इत्ति-एहिं हत्थेहिं फलही चिट्ठइ त्ति । खणिऊण लद्धा फलही[2] । कारिअं [3]निरुवमरूवं **पासनाह**बिम्बं । **बारससय** [4]**छासट्ठे विक्कम्मसंवच्छरे देवाणंदसूरी**हिं पइट्ठिअं । ठाविअं च चेइए । पसिद्धं च **कोकापासनाहु** त्ति । **रामदेव**स्स पुत्ता **तिहुणा जाजा** नामाणो । **तिहुणाग**स्स पुत्तो **मल्लओ** । तस्स पुत्ता **देल्हण-जइतसीह** नामधेया, ते अ पूअंति पइदिणं पासनाहं ।

अन्नया **देल्हण**स्स सिरि**संखेसरपास**नाहेण सुमिणयं दिन्नं । जहा–पहाए घडियाचउक्कं जाव अहं **कोकापासनाह**पडिमाए सन्निहिस्सामि । तंमि घडिआचउक्के एगंमि बिंबे पूइए किर अहं पूइओ त्ति । **तहेव** लोगेहिं पूइज्जमाणो **कोकापासनाहो** पूरेइ **संखेसरपास**नाहु व्व पच्चए । **संखेसरपासनाह**विसया पूआ[5]-जत्ताइ-अभिग्गहा तत्थेव पुरिज्जंति जणाणं । एवं संनिहिअपाडिहेरो जाओ भयवं **कोकयपासनाहो** तित्तीसपव्वपमाण-मुत्ती **मलधारि**गच्छपडिबद्धो ।

अणहिलपट्टणमंडणसिरि**कोकावसहिपासनाह**स्स । इअ एस कप्पलेसो होउ जणाणं धुअकिलेसो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीकोकावसतिपार्श्वनाथकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४० ॥

---

४१. कोटिशिलातीर्थकल्पः ।

नमिअ जिणे उवजीविअ वक्काइं पुव्वपुरिससीहाणं । **कोडिसिलाए** कप्पं **जिणपह**सूरी पयासेइ ॥ १ ॥
इह **भरह**खित्तमज्झे तित्थं **मगहा**सु अत्थि **कोडिसिला** । अज्ज वि जं पूइज्जइ चारण-सुर-असुर-जक्खेहिं ॥ २ ॥
भरहद्धवासिणीहिं अहिट्ठियादेवयाहिं जा सययं । जोअणमेगं पिहुला जोअणमेगं च उस्सेहो ॥ ३ ॥
तिक्खंडपुहविपइणो निअं परिक्खंति बाहुबलमखिला । उप्पाडिअ जं हरिणो सुरनरखयराण पच्चक्खं ॥ ४ ॥
पढमेण कया छत्तं बीएणं पाविआ सिरं जाव । तइएणं गीवाए तओ चउत्थेण वच्छथले[6] ॥ ५ ॥
उअरंतं पंचमएण तह य छट्ठेण कडियडं[7] नीआ । ऊरूपज्जंतं[8] सत्तमेण[9] उप्पाडिआ हरिणा ॥ ६ ॥
जाणूसु अट्ठमेणं नीआ चउरंगुलं तु भूमीओ । उद्धरिआ चरमेणं कन्हेणं वामबाहाए ॥ ७ ॥
अवसप्पिणिकालवसा कमेण हायंति माणवबलाइं । तित्थयराणं तु बलं सव्वेसिं होइ इगरूवं ॥ ८ ॥
उप्पाडेउं तीरइ जं बलवंतीए सुहडकोडीए । तेणेसा[10] कोडिसिला इक्कलेणावि हरिणा उ ॥ ९ ॥
चक्काउहोत्ति नामेण **संतिनाह**स्स गणहरो पढमो । काऊण अणसणविहिं कोडिसिलाए सिवं पत्तो ॥ १० ॥
सिरि**संतिनाह**तित्थे संखिज्जाओ मुणीण कोडीओ । इत्थेव य सिद्धाओ एवं सिरि**कुंथु**तित्थे वि ॥ ११ ॥
अरजिणवरतित्थंमि वि बारससिद्धाओ समणकोडीओ । छक्कोडीओ रिसीणं सिद्धाओ **मल्लि**जिणतित्थे ॥ १२ ॥
मुणिसुव्वयजिणतित्थे सिद्धाओ तिन्नि साहुकोडीओ । इक्का कोडी सिद्धा **नमि**जिणतित्थेऽणगाराणं ॥ १३ ॥
अन्ने वि अणेगे तत्थ महरिसी सासयं पयं पत्ता । इह कोडिसिलातित्थं विक्खायं पुहविवलयंमि[11] ॥ १४ ॥

पुव्वायरिएहिं च इत्थ सविसेसं किं पि भणियं । तं जहा–

जोअणपिहुला यामा **दसन्नपव्वय**समीवि कोडिसिला । जिणछक्कतित्थसिद्धा तत्थ अणेगाउ मुणिकोडी ॥ १५ ॥

---

1 B गोअलिआ । 2 C पणही । 3 C निरुपम° । 4 C बारोह । 5 P नास्ति 'पूआ'; B Pa पूज्जा । 6 Pa वच्छयले; B वत्थयले । 7 Pa कडिअं नीया; B कडिअ नीयाऊ । 8 Pa D °पज्जंते । 9 B सत्तमो । 10 B C तेणं सा । 11 B वलयंति ।

पढमं **संति**गणहरो **चक्काउहो**ऽणेगसाहुपरिअरिओ । [1]बत्तीसजुगेहिं तओ सिद्धा संखिज्जमुणिकोडी ॥ १६ ॥
संखिज्जा मुणिकोडी अडवीसजुगेहिं **कुंथु**नाहस्स । **अर**जिणचउवीसजुगा बारसकोडीओ सिद्धाओ ॥ १७ ॥
मल्लिस्स वि वीसजुगा छकोडि. **मुणिसुव्वय**स्स कोडितिगं । **नमि**तित्थे इगकोडी सिद्धा तेणेस कोडिसिला ॥१८॥
छत्ते सिरंमि गीवा वच्छे उअरे कडीइ ऊरूसु । जाणू कहमवि जाणू नीया सा वासुदेवेण ॥ १९ ॥
इअ **कोडिसिलातित्थं** तिहुअणजणजणिअनिव्वुआवत्थं । सुरनरखेअरमहिअं भवियाणं कुणउ कल्लाणं ॥ २० ॥

॥ इति श्रीकोटिशिलातीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० २४, अ० ६ ॥

---

४२. वस्तुपाल-तेजःपालमन्त्रिकल्पः ।

श्री**वस्तुपाल-तेजःपालौ** मन्त्रीश्वरावुभावास्ताम् । यौ भ्रातरौ प्रसिद्धौ कीर्तनसंख्यां तयोर्ब्रूमः ॥ १ ॥

पूर्वं **गूर्जर**धरित्रीमण्डनायां **मण्डली**महानगर्यां श्री**वस्तुपाल-तेजःपाला**द्या वसन्ति स्म । अन्यदा श्रीम**त्पत्तन**वास्तव्य**प्राग्वाटान्वय**ठक्कुरश्री**चण्डपा**त्मज[2] ठक्कुरश्री[3]**चण्डप्रसादा**ङ्गज मन्त्रिश्री**सोम**कुलावतंस ठक्कुरश्री**आसराज**नन्दनौ **कुमारदेवी**कुक्षिसरोवरराजहंसौ श्री**वस्तुपाल-तेजःपालौ** श्री**शत्रुञ्जय-गिरिनारा**दितीर्थयात्रायै प्रस्थितौ । **हडाला**ग्रामं गत्वा यावत्स्वां विभूतिं[4] चिन्तयतस्तावल्लक्षत्रयं सर्वस्वं जातम् । ततः **सुराष्ट्रा**स्वसौस्थ्यमाकलय्य लक्षमेकमवन्यां निधातुं निशीथे महाऽश्वत्थतलं खानयामासतुः । तयोः खानयतोः कस्यापि प्राक्तनः कनकपूर्णः शौल्वकलशो निरगात् । तमादाय श्री**वस्तुपालस्तेजःपाल**जाया**मनुपमादेवीं** मान्यतयाऽपृच्छत्—क्वैतन्निधीयत ? इति । तयोक्तम्—गिरिशिखर एवैतदुच्चैः स्थाप्यते यथा प्रस्तुतनिधिवन्नान्यसाद्भवति । तच्छ्रुत्वा श्री**वस्तुपाल**स्तद् द्रव्यं श्री**शत्रुञ्जयोज्ज्यन्ता**दावव्ययत् । कृतयात्रो व्यावृत्तो **धवलक्क**पुरमगात् ।

अत्रान्तरे **महणदेवी** नाम **कन्यकुब्जे**श्वरसुता, [या] जनकात् कञ्चुलिकापदे **गूर्जर**धरित्रीमवाप्य तदाधिपत्यं भुक्त्वा मृता सती तत्रैव देशाधिष्ठात्री देवता समजनि । सैकदा स्वप्ने **वीरधवल**नृपस्याचीकथत्—यद्व**स्तुपाल-तेजःपालौ** राज्यचिन्तकप्राग्रहरौ विधाय सुखेन राज्यं शाधि । इत्थं कृते राज्य-राष्ट्रवृद्धिस्तव भवित्री—इत्यादिश्य स्वं च प्रकाश्य तिरोदधे देवी । प्रातरुत्थाय नृपति**र्वस्तुपाल-तेजःपाला**वाहूय सत्कृत्य च ज्यायसः **स्तम्भतीर्थ-धवलक्क**योराधिपत्यमदात् । **तेजःपाल**स्य तु सर्वराज्यव्यापारमुद्रां ददौ । ततस्तौ षड्दर्शनदान-नानाविधधर्मस्थानविधापनादिभिः सुकृतशतानि चिन्वन्तौ निन्यतुः समयम् ।

तथा हि—लक्षमेकं सपादं जिनबिम्बानां कारितम् । अष्टादश कोट्यः षण्णवतिर्लक्षाः श्री**शत्रुञ्जय**तीर्थे द्रविणं व्ययितम् । द्वादश कोट्योऽशीतिलक्षाः श्री **उज्ज्यन्ते** । द्वादशकोट्यस्त्रिपञ्चाशलक्षा **अर्बुद**शिखरे **लूणिगवसत्याम्** । नवशतानि चतुरशीतिश्च पौषधशालाः कारिताः । पञ्चशतानि दन्तमयसिंहासनानाम्, पञ्चशतानि पञ्चोत्तराणि समवसरणानां जादरमयानाम् । ब्रह्मशालाः सप्तशतानि सप्तदशानि । सत्राकाराणां सप्तशती । तपस्वि-कापालिकमठानां सर्वेषां भोजननिर्वापादिदानं कृतम् । त्रिंशच्छतानि द्व्युत्तराणि माहेश्वरायतनानाम् । त्रयोदशशतानि चतुरुत्तराणि शिखरबद्धजैनप्रासादानाम् । त्रयोविंशतिः शतानि जैनचैत्योद्धाराणाम् । अष्टादशकोटिसुवर्णव्ययेन सरस्वतीभाण्डागाराणां स्थानत्रये भरणं कृतम् । पञ्चशती ब्राह्मणानां नित्यं वेदपाठं करोति स्म । वर्षमध्ये संघपूजात्रितयम् । पञ्चदशशती

---

1 Pa छत्तीस° । 2 Pa नास्ति; B चन्द्रपात्मज । 3 B चन्द्रप्रसा° । 4 C 'विभूतिं' नास्ति ।

श्रमणानां गृहे नित्यं विहरति स्म । तटिक-कार्पटिकानां सहस्रं साधिकं प्रत्यहमभुङ्क्त । त्रयोदश तीर्थयात्राः संघपतीभूय कृताः । तत्र प्रथमयात्रायां चत्वारि सहस्राणि पञ्चशतानि शकटानां सशय्यापालकानां, सप्तशती सुखासनानां, अष्टादशशती वाहिनीनां, एकोनविंशतिः शतानि श्रीकरीणां, एकविंशतिः शतानि श्वेताम्बराणां, एकादशशती दिगम्बराणां, चत्वारि शतानि सार्धानि जैनगायनानां, त्रयस्त्रिंशच्छती बन्दिजनानां, चतुरशीतिस्तडागाः सुबद्धाः, चतुःशती चतुःषष्ट्यधिका वापीनां, पाषाणमयानि त्रिंशद्-द्वात्रिंशद्दुर्गाणि, दन्तमयजैनरथानां चतुर्विंशतिः, विंशं शतं शाकघटितानां, सरस्वतीकण्ठाभरणादीनि चतुर्विंशतिर्बिरुदानि श्री**वस्तुपाल**स्य । चतुःषष्टिर्मसीतयः कारिताः । दक्षिणस्यां **श्रीपर्वतं** यावत्, पश्चिमायां **प्रभासं** यावत्, उत्तरस्यां **केदारं** यावत्, पूर्वस्यां **वाराणसीं** यावत् तयोः कीर्तनानि । सर्वाग्रेण त्रीणि कोटिशतानि चतुर्दश लक्षा अष्टादश सहस्राणि अष्टशतानि लोष्टिकत्रितयोनानि द्रव्यव्ययः । त्रिषष्टिवारान् संग्रामे जैत्रपत्रं गृहीतम् । अष्टादश वर्षाणि तयोर्व्यापृतिः ।

एवं तयोः पुण्यकृत्यानि कुर्वतोः कियताऽपि कालेन श्री**वीरधवल**नृपः कालधर्ममवापत्[1] । ततस्तत्पट्टे तदीयस्तनयः श्रीमान् **वीसलदेव**स्ताभ्यां मन्त्रिप्रवराभ्यां राज्येऽभिषिक्तः । सोऽपि समर्थः सन् क्रमेण दुर्मदः सचिवान्तरं विधाय मन्त्रि**तेजःपाल**मपाचकार । तदवलोक्य राज्ञः पुरोधाः **सोमेश्वर**नामा महाकविर्नृपमुद्दिश्य साक्षेपं नव्यं काव्यमपठत् । तथा–

मासान्मांसलपाटलापरिमलव्यालोलतोलम्बतः प्राप्य प्रौढिमिमां समीर महतीं पश्य त्वया यत्कृतम् ।
सूर्याचन्द्रमसौ निरस्ततमसौ दूरं तिरस्कृत्य यत् पादस्पर्शसहं विहायसि रजः स्थाने तयोः स्थापितम् ॥ १ ॥

इत्यादि । तयोः पुरुषरत्नयोर्वृत्तशेषमादित उत्पत्तिस्वरूपं च लोकप्रसिद्धित एवावगन्तव्यम् ।

गीताद्ध्रायनवर्येण सूडाद्विज्ञाय कीर्तिता । कीर्तनानामियं संख्या श्रीमतोर्मन्त्रिमुख्ययोः ॥ १ ॥
यदध्यासितमर्हद्भिस्तद्धि तीर्थं प्रचक्षते । अर्हन्तश्च तयोश्चित्तमध्यवात्सुरहर्निशम् ॥ २ ॥
तत्तीर्थरूपयोर्युक्त्या पुरुषश्रेष्ठयोस्तयोः । कीर्तनोत्कीर्तनेनापि न्याय्या कल्पकृतिर्न किम् ॥ ३ ॥
इत्यालोच्य हृदा कल्पलेशं मन्त्रीशयोस्तयोः । एतं विरचयां चक्रुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः ॥ ४ ॥

॥ श्रीमहामात्यवस्तुपालतेजःपालकीर्तनसंख्याकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५३, अ० ६ ॥

---

1 C अगात् ।

४३. ढिंपुरीतीर्थकल्पः ।

श्रीपार्श्वं[1] **चेल्लणा**भिख्यं ध्यात्वा श्री**वीर**मप्यथ । कल्पं श्री**ढिंपुरी**[2]तीर्थस्याभिधास्ये यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

पारेतजनपदान्त**श्चर्मणवत्या**स्तटे महानद्याः । नानाघनवनगहना[3] जयत्यसौ **ढिंपुरी**ति पुरी ॥ २ ॥

अत्रैव **भारते** वर्षे **विमलयशा** नाम भूपतिरभूत् । तस्य **सुमङ्गला**देव्या सह विषयसुखमनुभवतः क्रमाज्जातमपत्ययुगलम् । तत्र पुत्रः **पुष्पचूलः**, पुत्री **पुष्पचूला** । अनर्थसार्थमुत्पादयतः **पुष्पचूल**स्य कृतं लोके **वङ्कचूल** इति नाम । महाजनोपालब्धेन[4] राज्ञा रुषितेन निःसारितो नगराद्**वङ्कचूलः** । गच्छंश्च पथि पतितो भीषणायामटव्यां सह निजपरिजनेन स्वस्रा च स्नेहवशया । तत्र च क्षुत्पिपासार्दितो दृष्टो भिल्लैः । नीतः स्वपल्लीम्, स्थापितश्च पूर्वपल्लीपतिपदे पर्यपालयद्राज्यम्, अलुण्टयद्ग्रामनगरसार्थादीन् ।

अन्यदा **सुस्थिताचार्या अर्बुदा**चलादष्टा**पद**यात्रायै प्रस्थितास्तामेव **सिंहगुहा**नामपल्लीं सगच्छाः प्रापुः । जातश्च वर्षाकालः; अजनि च पृथ्वी जीवाकुला । साधुभिः सहालोच्य मार्गयित्वा **वङ्कचूला**द्वसतिं स्थितास्तत्रैव सूरयः । तेन च प्रथममेव व्यवस्था कृता—मम सीमान्तर्धर्मकथा न कथनीया । यतो युष्मत्कथायामहिंसादिको धर्मः; न चैवं मल्लोको निर्वहति । एवमस्तु इति प्रतिपद्य तस्थुरुपाश्रये गुरवः । तेन चाहूय सर्वे प्रधानपुरुषा भणिताः—अहं राजपुत्रस्ततो मत्समीपे ब्राह्मणादय आगमिष्यन्ति । ततो भवद्भिर्जीववधो मांसमद्यादिप्रसङ्गश्च पल्ल्या मध्ये न कर्तव्यः । एवं च कृते यतीनामपि भक्तपानमजुगुप्सितं कल्पत इति । तैस्तथैव कृतं यावच्चतुरो मासान् । प्राप्तो विहारसमयः । अनुज्ञापितो **वङ्कचूलः** सूरिभिः—'समणाणं सउणाण'मित्यादि वाक्यैः । ततस्तैः सह चलितो **वङ्कचूलः** । स्वसीमां प्रापुषा तेन विज्ञप्तम्[5]—वयं परकीयसीमायां न प्रविशाम इति । भणितः सूरिभिः—वयं सीमान्तरमुपेताः, तत्किमुपदिशामस्तुभ्यम् ? । तेनोक्तम्—यन्मयि निर्वहति, तदुपदेशेनानुगृह्यतामयं जनः । ततः सूरिभिश्चत्वारो नियमा दत्तास्तद्यथा—अज्ञातफलानि न भोक्तव्यानि, सप्ताष्टानि पदान्यपसृत्य घातो देयः । पट्टदेवी नाभिगन्तव्या । काकमांसं च न भक्षणीयमिति । प्रतिपन्नाश्च[6] तेन ते । गुरून् प्रणम्य स स्वगृहानागमत् ।

अन्यदा गतः सार्थस्योपरि धाट्या । शकुनकारणान्नागतः सार्थः । त्रुटितं च तस्य पथ्यदनम् । पीडिताः क्षुधा राजन्याः । दृष्टश्च तैः किंपाकतरुः फलितः । गृहीतानि फलानि । न जानन्ति ते तन्नामधेयमिति तेन न भुक्तानि । इतरैः सर्वैर्बुभुजिरे । मृताश्च तैः किंपाकफलैः । ततश्चिन्तितं तेनाहो ! नियमानां फलम् । तत एकाक्येवागतः पल्लीम् । रजन्यां प्रविष्टः स्वगृहम् । दृष्टा **पुष्पचूला** दीपालोकेन पुरुषवेषा निजपत्न्या सह प्रसुप्ता । जातस्तस्य कोपस्तयोरुपरि । द्वावप्येतौ खड्गप्रहारेण छिनद्मीति यावदचिन्तयत्तावत्स्मृतो नियमः । ततः सप्ताष्टपदान्यपक्रम्य घातं ददत्[7] खाट्कृतमुपरि खड्गेन । व्याहृतं स्वस्रा 'जीवतु **वङ्कचूल**' इति तद्वचः श्रुत्वा लज्जितोऽसावपृच्छत् किमेतदिति ? । सापि [8]नटवृत्तान्तमचीकथत् ।

कालक्रमेण तस्य तद्राज्यं शासतस्तत्रैव पल्ल्यां तस्यैवाचार्यस्य शिष्यौ **धर्मऋषि-धर्मदत्त**नामानौ कदाचिद्वर्षारात्रमवास्थिषाताम् । तत्र तयोरेकः साधुस्त्रिमासक्षपणं विदधे । द्वितीयश्चतुर्मासक्षपणम् । **वङ्कचूल**स्तु तद्दत्तनियमानामायतिशुभ[9]फलतामवलोक्य व्यजिज्ञपत्—भदन्तौ ! मदनुकम्पया कमपि पेशलं धर्मोपदेशं दत्तम् । ततस्ताभ्यां चैत्यविधापनदेशना क्लेशनाशिनी विदधे । तेनापि **शराविका**पर्वतसमीपवर्तिन्यां तस्यामेव पल्ल्यां **चर्मणवती**सरित्तीरे कारितमुच्चैस्तरं चारुचैत्यम् । स्थापितं तत्र श्रीमन्**महावीर**बिम्बम् । तीर्थतया च रूढं तत् । तत्र यान्ति स्म चतुर्दिग्भ्यः सङ्घाः ।

---

1 Pa पार्श्व° । 2 Pa °पुर° । 3 Pa °वहना । 4 Pa °पलब्धेन । 5 Pa विज्ञप्ति । 6 Pa प्रपन्नास्तेन । 7 B दद्यात् । 8 B तद् । 9 Pa °फलशुभता° ।

कालान्तरे कश्चिन्नैगमः सभार्यः सर्वर्द्ध्या तद्यात्रायै प्रस्थितः । प्राप्तः क्रमेण **रन्ति**नदीम् । नावमारूढौ च दम्पती चैत्यशिखरं व्यलोकयताम् । ततः सरभसं सौवर्णकच्चोलके कुङ्कुमचन्दनकर्पूरं प्रक्षिप्य जले[1] क्षेप्तुमारब्धवती नैगमगृहिणी । प्रमादान्निपतितं तदन्तर्जलतलम् । ततो भणितं वणिजा–अहो ! इदं कच्चोलकं नैककोटिमूल्यरत्नखचितं राज्ञा ग्रहणकेऽर्पितमासीत् । ततो राज्ञः कथं छुटितव्यमिति चिरं विषद्य **वङ्कचूल**स्य पल्लीपतेर्विज्ञापितं तत् । यथाऽस्य राजकीयवस्तुनो विचितिः कार्यताम् । तेनापि धीवर आदिष्टस्तच्छोधयितुं प्राविशदन्तर्नदम् । विचिन्वता चान्तर्जलतलं दृष्टं तेन हिरण्मयरथस्थं जीवन्तस्वामिश्री**पार्श्वनाथ**बिम्बम् । यावत्पश्यति स स बिम्बस्य हृदये तत्कच्चोलकम् । धीवरेणोक्तम्–धन्याविमौ दम्पती यद्भगवतो वक्षसि घुसृणचन्दनविलेपनार्हे स्थितमिदम् । ततो गृहीत्वा तदर्पितं नैगमस्य । तेनापि दत्तं तस्मै बहुद्रव्यम् । उक्तं च बिम्बस्वरूपं नाविकेन । ततो **वङ्कचूलेन** श्रद्धालुना तमेव प्रवेश्य निष्काशितं तद्बिम्बम् । कनकरथस्तु तत्रैव मुक्तः । निवेदितं हि स्वप्ने प्राग् भगवता[2] नृपतेः, यत्र क्षिप्ता सती पुष्पमाला गत्वा तिष्ठति तत्र बिम्बं शोध्यमिति । तदनुसारेण बिम्बमानीय समर्पितं राज्ञे **वङ्कचूलाय** । तेनापि स्थापितं श्री**वीर**स्य बिम्बस्य बहिर्मण्डपे यावत्किल नव्यं[3] चैत्यमस्मै कारयामीत्यभिसन्धिमता । कारिते च[4] चैत्यान्तरे यावत्तत्र स्थापनार्थमुत्थापयितुमारभन्ते राजकीयाः पुरुषास्तावत्तद्बिम्बं नोत्तिष्ठति स्म । देवताधिष्ठानात्तत्रैव स्थितमद्यापि तथैवास्ते । धीवरेण पुनर्विज्ञप्तः पल्लीपतिः–यत्तत्र देव ! मया नद्यां प्रविष्टेन बिम्बान्तरमपि दृष्टम्, तदपि बहिरानेतुमौचितीमञ्चति । पूजारूढं हि भवति । ततः पल्लीश्वरेण पृष्टा स्वपरिषत्–भो ! जानीते कोऽप्यनयोर्बिम्बयोः संविधानकम् ? । केन खल्वेते नद्यान्तर्जलतले[5] [6]न्यस्ते ? । इत्याकर्ण्यैकेन पुराविदा स्थविरेण विज्ञप्तम्–देवैकस्मिन्नगरे पूर्वं नृपतिरासीत् । स च परचक्रेण समुपेयुषा सार्द्धं योद्धुं सकलचमूसमूहसन्नहनेन गतः । तस्याग्रमहिषी च निजं सर्वस्वमेतच्च बिम्बद्वयं कनकरथस्थं विधाय जलदुर्गमिति कृत्वा **चर्मणवत्यां** कोटिंबके प्रक्षिप्य स्थिता[7] । चिरं युद्धवतस्तस्य कोऽपि खलः किल वार्तामानैषीत्–यदयं नृपतिस्तेन परचक्राधिपतिनृपतिना व्यापादित इति । [8]तच्छ्रुत्वा देवी तत्कोटिंबकमाक्रम्यान्तर्जलतलं प्राक्षिपत् । स्वयं च परासुतामासदत् । स च नृपतिः परचक्रं निर्जित्य यावन्निजनगरमागमत् तावद् देव्याः प्राचीनं वृत्तमाकर्ण्य भवाद्विरक्तः पारमेश्वरीं दीक्षां कक्षीचक्रे । तत्रैकं बिम्बं देवेन बहिरानीतं पूज्यमानं चास्ति । द्वितीयमपि चेन्निःसरति तदोपक्रम्यतामिति । तदाकर्ण्य **वङ्कचूलः** परमार्हत[9]चूडामणिस्तमेव धीवरं तदानयनाय नद्यां प्रावीविशत् । स च तद्बिम्बं कटीदघ्नवपुर्जलतलेऽवतिष्ठमानं बहिस्थशेषाङ्गं चावलोक्य निष्काशनोपायाननेकानकार्षीत् । न च तन्निर्गतमिति दैवतप्रभावमाकलय्य समागत्य च विशामीशाय न्यवेदयत्तत्स्वरूपम् । अद्यापि तत्किल तथैवास्ते । श्रूयतेऽद्यापि केनापि धीवरस्थविरेण नौकास्तम्भे जाते तत्कारणं विचिन्वता तस्य [10]हिरण्मयरथस्य कीलिका लब्धा । तां कनकमयीं दृष्ट्वा लुब्धेन तेन व्यचिन्ति–यदिमं रथं क्रमात्सर्वं गृहीत्वा ऋद्धिमान् भविष्यामीति । ततश्च स रात्रौ निद्रां न लेभे । उक्तश्च केनाप्यदृष्टपुरुषेण–यदिमां तत्रैव विमुच्य सुखं[11] स्थेयाः, नो चेत्सद्य एव त्वां हनिष्यामीति । तेन भयार्तेन तत्रैव मुक्ता युगकीलिका इत्यादि । किं न सम्भाव्यते देवताधिष्ठितेषु पदार्थेषु ।

श्रूयते च, सम्प्रति काले कश्चिन्म्लेच्छः पाषाणपाणिः श्री**पार्श्वनाथ**प्रतिमां भङ्क्तुमुपस्थितः स्तम्भितबाहुर्जातः । महति पूजाविधौ कृते सज्जतामापन्न इति । श्री**वीर**बिम्बं महत्तदपेक्षया लघीयस्तरं श्री**पार्श्वनाथ**बिम्बमिति**महावीर**स्यार्भकरूपोऽयं देव इति मेदा**श्चेल्लण** इत्याख्यां प्राचीकशन् । श्रीम**च्चेल्लणदेव**स्य महीयस्तममाहात्म्यनिधेः पुरस्ताभ्यां महर्षिभ्यां सुवर्णमुकुटमन्त्राम्नायः समा[रा]धितः प्रकाशितश्च भव्येभ्यः । सा च **सिंहगुहा**पल्ली कालक्रमा**ड्ढिंपुरी**त्याख्यया प्रसिद्धा नगरी संजाता । अद्यापि स भगवान् श्री**महावीरः** स **चेल्लणपार्श्वनाथः** सकलसंघेन तस्यामेव पुर्यां यात्रोत्सवैराराध्येते इति ।

---

1 Pb C जलं । 2 Pa-b भवगता । 3 B नान्यं । 4 B नास्ति 'च' । 5 Pa °जलं । 6 B न्यास्ते । 7 Pa स्थितासीत् । 8 B 'तत्' नास्ति । 9 B Pa परमार्हतः चूडामणि° । 10 B हि रथस्य । 11 Pa नास्ति 'सुखं' ।

अन्यदा **वङ्कचूल** उज्जयिन्यां खात्रपातनाय चौर्यवृत्त्या कस्यापि श्रेष्ठिनः सद्मनि गतः । कोलाहलं श्रुत्वा [1]वलितः । ततो **देवदत्ता**या गणिकाया गाणिक्यमाणिक्यभूताया गृहं प्राविशन् । दृष्टा सा कुष्ठिना सह प्रसुप्ता । ततो निःसृत्य गतः पुरः श्रेष्ठिनो वेश्म । तत्रैकविंशोपको लेख्यके त्रुट्यतीति परुषवाग्भिर्निर्भर्त्स्य निःसारितो गेहात् पुत्रः श्रेष्ठिना । विरराम च यामिनी । यावद्राजकुलं यामीत्यचिन्तयत्, तावदुज्जगाम धामनिधिः । पल्लीशश्च निःसृत्य नगराद्गोधां गृहीत्वा तरुतले दिनं नीत्वा पुना रात्रावागात् । राजभाण्डागाराद्बहिर्गोधापुच्छे विलग्य प्राविशत्कोशम् । दृष्टो राजाग्रमहिष्या रुष्टया, पृष्टश्च कस्त्वमिति । तेनोचे चौर इति । तयोक्तम्–मा भैषीः, मया सह सङ्गमं कुरु । सोऽवादीत्–का त्वम् ? । साऽप्यूचेऽग्रमहिष्यहमिति । चौरोऽवादीद्यद्येवं तर्हि ममाम्बा भवसि, अतो यामीति निश्चिते तया स्वाङ्गं नखैर्विदार्य पूत्कृतिपूर्वमाहूता आरक्षकाः । गृहीतस्तैः । राज्ञा चानुनयार्थमागतेन तद्दृष्टम् । राज्ञोक्ताः स्वपौ(पु)रुषाः–मैनं गाढं कुर्वीध्वमिति । ते रक्षितः । प्रातः पृष्टः क्षितिभृता । तेनाप्युक्तम्–देव ! चौर्यायाहं प्रविष्टः । पश्चाद्देवभाण्डागारे देव्या दृष्टोऽस्मि । यावदन्यन्न कथयति तावत्तुष्टो विदितवेद्यो नरेन्द्रः स्वीकृतः पुत्रतया, स्थापितश्च सामन्तपदे । देवी च विडम्ब्यमाना रक्षिता **वङ्कचूलेन** । अहो ! नियमानां शुभफलमित्यनवरतमयमध्यासीत् । प्रेषितश्चान्यदा राज्ञा **कामरूप**भूपसाधनार्थम् । गतो युद्धे । घातैर्जर्जरितो विजित्य तमागमत् स्वस्थानम् । व्याहृता च राज्ञा वैद्याः । यावद्गाढोऽपि घातव्रणो विकसति । तैरुक्तम्–देव ! काकमांसेन शोभनो भवत्ययम् । तस्य च **जिनदास**श्रावकेण सार्द्धं प्रागेव मैत्र्यमासीत् । ततस्तदानयनाय प्रेषितः पुरुषः पुरुषाधिपतिना, येन तद्वाक्यात्काकमांसं भक्षयतीति । तदाहूतश्च **जिनदासो** ऽ**वन्ती**मागच्छन्नुभे दिव्ये सुदत्यौ रुदत्यावद्राक्षीत् । तेन पृष्टे -किं रुदिथः ? । ताभ्यामुक्तम्–अस्माकं भर्ता सौधर्माच्च्युतः । अतो राजपुत्रं **वङ्कचूलं** प्रार्थयावहे । परं त्वयि गते स[2] मांसं भक्षयिता ततो गन्ता दुर्गतिं तेन रुदिवः । तेनोक्तम्–तथा करिष्ये यथा तन्न भक्षयिता । गतश्च तत्र । राजोपरोधाद्वङ्कचूलमवोचत्–गृहाण बलिभुक्पिशितम् । पटूभूतः सन् प्रायश्चित्तं चरेः । **वङ्कचूलो**ऽवोचत्–जानासि त्वं यदाचर्याप्यकार्यं प्रायश्चित्तं ग्राह्यम्, ततः प्रागेव तदनाचरणं श्रेय इति । 'प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।' इति वाक्यान्निषिद्धो नृपतिः । विशेषप्रतिपन्ननिवहश्चाऽच्युतकल्पमगमत् । वलमानेन **जिनदासे**न ते देव्यौ तथैव रुदत्यौ दृष्ट्वा प्रोक्तम्–किमिति रुदिथः ? । न तावत्स मांसं ग्राहितः । ताभ्याममिदधे–स ह्यधिकाराधनावशादच्युतं प्राप्तस्ततो नाऽभवदस्मद्भर्तेति । एवं जिनधर्मप्रभावं सुचिरं परिभाव्य **जिनदासः** स्वावासमाससादेति । एवं चास्य निर्मापयिता **वङ्कचूल** एवाजनि जनितजगदानन्दः ॥

ढिंपुरीतीर्थरत्नस्य कल्पमेतं यथाश्रुतम् । किञ्चिद्विरचयां चक्रुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीचेल्लणपार्श्वनाथस्य कल्पः ॥

॥ ग्रं० ११६, अ० २६ ॥

---

1 B चलितः । 2 D 'स' नास्ति ।

४४. ढिंपुरीस्तवः[†] ।

उत्तुङ्गैर्विविधैर्नगैरुपलसच्छायैरभिभ्राजिता,
श्री**वीर**प्रभु**पार्श्व-सुव्रत-युगादी**शादिबिम्बैर्युता ।
पल्ली भूतलविश्रुता नियमिनः श्री**वङ्कचूल**स्य या,
सा भूत्या चिरमद्भुतां कलयतु प्रौढिं पुरी **ढिंपुरी** ॥ १ ॥
व्योमचुम्बिशिखरं मनोहरं **रन्तिदेव**[1]तटिनीतटस्थितम् ।
अत्र चैत्यमवलोक्य यात्रिकाः शैत्यमाशु ददति स्वचक्षुषोः ॥ २ ॥
मूलनायक इहान्त्यजिनेन्द्रश्चारुलेपघटितोद्भटमूर्तिः ।
दक्षिणे जयति **चेल्लणपार्श्वो** भात्युदक् तदपरः फणिकेतुः ॥ ३ ॥
एकत **आदिजिनो** वृजिनो ऽतोऽन्यत्र[2] पुन**र्मुनिसुव्रत**नाथः ।
[3]एवमनेकजिनेश्वरमूर्तिः स्फूर्तिमदभ्रचकास्ति जिनोकः[4] ॥ ४ ॥
अत्रा**म्बिका** द्वारसमीपवर्तिनी श्री**क्षेत्रपालो** भुजषट्कभास्वरः ।
सर्वज्ञपादाम्बुजसेवना[5]ऽलिनौ संघस्य विघ्नौघमपोहतः क्षणात् ॥ ५ ॥
यात्रोत्सवानिह[6] शितौ [7]महसो दशम्यामालोक्य लोकसमवाय[8]विधीयमानान् ।
संभावयन्ति भविकाः कलिकालगेहे प्राघूर्णकं कृतयुगं ध्रुवमभ्युपेतम् ॥ ६ ॥
अमरमहितमेतत् तीर्थमाराध्य भक्त्या, फलितसकलकामाः सर्वभीतीर्जयन्ति ।
बहलपरिमलाढ्यं चन्दनं प्राप्य यद्वा क इव सहतु तापव्यापमालिङ्गिताङ्गम् ॥ ७ ॥
वन्द्या नन्द्यादघहतिदृढा **ढिंपुरी**तीर्थरत्नम्,
यामध्यास्ते सुरतरुरिव प्रार्थितार्थप्रदायी ।
पद्मावत्या भुजगपतिना चाविमुक्तांह्रिपार्श्वः,
कायोत्सर्गस्थित[9]वपुरयं **चेल्लणः पार्श्वनाथः** ॥ ८ ॥
शशधरहृषीकाक्षिक्षोणीमिते (१२५१) शकवत्सरे,
गृहमणिमहे संघान्वीता उपेत्य पुरीमिमाम् ।
मुदितमनसस्तीर्थस्यास्य प्रभावमहोदधे-
रिति विरचयां चक्रुः स्तोत्रं **जिनप्रभ**सूरयः ॥ ९ ॥

॥ इति ढिंपुरीस्तोत्रम् ॥

॥ ग्रं० १६ ॥

---

† Pa C ढिंपुरीस्तवस्त्वयम् । 1 B रन्तिदेवकीर्तितटिनी° । 2 Pa नान्यात्र । 3 Pa एक° । 4 C जनौकः ॥ 5 Pa °केशना° । 6 C यात्रोत्सवानिहि । 7 B Pa सहसो । 8 Pa समवायि° । 9 Pa स्थिति° ।

४५. चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पः ।

पर्युपास्य परमेष्ठिपञ्चकं कीर्तयामि कृतपापनिग्रहम् ।
तन्नवेदि[1] विदितं चतुर्युताशीतितीर्थजिननामसंग्रहम् ॥ १ ॥

तथा हि–श्री**शत्रुञ्जये** भुवनदीपः श्री**वैरस्वामि**प्रतिष्ठितः श्री**आदिनाथः**[2] । तथा, श्रीमूलनायकः **पाण्डव**स्थापितो[3] नन्दिवर्धनयुगादिनाथः । श्री**शान्ति**प्रतिष्ठितः **पुण्डरीकः** श्री**कलशः**, द्वितीयस्तु[4] श्री**वैरस्वामि**प्रतिष्ठितः **पूर्णकलशः** । सुधाकुण्डजीवितस्वामी श्री**शान्ति**नाथः । **मरुदेवा**स्वामिनी प्रथमसिद्धः ।

श्री**उज्जयन्ते** पुण्यकलश-मदनमूर्तिः श्री**नेमिनाथः** । **काञ्चनबलानके** अमृतनिधिः श्री**अरिष्टनेमिः** । **पापामठे** अतीतचतुर्विंशतिमध्यात् अष्टौ पुण्यनिधयः श्री**नेमीश्वरा**दयः ।

१. **काशहृदे**[5] त्रिभुवनमङ्गलकलशः श्रीआदिनाथः । **पारकर**देशे श्रीआदिनाथः । **अयोध्यायां** श्रीऋषभदेवः । **कोल्लापुरे** वज्रमृत्तिकामयः श्री**भरतेश्वर**पूजितो भुवनतिलकः श्रीआदिनाथः । **सोपारके** जीवन्त[6]स्वामिश्रीऋषभदेवप्रतिमा । **नगरमहास्थाने** श्रीभरतेश्वरकारितः श्रीयुगादिदेवः । **दक्षिणापथे गोमटदेवः** श्री**बाहुबलिः** । **उत्तरापथे कलिङ्गदेशे** गोमटः श्रीऋषभः । **खङ्गारगढे** श्री**उग्रसेन**पूजितो मेदिनीमुकुटः श्रीआदिनाथः । **महानगर्यां** उद्दण्डविहारे श्रीआदिनाथः । **पुरिमताले** श्रीआदिनाथः । **तक्षशिलायां** बाहुबलिविनिर्मितं धर्मचक्रम् । **मोक्षतीर्थे** श्रीआदिनाथपादुका । [7]**कोल्लपाक**पत्तने माणिक्यदेवः श्रीऋषभो मन्दोदरीदेवतावसरः । **गङ्गा-यमुनयो**र्वेणीसंगमे श्रीआदिकरमण्डलम् ।

२. श्री**अयोध्या**यां श्रीअजितस्वामी । **चंदेर्यां** अजितः । **तारणे** विश्वकोटिशिलायां श्रीअजितः । **अंगदिका**यां श्रीअजित-शांतिदेवताद्वयं श्रीब्रह्मेन्द्रदेवतावसरः ।

३. **श्रावस्त्यां** श्रीसंभवदेवो जाङ्गुलीविद्याधिपतिः ।

४. [8]**सेगमती**ग्रामे श्रीअभिनन्दनदेवः । **नर्मदा** तत्पादेभ्यो निर्गता ।

५. **क्रौंचद्वीपे सिंहलद्वीपे हंसद्वीपे** श्रीसुमतिनाथदेवपादुकाः । [9]**आम्बुरिणि**ग्रामे श्रीसुमतिदेवः ।

६. **माहेन्द्रपर्वते कौशाम्ब्यां** च श्रीपद्मप्रभः ।

७. **मथुरायां** महालक्ष्मीनिर्मितः श्रीसुपार्श्वस्तूपः[10] । श्री**दशपुर**नगरे श्रीसुपार्श्वः सीतादेवी[11]देवतावसरः ।

८. **प्रभासे** शशिभूषणः श्रीचन्द्रप्रभश्चन्द्रकान्त[12]मणिमयः श्रीज्वालामालिनीदेवतावसरः । श्रीगौतमस्वामिप्रतिष्ठितो **वलभ्या**गतः श्रीनन्दिवर्धनकारितः श्रीचन्द्रप्रभः । **नासिक्यपुरे** श्रीजीवितस्वामी त्रिभुवनतिलकः श्रीचन्द्रप्रभः । **चन्द्रावत्यां** मन्दिरमुकुटः श्रीचन्द्रप्रभः । **वाराणस्यां** विश्वेश्वरमध्ये श्रीचन्द्रप्रभः ।

९. **कायाद्वारे** श्रीसुविधिनाथः ।

१०. **प्रयागतीर्थे** श्रीशीतलनाथः ।

११. **विन्ध्याद्रौ मलयगिरौ** च श्रीश्रेयांसः ।

१२. **चम्पायां** विश्वतिलकः श्रीवासुपूज्यः ।

१३. **काम्पील्ये** गङ्गामूले, श्री**सिंहपुरे** च श्रीविमलनाथः ।

१४. **मथुरायां** यमुनाहृदे, समुद्रे **द्वारवत्यां**, **शाकपाणि**मध्ये श्रीअनन्तः ।

---

1 B वेद° । 2 Pa पूर्णकलशः । 3 B °स्थापित° । 4 Pa द्वितीयो । 5 Pa काशद्रहे । 6 Pa जीवत° । 7 Pa-b कोलपाक°; B कोल्लापाक° । 8 Pa सग° । 9 Pa आधुरणि° । 10 Pa °स्तूभः । 11 Pa सीतादेवता° । 12 B Pb °कान्ति° ।

१५. **अयोध्या**समीपे **रत्नवाहपुरे** नागमहितः श्रीधर्मनाथः ।

१६. **किष्किन्धायां लंकायां पाताललंकायां**[1] **त्रिकूटगिरौ** श्रीशान्तिनाथः ।

१७-१८. **गङ्गा-यमुन**योर्वेणीसंगमे श्रीकुंथुनाथारनाथौ ।

१९. **श्रीपर्वते** मल्लिनाथः ।

२०. **भृगुपत्तने** अनर्घ्यरत्नचूडः श्रीमुनिसुव्रतः । **प्रतिष्ठानपुरे अयोध्यायां विन्ध्याचले माणिक्यदंडके** मुनिसुव्रतः ।

२१. **अयोध्यायां** मोक्षतीर्थे नमिः ।

२२. **शौर्यपुरे शङ्ख**जिनालये **पाटला**नगरे **मथुरायां द्वारकायां सिंहपुरे स्तम्भतीर्थे** पाताललिङ्गाभिधः श्रीनेमिनाथः ।

२३. **अजागृहे** नवनिधिः श्रीपार्श्वनाथः । **स्तंभनके** भवभयहरः । **फलवर्द्धिकायां** विश्वकल्पलताभिधः । **करहेटके** उपसर्गहरः । **अहिच्छत्रायां** त्रिभुवनभानुः । **कलिकुण्डे नागह्रदे** च श्रीपार्श्वनाथः । **कुक्कुटेश्वरे** विश्वगजः । **माहेन्द्रपर्वते** छायापार्श्वनाथः । **ओंकारपर्वते** सहस्रफणी पार्श्वनाथः । **वाराणस्यां** दण्डखाते भव्यपुष्करावर्तकः । **महाकालान्तरा** पातालचक्रवर्ती । **मथुरायां** कल्पद्रुमः । **चम्पाया**मशोकः । **मलयगिरौ** श्रीपार्श्वः ।

२४. **श्रीपर्वते** घण्टाकर्णमहावीरः । **विन्ध्याद्रौ** श्रीगुप्तः[2] । **हिमाचले** छायापार्श्वो मन्त्राधिराजः श्रीस्फुलिङ्गः । **श्रीपुरे** अन्तरिक्षः श्रीपार्श्वः । [3]**डाकुली-भीमेश्वरे** श्रीपार्श्वनाथः । **भाइल**[4]**स्वामिगढे** देवाधिदेवः । **श्रीरामशयने** प्रद्योतकारि[5]श्रीवर्धमानः । **मोढेरे वायडे खेडे**[6] **नाणके पल्ल्यां मतुण्डके मुण्डस्थले श्रीमालपत्तने उपकेशपुरे कुण्डग्रामे सत्यपुरे टङ्कायां गङ्गाह्रदे सरस्थाने वीतभये चम्पायां** [7]**अपापायां पुंड्रपर्वते नन्दिवर्द्धन-कोटिभूमौ** वीरः । **वैभाराद्रौ राजगृहे कैलासे श्रीरोहणाद्रौ** श्रीमहावीरः ।

अष्टापदे चतुर्विंशतिस्तीर्थकराः । **संमेतशैले** विंशतिर्जिनाः । **हेमसरोवरे** द्वासप्ततिजिनालयः । **कोटिशिला** सिद्धि[8]क्षेत्रम् ।

इति जैनप्रसिद्धानां तीर्थानां नामपद्धतेः । सङ्ग्रहोऽयं स्फुटीचक्रे श्री**जिनप्रभ**सूरिणा ॥ १ ॥

*किञ्चिदत्र यथा दृष्टं किञ्चिच्चापि यथा श्रुतम् । स्वतीर्थनामधेयानां पद्धतौ लिखितं मया ॥ २ ॥

॥ समाप्तस्तीर्थनामधेयसंग्रहकल्पः†॥

॥ ग्रं० ४९, अ० २१ ॥

---

1 P विहाय नास्त्यन्यत्र । 2 B श्री गुप्तिः । 3 P ण्याकुली°; Pc 'डाकुली चन्द्रावत्यां मंदिरमुकुटभीमेश्वरे' एतादृशः पाठः । 4 Pa भालय° । 5 P °कारितः । 6 B Pa नास्ति 'खेडे' । 7 Pa विहाय 'अपापायां' नास्ति । 8 P Pa सिद्ध° ।

* इदं पद्यं नास्ति P आदर्शे । † P इति सर्वचतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पः ।

४६. समवसरणरचनाकल्पः ।

नमिऊण जिणं **वीरं** कप्पं सिरिसमवसरणरयणाए । पुव्वायरिअकयाहिं गाहाहिं चेव जंपेमि ॥ १ ॥
वाऊ-मेहा कमसो जोअणभूसोहि[1]-सुरहिजलवुट्ठी । मणिरयणभूमिरयणं कुणंति पुण कुसुमवुट्ठि वणा ॥ २ ॥
पायारतिअं कमसो कुणंति वररुप्पकणयरयणमयं । कंचणवसुमणिकविसीससोहिअं[2] भवण-जोइ-वणा ॥ ३ ॥
गाउअमेगं छस्सयधणुहपरिच्छिन्नमंतरं तेसिं । अट्ठंगुलीकरयणी तित्तीसं धणुहबाहल्लं ॥ ४ ॥
पंचसयधणुच्चत्तं चउदारविराइआण वप्पाणं । सव्वप्पमाणमेयं निअनिअहत्थेण य जिणाणं ॥ ५ ॥
सोवाणदससहस्सा भूमीओ गंतु पढमपायारो । पण्णासधणुहपयरो पुणो वि सोवाणपणसहसा ॥ ६ ॥
तत्थ विअ बीअवप्पो पुव्वुत्तविही तयंतरे नेया । तत्तो तईओ एवं वीससहस्सा य सोवाणा ॥ ७ ॥
दस पंच पंच सहसा सव्वे हत्थुच्च-हत्थवित्थिन्ना । बाहिर-मज्झ-ब्भिंतरवप्पाण कमेण सोवाणं ॥ ८ ॥
तम्मज्झे मणिवीढं भूमीओ सड्ढदुन्निकोसुच्चं । दोधणुसयवित्थिण्णं चउदारं जिणधणुसमुच्चं ॥ ९ ॥
सिंहासणाइं चउरो मणिपडिछन्नाइं तेसु चउरूवो । पुव्वमुहो[3] ठाइ सयं छत्तत्तयभूसिओ भयवं ॥ १० ॥
समहिअजोअणपिहुलो तहा असोगो दुसोलसधणुच्चो । पडिबिंबत्तयपमुहं किच्चं तु कुणंति वंतरिआ ॥ ११ ॥
परिसाअग्गे आइसु मुणिवर-वेमाणिणीओं समणीओं । भवण-वण-जोइदेवी देवा वेमाणिअ-नरित्थी ॥ १२ ॥
जोअणसहस्सदंडो धम्मज्झओ कुडहिकेउसंकिन्नो । दो जक्ख चामरधरा जिणपुरओं धम्मचक्कं च ॥ १३ ॥
ऊसिअधय-मणितोरण-अडमंगल-पुण्णकलस-दामाइं । पंचालिअ-छत्ताइं पइदारं धूवघडिआओं ॥ १४ ॥
हेम-सिअ-रत्त-सामलवण्णा सरवण य जोइ-भवणवई । पइदारं वसु वप्पे पुव्वाइसु[4] ठंति पडिहारा ॥ १५ ॥
जयविजयादिअ-अवराजिअगोरा रत्तकणयनीलाभा । देवी पुव्वक्कमेणं सकच्छरा[5] ठंति कणयमए ॥ १६ ॥
जडमउडमंडिआ तह तुंबरु-खट्टंग-पुरिससिरिमाली । बहिवप्पदार दोसु वि पासेसुं ठंति[6] पइवप्पं ॥ १७ ॥
बहिवप्पे जाणाइं बीए सत्तू वि मित्तभावगया । तिरिआ मणिमयछंदे[7] इंसु पुण रयणवप्पबहिं ॥ १८ ॥
बहिवप्पदारमज्झे दो दो वावीओं हुंति वट्टम्मि । चउरंससमोसरणे इग इग वावी उ कोणेसुं ॥ १९ ॥
उक्किट्ठि[8] सीहनायं कलयलसद्देण सव्वओ सव्वं । तित्थयरपायमूले करिंति देवा निवयमाणा ॥ २० ॥
चेइदुम-पीढछंदग-आसण-छत्तं च चामराओ अ । जं चण्णं करणिज्जं करंति तं वाणमंतरिआ ॥ २१ ॥
साहारणओसरणे एवं [9]जत्थिड्ढिमंतु ओसरइ । इक्कु च्चिअ तं सव्वं करेइ भयणाउ इअरेसिं ॥ २२ ॥
[10]सूरुदयपच्छिमाए ओगाहंतीइ पुव्वओ एइ । दोहिं पउमेहिं पाया मग्गेण य हुंति सत्तन्ने ॥ २३ ॥
आदाहिणपुव्वमुहो तिदिसिं पडिरूवगाउ देवकया । जिट्ठगणी अन्नो वा दाहिणपुव्वे अ दूरंमि ॥ २४ ॥
जे ते देवेहिं कया तिदिसिं पडिरूवगा जिणवरस्स । तेसिं पि तप्पभावा तयाणुरूवं हवइ रूवं[11] ॥ २५ ॥
इंतं महड्ढिअं पणिवयंति ठिअमवि [12]वयंति पणमंता । न वि जंतणा न विकहा न परुप्परमच्छरो न भयं ॥ २६ ॥
तित्थपणामं काउं कहेइ साहारणेण सद्देण । सव्वेसिं सन्नीणं जोअणनीहारिणा भयवं ॥ २७ ॥
जत्थ अपुव्वोसरणं अदिट्ठपुव्वं[13] च जेण समणेणं[14] । बारसहिं जोअणेहिं सो एइ अणागमो लहुआ ॥ २८ ॥
साहारणासवंते[15] तदुवओगो अगाहगगिराए । नय निव्विज्जइ[16] सोआ किढिवाणिअ-दासिआहरणा ॥ २९ ॥
सव्वाउअं पि सोआ [17]झविज्ज जइ हु सययं जिणो कहइ । सीउण्ह-खुप्पिवासापरिस्समभए अविगणंतो ॥ ३० ॥

---

1 C °सोहिया । 2 Pb °सोहियं च वणजोइ° । 3 B पुव्वमुहे । 4 C पव्वाइसु; Pb पुव्वाइंसु वाइसु । 5 B सत्थकरा । 6 C ठवंति । 7 Pb-c छंदे ईसे । 8 C उक्किट्ठ° । 9 Pa C जत्थिड्ढि°; Pb जत्थड्ढि° । 10 Pa सूरदय°; C सूरिदय° । 11 Pa रूवं । 12 Pa धयंति; C यंति । 13 Pa पुव्वंत; C पुव्वं व । 14 Pb सरणेणं । 15 C °सवंतो । 16 B नयरिदिज्जइ । 17 C सोआमज्झविजज्जइ ।

वित्तीओ सुवण्णस्साबारस अद्धं[1] च सयसहस्साइं । तावइअं चिअ कोडी पीईदाणं तु चक्किस्स ॥ ३१ ॥
एअं चेव पमाणं नवरं रययं तु केसवा दिंति । मंडलिआण सहस्सा पीईदाणं सयसहस्सा ॥ ३२ ॥
भत्तिविभवाणुरूवं अन्नेवि य दिंति इब्भमाईआ । सोऊण जिणागमणं निउत्तमणिओइएसुं वा ॥ ३३ ॥
रायावरायमच्चो तस्सासइ पवरजणवओ वावि । दुब्बलि खंडिअ बलि छडिअ तंदुलाणाढगं कलमा ॥ ३४ ॥
भाइअमुणाणिआणं अखंडफुडिआण[2] फलगसरिआणं । कीरइ बली सुरावि अ तत्थेव छुभंति गंधाई ॥ ३५ ॥
बलिपविसण[3]समकालं पुव्वद्दारेण ठाइ परिकहणा । तिगुणं पुरओ पाडण तस्सद्धं अवडिअं देवा ॥ ३६ ॥
अद्धद्धं अहिवइणो अवसेसं होइ पागयजणस्स । सव्वामयप्पसमणी[4] कुप्पइ नण्णो य छम्मासा ॥ ३७ ॥
राओवणीअसीहासणोवविट्ठो व पायपीढंमि । जिट्ठो अन्नयरो वा गणहारि करेइ बीआए[5] ॥ ३८ ॥
इअ समवसरणरयणाकप्पो सुत्ताणुसारओ लिहिओ । लेसुद्देसेण इमो **जिणपह**सूरिहिं पढियव्वो ॥ ३९ ॥

॥ इति समवसरणरचनाकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४३ । आदितः ३२०८ ॥

आदितः सर्वकल्पेषु ग्रन्थाग्रमिह जातवान् । अनुष्टुभामष्टयुता दशनप्रमिताः शताः ॥

श्री**धर्मघोष**सूरयोऽप्येवं समवसरणरचनास्तवमाहुः—"थुणिमो केवलिवत्थं० ।" ग्रं० २३, अ० १३ ॥

४७. कुडुंगेश्वरनाभेयदेवकल्पः ।

श्वेताम्बरेण चारणमुनिनाचार्येण **वज्रसेनेन** ।
शकावतारतीर्थे श्री**नाभेयः** प्रतिष्ठितो जीयात् ॥ १ ॥
[6]**कुडुंगेश्वर**नाभेयदेवस्यानल्पतेजसः । कल्पं जल्पामि लेशेन दृष्ट्वा शासनपट्टिकाम् ॥ २ ॥

पूर्वं [7]**लाटदेश**मण्डन**भृगुकच्छ**पुरालङ्कारे **शकुनिकाविहारे** स्थिताः श्री**वृद्धवादि**सूरयो 'यो येन निर्जीयते तेन तस्य शिष्येण भाव्य'मिति प्रतिज्ञां विधाय वादकरणार्थं **दक्षिणापथा**यातं कर्णाट[8]भट्टदिवाकरं निर्जित्य व्रतं ग्राहयां चक्रिरे । **सिद्धसेनदिवाकरे**त्यभिधयाऽभ्यधुः । ततः कतिचिद्दिनैर्निःशेषानप्यागमानध्यजीगपत् । अन्यदा तु सकलानप्यागमान् संस्कृतानहं करोमीति तेन वचनमिदमूचे । ततः पूज्या अपीदमभिदधिरे—किं संस्कृतं कर्तुं न जानन्ति श्रीमन्तस्तीर्थङ्करा गणधरा वा यदर्द्धमागधेनागमानकृषत । तदेवं जल्पतस्तव महत्प्रायश्चित्तमापन्नम् । किमेतत्तवाग्रतः कथ्यते । स्वयमेव जानन्नसि । ततो विमृश्याभिदधे—भो भगवन् ! आश्रितमौनो द्वादशवार्षिकं पाराञ्चितं नाम प्रायश्चित्तं गुप्तमुखवस्त्रिकारजोहरणादिलिङ्गः प्रकटितावधूतरूपश्चरिष्यामीत्यावश्यकम् । उपयुक्त इति गुरुभिरभिहितमाकर्ण्य देशान्तरग्रामनगरादिषु पर्यटन् द्वादशे वर्षे श्रीम**दुज्जयिन्यां कुडुंगेश्वर**देवालये शेफालिकाकुसुमरंजिताम्बरालङ्कृतशरीरः समागत्यासांचक्रे । ततो देवं कस्मान्न नमस्यतीति लोकैर्जल्प्यमानोऽपि नाजल्पत् । एवं च[9] जनपरम्परया श्रुत्वा, सर्वत्रानृणीकृतविश्वविश्वंभराङ्कितनिजैकवत्सरः श्री**विक्रमादित्य**देवः समागत्य जल्पयांचकार—क्षीरलिलिक्षो भिक्षो[10] ! किमिति त्वया देवो न नमस्यते[11] ? । ततस्त्विदमवादि वादिना—मया नमस्कृते देवे लिङ्गभेदो भवतामप्रीतये भविष्यति । राज्ञोचे—भवति (°तु ?) क्रियतां नमस्कारः । तेनोक्तम्—श्रूयतां तर्हि । ततः पद्मासनेन भूत्वा [12]द्वात्रिंशद्-द्वात्रिंशिकाभिर्देवं स्तोतुमुपचक्रमे । तथा हि—

---

1 C अट्ठं । 2 Pa °फुरिआण । 3 Pa °पवसण° । 4 C °प्पसवणी । 5 B बीआ य । 6 P कुडंगेश्वर° । 7 Pa ललाट° । 8 C °पट्ट° । 9 B नास्ति 'च' । 10 P नास्ति । 11 C देवो न मंस्यते; Pa न नमस्यंते । 12 P B नास्ति 'द्वात्रिंशद्' ।

स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्रमनेकमेकाक्षरभावलिङ्गम् । अव्यक्तमव्याहतविश्वलोकमनादिमध्यान्तमपुण्यपापम् ॥ १ ॥

इत्यादि प्रथम एव[1] श्लोके प्रासादस्थितात् शिखिशिखाग्रादिव लिङ्गाद्धूमवर्तिरुदस्थात् । ततो जनैर्वचनमिदमूचे–अष्टविद्येशाधीशः कालाग्निरुद्रोऽयं भगवांस्तृतीयनेत्रानलेन भिक्षुं भस्मसात्करिष्यति । ततस्तडित्तेज इव सतडत्कारं प्रथमं ज्योतिर्निर्गत्याप्रतिचक्राताड्यमानमिथ्यादृष्टिदैवतमामूलाल्लिङ्गं द्विधा भित्त्वा प्रादुरास पद्मासनासीनः स्वयंभूर्भगवान्**नाभिसूनुः** । तदनया दर्शनप्रभावनया तीर्णः पाराञ्चिताम्भोनिधिरिति विमुच्य रक्ताम्बराणि, प्रकटीकृत्य मुखवस्त्रिकारजोहरणादिलिङ्गानि, महाराजं धर्मलाभाक्षरैराशीर्वादयांचक्रे वादीन्द्रः । ततो विनयपुरस्सरम्–

सूरये **सिद्धसेना**य दूरादुच्छ्रितपाणये । धर्मलाभ इति प्रोक्ते ददौ कोटिं नराधिपः ॥ १ ॥

ततः प्रभून् क्षमयित्वा नृपतिः स्तुतिमकार्षीत् । यथा–

उद्व्यूढपाराञ्चित**सिद्धसेनदिवाकरा**चार्यकृतप्रतिष्ठः ।
श्रीमान् **कुडुंगेश्वरनाभिसूनु**र्देवः शिवायास्तु जिनेश्वरो वः ॥ १ ॥

ततो भगवतो भट्टश्रीदिवाकरसूरेर्देशनया [2]संजीविनीचारिचरकन्यायेन स्वाभाविकभद्रकतया विशेषतः सम्यक्त्वमूलां देशविरतिं प्रत्यपादि श्री**विक्रमादित्यः** । ततश्च **गोहृद**मण्डले च **सांबद्रा**[3] प्रभृतिग्रामाणामेकनवतिं, **चित्रकूट**मण्डले **वसाड**प्रभृतिग्रामाणां †चतुरशीतिं, तथा [4]**घुंटारसी**प्रभृतिग्रामाणां चतुर्विंशतिं, **मोहडवासक**मण्डले **ईसरोडा**प्रभृतिग्रामाणां† षट्पञ्चाशतं श्री**कुडुंगेश्वरऋषभदेवा**य शासनेन स्वनिःश्रेयसार्थमदात् । ततः शासनपट्टिकां 'श्रीम**दुज्जयिन्यां**, संवत् १, चैत्रसुदि १, गुरौ, [5]भाटदेशीयमहाक्षपटलिकपरमार्हतश्वेताम्बरोपासकब्राह्मण**गौतम**सुत**कात्यायन**ेन राजाऽलेखयत् ।' ततः श्री**कुडुंगेश्वर**ऋषभदेवप्रकटीभवनदिनात् प्रभृति सर्वात्मना मिथ्यात्वोच्छेदेन सर्वानपि जटाधरादीन् दर्शनिनः श्वेताम्बरान् कारयित्वा परिमुक्तमिथ्यादृष्टिदेवगुरुः सकलामप्यवनीं जैनमुद्राङ्कितां चकार । ततः परितुष्टैः श्री**सिद्धसेन**सूरिरभिदधे वसुधाधवः ।

पुण्णे वाससहस्से सयंमि अहिअंमि नवनवइकलिए । होही **कुमरनरिंदो** तुह **विक्कम**राय ! सारिच्छो ॥ १ ॥

इत्थं ख्यातिं सर्वजगत्पूज्यतां चोपगतः श्री**कुडुंगेश्वर**युगादिदेव इति ।

कुडुंगेश्वरदेवस्य कल्पमेतं यथाश्रुतम् । रुचिरं रचयां चक्रुः श्री**जिनप्रभ**सूरयः ॥ १ ॥

॥ इति कुडुंगेश्वरयुगादिदेवकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५५, अ० १८ ॥

---

1 C नास्ति 'एव'। 2 B P संजीवनी°। 3 B साबद्रा; P सावद्रा। † एतदन्तर्गता पंक्तिः नास्ति P आदर्शे। 4 C घंटारसी। 5 B C भाद°।

४८. व्याघ्रीकल्पः ।

यः स्यादाराधको जन्तुः श्रेयस्तत्कीर्तनाद् ध्रुवम् । इत्यालोच्य हृदा किंचिद्व्याघ्रीकल्पं वदाम्यहम् ॥ १ ॥
श्री**शत्रुञ्जय**नाभेयचैत्यवप्रस्य कर्हिचित् । प्रतोलीद्वारमावृत्य काचिद्व्याघ्री समाश्रिता ॥ २ ॥
निरीक्ष्य निश्चलाङ्गीं तामातङ्कातुरमानसाः । जनाः श्राद्धा जिनं नन्तुं बहिस्तो न ढुढौकिरे ॥ ३ ॥
राजन्यः साहसी कोऽपि तस्याः पार्श्वमुपासृपत् । सा तु तं प्रति नाकार्षीत् हिंसाचेष्टां मनागपि ॥ ४ ॥
विश्वस्य बाहुजस्तस्य कुतोऽप्यानीय तत्पुरः । आमिषं मुमुचे सा च दृशापि न तदस्पृशत् ॥ ५ ॥
अथ श्राद्धजनोऽप्येत्य त्यक्तभीस्तत्पुरः क्रमात् । तरसा सरसं भक्ष्यं[1] पानीयं चोपनीतवान् ॥ ६ ॥
तदप्यनिच्छन्तीं दृष्ट्वा तां दध्यौ जनता हृदि । नूनं जातिस्मरैषाऽत्र तीर्थेऽनशनमाददे ॥ ७ ॥
श्लाघ्यस्तिर्यग्भवोऽप्यस्याश्चतुर्धाऽऽहारमुक्तितः । एकाग्रचक्षुषा चैषा देवमेव निरीक्ष्यते[2] ॥ ८ ॥
अभ्यर्च्य[3] गन्धपुष्पाद्यैः श्राद्धाः साधर्मिकीधिया । सम्भावयां बभूवुस्तां स्फीतसङ्गीतकोत्सवैः ॥ ९ ॥
निराकारं प्रत्याख्यातं तेऽथ[4] तस्या अचीकरन् । मनसैव श्रद्दधाना सा स्वीचक्रे च तन्मुदा ॥ १० ॥
इत्थं सा तीर्थमाहात्म्यात्समृद्ध्यच्छुद्धवासना । दिनानुपोष्य सप्ताष्टान्नष्टपापा ययौ दिवम् ॥ ११ ॥
चन्दनागरुभिस्तस्या वपुः संस्कार्य संज्ञिनः । प्रतोल्या दक्षिणे पक्षे शैलीं मूर्तिं न्यवीविशन् ॥ १२ ॥
तीर्थचूडामणिर्जीयात्सैष श्री**विमलाचलः** । भवेयुर्यत्र तिर्यञ्चोऽप्येवमाराधिकाश्चिमाः ॥ १३ ॥
व्याघ्रीकल्पमिमं कृत्वा श्री**जिनप्रभ**सूरयः । पुण्यं यदार्जयंस्तेन श्रीसङ्घोऽस्तु सुखास्पदम् ॥ १४ ॥

॥ इति व्याघ्रीकल्पः ॥

॥ ग्रं० १४ ॥

---

1 B C भक्ष्ये । 2 C निरीक्षते । 3 B अभ्यर्च्य । 4 B ते च; C तथा ।

४९. अष्टापदगिरिकल्पः ।

अट्ठावयदेहपहं भवकरिअट्ठावयं नमिय **उसहं** । **अट्ठावयस्स** गिरिणो जंपेमि समासओ कप्पं ॥ १ ॥

अत्थि इहेव **जंबुद्दीवे** दीवे **भारहे** वासे दक्षि(°क्खि)णभरहद्धमज्झे नवजोअणवित्थिन्ना बारसजोअणदीहा **अउज्झा** नाम नयरी । सा य सिरि**उसभ-अजिअ-अभिनंदण-सुमइ-अणंता**इजिणाणं जम्मभूमी । तीसे अ उत्तरदिसाभाए[1] बारसजोअणेसुं **अट्ठावओ** नाम **केलासा**पराभिहाणो रम्मो[2] नगवरो अट्ठजोअणुच्चो सच्छफालिहसिलामओ, इत्तुच्चिअ लोगे **धवलगिरि**त्ति पसिद्धो । अज्जावि **अउज्झा**परिसरवत्तिउड्डुयकूडोवरिं[3] ठिएहिं निम्मले नहयले धवला सिहरपरंपरा तस्स दीसइ । सो पुण महासरोवरघण[4]सरसपायवनिज्झरवारिपूरकलिओ परिपाससंचरंतजलहरो मत्तमोराइविहगकुलकलयलमुहलो किंनरखेअररमणीरमणिज्जो चेइअवंदणत्थमागच्छंतचारणसमणाइलोगो आलोअमित्तेणं पि खुहापिवासावहरणो आसन्नवत्तिमाणससरोवरविराइओ अ । एअस्स उवच्चयासु **साकेअ**वासिणो जणा नाणाविहकीलाहिं कीलंति म्ह । तस्सेव य सिहरे **उसभ**सामी चउदसमभत्तेणं पज्जंकासणट्ठिओ अणगाराणां दसहिं सहस्सेहिं समं माहबहुलतेरसीए अभीइरिक्खे पुव्वण्हे निव्वाणमणुपत्तो । तत्थ सामिणो देहं सक्कारियं सक्काइएहिं । पुव्वदिसाए सामिणो चिया, दक्खिणदिसाए इक्खागुवंसीणं, पच्छिमदिसाए सेससाहूणं । तम्मि चियाठाणतिगे देवेहिं थूभतिगं कयं । **भरह**चक्कवट्टिणा य सामिसक्कारासन्नभूयले जोअणायामो तदद्धपिहुलो तिगाउअसमूसिओ सिंहनिसिज्जा नामधिज्जो पासाओ रयणोवलेहिं वड्ढइरयणेण कारिओ । तस्स चत्तारि दुवाराणि फालिहमयाणि । पइदारं उभओ पासेसुं सोलस रयणचंदणकलसा । पइदारं सोलस रयणमया तोरणा । दारे दारे सोलस अट्ठमंगलाइं । तेसु दुवारेसु चत्तारि विसाला मुहमंडवा । तेसिं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेक्खामंडवा । तेसिं पेक्खामंडवाणं मज्झभागेसु वइरामया अक्खवाडा । अक्खाडे अक्खाडे मज्झभागे रयणसिंहासणं । पत्तेअं [5]पेक्खामंडवग्गे मणिपीढिआओ । तदुवरि रयणमया चेइअथूभा । तेसिं चेइअथूभाणं पुरओ पत्तेअं पइदिसं महइमहालिआ मणिपीढिआ । तदुवरि पत्तेअं चेइअपायवा । पंचसयधणुप्पमाणाओ चेइयथूभसंमुहीओ सव्वंगरयणनिम्मिआ [†]**उसभा वद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा** नामिगाओ[†] पलिअंकासणनिसण्णाओ मणोहराओ सासयजिणपडिमाओ **नंदीसर**दीवचेइअमज्झे व हुत्था । तेसिं च चेइअथूभाणं पुरओ पत्तेअं चेइअपायवा । तेसिं चेइअपायवाणं पुरओ पत्तेअं मणिपीढिआओ; तासिं च उवरि पत्तेअं इंदज्झओ । इंदज्झयाणं पुरओ पत्तेअं नंदापुक्खरिणी त्ति सोवाणा सतोरणा सच्छसीअलजला पुण्णा विचित्तकमलसालिणी मणोहरा [6]दहिमुहाधारपुक्खरिणीनिभा । सीहनिसिज्जामहाचेइअमज्झभागे महइमहालिआ मणिपीढिआ । तीए उवरि चित्तरयणमओ देवच्छंदओ । तदुवरि नाणावण्णंसुगमओ उल्लोओ । उल्लोअस्स अंतरे [7]पासअं अ वइरामया अंकुसा । तेसु अंकुसेसु ओलंबिया कुंभमिज्जआमलगथूलमुत्ताहलमया हारा । हारपंतेसु अ विमलाओ मणिमालिआओ । *मणिमालिआणं पंतेसु वइरमालिआओ* । चेइअभित्तीसु विचित्तमणिमया गवक्खा डज्झमाणागरुधूमसमूहवमालिआ । तम्मि देवच्छंदे रयणमईओ उसभाइचउवीसजिणपडिमाओ निअनिअसंठाण-माण-वण्णधराओ [‡]कारियाओ **भरह**चक्किणा । तत्थ सोलस पडिमाओ[‡]—**उसभ-अजिअ-संभव-अभिनंदण-सुमइ-सुपास-सीअल-सिज्जंस-विमल-अणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-नमि-महावीरा**णां सुवण्णमईओ । **मुणिसुव्वय-नेमीणं** रायावट्टमईओ । **चंदप्पह-सुविहीणं** फलिहमईओ । **मल्लि-पासनाहाणं** वेरुलिअमईओ । **पउमप्पह-वासुपुज्जाणं** पउमरायमईओ । तासिं च सव्वासिं पडिमाणं लोहिअक्खपडिसेगा, अंकरयणमया नहा । पडिसेगो नाम नहपज्जंतेसु जावयरसु व लोहिअक्खमणिरससेगो जं दिज्जइ । नाही-केसंतभूमी-जीहा-तालु-सिरीवच्छ-चूचु-

---

1 P भागे । 2 P आदर्शे एवैतत्पदम् । 3 Pa B उड्डयज्झाडोवरि । 4 'घण' नास्ति P । 5 B P पिक्खा° ।
† P उसभवद्धमाण-चंदाणण-वारिसेणनामिगाओ । 6 P दिहि° । 7 P पासाओ । * एतदन्तर्गतं वाक्यं नोपलभ्यते Pa आदर्शे ।
‡ एतदन्तर्गता पंक्तिः P आदर्शे एव प्राप्यते ।

ग-हत्थ-पायतलानि[1] तवणिज्जमयाणि । नयणपम्हाणि, कणीणिगाओ, मंसू, भमुहाओ, रोमाणि, सिरकेसा रिट्ठरयणमया । उट्ठा विद्दुममया । फालिहमया दंता । वयरमईओ सीसघडीओ । अंतो लोहिअक्खपडिसेगाओ, सुवण्णमईओ नासिआओ । लोहिअक्खपडिसेगपंताइं अंकमयाइं लोअणाइं । तासिं च पडिमाणं पिट्ठे पत्तेअं इक्किका रयणमई मुत्ता-पवाल-जाल-कंस-कोरण्ट-मल्लदामं फालिहमणिदंडं सिआयवत्तं धारिंती छत्तहरपडिमा । तासिं च उभयपासे पत्तेअं उक्खित्तमणिचामराओ रयणमईओ चमरधारपडिमाओ । पडिमाणं च अग्गे पत्तेअं दो दो नागपडिमाओ, *दो दो जक्खपडिमाओ, दो दो भूअपडिमाओ,* दो दो कुंडधारपडिमाओ कयंजलीओ रयणमईओ सव्वंगुज्जलाओ पज्जुवासिंति । तहा देवच्छंदे चउवीसं रयणघंटाओ, चउवीसं माणिक्कदप्पणा, तहेव ठाणट्ठिअदीविआओ सुवण्णमईओ; तहा रयणकरंडगाइं, पुप्फचंगेरिआओ, लोमहत्थाइं, पडलीओ, आभरणकरंडगाइं, कणगमयाणि, धूवदहणाणि, आरत्तिआणि, रयणमंगलदीवा, रयणभिंगारा, रयणत्थालाणि, तवणिज्जपडिग्गहा, रयणचंदणकलसा, रयणसिंहासणाणि, रयणमयाणि अट्ठमंगलाणि, सुवण्णमया तिल्लसमुग्गया, कणगमयाणि धूवभंडाणि, सुवण्णमया उप्पलहत्थगा । एअं सव्वं पत्तेअं पडिमाणं पुरओ हुत्था । तं चेइअं चंदकंतसालसोहिअं, ईहामिग-उसभ-मगर-तुरंगम-नर-किंनर-विहग-वालग-रुरु-सरभ-चमर-गय-वणलयाविचित्तं रयणथंभसमाउलं, पडागारमणिज्जं, कंचणधयदंडमंडिअं, ओअट्ठिअकिंकिणीसद्दमुहलं, उवरि पउमरायकलसविराइअं, गोसीसचंदणरसघासय (?) लंछिअं । माणिक्कसालभंजिआहिं विचित्तचिट्ठाहिं अहिट्ठिअनिअंबं, बारदेसमुभयओ चंदणरसलित्तकलसजुअलंकिअं, तिरियं बद्धोलंबिअधूवियसुरहिदामरम्मं, पंचवण्णकुसुमरइयधरतलं, कप्पूरागरुमिगमयधूवधूमंधारियं, अच्छरगणसंकिण्णं, विज्जाहरीपरिअरिअं, अग्गओ पासओ पच्छा य चारुचेइअपायवेहिं मणिपीढिआहिं च विभूसिअं **भरह**स्स आणाए जहाविहि वड्ढइरयणेण निप्पाइअं । तत्थेव दिव्वरयणसिलामईओ नवनवइभाऊणं पडिमाओ कारिआओ, अप्पणो अ पडिमा सुस्सूसमाणा कारिआ । चेइआओ बाहिं एगं भगवंतस्स **उसभ**सामिणो थूभं, एगूणं च सयं भाउगाणं थूभे कारविंसु । इत्थ गमणागमणेणं नरा पुरिसा मा आसायणं काहिंति त्ति लोहजंतमया आरक्खगपुरिसा कारिआ । तेण तं अगम्मं जायं । गिरिणो अ दंता दंडरयणेणं छिन्ना । अओ सो गिरी अणारोहणिज्जो जाओ । जोअणंतराणि अ अट्ठपयाणि मेहलारूवाणि माणुसअलंघणिज्जाणि कारिआणि । अओ चेव **अट्ठावओ** त्ति नामं पसिद्धं ।

तओ कालक्कमेण चेइअरक्खणत्थं सट्ठिसाहस्सीए **सगर**चक्कवट्टिपुत्ताणं दंडरयणेण पुढविं खणित्ता बोले (?) सहस्सजोअणा परिहा कया, दंडरयणेण **गंगा**तडं विदारित्ता जलेणं पूरिआ । तओ **गंगा** खाइअं पूरित्ता, अट्ठावयासण्णगामनगरपुराइअं पलावेउं पउत्ता । पुणो दंडरयणे आयड्ढिअ **कुरूणं** मज्झे, **हत्थिणाउरं** दक्खिणेण, **कोसलदेसं** पच्छिमेण, **पयागं** उत्तरेण, **कासिदेस**स्स दक्खिणेणं, **वज्झ**मज्झे दक्खिणेणं, **मगहाणं** उत्तरेणं, मग्गनईओ कट्टंती **सगरा**इट्ठेण **जण्हु**पुत्तेणं **भगीरह**कुमारेणं पुव्वसमुद्दमोआरिआ । तप्पभिइ **गंगासागर**तित्थं जायं ।

इत्थेव य पव्वए अट्ठ उसभसामिणो नत्तुआ, नवनउई **बाहु-बलि**प्पमुहा पुत्ता य सामिणा सद्धिं, एवं अट्ठुत्तरसयं एगसमएण उक्कोसोगाहणाए अच्छेरयभूआ सिद्धा ।

इत्थ पव्वए ससत्तीए आरोढुं जो मणुओ चेइयाइं वंदए सो मुक्खं इहेव भवे पाउणइ त्ति सिरि**वद्धमाण**सामिणा सयं वण्णिओ एसो । तं सोउं भयवं **गोअमसामी** लद्धिनिही इमं नगवरमारूढो । चेइआइं वंदित्ता असोगतरुतले वेसमणस्स पुरओ साहूणं तवकिसिअंगत्तणं वक्खाणंतो सयं च उवचिअसरीरो वेसमणस्स–'अहो ! अन्नहावाई-कारि'त्ति विअप्पनिवारणत्थं 'पुंडरीयज्झयणं' पण्णविंसु । **पुंडरीओ** किल पुट्ठसरीरो वि भावसुद्धीए सव्वट्ठसिद्धिं गओ । **कंडरीओ** उण दुब्बलदेहो वि सत्तमपुढवीए । तं च पुंडरीअज्झयणं वेसमणसामाणिएणं अवधारिअं **गोअम**मुहाओ सोऊणं । सो अ **तुंबवण**सन्निवेसे **धणगिरि**पत्तीए **सुनंदाए** गब्भे उववज्जिअ दसपुव्वधरो

[1] B °तलाणि । * एतदन्तर्गता पंक्तिर्नास्ति Pa ।

वइरसामी जाओ। अट्ठावयाओ ओअरमाणेणं च **गोअम**सामिणा **कोडिन्न-दिन्न-सेवालि**तावसा तिउत्तर-पंनरससयसंखा दिक्खिया। ते खलु जणपरंपराए इत्थ तित्थे चेइअवंदगो सिवं इहेव पावइ त्ति **वीर**वयणं सुच्चा पढम-बीअ-तइअमेहलासुं जहासंखं **कोडिन्ना**इआ आरूढा अहेसि। तओ परं गंतुमचयंता **गोअम**सामिं अप्पडिह-यमुत्तरंतं दट्ठुं विम्हिअ पडिबुद्धा निक्खंता य।

तत्थेव पव्वए **भरह**चक्कवट्टिपमुहाओ अणेगा महरिसिकोडीओ सिद्धाओ। तत्थेव य **सुबुद्धी** नाम **सगर**-चक्किमहामच्चो **जन्हु**माईणं सगरसुआणं पुरओ, **आइच्चजसा**ओ आरब्भ पंचासलक्खे कोडिसागरोवमकालमज्झे **भरह**महारायवंससमुब्भूआणं रायरिसीणं चित्तंतरगंडियाए सव्वट्ठसिद्धि†गइं मुक्खगइं च वाहरित्था।

इत्थेव पव्वए पवयणदेवयानीयाए **वीरमई**ए† चउवीसजिणपडिमाणं भाले सुवण्णमया रयणखचिया तिलया दिन्ना। तओ तीए धूसरीभवं जुगलधम्मिभवं देवभवं च लद्धूण **दमयंती**भवे संपत्ते तिमिरपहयरावहारिभालयले साभाविअं तिलयं संजायं।

इत्थेव पव्वए **वालि**महरिसी कयकाउस्सग्गो ठिओ। अह विमाणखलणकुविएण **दसग्गीवे**ण पुव्ववेरं सरं-तेणं[1] तलभूमिं खणित्ता, तत्थ पविसिअ एअं निअवेरिणं-सह **अट्ठावय**गिरिणा उप्पाडिअ **लवणसमुद्दे** खिवामि त्ति बुद्धीए विज्जासहस्सं सुमरित्ता उप्पाडीओ गिरी। तं च ओहिनाणेण नाउं चेइअरक्खानिमित्तं पायंगुट्ठेण गिरिमत्थयं सो रायरिसी चंपित्था। तओ संकुचिअगत्तो दसाणणो मुहेण रुहिरं वमंतो आरावं मिल्हित्था। तत्तुच्चिअ **रावणु** त्ति पसिद्धो। तओ मुक्को दयालुणा महरिसिणा पाएसु पडित्ता खामित्ता य सट्ठाणं गओ। इत्थेव **लंका**हिवई जिणाणं पुरओ पिक्खणयं करिंतो दिव्ववसेण वीणातन्तीए तुट्टाए मा पिक्खणयरसभंगो होउ त्ति निअभुआउद्धारुं कड्ढित्तुं वीणाए लाइ। अवं (एवं?) भुअवीणावायणए भत्तिसाहसतुट्ठेण **धरणिंदे**ण तित्थवंदणागएण **रावण**स्स अमोह-विजया सत्तिरूवकारिणी विज्जा दिन्ना।

तत्थेव पव्वए **गोअम**सामिणा सिंहनिसिज्जाचेइअस्स दक्खिणदुवारे पविसंतेण पढमं चउण्हं संभवाईणं पडि-माओ वंदिआओ; तओ पयाहिणेणं पच्छिमदुवारेसु पासाईणं अट्ठण्हं; तओ उत्तरदुवारे धम्माईणं दसण्हं; तओ पुव्व-दुवारे दो चेव उसभ-अजिआणं ति।

जं[2] तित्थमिणमगम्मं ता[3] फलिह[4]वणगहणसमरवालेहिं[5]। जलपडिबिंबियचेईअज्झयकलसाइं पि जं पिच्छे ॥ १ ॥

भविओ विसुद्धभावो पूआण्हवणाइं तत्थ वि कुणंतो। पावइ जत्ताइफलं जं भावोच्चिअ फलं दिसइ ॥ २ ॥

भरहेसरनिम्मिविआ चेइअथूभे इहं पडिमजुत्ते। जे पणमंति महंति अ ते धन्ना ते सिरीनिलया ॥ ३ ॥

इअ अट्ठावयकप्पं **जिणपह**सूरीहिं निम्मिअं भव्वा। भाविंति निअमणे[6] जे तेसिं कलाणमुल्लसइ ॥ ४ ॥

अष्टापदस्तवे पूर्वं योऽर्थः संक्षिप्य कीर्तितः। विस्तरेण स एवास्मिन् कल्पेऽस्माभिः प्रकाशितः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीअष्टापदकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ११८ ॥

---

† एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता B P Pa आदर्शेषु। 1 P सरिंतेणं। 2 'जं' नास्ति P Pa B। 3 B तो; Pa-b तावत्। 4 Pa फणिहा°। 5 P Pb °वालहिं। 6 Pa नियमेण।

५०. हस्तिनापुरतीर्थस्तवनम् ।

अभिवन्द्य जगद्वन्द्यान् श्रीमतः **शान्ति-कुन्थ्वरान्** ।
स्तुत्यं वास्तोष्पतिस्तोमैः स्तौमि तीर्थं **गजाह्वयम्** ॥ १ ॥

शतपुत्र्यामभून् **नाभिसू**नोः सूनुः **कुरु**र्नृपः । **कुरुक्षेत्र**मिति ख्यातं राष्ट्रमेतत्तदाख्यया ॥ २ ॥
कुरोः पुत्रोऽभवद् **हस्ती** तदुपज्ञमिदं पुरम् । **हस्तिनापुर**मित्याहुरनेकाश्चर्यसेवधिम् ॥ ३ ॥
श्री**युगादि**प्रभोराद्या चोक्षैरिक्षुरसैरिह । **श्रेयांस**स्य गृहे पञ्चदिव्याढ्याऽजनि पारणा[1] ॥ ४ ॥
जिनास्त्रयोऽत्राजायन्त **शान्ति-कुन्थुरर**स्तथा । अत्रैव सार्वभौमर्द्धिं[2] बुभुजुस्ते महीभुजः ॥ ५ ॥
मल्लिश्च समवासार्षीत्तेन चैत्यचतुष्टयी । अत्र निर्मापिता श्राद्धैर्वीक्ष्यते महिमाद्भुता ॥ ६ ॥
भासतेऽत्र जगन्नेत्रपवित्रीकारकारणम् । भवनं चा**ऽम्बिका**देव्या यात्रिकोपप्लवच्छिदः ॥ ७ ॥
जाह्नवी क्षालयत्येतच्चैत्यभित्तीः स्ववीचिभिः । कल्लोलोच्छालितैर्भूयो भक्त्या स्नात्रचिकीरिव ॥ ८ ॥
सनत्कुमारः[3]**सुभूमो महापद्म**श्च चक्रिणः । अत्रासन् **पाण्डवाः** पञ्च मुक्तिश्रीजीवितेश्वराः ॥ ९ ॥
गङ्गदत्तः कार्तिकश्च श्रेष्ठिनौ **सुव्रत**प्रभोः । शिष्यावभूतां **विष्णु**श्च **नमुचे**रत्र शासिता ॥ १० ॥
कलिदर्पद्रुहं स्फीतसङ्गीतां सद्वसुव्ययाम् । यात्रामासूत्रयन्त्यत्र भव्या निर्व्याजभक्तयः ॥ ११ ॥
शान्तेः कुन्थोऽरव (रस्य) चतुष्कल्याणी चात्र पत्तने । जज्ञे जगज्जनानन्दा **सम्मेता**द्रौ च निर्वृतिः ॥ १२ ॥
भाद्रस्य[4] सप्तमी श्यामा नभसो नवमी शितिः । द्वितीया फाल्गुनस्यांत्या तिथ्योऽमूर्वो दिवश्च्युतेः ॥ १३ ॥
ज्येष्ठे त्रयोदशी कृष्णा माधवे च चतुर्दशी । मार्गे च दशमी शुक्ला तिथयो जनुषस्तु वः ॥ १४ ॥
शुक्रे चतुर्दशी श्यामा राधे बहुलपञ्चमी । महस्येकादशी शुभ्रा जज्ञुर्दीक्षादिनानि च ॥ १५ ॥
पौषस्य नवमी श्येनी तृतीया धवला मधोः । ऊर्जस्य द्वादशी श्वेता ज्ञानोत्पत्तेरहानि वः ॥ १६ ॥
शुक्रे त्रयोदशी कृष्णा वैशाखे पक्षतिः[5] शितिः । मार्गे वलक्षा दशमी मुक्तेर्वस्तिथयः क्रमात् ॥ १७ ॥
भवादृशानां पुरुषरत्नानां जन्मभूरियम् । स्पृष्टाऽप्यनिष्टं शिष्टानां पिनष्टि किमुत स्तुता ॥ १८ ॥

तादृग्विधैरतिशयैः पुरुषप्रणीतै-र्विभ्राजितं जिनपतित्रितयी[6]महैश्च ।
भागीरथीसलिलसङ्गपवित्रमेत-ज्जीयाच्चिरं **गजपुरं** भुवि तीर्थरत्नम् ॥ १९ ॥
इत्थं **पृषत्कविषयार्कमिते शकाब्दे** वैशाखमासशितिपक्षगषष्ठतिथ्याम् ।
यात्रोत्सवोपनतसंघयुतो यतीन्द्रः स्तोत्रं व्यधाद् **गजपुरस्य जिनप्रभाख्यः** ॥ २० ॥

॥ इति श्रीहस्तिनापुरस्तवनम्, कृतिः श्रीजिनप्रभसूरीणाम् ॥

॥ ग्रं० २१, अ० १६ ॥

---

1 Pa पारणे । 2 Pa C आ महिमाद्भुर्वभौमर्द्धिं । 3 P Pa सनत्कुमारसुभूमौ । 4 Pa भाद्रपदस्य । 5 Pa-c पक्षितिः । 6 B Pa त्रितयैः; C तृतीयैः ।

५१. कन्यानयमहावीरकल्पपरिशेषः।

अह **विज्ञातिलय**मुणी आएसा **संघतिलय**सूरीणं। परिसेसलवं जंपइ कंनाणयवीरकप्पस्स ॥ १ ॥

तहा हि–भट्टारया सिरि**जिणप्पह**सूरिणो सिरि**दउलतावाद**नयरे साहु **पेथड**–साहु **सहजा**–ठ० **अच-लकारिअ**चेइआणं तुरुक्केहिं[1] कीरमाणं भंगं फुरमाणदंसणपुव्वं निवारित्ता, सिरिजिणसासणपभावणातिसयं कुणंता, पाडिच्छगाणं सिद्धंतवायणं दिंता, तवस्सीणं अंगाणंगपविट्ठागमतवाइं कारिंता, विणेयाणं अवरगच्छय[2]मुणीणं पि पमाण-वागरण-कव्व-नाडयालंकाराइं सत्थाइं भणंता, उब्भडवायभडवायाणं वाइविंदाणं अणप्पदप्पमवहरंता, सावसेसं वच्छरतिगमइक्कमंति।

इओ अ सिरि**जोगिणिपुरे** सिरि**महम्मदसाहि**सगाहिराओ कहिंचि अवसरे पत्थुआए पंडिअगुट्ठीए सत्थवियारसंसयमावन्नो सुमरेइ गुरूणं गुणे; भणइ अ–जइ ते भट्टारया संपयं मह सहालंकरणं हुंता ता मज्झ मणोगय-समत्थसंसयसल्लुद्धरणे हेलाए खमंता। नूणं **विहप्पई** तब्बुद्धिपराजिओ चेव भूमिमुज्झिअ सुन्नं गयणदेसमल्लीणो। इत्थं गुरूणं भूवइकिज्जमाणगुणवन्नणावइअरे, अवसरन्नू तक्कालं[3] **दउलतावाद**दागओ **ताजलमलिक्को** †भूमि-अलमिलिअभालवट्टो विन्नवेइ–महाराय! संति ते तत्थ महप्पाणो। परं तन्नयरनीरमसहमाणा किसिअंगा गाढं वट्टंति। तओ संभरिअगुरुगुणपब्भारेण भूमिनाहेण सो चेव मीरो आइट्ठो†–भो मलिक! सिग्घं गंतूण दुवीरखाने लिहावेसु फुर-माणं। पेसेसु तत्थ। जहा तारिससामग्गीए चेव भट्टारया पुण इत्थं इंति। तओ तेण तहेव कए, पेसिअं फुरमाणं। कमेण पत्तं सिरि**दउलतावाद**दीवाणे। भणियं च सविणयं नयरनायगेणं सिरि**कुतुलखाने**ण भट्टारयाणं सिरिपात-साहिफुरमाणागमणं **ढिल्लीपुरं** पइ पत्थाणं चाइट्ठं। तओ दिणदसगब्भंतरे सन्नहिऊण जिट्ठसिअबारसीए रायजोगे संघसत्थिअपरिसाए अणुगम्ममाणा पत्थिआ महयाविच्छड्डेणं गुरुणो। कमेण ठाणे ठाणे महूसवसयाइं पाउब्भावयंता, विसमदूसमादप्पं दलंता, सयलंतरालजणवयजणनयणकोऊहल्लमुप्पाअयंता, धम्मट्ठाणाइं उद्धरंता, दूरओ उक्कंठाविसं-ठुलसमागच्छंतआयरियवग्गेहिं वंदिज्जमाणा, पत्ता **रायभूमि**मंडणं सिरि**अल्लावपुर**दुग्गं। तओ तत्तारिसपभावणा-पगरिसासहिण्हुमिलक्खुकयं विप्पडिवत्तिं मुणिऊण, ताणं चेव गुरूणं सीसुत्तमेहिं रायसभामंडणेहिं गुरुगुणालंकिअ-देहेहिं सिरि**जिणदेवसूरी**हिं विन्नत्तेण भूवइणा सम्मुहं पविट्ठाविएण सबहुमाणं फुरमाणेण मलिकपच्चप्पिअ-सयलसत्थिअवत्थुणो विसेसओ जिणसासणं पभावयंता, सड्ढं मासं अच्छिअ, पत्थिआ **अल्लावपुरा**ओ। पुणो वि धरणीनाहेण सिरि**सिरोह**महानयरे संमुहपेसिअमसिणसिणिद्धदेवदूसप्पायवत्थदसगेण अलंकरिआ, जाव हम्मीरवीर-रायहाणीपरिसरदेसेसु संपत्ता।

इओ चिरोवचिअभत्तिराएण अभिमुहमागएहिं दंसणनिमित्तओ वि अमयकुंडण्हाएहिं व धन्नमप्पाणं मन्नमा-णेहिं आयरियजइसंघसावयविंदेहिं परिअरिआ भद्दवयसीअबीआए जाया रायसभामंडणं जुगप्पहाणा। तक्खणं आणंदभरनिब्भरेहिं नयणेहिं अब्भुत्थाणमिवायरंतेण सिरि**महम्मदपातसाहि**णा पुच्छिआ कोमलगिराए कुसलपउत्तिं। चुंबिओ अससिणेहं गुरूणं करो धरणिराएण; धरिओ अ हिअए अच्चंतादरपरेण। गुरूहिं पि तक्का-लकविअअहिनवासीवयणदाणेण चमक्कारिअं नरेसरमाणसं। पेसिआ य महामहसारं विसालसालं पोसहसालं। आइट्ठा य महीनाहेण गुरूणं सह गमणाय पहाणपुरिसा हिंदुअरायाणो, सिरि**दीनार**पमुहा महामलिक्का य। पणमंति सयसा-हस्सा चिरुक्कंठिआ सावयलोआ। मिलिआ य चिरदंसणलालसा नायरलोआ। संगया य कोऊहलेणं पगइजाणवयजणा। तओ बंदिविंदेहिं भोगावलीहिं थुवंता, भूवालप्पसाइअभूरिभेरीवेणुवीणामद्दलमुइंगपड्डुपडहजमलसंखभुंगलाइ[4] विउलवाइ-अरवेणं दिअंतरालं मुहलं विणिम्मविंता, विप्पवग्गेहिं वेअज्झुणीहिं थुणिज्जंता, गंधव्वेहिं सूहवाहिं अ गाइज्जमाणमंगला, पत्ता

1 Pa C तुरुक्केहिं 2 Pa अवरगच्छमु°। 3 B तक्काले। † एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता Pa आदर्शे। 4 Pa भुंगला°; C भुग्गला°।

तक्कालं सिरि**सुरताणसराइ**पोसहसालं । कया य वद्धावणयमहूसवा संघपुरिसेहिं । वाइओ अ भद्दवयसिअतइआदिणे सयलसंघकारिअमहूसवसारं सिरि**पज्जोसवणाकप्पो** । पत्ता य ठाणे ठाणे आगमणप्पभावणालेहा । रंजिआ सयलदेससंघा । मोइआ अणेगे रायबंदिबद्धा रायदिज्जसयसाहस्सा सावया । इअरलोगा य करुणाए उम्मोइआ कारा-हिंतो । दिन्ना दाविआ य अपइट्टाणं पइट्टा । कया य काराविआ य अणेगसो जिणधम्मप्पभावणा ।

एवं णिच्चं रायसभागमणपंडिअवाइअविंदविजयपुव्वं पभावणाए पयट्टमाणाए, कमेण वासारत्तचउमासीए वइक्कंताए, अन्नया फग्गुणमासे **दउलतावादा**ओ आगच्छंतीए **मगदूमई जहां**[1] नामधिज्जाए निअजणणीए संमुहं पट्ठिएण चउरंगचमूसमूहसन्नद्धेण सुरत्ताणेण अब्भत्थणापुरस्सरं चालिआ गुरुणो अप्पणा समं । **वडथूण**ठाणे भिट्टिआ जणणी । महाराएण दिन्नं सव्वेसिं महादाणं । परिधाविआ सव्वे पहाणकबाइ[2]वत्थाइं । कमेण पत्तो महूसवमइं रायहाणिं । सम्माणिआ गुरुणो वत्थकप्पूराईहिं । तओ चित्तसिअदुवालसीए रायजोगे महारायाणमापुच्छिअ पातसाहिदत्तसाइबाण[3]छायाए कया नंदी । तत्थ दिक्खिआ पंच सीसा । मालारोवण-संमत्तारोवणाईणि अ धम्मकिच्चाइं कयाणि । विच्चिअं वित्तं **थिरदेव**नंदणेण ठ० **मदनेन** । आसाढसुद्धदसमीए अ पइट्ठिआणि अहिणवकारिआणि तेरस बिंबाणि, महावित्थरेणं । तत्थ विच्चिअं बिंबकारावएहिं बहुअं वित्तं । विसेसओ साहु**महाराय**तणएण **अजयदेवे**ण त्ति ।

तहा अन्नया नरिंदेण दूरओ निच्चं समागमणे गुरूणं कट्ठं ति चिंतिऊण पदिन्ना सयमेव निअपासायपासे सोहंतभवणराई अभिणवसराई; आइट्ठा य वसिउं तत्थ सावयसंघा । **'भट्टारयसराइ'** त्ति कयं से सयं नरिंदेण नामं । कारिओ तत्थेव **वीर**विहारो पोसहसाला य पातसाहिणा । तओ **तेरसयनवासिअ**वरिसे आसाढकिण्हसत्तमीए सुमह(°मुहु)त्ते महीवइसमाइट्ठगीयनट्टवाइअसंपदाए पयडिज्जमाणअमाणमहूसवसारं, सयं नरिंदेण दाविज्जमाणमंगलं, पविट्ठा पोसहसालं भट्टारया । संतोसिआ पीइदाणेणं विउसा । उद्धरिआ दाणेणं दीणाणाहाइलोआ ।

चालिआ पुणऽन्नया मग्गसिरमासे पुव्वदिसजयजत्तापत्थिएण अप्पणा सह नरिंदेण । कारिआ ठाणे ठाणे बंदि-मोअणाइणा जिणधम्मप्पभावणा । उद्धरिअं सिरि**महुरातित्थं** । संतोसिआ दाणाईहिं दिअवराइणो । निच्चं पवासूणं खंधावारे कट्ठं ति मन्नमाणेण महीनाहेण **खोजे जहांमलिके**ण सद्धिं **आगरा**नगराओ पडिपेसिआ रायहाणिं पइ सच्चपइन्ना गुरुणो । गहिऊण सिरि**हत्थिणाउर**जत्ताफुरमाणं समागया निअट्ठाणे मुणिवइणो । तओ मेलिऊण चउव्विहं संघं काऊण य पुत्त [4]**चाहड**सहिस्स साहु**बोहित्थ**स्स संघवइत्ततिलयं । पट्ठिआ सुमुहुत्ते सायरियाइपरिवारा सिरि**हत्थिणाउर**जत्तं गुरुणो । विहिआ ठाणे ठाणे संघवइ**बोहित्थे**ण महूसवा । संपत्ता तित्थभूमिं, कयं च वद्धावणयं । ठाविआणि तत्थ गुरूहिं अहिणवकारिअपइट्ठिआणि सिरि**संति-कुंथु-अर**जिणबिंबाणि, **अंबिआ**पडिमा य चेइअट्ठाणेसु । कया य संघवच्छल्लाइमहूसवा संघवइणा संघेण य । पूइआ वत्थभोअणतंबोलाईहिं वणीमगसत्था । आगयमित्तेहिं जत्ताओ गुरूहिं वइसाहसुद्धदसमीदिणे तं चेव दूरीकयसयलदुरिअडिंबं[5] सिरि**महावीर**बिंबं ठाविअं महूसवसारं, साहिरायकारिअविहारे, तहेव पूइज्जइ संघेण । विसेसओ दिसिजत्ताओ समागए महाराए पवट्टंति ऊसवा चेइयवसहीसु । संमाणेइ गुरुणो उत्तरोत्तरमाणदाणेण सिरिसव्वभोमो । वज्जंति पइदिसं सूरिसव्वभूमाणं पभावणासारा जसपडहा । विहरंति निरुवसग्गं[6] सव्वदेसेसु सेअंबरा दिअंबरा य रायाहिरायदिन्नफुरमाणहत्था । **खरतरग**च्छालंकारगुरुप्पसायाओ सगसिन्नपरिभूए वि दिसिचक्के कयाइं गुरूहिं फुरमाणगहणेण [7]अकुदोभयाइं सिरि**सित्तुज्जगिरिनार-फलवद्धिप्पमुहतित्थाइं** । उज्जोइआ इच्चाइकिच्चेहिं सिरि**पालित्तय-मल्लवाइ-सिद्धसेणदिवायर-हरिभद्दसूरि-हेमचंदसूरि**प्पमुहा पुव्वपुरिसा । किं बहुणा सूरिचक्कवट्टीणं गुणेहिं आवज्जिअस्स नरिंदस्स पयडा एव पयट्टंति सयलधम्मकज्जारंभा । वाइज्जंति पइ पच्चूसं चेइअवसहीसु जमलसंखा । किज्जंति धम्मिएहिं **वीरविहारे** वज्जंतगुहिरमद्दलमुइंगभुगलतालपिक्खणयसारं महापूआओ । वासिंति सिरि**महावीर**पुरओ भविअलोअउग्गाहिज्जमाण-

---

1 Pa मगदूमई जहा; D मगदूमइ जहा । 2 C °कबावत्थाइं । 3 Pa सायबाण°; C °साइबाणसालयाए । 4 C बाहड-सहस्स । 5 C विडिंबं । 6 B °सग्गा । 7 Pa अकुतो° ।

कप्पूरागुरुपरिमलुग्गारा दिसिचक्कं । संचरंति हिंदुअरज्जे इव, दूसमसूसमाए इव, अणज्जरज्जे वि दूसमाए जिणसासणप्पभावणापरायणा सिच्छाए मुणिणो । किं च, लुढंति गुरूणं पायवीढे किंकरा इव पंचदंसणिणो सपरिवारा । पडिच्छंति पडिच्छगा इव गुरुवयणं । सेवंति अ निरंतरं दारदेसट्ठिआ गुरुदंसणूसुगा इह-परलोअकज्जत्थिणो परतित्थिणो । निवअब्भत्थणाओ गच्छंति निच्चं रायसभाए गुरुणो । मोआविंति बंदिवग्गं । उप्पायंति जिणुत्ताणुसारिजुत्तिजुत्तवयणेहिं निरंतरं रायमणे कोउहल्लं । महल्लचरिआ सुचारित्तिणो पवट्टंति पए पए पभावणं । गंगोदयसच्छचित्ता धवलिंति निअजसचंदिमाएहिं अंतरालाइं । उज्जीविंति वयणामएहिं जीवलोगं । सदंसणिणो परदंसणिणो अ वहंति सिरट्ठिअं[1] आणं समग्गवावारेसु । वक्खाणिंति अणन्नसाहारणभंगीए स-परसिद्धंतं जुगप्पहाणा । एआरिसा पभावणापगरिसा, पयडं चेव परिभाविज्जमाणा, निच्चं पि वट्टमाणा कित्तिअमित्ता अप्पमईहिं कहेउं सक्का । केवलं जीवंतु वच्छरकोडीओ; पभावयंतु सिरिजिणसासणं सुचिरं इमे सूरिवरा ।

सिरि**जिणपह**सूरीणं गुणलेसथुई पभावणंगं ति । परिसेसे परिकहिआ **कन्नाणयवीरकप्प**स्स ॥ १ ॥

॥ इति कन्यानयश्रीमहावीरकल्पपरिशेषः ॥

॥ ग्रं० १०८ ॥

---

५२. कुल्यपाकस्थऋषभदेवस्तुतिः ।

श्री**कुल्यपाक**[2]प्रासादाभरणं शरणं सताम् ।
माणिक्यदेवनामानमानमामि जिनर्षभम् ॥ १ ॥

श्रीमाणिक्यदेवनमस्कारः ।

श्री**कुल्यपाकपुर**लक्ष्मीशिरोऽवतंस-प्रासादमध्यमनिमेध्यमधिष्ठितस्य ।
माणिक्यदेव इति यः प्रथितः पृथिव्याम्, तस्यांह्रियुग्ममभिनौमि जिनर्षभस्य ॥ १ ॥
तीर्थेशिनां समुदयो मुदितेन्द्रचन्द्र-कोटीरकोटितटघृष्टपदासनानाम् ।
मद्दुःखदारुणदुरुत्खनशाखिलेखा-पेषाय मत्तकरिणः करिणं दधातु ॥ २ ॥
हेतूपपत्तिसुनिरूपितवस्तुतत्त्वम्, स्याद्वादपद्धतिनिवेशितदुर्नयौघम् ।
सत्सिद्धवल्लिविपिनं भुवनैकपूजा-पात्रं जिनेन्द्रवचनं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥
आरुह्य खे चरति खेचरचक्रिणं या, **नाभेय**शासनरसालवनान्यपुष्टा ।
चक्रेश्वरी रुचिरचक्रविरोचिहस्ता, शस्ताय साऽस्तु नवविद्रुमकायकान्तिः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमाणिक्यदेवऋषभस्तुतयः ॥

---

1 B सिरिट्ठिअं । 2 Pa कुल्यपाद° ।

५३. आमरकुण्डपद्मावतीदेवीकल्पः ।

आमरकुण्डकनगरे **तिलङ्ग**जनपदविभूषणे रुचिरे ।
गिरिशिखरभुवनमध्यस्थिता जयति **पद्मिनीदेवी** ॥ १ ॥

अस्ति [1]स्वस्तिकरसमस्तगुणगणनीरन्ध्रेषु **अन्ध्रेष्वामरकुण्डं** नाम नगरमभ्रंलिहरम्यहर्म्यश्रेणिविश्राणितनयनानन्दं[2] स्निग्धनानाविधच्छायातरुपरिष्कृतं मञ्जुगुञ्जन्मधुकरनिकरपरिकरितकुसुमसौरभसंरम्भ[3]सुरभीकृतदिग्वलयं विमलबहलसलिलकलिलसरित्सरोवरशोभितं दुर्गमदुर्गतया विपक्षपक्षैरक्षोभितम् । किं वा तस्य पुरवरस्य वर्णयामः ?—यत्र करवीरसुमनसोऽपि मृगमदगन्धयः । विशिष्टेक्षुयष्टि-विपुलकदलीफल-चङ्गनारङ्ग-नैकप्रकारसहकार-सरसपनस-पुन्नाग-नागवल्ली-पूग-स्वादुत्व(त्व)शालिनालिकेरफलप्रभृतीनि हृद्यखाद्यानि; फलन्ति प्रतिऋतु सौरभ्यभरनिर्भरवासितदिक्पालयः शालयः, वीक्ष्यन्ते परीक्षकैर्विपणिषु पट्टांशुकप्रमुखासिचयनिचयमौक्तिकरत्नादीन्यगण्यानि पण्यानि । इत एव निष्पन्न**मुरंगल**व्यपदेशपेशल**मेकशिलापत्तनम्** । तत्समीपभूमिमलंकरिष्णु**विष्णुपद**चुम्बिशिखरपरम्पराशेखरितः सर्वतो रमणीयः पर्वतः पातयितुमीश्वरः सौन्दर्यगर्वतः पर्वतराजमास्ते । तदुपरि परिणाहारोहशालिश्री**ऋषभ-शान्तिनाथा**दिजिनप्रतिमालङ्कृताः कृतजनमनःप्रसादाः प्रासादाः[4] शोभन्ते शुभंयवः । तत्रैकत्र पवित्रतरे पारगतसद्मनि छद्मनिर्मुक्तमना मनागपि न[5] विषयसुखैः क्षुभितहृदयः *सहृदयहृदयाह्लादिदयोदयः* प्रतिवसति स्म जितस्मरो विस्मयकारिचरणचर्यावशीकृत**पद्मावतीदेवी**लब्धप्रतिष्ठो **मेघचन्द्र**नामा दिगम्बरः [6]व्रतिपतिरेकोऽनेकान्तिषत्परिषदन्वासितपदः । स चैकदा श्रावकगोष्ठीमनुज्ञाप्य प्रतस्थे स्थानान्तरविहरणाय । यावत्कियतीमपि भुवमगमत्, स्वहस्ताभरणं नाद्राक्षीत् पुस्तकम् । ततश्चाहो नः प्रमद्वरता येन स्वपुस्तकमपि व्यस्मार्ष्मेति क्षणं विषद्य सद्यश्छात्रमेकं क्षत्रियजातीयं **माधवराज**नामधेयं व्यावर्तयत् पुस्तकानयनाय । स च[7] छात्रो वलित्वा मठमशठमतिर्यावत्प्रविशति तावदपश्यदेकयाऽद्भुतरूपधेयश्रिया स्त्रिया तं पुस्तकमूरूपरि न्यस्तम् । यावन्निर्भीकमक्षुब्धचेतास्तदूरोर्ग्रहीतुं प्रवृत्तस्तं तावत्सा वरवर्णिनी तत्पुस्तकं स्वस्कन्धदेशस्थमदीदृशत् । तदनु स छात्रो मात्रोत्तीर्णवैया[8]त्यात्तदूरौ चरणं दत्वा स्कन्धादपि तद्ग्रहीतुं प्रावृतत् । ततस्तया राज्यार्होऽयमिति विमृश्य विधृतः करे, अभिहितश्च—वत्स ! किमपि वृणु, तत्तुभ्यमहं प्रयच्छामि । तुष्टाऽस्मि तव साहसिक्येन । तदनन्तरं शिष्येण निजगदे—जगदेकवन्द्यो मद्गुरुः सर्वं मह्यमभिरुचितमर्थं प्रदातुं समर्थ एवास्ति । तत्किमहं शुभवति ! भवतीं प्रार्थये इत्यभिधाय छात्रः पुस्तकमादाय च स्वाचार्यसविधमागच्छत् । तदखिलमपि स्वरूपं निवेद्य पुस्तकमाचार्याय समार्पिपत् । क्षपणकगणाधिपतिरवोचद्—भद्र ! सा न स्त्रीमात्रं, किन्तु भगवती **पद्मावती** देवता सा । तद्गच्छ, लिखितहृद्यपद्यमिदं पत्रं तस्यै दर्शयेति । गुर्वादेशं तथेति प्रतिपद्य सद्य एव विनेयो व्याघुट्य तं मठं गत्वा तस्यै तत्पत्रं समर्प्य पुरस्तस्थौ । देव्यप्यवाचयत्; यथा—

अष्टौ दन्तिसहस्राणि नव कोट्यः पदातयः । रथाश्वा लक्षसंख्याश्च कोशश्चास्मै प्रदीयताम् ॥ १ ॥

भगवत्यपि पद्यार्थमवधार्य तस्मादन्तेवासिने चतुरगस्तुरगः प्रददे । जगदे चासौ—यदेनमधिरुह्य व्रजतु भवान् । यत्पत्रे लिखितमास्ते तत्सर्वं त्वत्पृष्ठत एव समेष्यति । केवलं गिरिवराऽध्वना त्वया गन्तव्यम्, पृष्ठतश्च नावलोक्यम्—इति तद्वचनं तथेत्युरीकृत्य कृत्यवित्तद्गिरिविवरमनुप्रावीविशदश्वम् । यावद् द्वादश योजनान्यव्राजीद्वाजी । ततः पश्चादागच्छदतुच्छकरिघटाघण्टाटणत्कारतुमुलमतुरुमुभाकर्णिण समाकर्ण्य कुतूहलोत्तालतया स छात्रः सपदि पश्चाद्भागं सिंहावलोकितन्यायेन निभालयांबभूव । यावदवैक्षिष्ट करितुरगादिसमूहसङ्कुलां सेनाम् । तस्मिंश्च विस्मयरसमयहृदयीभूते तत्रैव द्वादशयोजनान्ते स तदधिष्ठितस्तुरङ्गमपुङ्गवोऽवास्थित । तदनु च स **माधवराजः** परमजैनस्तया पृतनया परिवृतस्तत्रैव नगरं निवेश्य तत्र देव्या भवनं च विधाप्य पुनरा**नमत्कुण्ड(आमरकुण्ड ?)** नगरमागत्य राज्यलक्ष्मी

---

1 C स्वस्ति समस्त° । 2 C नयानन्दं । 3 'संरंभ' नास्ति B । 4 B 'प्रासादाः' नास्ति । 5 'न' नास्ति Pa ।
* C नास्ति वाक्यमिदम् । 6 Pa व्रतपति° । 7 'च' नास्ति Pa । 8 C वैयात्र्यात्त° ।

[1]पर्यपालयद्भूपालमौलिलालितशासनः । प्रासादं चाभ्रंकषशिखरं हिरण्मयदण्डकलशध्वजभ्राजिष्णुमचीकरत् । प्रत्यतिष्ठिपच्च तत्र चित्रीयमाणनमस्कुर्वाणमनुष्यचेतसं श्री**पद्मावतीं** देवीम् । पर्यपूपुजच्च पर्याप्तभक्तितरङ्गितमनास्त्रिषवणमष्टविधपूजया । विद्यते च तदद्यापि भुवनोदरव्यापिमाहात्म्यं भगवत्या मन्दिरममन्दलक्ष्मीकं भव्यजनतया पर्युपास्यमानम् । तस्य च गिरिविवरस्य[2] द्वारि विपुलशिलापट्टमद्यापि दत्तमस्ति, यथा तेन पथा सर्वोऽपि न प्रविशति । तत्र हि शिलामुद्घाट्य महतीं पूजां कृत्वा प्रविश्य प्रथमं लुठता गन्तव्यं कियतीमपि कलाम्, तदग्रे चोपविष्टैश्चलनीयम्, अग्रेतरां च महत्यवकाशे ऊर्ध्वजुंभिरेव यावद्देवीसदनं किल गन्तव्यमिति । प्रत्यूहव्यूहसंभावनया कष्टभयाच्च न कश्चित्प्रायस्तद्विवरद्वारमुद्घाटयितुं पाटवमसाहसिकः कलयतीति शिलापिहितद्वारि विवरस्थान एव सर्वेऽपि श्रद्धालवः **पद्मावत्याः** पूजां कुर्वते; प्राप्नुवन्ति च विष्वद्रीचीरभिरुचितार्थसिद्धीः । **माधवराजस्य कंकतिग्राम**वास्तव्यत्वात्तद्वंशजाः **पुरंटिरित्तमराज-पिण्डिकुण्डिमराज**[3]-**प्रोल्लराज**-[4]**रुद्रदेव**-[5]**गणपतिदेवाः । गणपतिदेव**पुत्री च **रुद्रमहादेवी** पञ्चत्रिंशद्वर्षकृतराज्यस्ततः श्री**प्रतापरुद्रः** । एते **काकतीया** इति प्रसिद्धाः ॥

श्री**मदाराम (०दामर ?) कुण्डा**ख्य**पद्मावत्या** यथाश्रुतम् । अजल्पि कल्पलेशोऽयं श्री**जिनप्रभ**सूरिभिः ॥१॥

॥ इति श्रीआमरकुण्ड[6]पद्मावतीदेवीकल्पः ॥

॥ ग्रं० ५९, अ० २२ ॥

---

५४. चतुर्विंशतिजिनकल्याणककल्पः ।

इअ तीअवट्टमाणाणागयचउवीसजिणवरिंदाणं । उसप्पिणिओस्सप्पिणिभवाण अणुलोम-पडिलोमा ॥ १ ॥
[7]सग्गाइअमहिवलया पंचसु भरहेसु एरवयपणगे । कल्लाणयमासतिहीओ सासया नय विदेहेसु ॥ २ ॥
इगभत्तिनिविअआयामखमणमिगदु त्ति पंचकल्लाणे । इअ संखेवतवेणं आराहह पंचकल्लाणे ॥ ३ ॥
वित्थरओ अ चउत्थं चुइ-जंमेसुं करिज्ज पत्तेअं । जिणचिण्णेणं तवसा दिक्खाइतिगं तु आराहे ॥ ४ ॥
सुमइऽत्थ निच्चभत्तेण निग्गओ **वासुपुज्ज** चउत्थेणं । **पासो मल्ली** वि अ अट्ठमेण सेसाओ छट्ठेणं ॥ ५ ॥
अट्ठमभत्तंतमी नाण**मुसभ-मल्लि-नेमि-पासा**णं । **वसुपुज्ज**स्स चउत्थेण छट्ठभत्तेण सेसाणं ॥ ६ ॥
चउदसमेणं **उसभो वीरो** छट्ठेण मासिए भत्ते । सिद्धा वयंमि **सुमइ**स्सुववासो निच्चभत्ते वि ॥ ७ ॥
काउं कल्लाणतवं उज्जमणं जो करिज्ज विहिपुव्वं । **जिणपह**आराहणओ परमपयं पावए स कमा ॥ ८ ॥
चुइ-जम्म-दिक्ख-केवल-सिवाइं कल्लाणयाइं पंचेव । सव्वजिणाणं छ पुणो **वीर**स्स सगब्भहरणाई ॥ ९ ॥
इह खित्तभवजिणाणं जो आराहेइ पंचकल्लाणं । ते दसखित्त-तिकालिअअरिहाण उवासिआ तेण ॥ १० ॥
पणकल्लाणयकप्पं भवीण पूरिअमणिट्ठसंकप्पं । जो पढइ सुणइ भव्वो सयंवरा तस्स सिद्धिसिरी ॥ ११ ॥

॥ ग्रं० १३, अ० १५ ॥

---

५५. तीर्थंकरातिशयविचारः ।

प्रथमं चत्वारः सहजातिशयाः, ततो घातिकर्मक्षयादेकादशातिशयाः । एकोनविंशतिः सुरकृतातिशयाः । एवं ३४ । तत्रापि–अवायावगमातिसओ नाणाइसओ वयणाइसओ पूआइसओ त्ति ।

॥ ग्रं० २, अ० ७ ॥

---

1 Pa परिपालयद् । 2 Pa गिरिवरस्य । 3 B पिण्डकुण्डिमराज; Pa °कुण्डिइडिमराज । 4 Pa प्रोल्लपराज° । 5 C रुद्रगणपति° । 6 Pb आरम°; C आराम° । 7 Pa सगाइअगयहि° ।

५६. पञ्चकल्याणकस्तवनम् ।

नमि वि जिण ताण कित्तेमि कल्लाणए, पंच चुइ जंमु वउ नाण निव्वाणए ।
नाणु कत्तिअकसिणपंचमिहिं संभवे, बारसिहिं नेमि चुइ पउम जंमो भवे ॥ १ ॥
तेरसिहिं पउमवउ वीर सिवु पंनरसी, मागसिअ तीइ सुविहिस्स अर बारसी ।
मग्गसिरकसिणपंचमि सुविहि जंमए, छट्ठि सुविहिस्स वीरस्स दसमी वए ॥ २ ॥
मुक्खु इक्कारसिहिं एउ पउमप्पहे, सुद्धदसमी अर मुक्खु जंमणमहे ।
पंच इक्कारसिहिं अरवयं निम्मलं, जंमु वउ नाणु मल्लिस्स नमि केवलं ॥ ३ ॥
चउदसिहिं जंमु पुंनिम वयं संभवे, बहुलपोसे दसमि पास जंमूसवे ।
गहिअ इक्कारसिहिं पासदिक्खागमो, बारसिहिं जंमु ससि तेरसिहिं संजमो ॥ ४ ॥
नाणु उप्पन्नु चउदसिहिं सीअलजिणे, विमल सिअ छट्ठि संतिस्स नवमीदिणे ।
गहिअ इक्कारसिहिं चउदसिहिं अभिनंदणे, पुंनिमिहि नाणु धंमे जणाणंदणे ॥ ५ ॥
माहकसिणाइ छट्ठीइ पउमो चुउ, सीअलो बारसिहिं जंम-दिक्खाजुओ ।
रिसहजिणु तेरसिहिं पत्तु निव्वुइपए, नाणु सेअंसजिण मावसा गिज्जए ॥ ६ ॥ *
सुद्ध बीआइ पुण दुन्नि कल्लाणए, जम्मु अभिनंदणे नाणु वसुपुज्जए ।
धम्म-विमलाइ तइआइ जाया जिणे, विमल वउ चउत्थि अजिअट्ठमी जंमणे ॥ ७ ॥
अजिअ वउ नवमि बारसिहिं अभिनंदणे, तेरसिहिं धम्मदिक्खा पसिद्धा जिणे ।
फग्गुणे कसिणछट्ठीइ नाणुज्जलं, मुक्खु सत्तमि सुपासस्स ससि केवलं ॥ ८ ॥
सुविहि चुइ नवमि केवलमुसभिगारसी, जंमु सेअंस केवलु सुवय बारसी ।
गहिउ सेअंसि तेरसिहिं चारित्तयं, जंमु चउदसिहिं वसुपुज्जमावसि वयं ॥ ९ ॥
सुद्धबीआइ अर चविउ जिणपुंगवो, चउथि मल्ली चविउ अट्ठमी संभवो ।
बारसिहिं सुमइ वउ मल्लिजिण निव्वुई, चउथि चित्ताइ पासस्स नाणं चुई ॥ १० ॥
पंचमिहिं चवणु चंदप्पहे जिणवरे, अट्ठमिहिं जंमु दिक्खा य रिसहेसरे ।
सुद्धतइआइ कुंथुस्स नाणूसवो, सिद्धु पंचमिहिं णंतोऽजिउ संभवो ॥ ११ ॥
सुमइ मुक्खो नवमि नाणुमेगारसी, वीरनाहस्स जंमूसवो तेरसी ।
पुंनिमाए तु पउमाभ केवलगुणो, बहुलवइसाहपडिवइ सिवं कुंथुणो ॥ १२ ॥
सीअलो नाहु बीआइ परिनिव्वुउ, कुंथु वउ पंचमिहिं छट्ठि सीअल चुउ ।
दसमि नमि मुक्खु तेरसिहिं णंतब्भवो, चउदसिहिं ऽणंतजिण केवलं तह तवो ॥ १३ ॥
जाउ चाउद्दसिहिं कुंथु निम्मलमणो, चविउ सुद्धे चउथीइ अभिणंदणो ।
चवणु सत्तमिहिं धम्मंमि तित्थेसरे, सिद्धु अभिनंदणो अट्ठमीवासरे ॥ १४ ॥
अट्ठमिहिं जंमु नवमी वयं सुमइणो, केवलं पत्तु दसमीइ वीरो जिणो ।
विमलजिण बारसिहिं अजिउ तेरसि चुउ, जिट्ठबहुलाइ सेअंसु छट्ठिहिं चुउ ॥ १५ ॥
अट्ठमी जंमु नवमी सिवं सुव्वए, जंमु सिवु तेरसिहिं संति चउदसि वए ।
सुद्धपंचमिहिं धम्मस्स निव्वाणयं, नवमि वसुपुज्जजिण चवणकल्लाणयं ॥ १६ ॥
जंमु बारसि सुपासस्स तेरसि वयं, बहुलआसाढचउथी उसभ चवणयं ।
विमल सिव सत्तमिहिं दिक्ख नवमिहिं नमी, वीर सिअछट्ठि चुइ नेमि सिवु अट्ठमी ॥ १७ ॥

पत्तु वसुपुज्जु चउदसिहिं सिद्धासए, सावणे बहुलतिइ सिद्धि सेअंसए ।
सत्तमिहिं णंत चुइ जंमु अट्ठमि नमी, नवमि चुइ कुंथु सिअबीअ सुमई समी ॥ १८ ॥
पंचमिहिं जंमुछवि नेमि दिक्खारुई, पास सिवु अट्ठमिहिं सुवय पुंनिम चुई ।
भद्दवइसत्तमिहिं संति चुइ ससि सिवे, चवणु अट्ठमिहिं सुपासस्स तित्थाहिवे ॥ १९ ॥
सुद्धनवमीइ सुविही जिणो निव्वुउ, केवली नेमि आसो अमावसि हुउ ।
पुंनिमासीइ नमि तित्थनाहो चुउ, कुणह मह मंगलं **सोमसूरी** थुउ ॥ २० ॥

॥ इति श्री[सोमसूरिकृतं]कल्याणिकस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ ग्रं० काव्य २० ॥

५७. कोल्लपाकमाणिक्यदेवतीर्थकल्पः ।

सिरि**कोल्लपाक**पुरवरमंडण**माणिक्कदेव**रिसहस्स ।
लिहिमो जहासुअं किंचि कप्पमप्पेण गंथेण[1] ॥ १ ॥

पुव्वं किर **अट्ठावय**नगवरे सिरि**भरहेसरे**ण निअनिअवण्ण-पमाण-संठाणजुत्ताओ सीहनिसिज्जायणे चउवी-†सजिणाणं पडिमाओ रयणमईओ कारिआओ । ताओ अ मणुआणं अगम्माओ होहिंति त्ति परिभाविअ एगा **उसभसामि**पडिमा पुढो चेव लोआणुग्गहत्थं तेण चेव कारिआ [2]सच्छमरगयमणिमई; जडाजुअलं खंधेसु, चिबुगे† दिवायरो, भालयले चंदो, नाहीए सिवलिंगं । अओ चेव **माणिक्कदेवु** त्ति विक्खाया । सा य कालंतरे जत्तागएहिं खेअरेहिं दिट्ठा । अउव्वरूवि त्ति विम्हिअमणेहिं विमाणे ठाविऊण [3]वेअड्ढगिरिं नीआ दक्खिणसेढीए । तेहिं[4] भत्तिभरभरिअचित्तेहिं पूइज्जइ । अन्नया भमंतेण **नारयरिसि**णा वेअड्ढागएण तं पडिमं दट्ठूणं पुच्छिआ विज्जाहरा–कुओ एस त्ति? । तओ तेहिं वुत्तं–अट्ठावयाओ आणिअ त्ति । जप्पभिई एसा अम्हेहिं पूइउं पक्कंता तप्पभिई अम्हे दिणे दिणे वड्ढिआ इड्ढीए[5] । तं सोउं **नारओ** सग्गे इंदस्स तप्पडिममाहप्पं कहेइ । इंदेणावि सग्गे आणावित्ता भत्तीए पूइउमाढत्ता, जाव **मुणिसुव्वय-नमिनाहा**णं अंतरालं । इत्थंतरे **लंका**ए तेलुक्ककंटओ **रावणो** उप्पन्नो । तस्स भज्जा **मंदोअरी** परमसम्मदिट्ठी । तीए तं रयणबिंबमाहप्पं **नारया**ओ सोऊण तप्पूअणे गाढाभिग्गहो गहिओ । तं वुत्तंतं मुणित्ता महाराय**रावणे**ण इंदो आराहिओ । तेणावि तुट्ठेण समप्पिआ सा पडिमा महादेवीए । तीए तुट्ठाए तिक्कालं पूइज्जइ । अन्नया **दसग्गीवे**ण **सीआदेवी** अवहरिआ । **मंदोअरी**ए अणुसिट्ठो वि तं न मुंचइ । तओ सुमिणे पडिमाअहिट्ठायगेण **रावण**विणासो **लंका**भंगो अ अक्खिओ **मंदोअरी**ए । तओ तीए बिंबं सायरे खिविअं । तत्थ सुरेहिं पूइज्जइ ।

इओ अ **कन्नाड**देसे **कल्लाण**नयरे **संकरो** नाम राया जिणभत्तो हुत्था । तत्थ केणावि मिच्छद्दिट्ठिणा वंतरेण कुविएण मारी विउव्विआ । अदण्णो राया । तं दुक्खिअं नाउं देवी **पउमावई** रत्तिं सुविणे भणइ–जइ महाराय! रयणायराओ **माणिक्कदेवं** निअपुरि आणित्ता पूएसि तो सिवं होइ । तओ राया सायरपासे गंतूण उववासं करेइ । लवणाहिवो संतुट्ठो होऊण पयडी रायाणं भणइ–गिण्हह जहिच्छाए रयणाइं । रण्णा विन्नत्तं–न मे रयणाईएहिं कज्जं, **मंदोअरी**ठविअं बिंबं देहि त्ति । तओ सुरेण बिंबं कड्ढिऊण अप्पिअं रण्णो; भणिअं च–तुह देसे सुही लोओ होही । परं पंथे गच्छंतस्स जत्थ संसओ होही तत्थेव बिंबं ठाहि त्ति । तओ पत्थिवो पत्थिओ ससिन्नो । देव-

1 Pa गन्थेण । † एतदन्तर्गता पंक्तिः पतिता Pa आदर्शे । 2 P विमलमरगय° । 3 Pa C वेयड्ढ° । 4 B Pa तहिं ।
5 Pa विट्ठीए ।

यापभावेण [1]तण्णयजुअलखंधट्ठियसगडारोविअं बिंबं मग्गओ आगच्छइ । दुग्गं मग्गं लंघित्ता राया संसयं मणे धरइ–किं आगच्छइ नवि त्ति । तओ सासणदेवीए **तिलंगदेसे कोल्लपाक**नयरे **दक्खिणवाणारसि** त्ति पंडिएहिं वण्णिज्जमाणे पडिमा ठाविआ । पुव्विं अइनिम्मलमरगयमणिमयं आसि बिंबं । चिरकालं खारोअहिनीरसंगेण कठिणंगं[2] जायं । एगारसलक्खा असीइ सहस्सा नवसयाइं पंचुत्तराइं वरिसाइं सग्गाओ आणिअस्स भगवओ **माणिक्कदेव**स्स संवुत्ताइं । तत्थ राया पवरं पासायं कारवेइ । किं च दुवालसगामे देवपूअट्ठं देइ । तम्मि भयवं अंतरिक्खे ठिओ **छसयाइं असीआइं विक्कमवरिसाइं** । तओ मिच्छपवेसं नाउं सीहासणे ठिओ । निअकंतीए भविआणं लोअणेसु[3] अमयरसं वरिसेई–[†]किमेसा पडिमा टंकेहिं उक्किन्ना, खाणीओ वा आणिआ, किं सप्पिणा घडिआ, वज्जमई वा नीलमणिमई वि त्ति न निच्छिज्जइ, रंभाखंभनिभेव दीसेइ[†] । अज्ज वि किर भगवओ ण्हवणोदगेण दीवो पज्जलइ । *अज्ज वि अंधा ण्हवणमट्टियाए लोयणेसु बंधियाए सलोयणा हवंति* । अज्ज वि तित्थाणुभावओ चेइअमंडवाओ झरंता जलसीअरा जत्तिअजणाणं वत्थाइं उल्लिंति । §पुरओ सप्पदट्ठो उट्ठेइ । एवं अणेगविहप्पभावभासुरस्स महातित्थस्स[4] **माणिक्कदेव**स्स जत्तामहूसवं पूअं च जे करिंति कारविंति अणुमोअंति अ ते इहलोअ-पारलोइअसुहसिरिं पाविंति ।

माणिक्कदेवकप्पो इअ एसो वण्णिओ समासेणं । सिरि**जिणपह**सूरीहिं भविआणं कुणउ कल्लाणं ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमाणिक्यदेवतीर्थकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४४, अ० ५ ॥

५८. श्रीपुर-अन्तरिक्षपार्श्वनाथकल्पः ।

पयडपहावनिवासं **पासं** पणमित्तु **सिरिपुरा**भरणं । कित्तेमि **अंतरिक्ख**ट्ठिअतप्पडिमाइ कप्पलवं ॥ १ ॥

पुव्वं **लंका**पुरीए **दसग्गीवे**ण अद्धचक्किणा **मालि-सुमालि**[5]नामाणो निअगा ओलगा केणावि कत्थवि पेसिआ । तेसिं च विमाणारूढाणं नहपहे वच्चंताणं समागया भोयणवेला । फुल्लबडुएण चिंतिअं–मए ताव अज्ज जिण-पडिमाकरंडिआ ऊसगत्तेण घरे विसारिआ । एएसिं च दुण्ह वि पुन्नवंताणं देवपूआए अकयाए न कत्थ वि भोअणं । तओ देवयावसरकरंडिअमदट्ठुं महोवरि एए रूसिस्संति त्ति । तेण विज्जाबलेण पवित्तवालुआए अहिणवा भाविजिण-**पासनाह**पडिमा निम्मविआ । **मालि-सुमाली**हि तं पूइत्ता भोअणं कयं । तओ तेसु नहमग्गे पट्ठिएसु[6] सा पडिमा आसन्नसरोवरजलमज्झे बडुएण निक्खित्ता । सा य देवयाणुभावेण सरोवरमज्झे अखंडिअरूवा चेव तत्थ ट्ठिआ । कालक्कमेण तस्स सरोवरस्स जलं अप्पीहूअं । जलभरिअं खड्डुगं[7] व दीसइ । तं तओ कालंतरेण **विं(चिं?)गउल्ली**देसे **विं(चिं?)गउल्लं**[8] नयरं तत्थ **सिरपालो** नाम नरवई हुत्था । सो अ गाढकोढविहुरिअसव्वंगो अन्नया पारद्धिहेउं बाहिं गओ । तत्थ पिवासाए लग्गाए तम्मि खड्डुगे कमेणं पत्तो । तत्थ पाणिअं पीअं, मुहं हत्था य पक्खालिआ । तओ ते अंगावयवा जाया नीरोगा कणयकमलुज्जलच्छाया । तओ घरं गयस्स रन्नो महादेवी तमच्छेरं दट्ठुं पुच्छित्था–सामि ! कत्थ वि तुम्हेहिं अज्ज ण्हाणाइ कयं । रायणा जहट्ठिए वुत्ते देवीए चिंतिअं–अहो ! सादिव्वं ति । बीअदिणे राया तत्थ नीओ । तीए सव्वंगं पक्खालिअं । जाओ पुणण्णवसरीरावयवो राया । तओ देवीए बलिपूआइअं काऊण भणिअं–जो इत्थ देवयाविसेसो चिट्ठइ सो पयडेउ अप्पाणं । तओ घरं पत्ताए देवीए सुमिणंतरे देवयाए भणिअं–इत्थ भावितित्थयर**पासनाह**पडिमा चिट्ठइ । तस्स पभावेणं रन्नो आरुग्गं संजायं । एयं च पडिमं सगडे आरोविऊण सत्तदिणजाए तण्णए जुत्तिता आमसुत्ततंतुमित्तरस्सीए रन्ना सयं सारहीहूएणं सट्ठाणं पइ चालेअव्वा इमा । जत्थेव

---

1 Pa भयजुअल°; C भणगइय° । 2 Pa कडिणंगं । 3 B लोआण° । † एतदन्तर्गतः पाठः P आदर्शे नास्ति । * P विहायान्यत्र नोपलभ्यते वाक्यमिदम् । § P आदर्शे एव लभ्यते वाक्यमिदम् । 4 पदमिदं नास्ति Pa । 5 B नास्ति 'सुमालि' । 6 Pa नास्ति पदमेतत् । 7 B खुडगं । 8 Pa विंगल्लिं ।

निवो पच्छाहुत्थं पलोइस्सइ तत्थेव पडिमा ठाहिइ । तओ नरनाहेण तं खड्डुगजलमालोइ(डि)ऊण सा पडिमा लद्धा । तेण तहेव काउं पडिमा चालिआ । कित्तिअं पि भूमिं गएण रन्ना, किं पडिमा एइ नवि त्ति सिंहावलोइअं कयं । पडिमा तत्थेव अंतरिक्खे ठिआ । सगडो अग्गओ हुत्तं नीसरिओ । रन्ना पडिमा अदट्टूण अधिईए गते तत्थेव **सिरिपुरं** नामं नयरं निअनामोवलक्खिअं निवेसिअं; *चेइअं च तहिं कारिअं । तत्थ पडिमा अणेगमहूसवपुव्वं ठाविआ । पूएइ तं पुहविपई तिक्कालं । अज्जवि सा पडिमा तहेव अंतरिक्खे चिट्ठइ । पुव्विं किर सवाहडिअं घडं सिरम्मि वहंती नारी पडिमाए हिट्ठा सीहासणतले संचरिसु । कालेण भूमिवेगरचडणेण वा मिच्छाइदूसिअकालाणुभावेण वा अहो अहो दीसंती जाव संपइ उत्तरीमित्तं पडिमाए हिट्ठे संचरइ । पईवप्पहा य सीहासण-भूमिअंतराले दीसइ । जया य सा पडिमा सगडमारोविआ तया **अंबादेवी खित्तवालो** अ सहेव पडिमा । ऊसगत्तेण **सिद्ध-बुद्धाणं** अन्नयरो पुत्तो **अंबाए** गहिओ । अन्नो अ पच्छा ठिओ । तओ खित्तवालस्स आणत्ती दिन्ना, जहा एस दारओ तए आणेअव्वो । तेणावि अइउत्ताउलं चलंतेण सो नाणीओ । तओ देवीए टुंबएण मत्थए आहओ । अज्जवि तहेव खित्तवालसीसे दीसइ । एवं **अंबाएवी-खित्तवाले**हिं सेविज्जमाणा **धरणिंद-पउमावई**हिं च कयपाडिहेरा सा पडिमा भवलोएहिं पूईज्जइ; जत्तिअलोआ य जत्तामहूसवं कुणंति । तीए ण्हवणसलिलेण सित्तं पि आरत्तिअं न विज्झाइ । ण्हवणोदगेण अहिसित्तगत्ताणं दद्द-खस[1]-कुट्ठाइरोगा उवसमंति ।

सिरि**अंतरिक्खट्ठिअपासनाह**कप्पे जहासुअं किं पि । सिरि**जिणपह**सूरीहिं लिहिओ सपरोवयारकए ॥ १ ॥

॥ इति अंतरिक्ख(क्ष)पार्श्वनाथकल्पः ॥

॥ ग्रं० ४१, अ० ८ ॥

---

* इदं वाक्यं Pa आदर्शे नास्ति । 1 Pa खर° ।

५९. स्तम्भनककल्पशिलोञ्छः ।

थंभणयकप्पमज्झे जं संगहिअं न वित्थरभएण । तं सिरि**जिणपह**सूरी सिलुंछमिव कं पि[1] जंपेइ ॥ १ ॥

ढंकपव्वए रणसीहरायउत्तस्स **भोपल**नामिअं धूअं रूवलावण्णसंपन्नं दट्ठूण जायाणुरायस्स तं सेवमाणस्स **वासुगिणो** पुत्तो **नागज्जुणो** नाम जाओ । सो अ जणएण पुत्तसिणेहमोहिअमणेण सव्वासिं महोसहीणं फलाइं मूलाइं दलाइं च भुंजाविओ । तप्पभावेण सो महासिद्धीहिं अलंकिओ **'सिद्धपुरिसु'**त्ति विक्खाओ पुहविं विअरंतो **सालाहण**रन्नो कलागुरू जाओ । सो अ गयणगामिणिविज्जाअज्झयणत्थं **पालित्तय**पुरे सिरि**पालित्तायरिए** सेवेइ । अन्नया भोयणावसरे पायप्पलेवबलेण गयणे उप्पइए पासइ । **अट्ठावया**इतित्थाणि नमंसिअ सट्ठाणमुवागयाण तेसिं पाए पक्खालिऊण सत्तुत्तरसयमहोसहीणं आसायण-वण्ण-गंधाईहिं नामाइं निच्छइऊण गुरूवएसं विणावि पायलेवं काउं कुक्कुडप्पोउ व्व उप्पयंतो अवडतडे निवडिओ । वणजज्जरिअंगो गुरूहिं पुट्ठो-किमेअं ति ? । तेण जहट्ठिए वुत्ते तस्स कोसल्लचमक्किअचित्ता आयरिआ तस्स सिरे पउमहत्थं दाउं भणंति-सट्ठिअतंदुलोदगेण ताणि ओसहाणि वट्टित्ता[2] पायलेवं काउं गयणे वच्चिज्जासि त्ति । तओ तं सिद्धिं पाविअ परितुट्ठो ।

पुणो कयावि गुरुमुहाउ सुणेइ, जहा-सिरि**पासनाह**पुराओ साहिज्जंतो सव्वइत्थीलक्खणोवलक्खिअमहासईविलयाए अ मद्दिज्जंतो रसो कोडिवेही हवइ । तं सोऊण सो **पासनाह**पडिमं अन्नेसिउमारद्धो । इओ अ **बारवईए समुद्दविजय**दसारेण सिरि**नेमिनाह**मुहाओ महाइसयं नाऊण रयणमई सिरि**पासनाह**पडिमा पासायंमि ठवित्ता पूईआ† । **बारवई**दाहाणंतरं समुद्देण पाविआ सा पडिमा तहेव समुद्दमज्झे ठिआ । कालेण **कंती**वासिणो **धणवइ**नामस्स संजत्तिअस्स जाणवत्तं देवयाइसयाओ खलिअं । इत्थ जिणबिंबं चिट्ठइ त्ति दिव्ववायाए निच्छिअं । नाविए तत्थ पक्खिविअ सत्तहिं आमतंतूहिं संदाणिअ उद्धरिआ पडिमा । निअनयरीए नेऊण पासायंमि ठाविआ । चिंताइरित्तलाभपहिट्ठेण पूइज्जइ पइदिणं । तओ सव्वाइसाइ तं बिंबं नाऊण **नागज्जुणो** सिद्धरससिद्धिनिमित्तं अवहरिऊण **सेढीनईए** तडे ठाविंसु । तस्स पुरओ रससाहणत्थं सिरि**सालवाहण**रन्नो **चंदलेहा**भिहाणिं महासइं देविं सिद्धवंतरसन्निज्झेण तत्थ आणाविअ पइनिसं रसमद्दणं कारेइ । एवं तत्थ भुज्जो भुज्जो गयागएणं तीए बंधु त्ति पडिवन्नो । सा तेसिं ओसहाणं मद्दणकारणं पुच्छेइ । सो अ कोडिरसवेहवुत्तंतं जहट्ठिअं कहेइ । अन्नया दुण्हं निअपुत्ताणं तीए निवेइअं-जहा एअस्स रससिद्धी होहिइ त्ति । ते रसलुद्धा निअरज्जं मुत्तुं **नागज्जुण**पासमागया । कइअवेणं तं रसं घित्तुमणा पच्छन्नवेसा, जत्थ **नागज्जुणो** भुंजइ तत्थ रससिद्धिवुत्तं पुच्छंति । सा य तज्जाणणत्थं तद्दट्ठं सलूणं रसवइं साहेइ । छम्मासे अइक्कंते खार त्ति दूसिआ तेण रसवई । तओ इंगिएहिं रसं सिद्धं नाऊण पुत्ताण निवेइअं तीए । तेहिं च परंपराए नायं जहा-**वासुगिणा** एअस्स दब्भंकुराओ मच्चू कहिओ त्ति । तेणेव सत्थेण **नागज्जुणो** निहओ । जत्थ य रसो थंभिओ तत्थ **थंभणयं** नाम नयरं संजायं । तओ कालंतरेण तं बिंबं वयणमित्तवज्जं भूमिअंतरिअंगं संवुत्तं ।

इओ अ **चंदकुले** सिरि**वद्धमाणसूरि**-सीस**जिणेसरसूरी**णं सीसो सिरि**अभयदेवसूरी गुज्जरत्ताए** [3]**संभायण**ठाणे विहरिओ । तत्थ महावाहिवसेण अईसाराइरोगे जाए पच्चासन्ननगर-गामेहिंतो पक्खिअपडिक्कमणत्थमागंतुकामो विसेसेण आहूओ मिच्छदुक्कडदाणत्थं सव्वोवि सावयसंघो । तेरसीअड्ढरत्ते अ भणिआ पहुणो सासणदेवयाए-भयवं ! जग्गह सुअह वा ? । तओ मंदसरेणं वुत्तं पहुणा-कओ मे निद्दा । देवीए भणिअं-एआओ नवसुत्तकुक्कुडीओ उम्मोहेसु । पहुणा भणिअं-न सक्केमि । तीए भणिअं-कहं न सक्केसि ? । अज्जवि वीरतित्थं चिरं पभावेसि, नवंगवित्तीओ अ काहिसि । भयवया भणिअं-कहमेवंविहसरीरो काहामि ? । देवयाए वुत्तं-**थंभणयपुरे सेढीनई**उवकंठे

1 B किं पि । 2 Pa वट्टित्ता । † एतदन्तर्गता पंक्तिर्न लभ्यते A आदर्शे । 3 A संभाणय° ।

खंखरपलासमज्झे सयंभू सिरि**पासनाहो** अच्छइ । तस्स पुरो देवे वंदेह । जेण सुत्थसरीरा होह । तओ गोसे आहूअ-सावयसंघेण वंदिआ पहुणो । पहुणा भणिअं–**थंभणए पासनाहं** वंदिस्सामो । संघेण चिंतिअं–नूणं कोइ उवएसो पहुणं, ता एवं आइसंति । तओ भणिअं संघेण–अम्हे वि वंदिस्सामो । तओ वाहणेण गच्छंतस्स पहुणो मणयं सरीरं सुत्थं जायं । अओ **धवलक्कया**ओ परओ चरणचारेण विहरंता पत्ता **थंभणपुरं** । गुरुसावया सव्वत्थ **पासनाह**मवलोइंता गुरुणा भणिआ–खंखरपलासमज्झे पलोएह । तेहिं तहाकए दिट्ठं सिरि**पासनाह**पडिमामुहं । तत्थ य पइदिणं एगा धेणू आगम्म पडिमामत्थए खीरं झरइ । तओ पहिट्ठेहिं सावएहिं जहादिट्ठं निवेइअं गुरुणो । **अभयदेवसूरी** वि तत्थ गंतुं मुहदंसणमित्तेण थोउमाढत्तो–'**जयतिहुअणवरकप्परुक्ख**' इच्चाइतक्कालिअवित्तेहिं । तओ सोलससु वित्तेसु कएसु पच्चक्खीहूआ सव्वंगं पडिमा । अओ चेव '**जय ! पच्चक्खजिणेसर**' त्ति सत्तरसमे वित्ते पढिअं । तओ बत्तीसाए पुण्णाए अंतिमवित्तदुगं अईव देवयाइड्ढिकरं ति नाऊण देवयाए विन्नत्तं–भयवं ! तीसाए वि वित्तेहिं सन्निज्झं करिस्सामि; अंतिमवित्तदुगं ओसारेह । मा अम्हं कलिजुगे आगमणं दुक्खाय होउ त्ति । पहुणा तहा कयं । संघेण सह चिइवंदणा कया । तत्थ संघेण उत्तुंगं देवहरयं कारिअं । तओ उवसंतरोगेण पहुणा ठाविओ सिरि**पाससामी** । तं च महातित्थं पसिद्धं । कालाइक्कमेण कया **ठाणाइ**नवंगाणं वित्ती । **आयारंग-सूअगडाणं** तु पुव्विं पि **सीलंकायरि**एण कया आसि । तओ परं चिरं **वीर**तित्थं पभाविअं पहुण त्ति ॥

॥ इति श्रीस्तम्भनककल्पशिलोञ्छः ॥

॥ ग्रं० ६७ ॥

---

६०. फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्पः ।

सिरि**फलवद्धि**अचेईअपरिट्ठिअं पणमिऊण **पासजिणं** । तस्सेव बेमि कप्पं जहासुअं दलिअकलिदप्पं ॥ १ ॥

अत्थि **सवालक्ख**देसे **मेडत्तय**नगरसमीवठिओ **वीर**भवणाइ-नाणाविहदेवालयाभिरामो **फलवद्धी** नाम गामो । तत्थ **फलवद्धि**नामधिज्जाए देवीए भवणमुत्तुंगसिहरं चिट्ठइ । सो अ रिद्धिसमिद्धो वि कालक्कमेण उव्वसपाओ संजाओ । तहावि तत्थ कित्तिआ वि वाणिअगा आगंतूण अवसिंसु । तेसु वि एगो **सिरिसिरिमाल-वंस**मुत्तामणी धम्मिअलोअगामगामणी **धंधलो** नाम परमसावओ हुत्था । बीओ अ तारिसगुणो चेव **उवएसवाल**-कुलनहयलनिसाकरो **सिवंकरो** नाम । ताण दुण्हंपि पभूआओ गावीओ आसि । तासिं मज्झे एगा **धंधल**स्स धेणू पइदिणं दुज्झंती वि दुद्धं न देइ । तओ **धंधलेण** गोवालो पुच्छिओ–किमेसा धेणू तुमए चेव बाहिरे दुज्झइ अन्नेण वा केणावि, जेणेसा दुद्धं न देइ । तओ गोवालेण सवहाइं काऊण अप्पा निरवराही कओ । तओ गोवालेण सम्मं [1]निरिक्खंतेण एगया [2]उच्चरडयस्स उवरिं बोरितरु[3]समीवे चउहिं वि थणेहिं खीरं झरंती दिट्ठा सा सुरही । एवं पइदिणं पिच्छंतेण[4] दंसिआ **धंधल**स्स । तेण वि चिंतिअं नूणं इत्थ कोइ जक्खाई देवयाविसेसो भविस्सइ भूमिमज्झट्ठिओ । तओ गिहमागएण तेण सुहपसुत्तेण रत्तीए सुमिणओ उवलद्धो; जहा एगेण पुरिसेण वुत्तं–इत्थ रडए भयवं **पासनाहो** गब्भहरदेवलिआमज्झे चिट्ठइ । तं बाहिं निक्कासिऊण पूएहिं । तओ **धंधलेण** पहाए बुद्धेणं **सिवंकर**स्स निवेइओ सुमिणवुत्तंतो । तओ दोहिं पि कोऊहलाऊरिअमाणसेहिं बलिपूआविहाणपुव्वं उड्डेहिं[5] रडयभूमिं खणावित्ता कड्ढिओ गब्भहरदेउलिआसहिओ सत्तफणिफणामंडिओ भयवं **पाससामी** । पइदिअहं पूयंति महया[6] इड्ढीए ते दो वि । एवं पूइज्जंते भुवणनाहे पुणो वि अहिट्ठायगेहिं सुमिणे आइट्ठं तेसिं; जहा–तत्थेव पएसे चेईअं कारावेह त्ति । तओ तेहिं पहिट्ठचित्तेहिं दोहिं वि निअविहवाणुसारेण चेईअं कारावेउमाढत्तं । पयट्टिआ सुत्तहारा

1 Pa निरक्खंतेण । 2 Pa उव्वरडय° । 3 B °तरुस्स स° । 4 P पुच्छंतेण । 5 Pa C उड्डेहिं । 6 B महिआ ।

[1]कम्मट्ठाएसु । जाव अग्गमंडवे निप्पन्ने तेसिं [2]अप्पड्ढिअत्तेण दविणविढवणअसमत्थयाए निअत्तो कम्मट्ठाओ । तओ धणिअं अधिइमावन्ना दो वि परमोवासया । तयणंतरं रयणीए पुणो वि अहिट्ठायगसुरेहिं सुमिणे भणिअं; जहा–अइप्पभाए[3] अलवंतेसु काएसु देवस्स अग्गओ दम्माणं सत्थिअं पइदिणं पिच्छिस्सह । ते दम्मा चेईअकज्जे वइयव्व त्ति । तेहिं तहेव दिट्ठे, ते दम्मे घित्तूण सेसकम्मट्ठायं कारवेउमाढत्तं । जाव पडिपुण्णा पंच वि मंडवा य, लहुमंडवा य,[4] तिहुअणजणचित्तचमुक्कारकारए । बहुनिप्पन्नंमि चेईअंमि तेसिं पुत्तेहिं चिंतिअं–कत्तो एअं दव्वं संपज्जइ, जं अविच्छेएण कम्मट्ठायं उस्सप्पइ त्ति । अह एगंमि दिणे अइप्पहाए चेव थंभाइअंतरिआ होऊण निहुअं दट्ठुमारद्धा । तम्मि दिवसे देवेहिं न पूरिअं दम्माणं सत्थिअं । आसन्नं च मिच्छरज्जं नाऊण पयत्तेण आराहिआ वि अहिट्ठायगा न पूरिंसु दव्वं ति । ठिओ तदवत्थो चेव चेईअकम्मट्ठाओ । **एगारससएसु इक्कासीइसमहिएसु विक्कमाइवरिसेसु** अइक्कंतेसु **रायगच्छ**मंडणसिरि**सीलभद्दसूरि**पट्टपइट्ठिएहिं महावाइदिअंबर**गुणचंद**विजयपत्तपइट्ठेहिं सिरि**धम्मघोससूरी**हिं **पासनाह**चेईअसिहरे चउविहसंघसमक्खं पइट्ठा किआ । कालंतरेण, कलिकालमाहप्पेणं केलिप्पिआ वंतरा हवंति, अथिरचित्ता य त्ति पमायपरवसेसु अहिट्ठायगेसु **सुरताणसाहावदीणे**ण भग्गं मूलबिंबं । पुणरवि सावहाणीभूएसु अहिट्ठायगसुरेसु मिच्छरन्नो मिच्छाणं च अंधत्तरुहिरवमणाइचमुक्कारा दंसिआ । तओ[5] **सुरताणे**ण दिन्नं फुरमाणं; जहा–एअस्स देवभवणस्स केणावि भंगो न कायव्वो त्ति । अन्नं च बिंबं किर भयवओ अहिट्ठायगा न सहंति त्ति संघेण [6]बिंबंतरं न ठाविअं । विलंगिअंगस्स वि भगवओ महंताइं माहप्पाइं उवलब्भंति । पइवरिसं च पोसबहुलदसमीए जम्मकल्लाणयदिणे चाउद्दिसाओ[7] सावयसंघा आगंतूण ण्हवण-गीअ-नट्ट-वाइअ-कुसुमाभरणारोवण-इंदधयाईहिं मणहरं जत्तामहिमं कुणंता, संघपूआईहिं सासणं पभाविंता, निद्दलंति दुसमासमयविलसिआइं, विढवंति गुरुअं [8]सुकयसंभारं । इत्थ य चेईए **धरणिंद-पउमावई-खित्तवाला** अहिट्ठायगा संघस्स [9]विग्घपब्भारं उवसामिंति, पणयलोआणं मणोरहे[10] अ पूरिंति । इत्तो च्चिअ थिरपईवहत्थं पुरिसं चेईअमज्झे संचरंतं पासंति समाहिअमणा इत्थ रत्तिं वुत्था भविअजणा । एअंमि महातित्थभूए **पासनाहे** दिट्ठे **कलिकुंड-कुक्कुडेसर-सिरिपव्वय-संखेसर-सेरीसय-महुरा-बाणारसी-अहिछत्ता-थंभणय-अज्जाहर-पवरनयर-देवपट्टण-करहेडय-नागद्दह-सिरिपुर-सामिणि-चारूप-ढिंपुरी-उज्जेणी-सुद्धदंती-हरिकंखी-लिंबोड**याइठाणवट्टमाण**पासनाह**पडिमाणं किरि जत्ता कया हवइ त्ति संपदायपुरिसाणं उवएसो ।

इअ **फलवद्धिपुरट्ठिअपास**जिणिंदस्स कप्पमवि[11]अप्पं । निसुणंताणं भव्वाण होउ कल्लाणनिप्पत्ती ॥ १ ॥

इत्याप्तजनस्य मुखात् किमप्युपादाय संप्रदायलवम् ।
व्यधित **जिनप्रभ**सूरिः[12] कल्पं **फलवर्द्धिपार्श्व**विभोः ॥ २ ॥

॥ इति फलवर्द्धिपार्श्वनाथकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ५५, अ० २ ॥

---

1 Pa C कम° । 2 P अप्पिड्ढि° । 3 B °प्पभावे । 4 P Pa नास्ति 'लहुमंडवा य' । 5 B Pa C ततः । 6 B बिंबं । 7 B °दिसाओ वि । 8 B C सुकृत° । 9 B विग्घस्स विग्घप° । 10 B मणोहरे । 11 Pa कप्पं । 12 Pa सूरिभिः ।

६१. अम्बिकादेवीकल्पः ।

सिरिउज्जयंतगिरिसिहर[1]सेहरं पणमिऊण **नेमि**जिणं । [2]**कोहंडिदेवि**कप्पं लिहामि वुड्ढोवएसाओ ॥ १ ॥

अत्थि **सुरट्ठा**विसए धणकणयसंपन्नजणसमिद्धं **कोडीनारं** नाम नयरं । तत्थ **सोमो** नाम रिद्धिसमिद्धो छकम्मपरायणो वेआगमपारगो बंभणो हुत्था । तस्स घरिणी **अंबिणी**नामा[3] महग्घसीलालंकारभूसिअसरीरा आसि । तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता । पढमो **सिद्धो** बीओ **बुद्धु** त्ति । अन्नया समागए पिअरपक्खे भट्ट-**सोमे**णं निमंतिआ बंभणा सद्धदिणे । कत्थ वि ते वेअमुच्चारंति, कत्थ वि आढवंति पिंडप्पयाणं, कत्थ वि होमं करिंति, वइसदेवं च । संपाडिआ सालिदालिवंजणपक्कन्नमेअखीरिखंडपमुहा जेमणारा **अंबिणी**ए अ । सासुआ ण्हाणं काउं पयट्टा । तंमि अवसरे एगो साहू मासोववासपारणए तंमि घरे भिक्खट्ठा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ **अंबिणी** । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं अहापवित्तेहिं[4] भत्तपाणेहिं । जाव गहिअभिक्खो साहू वलिओ, ताव सासुआ वि ण्हाऊण रसवईठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा वहुआ । तीए जहट्ठिए वुत्ते, अंबाडिआ सा अज्जूए; जहा–पावे ! किमेअं तए कयं ? । अज्ज वि कुलदेवया न पूईआ, अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा, अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं; अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना ? । तओ तीए भणिओ सव्वो वि वइअरो **सोम**भट्टस्स । तेण रुट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कालिआ गिहाओ सा । परिभवदूमिआ **सिद्धं** करंगुलीए धरित्ता **बुद्धं** च कडीए चडावित्ता चलिआ नयराओ बाहिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ, जाव सा अंसुजलपुण्णलोअणा संवुत्ता, ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तस्सा[5] अणग्घेणं सीलमाहप्पेणं तक्खणं जलपूरिअं जायं । पाइआ दो वि सीअलं नीरं । तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं । पुरओ ठिओ सुक्कसहयारतरू तक्खणं फलिओ । दिन्नाइं फलाइं **अंबिणी**ए तेसिं । जाया ते सुत्था ।

जाव सा चूअच्छायाए वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह । तीए जे बालयाई पढमं जेमाविआ तेसिं भुत्तुत्तरं पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि, ताओ सीलमाहप्पा कंपिअमणाए सासणदेवयाए सोवण्णथालकच्चोलयरूवाओ कयाओ । जे अ उच्छिट्ठसित्थकणा भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाइआइं । अग्गिसिहा य पिढरेसु[6] तहेव दंसिआ । एयमच्चु(च)ब्भुअं सासूए दट्ठूण निवेइअं **सोम**विप्पस्स । सिट्ठं च, जहा–वच्छ ! सुलक्खणिआ पइव्वया य एसा वहू । ता पच्चाणेहि एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुअं वालेउं **सोम**भट्टो । तीए पिट्ठओ आगच्छंतं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ मग्गकूवओ । तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ । सुहज्झवसाणेण पाणे चईऊण उप्पन्ना **कोहंड**-विमाणे **सोहम्म**कप्पहिट्ठे चउहिं जोअणेहिं **अंबिअदेवी** नाम महड्डिआ देवी । विमाणनामेणं **कोहंडी** वि भन्नइ । **सोम**भट्टेणं वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठुं अप्पा तत्थेव झंपाविओ । सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो । आभिओगिअकम्मुणा सिंहरूवं विउव्वित्ता तीसे चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति–**अंबिणी रेवय**सिहराओ अप्पाणं झंपावित्था, तप्पिट्ठओ **सोम**भट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव ।

सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबि पासं च धारेइ । वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ । उत्तत्तकणयसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे । सिरि**नेमिनाह**स्स सासणदेवय त्ति निवसइ **रेवइगिरि**सिहरे । मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे, निवारेइ विग्घसंघायं । तीए मंतमंडलाईणि[7] आराहिंताणं भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धीओ । न पहवंति भूअपिसायसाइणी-

---

1 Pa °सिहरे । 2 A कोहिंडि° । 3 P Pa नाम । 4 A अहापत्तेहिं; B P °पवत्तेहिं । 5 A Pa B तिसा° । 6 Pa सिहरेसु । 7 Pa °मंडणाईणि ।

विसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्त[1]धणधन्नरज्जसिरीओ त्ति ।

अंबिआमंता इमे–

[2]वयवीयमकुलकुल[3]जलहरिहयअक्कंततत्तपेआइं[4] । पणइणिवायावसिओ **अंबिअ**[5]देवीइ[6] अह मंतो ॥ १ ॥
धुवभुवण[7]देवि[8] संबुद्धि पास अंकुस तिलोअ पंचसरा । णहसिहिकुलकलअब्भासिअमायापरपणामपयं ॥ २ ॥
वागुब्भवं [9]तिलोअं पाससिणीहाओ तइअवन्नस्स । कूडं च अंबिआए नमु[10]त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अन्नेवि **अंबादेवी**मंता अप्परक्खा-पररक्खा[11]विसया सुमरणाजुग्गा मग्गखेमाइगोअरा य बहवो चिट्ठंति । ते अ, तहा मंडलाणि अ, इत्थ न भणिआणि गंथवित्थरभएणं ति गुरुमुहाओ नायव्वाणि ।

एअं **अंबियदेवी**कप्पं अविअप्पचित्तवित्तीणं । वायंतसुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

॥ इति श्रीअंबिकादेवीकल्पः समाप्तः ॥

॥ ग्रं० ४७, अ० ५ ॥

---

६२. पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्पः* ।

तथा पुण्यतमं मन्त्रं जगत्त्रितयपावनम् । योगी पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारं विचिन्तयेत् ॥ १ ॥
अष्टपत्रे सिताम्भोजे कर्णिकायां कृतस्थितिम् । आद्यं सप्ताक्षरं मन्त्रं पवित्रं चिन्तयेद्बुधः ॥ २ ॥
सिद्धादिकचतुष्कं च दिक्पत्रेषु यथाक्रमम् । चूलापदचतुष्कं च विदिक्पत्रेषु चिन्तयेत् ॥ ३ ॥
त्रिशुध्या चिन्तयन्नस्य शतमष्टोत्तरं मुनिः । भुञ्जानोऽपि स लभते चतुर्थतपसः फलम् ॥ ४ ॥
एतमेव महामन्त्रं समाराध्येह योगिनः । त्रिलोक्याऽपि महीयन्तेऽधिगताः परमं पदम् ॥ ५ ॥
कृत्वा पापसहस्राणि हत्वा जन्तुशतानि च । अमुं मन्त्रं समाराध्य तिर्यञ्चोऽपि दिवं गताः ॥ ६ ॥
गुरुपञ्चकनामोत्था विद्या स्यात् षोडशाक्षरा । जपन् शतद्वयं तस्याश्चतुर्थस्याप्नुयात् फलम् ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीपञ्चपरमेष्ठिनमस्कारकल्पः ॥

---

1 Pa °मित्त° नास्ति । 2 Pa चय° । 3 A P °कुल° नास्ति । 4 P °तत्तणयाइं । 5 A अंबया° । 6 Pa देवी इह । 7 P भुवणे । 8 A Pa देव° । 9 Pa वागुब्भं चिंति° । 10 A नमो । 11 B P नास्ति 'पररक्खा' ।
*चतुरशीतिमहातीर्थनामसङ्ग्रहकल्पानन्तरम् P सञ्ज्ञके आदर्शे एष कल्पो लिखितो लभ्यते । अन्यसर्वादर्शेष्वनुपलम्भादत्र ग्रन्थान्तेऽस्माभिरयं स्थापितः ।

६३. ग्रन्थसमाप्तिकथनम् ।

*आदितः सर्वकल्पेषु ग्रन्थमानमजायत ।
अनुष्टुभां पञ्चत्रिंशच्छती षष्ट्यधिका स्थिता† ॥ १ ॥

क्वार्थी सजेत्[1] ? किं प्रतिषेधवाचि
पदं ? ब्रवीति प्रथमोपसर्गः ।
कीदृग् निशा ? प्राणभृतां प्रियः कः ?
को ग्रन्थमेतं[2] रचयांचकार ? ॥ २ ॥
—जिनप्रभसूरयः ।

नन्दा-ऽनेकप-शक्ति-शीतगुमिते श्रीविक्रमोर्वीपते-
र्वर्षे भाद्रपदस्य मास्यवरजे सौम्ये दशम्यां तिथौ ।
श्रीहम्मीरमहम्मदे प्रतपति क्ष्मामण्डलाखण्डले[3]
ग्रन्थोऽयं परिपूर्णतामभजत श्रीयोगिनीपत्तने ॥ ३ ॥
तीर्थानां तीर्थभक्तानां कीर्तनेन पवित्रितः ।
कल्पप्रदीपनामाऽयं ग्रन्थो विजयतां चिरम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकल्पप्रदीपग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ ग्रंथाग्र ३५६०§ ॥

---

* P आदर्शे निम्नप्रकारेण पाठभेदो लभ्यतेऽस्मिन् पद्ये-
आदित [ः] सर्वमध्ये (?) कल्पेषु ग्रन्थाग्रमिह जानत । अनुष्टुभामष्टयुता दशनप्रमिताः शताः ॥
† C समधिका त्रिभिः; Pa षष्ट्यधिका त्रिभिः । 1 A भजेत्; P सज्जेत् । 2 Pa °मेते; A C °मेकं । 3 Pa °मण्डलेऽखण्डले । § Pa C ३५०३; B ३९६० ।

A. D. P. सञ्ज्ञकादर्शेषु प्रतिलेखयित्रादिसूचका निम्नस्वरूपा उल्लेखा विद्यन्ते ।

A आदर्शस्थ उल्लेखः—

श्रीमालीवंशमुक्तातः सञ्जातो विवहारिकः ।
देवा इत्यभिधानस्तत्पत्नी हासलदेव्यभूत् ॥ १ ॥
तयोर्जाता पु(सु)ता एते प्रथमो मांडणाह्वयः ।
पद्मसिंहो द्वितीयोऽभूत् मालदेवस्तृतीयकः ॥ २ ॥
लिखापितः प्रमोदात्तैस्तीर्थकल्पोऽयमुत्तमः ।
स्वकीयमातृपितृणां श्रेयार्थं पुण्यवृद्धये ॥ ३ ॥
षट्षष्टिवत्सरे जाते चतुर्दशशताधिके ।
श्रीविक्रमभूपालात् भाद्रशुद्धजयातिथौ ॥ ४ ॥

D आदर्शगत उल्लेखः—

अकब्बरोर्वीरमणप्रदत्तजगद्गुरुख्यातिधरो बभूव ।
श्रीहीरसूरिर्विजयं दधानः श्रीवर्द्धमानप्रभुशासनेऽस्मिन् ॥ १ ॥
तदीयपट्टाम्बरभानुमाली सूरीश्वरः श्रीविजयादिसेनः ।
तपागणं यः प्रथितं चकार विजित्य भूपालसभे द्विजौघम् ॥ २ ॥
श्रीविजयतिलकसञ्ज्ञे सूरिवरे तत्पदे श्रियं श्रयति ।
वैराग्यवासितान्तःकरणैः शुद्धोपदेशरतैः ॥ ३ ॥
हैमगुरुवृत्तिकाव्यप्रकाशमणिमुख्यशास्त्रनिष्णातैः ।
श्रीविजयसेनसूरीश्वरशिष्यै रामविजयबुधैः ॥ ४ ॥
पञ्चदशलक्षपुस्तकचित्को [शो] ज्ञानभक्तये विहितः ।
आचन्द्रार्कं नन्दतु विज्ञजनैर्वाच्यमानोऽसौ ॥ ५ ॥

P आदर्शस्थित उल्लेखः—

॥ संवत् १५६९ वर्षे चैत्रादौ संवच्छरे । आषाढमासे । शुक्लप्रतिपदिने । सोमवासरे । पुनर्वसुनक्षत्रे । वैरिसिंहपुरे । श्रीमालज्ञातीय । बहकटा गोत्रे । महं० जिणदत्तपुत्रप्रवरप्रासादपौषधशालादि पुण्यकार्यकरण सावधानचित्त । सप्तक्षेत्रसफलकृत निजवित्त । धर्मधुरंधर । महं० भोजा भार्या वइजलदे पुत्र । एकांतदेवगुरुभक्त । श्रीशांतिनाथचरणकमलार्चनासक्त । महं० रायमल भार्या सरसतिपुत्र चिरं० लषणसी महणसी द्वि० भा० करमाई प्रमुष पुत्र परिवारसहितेन महं० रायमलसुश्रावकेण सर्वतीर्थकल्पग्रंथो लेष (ख) यित्वा दत्तः । श्रीखरतरगच्छे । पूज्य म० श्रीजिनभद्रसूरिपदे श्रीजिनचंद्रसूरिशिष्य श्रीजिनेश्वर सूरिशिष्य वा० साधुकीर्तिगणीनां समर्पितश्च ॥ सकलसंघस्य शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ ७ ॥

*

A. सञ्ज्ञकादर्शप्रान्ते

निम्नोद्धृता ग्रन्थगतसर्वकल्पानामनुक्रमणिका लिखिता लभ्यते ।

॥ श्रीसमग्रग्रन्थाग्रं० ३९६० शुभम् ॥

विविधतीर्थकल्पग्रन्थागत-
विशेषनाम्नां सङ्ग्रहः ।

विविधतीर्थकल्पग्रन्थान्तर्गत-विशेषनाम्नां सङ्ग्रहः ।

⁕ अकाराद्यनुक्रमेण ⁕

[सङ्केत सूचना–(प्रा०)=प्राकृतभाषाशब्दः; (सं०)=संस्कृतभाषाशब्दः; (या०)=यावनीभाषाशब्दः ।]